The Diary of Manu Gandhi 1943-1

manoj.gupta

Table of Contents

शीर्षक_पृष्ठ

प्रस्तावना

परिचय

अनुवाद पर टिप्पणी

मनु गांधी की डायरी 1943-1944

अनुवादक के बारे में

मनु गांधी की डायरी

मनु गांधी की डायरी

1943–1944

द्वारा संपादित और अनुवादित

Tridip Suhrud

1

1

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का एक विभाग है।

यह विश्वविद्यालय के अनुसंधान, विद्वता और उत्कृष्टता के उद्देश्य को आगे बढ़ाता है।

और विश्वभर में प्रकाशन के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना। ऑक्सफोर्ड एक पंजीकृत ट्रेडमार्क है।

ब्रिटेन और कुछ अन्य देशों में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित।

भारत में प्रकाशित

ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

2/11 भूतल, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110 002, भारत

© भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, 2019

लेखकों के नैतिक अधिकारों का दावा किया गया है।

पहला संस्करण 2019 में प्रकाशित हुआ।

सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस प्रकाशन का कोई भी भाग पुनरुत्पादित या संग्रहीत नहीं किया जा सकता है।

किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली द्वारा, या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, बिना किसी के प्रेषित किए बिना

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस की पूर्व लिखित अनुमति से, या स्पष्ट रूप से अनुमत अनुसार

कानून द्वारा, लाइसेंस द्वारा, या उपयुक्त पुनरुत्पादन विशेषज्ञ के साथ सहमत शर्तों के तहत

अधिकार संगठन। इसके दायरे से बाहर पुनरुत्पादन से संबंधित पूछताछ।

उपरोक्त दस्तावेज ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के अधिकार विभाग को भेजे जाने चाहिए।

ऊपर दिए गए पते पर।

इस कृति को किसी अन्य रूप में प्रसारित न करें।

और आपको यही शर्त किसी भी अधिग्रहणकर्ता पर लागू करनी होगी।

आईएसबीएन-13 (प्रिंट संस्करण): 978-0-19-949616-7

आईएसबीएन-10 (प्रिंट संस्करण): 0-19-949616-1

ISBN-13 (ईबुक): 978-0-19-909807-1

ISBN-10 (ईबुक): 0-19-909807-7

एडोब गैरामंड प्रो 11/14 में टाइपसेट किया गया

द ग्राफिक्स सॉल्यूशन, नई दिल्ली 110 092 द्वारा

भारत में रेप्लिका प्रेस प्राइवेट लिमिटेड द्वारा मुद्रित।

प्रस्तावना

मनु गांधी की डायरी महात्मा गांधी पर भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार के निजी संग्रह में मौजूद सबसे महत्वपूर्ण संग्रहों में से एक है और मुख्य रूप से गुजराती में लिखी गई है। ये डायरियाँ गांधी

के भतीजे जयसुखलाल अमृतलाल गांधी की सबसे छोटी बेटी मनुबेन (मृदुला) गांधी और कसुम्बा द्वारा लिखी गई थीं। हमें खुशी है कि भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार इन डायरियों का अंग्रेजी अनुवाद आम पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहा है।

मैं अहमदाबाद स्थित साबरमती आश्रम संरक्षण एवं स्मारक ट्रस्ट के पूर्व निदेशक और मुख्य संपादक प्रोफेसर त्रिदीप सुहरूद को मनु गांधी की डायरी के खंडों के अनुवाद और व्याख्या में उनके अथक प्रयासों के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ। गैर-गुजराती पाठकों के लिए अब तक दुर्गम रहे इस अनूठे स्रोत के अपार ऐतिहासिक महत्व के अलावा, प्रोफेसर सुहरूद का कार्य पाठकों को इन डायरियों के अर्थ और प्रतिनिधित्व को अधिक प्रामाणिक और गहनता से समझने के लिए प्रेरित करता है। समृद्ध सामग्री का विश्लेषण करते हुए, यह चिंतनशील कृति गांधीवादी राष्ट्रवाद की बाहरी अभिव्यक्तियों और गांधी की निरंतर आध्यात्मिक यात्रा के परस्पर संबंध को एक संदर्भ और गहरी समझ प्रदान करने का प्रयास करती है। आदर्शों, प्रथाओं और आत्मनिरीक्षण का मार्ग लगभग सहजता से आपस में घुलमिल जाता है।

मैं इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सहयोग देने वाले अपने सहयोगियों को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिनमें श्री टी. हुसैन, उप निदेशक अभिलेखागार, श्री एस.के. मिश्रा, हसन रजा, सहायक निदेशक अभिलेखागार, श्रीमती अनुमिता बनर्जी, डॉ. एस.एल. साहू, अभिलेखागार अधिकारी और श्री विवेक रंजन, सहायक अभिलेखागार अधिकारी शामिल हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि भारतीय इतिहास और राजनीति के पाठकों और महात्मा गांधी और मनुबेन गांधी के बारे में अधिक जानने में रुचि रखने वालों द्वारा इस डायरी का स्वागत किया जाएगा। विभाग भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार के समृद्ध संग्रह से इस प्रकार के और प्रकाशन लाने का इरादा रखता है।

Pranav Khullar

भारत सरकार के संयुक्त सचिव और

महानिदेशक

भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार, संस्कृति मंत्रालय

नई दिल्ली

जून 2019

इस यज्ञ में मुझे सत्य और पवित्रता के उस आदर्श की झलक मिली जिसके लिए मैं तरसता हूँ।

आप हमेशा से ही आकांक्षा रखते आए हैं। और आपने इसमें पूरा योगदान दिया है। 1

मनु: प्रशिक्षु

मनु गांधी (1927-1969) इसकी साक्षी हैं। 30 जनवरी 1948 को जब एम.के. गांधी प्रार्थना और शहादत की ओर चल रहे थे, तब उनकी साथी और उनके अंतिम यज्ञ में भागीदार मनु, जो आत्मज्ञान और आत्म-बलिदान का अनुष्ठान थीं, उनके साथ चल रही थीं। इससे पहले कि हत्यारा गांधी के आमने-सामने आ पाता, उसे मनु को हटाना पड़ा, जिन्होंने घृणा के मार्ग में बाधा डाली थी। 1943 से उनकी निरंतर साथी रही डायरी, थूकदान और माला, जो वह अपने साथ रखती थीं, गिर पड़ीं और बिखर गईं, और अगले ही पल उन्होंने उस व्यक्ति को अपनी गोद में उठाया जिसे वह अपनी 'मां' कहती थीं, क्योंकि तीन लाल निशानों से लथपथ उनका शरीर धीरे-धीरे जमीन में धंस रहा था।

गांधी जी चाहते थे कि उनकी मृत्यु की साक्षी मनु बनें ताकि वे उनके संघर्ष की साक्षी बन सकें। उन्होंने मई 1947 में मनु से कहा, 'मैं पूर्ण स्थितप्रज्ञा की अवस्था तक पहुंचना चाहता हूं और पूर्ण अनासक्ति प्राप्त करना चाहता हूं। मेरे इस प्रयास की सफलता पूरी तरह इस बात पर निर्भर करती है कि मैं मृत्यु का सामना कैसे करता हूं... लेकिन यदि मेरे मन में अंतिम क्षणों में राम नाम का उच्चारण करने का विचार आए तो मैं ऐसा कर सकता हूं।

1 एम.के. गांधी से मनु गांधी को, 29 अप्रैल, 1947, पटना। महात्मा गांधी के एकत्रित कार्य (सीडब्ल्यूएमजी), खंड 87, पृष्ठ 384।

मनु गांधी की डायरी। त्रिदीप सुहरूद द्वारा संपादित और अनुवादित, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (2019)। © ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। DOI: 10.1093/ oso/9780199496167.002.0006 x परिचय

मेरी इस सांस को मेरे प्रयास की सफलता का प्रमाण माना जाना चाहिए। और चूंकि आप मेरे इस यज्ञ के साक्षी हैं, इसलिए मेरी यही इच्छा है कि आप मेरे साक्षी बनें, न कि मुझसे पहले जाएं।

गांधी जी को ईश्वर के प्रत्यक्ष दर्शन, आत्मज्ञान और मोक्ष प्राप्ति के अपने प्रयास पर गहरा संदेह था। वे जानते थे कि सभी मनुष्यों की तरह, जब तक साधक नश्वर शरीर में है, यह प्रयास अधूरा ही रहेगा। गांधी जी का मानना था कि उनकी मृत्यु के क्षण में ही उनके इस प्रयास की सत्यता का सत्यापन हो सकेगा। और यह सत्यापन केवल स्वयं से भिन्न किसी अन्य व्यक्ति

द्वारा ही किया जा सकेगा; एक ऐसा व्यक्ति जो साक्षी देने की क्षमता रखता हो और वसीयतकर्ता बनने का अधिकार रखता हो।

गांधी ने एक बार फिर यह जिम्मेदारी मनु को सौंपी। मई 1947 में उन्होंने मनु से कहा, "पर यदि मैं दीर्घकालीन बीमारी से मर जाऊं, तो यह तुम्हारा कर्तव्य होगा कि तुम पूरी दुनिया को बताओ कि मैं ईश्वर का भक्त नहीं, बल्कि एक पाखंडी और धोखेबाज था। यदि तुम इस कर्तव्य में विफल रहती हो, तो मैं जहां भी रहूंगा दुखी रहूंगा। परन्तु यदि मैं अपनी अंतिम सांस लेते हुए ईश्वर का नाम लूं, तो यह इस बात का संकेत होगा कि मैं वही था जिसके लिए मैंने प्रयास किया और होने का दावा किया।"

मनु का वह अधिकार, वह प्रयास क्या था जिसने उन्हें साक्षी बनाया? 1943-1948 की ये डायरियाँ उस अधिकार को प्राप्त करने के प्रयास की कहानी हैं, उस यज्ञ में भागीदार बनने की कहानी हैं जिसने गांधीजी को सत्य और पवित्रता की वह झलक दी जिसकी उन्हें तलाश थी।

Manu (Mridula) Gandhi was the youngest daughter of Gandhi's nephew Jaisukhlal Amritlal Gandhi and Kasumba. 4

गांधी जी के लेखन में मनु का पहला उल्लेख 20 मार्च 1941 को उनके पिता जयसुखलाल को लिखे पत्र में मिलता है, जिसमें उन्होंने लिखा था, 'मृदुला को खाना पकाने और पढ़ाई करने दो। इससे उसकी शिक्षा और भी बेहतर होगी।' 5

2 सीडब्लूएमजी खंड 87, पृष्ठ 462.

3 सीडब्ल्यूएमजी खंड 87, पृ. 521–2.

4 Amritlal Gandhi was the son of Tulsidas, brother of Gandhi's father Karamchand. Manu had three elder sisters, Umiya (b.1912), Vinodini (b.1917) and Samyukta (b.1923).

5 सीडब्ल्यूएमजी खंड 73, पृष्ठ 386–7. प्रस्तावना xi

मई 1942 तक, गांधी जी संभवतः जयसुखलाल के आग्रह पर मनु को सेवाग्राम ले आए थे। उस समय तक उनकी माता का देहांत हो चुका था। गांधी जी ने राजकुमारी अमृत कौर को अपने संरक्षण में आए एक नए सदस्य के बारे में बताया, 'मैं जयसुखलाल की छोटी बेटी को साथ ले आया हूँ।' 6 मनु का प्रशिक्षण सेवाग्राम में शुरू हुआ, जिसमें साहित्यिक प्रशिक्षण—संस्कृत और अंग्रेजी सहित—और सेवा का प्रशिक्षण, विशेष रूप से कस्तूरबा और गांधी जी की सेवा का प्रशिक्षण शामिल था। गांधी जी ने उसी वर्ष जुलाई में उनके पिता को बताया, 'ची. मनु बहुत समझदार और बुद्धिमान लड़की है। वह पूरी निष्ठा से सेवा करती है। वह सभी से मित्रवत हो गई है।'

उसके खिलाफ कोई शिकायत नहीं है। वह पढ़ाई में भी काफी अच्छी है। मैं देखता हूं कि वह

खुश है। वह हर शाम मेरे पैरों की मालिश करने आती है। बेशक, वह मेरे साथ सैर पर भी जाती है। आपको उसके बारे में चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है।

लेकिन अगस्त 1942 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा अंग्रेजों से भारत छोड़ो के आह्वान के इर्द-गिर्द हुई राष्ट्रीय घटनाओं के कारण गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया और उसके तुरंत बाद आश्रम के कई प्रमुख कार्यकर्ताओं को भी गिरफ्तार कर लिया गया। गांधी जी, कस्तूरबा, महादेव देसाई, प्यारेलाल, डॉ. सुशीला नायर, सरोजिनी नायडू और मीराबेन को पुणे के आगा खान पैलेस में नजरबंद रखा गया। आगा खान पैलेस के बाहर भारत छोड़ो आंदोलन उग्र रूप से चल रहा था, ऐसे में कैदियों को गहरी व्यक्तिगत त्रासदी का सामना करना पड़ा। 15 अगस्त 1942 को महादेव देसाई ने अपनी दो जीवन भर की इच्छाओं में से एक को पूरा किया। एक थी गांधी जी की जीवनी लिखना और दूसरी थी गांधी जी की गोद में प्राण त्यागना। उन्होंने अपनी दूसरी इच्छा पूरी की और एक योगी की मृत्यु को प्राप्त हुए।

गांधी जी, बा और आश्रम के अन्य प्रमुख कार्यकर्ता पहले से ही जेल में थे या जेल जाने की तैयारी कर रहे थे, ऐसे में आश्रम की महिलाओं ने विरोध प्रदर्शन में शामिल होने का फैसला किया। 14 वर्षीय मनु सबसे छोटी थीं। 31 अगस्त 1942 को मनु ने पहली बार साड़ी पहनी और सत्याग्रही बनीं। उसी दिन उन्हें बंदी बना लिया गया और वर्धा जेल में रखा गया तथा 2 सितंबर 1942 को नागपुर केंद्रीय जेल में स्थानांतरित कर दिया गया। गांधी जी भी बंदी थे।

6 सीडब्लूएमजी खंड 76, पृष्ठ 122.

7 सीडब्लूएमजी खंड 76, पृष्ठ 345.

10 फरवरी 1943 से 2 मार्च 1943 तक आगा खान महल में मनु ने 21 दिनों का उपवास रखा। पहले से ही दुर्बल और बीमार कस्तूरबा को और भी अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। सरकार ने मनु को नागपुर से आगा खान महल में स्थानांतरित करने का निर्णय लिया। नौ महीने जेल में बिताने के बाद, मनु - जो अभी भी कैदी थीं - ने 19 मार्च 1943 को बा और बापू से मिलने के लिए अपनी यात्रा शुरू की।

20 मार्च 1943 से 6 मई 1944 तक मनु आगा खान के यहाँ रहे, यह वह समय था जब उन्होंने कस्तूरबा की समर्पित सेवा की, जिनकी 22 फरवरी 1944 को एक कैदी के रूप में मृत्यु हो गई।

उन्होंने 11 अप्रैल 1943 को अपनी डायरी लिखना शुरू किया।

गांधी जी के लिए डायरी रखना सत्य की खोज में लगे सभी लोगों का एक अनिवार्य कर्तव्य था, और इसलिए आश्रमवासियों और सत्याग्रहियों के लिए यह अनिवार्य था। वे आश्रम समुदाय और रचनात्मक कार्यकर्ताओं से लगातार डायरी रखने का आग्रह करते थे। उन्होंने प्रेमा कांतक को लिखा, 'मैं आपसे यह निवेदन करता हूँ, यदि आप अपनी डायरी नहीं लिख रहे हैं, तो लिखना शुरू

कर दें।' 9 उनका मानना था कि दैनिक डायरी आत्म-परीक्षण और आत्म-शुद्धि का एक माध्यम है; उन्होंने नमक यात्रा में अपने साथ चलने वाले सभी लोगों के लिए इसे अनिवार्य कर दिया था। वे स्वयं भी डायरी रखते थे, यद्यपि वर्षों के बीतने के साथ आत्म-परीक्षण के साधन के रूप में डायरी पर उनकी निर्भरता कम हो गई, फिर भी उन्होंने इस प्रथा को पूरी तरह से कभी नहीं छोड़ा। उन्होंने आश्रम समुदाय से कहा, 'डायरी के बारे में सोचते हुए मुझे लगता है कि यह मेरे लिए अमूल्य है। सत्य की खोज में स्वयं को समर्पित करने वाले व्यक्ति के लिए, यह स्वयं पर नजर रखने का एक साधन है, क्योंकि ऐसा व्यक्ति इसमें सत्य के अलावा कुछ भी नहीं लिखने के लिए दृढ़ संकल्पित होता है।' 10

8 तारीखों में विसंगति है। मनु के अनुसार वह वहाँ पहुँची थी।

आगा खान ने 20 मार्च 1943 को यह बात कही थी। सीडब्ल्यूएमजी, खंड 77, पृष्ठ 74 के अनुसार, गांधी ने मनु की डायरी में 13 मार्च 1943 को लिखा था, जो कि एक त्रुटि प्रतीत होती है। 17 मार्च को कस्तूरबा को हृदयघात जैसे लक्षण महसूस हुए और उसके बाद सरकार ने मनु का तबादला करने का निर्णय लिया। गांधी के दैनिक जीवन का वृत्तांत लिखने वाले सी.बी. दलाल भी यही तिथि 20 मार्च 1943 बताते हैं। देखें, दलाल सी.बी., गांधीजी नी दिनवारी (गांधीनगर: सूचना विभाग, 1970), पृष्ठ 496।

9 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 47, पृष्ठ 2156-217.

10 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 44, पृष्ठ 39. प्रस्तावना xiii

डायरी लेखन की परंपरा में—केवल आश्रम परंपरा में ही नहीं—महादेव देसाई की डायरियाँ अद्वितीय हैं। महादेव गांधी जी के जीवन के सबसे महान इतिहासकार हैं। गांधी जी के सत्य की खोज के संघर्ष के साक्षी बनना महादेव की दिली इच्छा थी। 1917 से 1942 तक उन्होंने गांधी जी के साथ बिताए हर दिन का रिकॉर्ड रखा, यानी उन दुर्लभ दिनों में जब वे गांधी जी के साये में नहीं थे, तब उन्होंने डायरी नहीं लिखी। मनु समेत गांधी जी के सभी साथियों की इच्छा महादेव की तरह डायरी लिखने की थी।

मनु की डायरियों के बारह खंड भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार में रखे गए हैं। रेखांकित नोटबुक में लिखी गई इन डायरियों में गांधीजी के प्रार्थना भाषणों के छह खंड (जिन्हें उन्होंने गांधीजी के बोलते समय लिखा था), गांधीजी द्वारा लिखे गए पत्रों की प्रतियों का एक खंड, उनकी 'अंग्रेजी कार्यपुस्तिका' (आगा खान काल की) का एक खंड और डायरियों के चार खंड शामिल हैं। गांधीजी के प्रार्थना भाषण और पत्र महात्मा गांधी के संकलित कार्यों के भाग के रूप में पहले ही प्रकाशित हो चुके हैं। यह कृति 1943 से 1948 तक की डायरियों के चार खंडों के अनुवाद और व्याख्या पर आधारित है (जिस समय वह गांधीजी के साथ नहीं थीं, उस दौरान उन्होंने महादेव की तरह कोई डायरी नहीं लिखी)।

गांधी जी ने आगा खान में मनु की डायरी को पढ़ने, उस पर हस्ताक्षर करने और कभी-कभी उस पर टिप्पणी करने की प्रथा बना ली थी। डायरी की मूल पांडुलिपि पर गांधी जी के सुधारों और टिप्पणियों के निशान हैं और उस पर 'बापू' के हस्ताक्षर हैं। डायरी में गांधी जी के हस्तक्षेप

के प्रत्येक निशान और उनके हस्ताक्षर को इस पुस्तक में अंकित किया गया है।

1943-4 की डायरियाँ 19 दिसंबर 1946 से 31 जनवरी 1948 की अवधि की डायरियों से भिन्न हैं। डायरियों का पहला सेट 15 वर्षीय किशोरी मनु का है, जो अपने जीवन के उद्देश्य, गांधी जी के साथ अपने स्थान और डायरी लिखने की अपनी साहित्यिक क्षमताओं को लेकर अनिश्चित थी। गांधी जी के निरंतर मार्गदर्शन में मनु की डायरी में बदलाव आना शुरू हुआ। इस बदलाव के संकेत इस वर्तमान खंड में ही स्पष्ट हैं। डायरी लिखना शुरू करने के दो दिन बाद, गांधी जी ने उसकी डायरी में पहला नोट लिखा, 'तुम्हें अपने द्वारा बुने गए धागों का हिसाब रखना चाहिए। तुम्हारे मन में आने वाले विचारों को भी लिख लेना चाहिए। तुम्हें जो कुछ भी पढ़ा है, उसका रिकॉर्ड रखना चाहिए।' 11 कुछ

11 सीडब्लूएमजी, खंड 77, पृष्ठ 74.

कुछ दिनों बाद उन्होंने सलाह दी: 'आपको अपनी लिखावट सुधारनी चाहिए, दूसरों से जो कुछ भी सीखते हैं उसे लिख लें। इससे आपको पता चलेगा कि आपने कितना सीखा है।' 12

जब वह शुरू में हिचकिचाते हुए अपने अंतर्मन के विचार लिख रही थी, तो उसने डायरी को उसकी जाँच और हस्ताक्षर के लिए प्रस्तुत नहीं किया। 21 मई 1943 की प्रविष्टि में उसने लिखा, 'लेकिन, मैं डायरी रोज़ लिखती हूँ, पर उसे नहीं दिखाती क्योंकि मैंने उस दिन के बारे में लिखा है जब उसने मुझे अपने पैरों पर घी लगाने से मना कर दिया था।' अगले दिन उसने उसे डायरी दे दी, लेकिन उसके पढ़ने से पहले ही वापस ले ली। ऐसा करने के बाद, उसने हाशिये में लिखा, 'और फिर भी, मैं उसे दिखाऊँगी।'

इस संग्रह के दूसरे खंड के रूप में प्रकाशित होने वाली दूसरे चरण की डायरियाँ स्पष्ट रूप से भिन्न हैं। वह उनके यज्ञ में सहभागी, उनके प्रयासों की चुनी हुई साक्षी और उनकी मुख्य देखभालकर्ता हैं। ये डायरियाँ या तो गांधीजी को पढ़कर सुनाई जाती हैं या वे स्वयं नियमित रूप से इन्हें पढ़ते हैं और इन पर उनकी प्रामाणिकता की छाप है। लेकिन उनके 'बापू' के इस चिह्न की छाप उस पूर्व काल से भिन्न है जब वह उनके मार्गदर्शन में थीं। दिसंबर 1946 के बाद की मनु अब शिष्या नहीं हैं; वह उनके यज्ञ में सहभागी हैं।

दिसंबर 1946 के शुरुआती हफ्तों में, जब गांधीजी ने मनु से अपनी डायरी पढ़कर सुनाने को कहा, तो मनु ने हिचकिचाहट दिखाई। उसने गांधीजी से कहा, 'मुझे आपके सामने अपनी बातें पढ़ने में शर्म आ रही है।' लेकिन श्रीरामपुर में गांधीजी के साथ रहने के दूसरे ही दिन से मनु ने डायरी को अपनी इच्छानुसार लिखना शुरू कर दिया, न कि गांधीजी के निर्देशों के अनुसार। नोआखली के उन अशांत दिनों में, उनके दिन

12 सीडब्लूएमजी, खंड 77, पृष्ठ 75.

13 Noakhali: In December of 1946 Gandhi went to Noakhali, now in

बांग्लादेश में, जहाँ हिंदुओं का सुनियोजित नरसंहार हुआ था। इन हत्याओं के बाद हिंदुओं का बड़े पैमाने पर पलायन हुआ, जो अगस्त 1947 में उपमहाद्वीप के विभाजन से संबंधित हिंसा के दौरान भी दोहराया गया। नोआखली की हिंसा का बदला बिहार में मुसलमानों के खिलाफ हिंसा के माध्यम से लिया गया, जिससे सांप्रदायिक हिंसा का एक ऐसा सिलसिला शुरू हुआ जिसने अगले एक वर्ष तक उपमहाद्वीप को अपनी चपेट में ले लिया।

14. गांधी, मनु; अकेला तीर्थयात्री (अहमदाबाद: नवजीवन, 1964), पृष्ठ 14. प्रस्तावना xv

डायरी लिखने का काम आमतौर पर सुबह 3:30 बजे शुरू होता था और कई दिनों तक रात 10 बजे के बाद खत्म होता था। गांधी जी डायरी लिखने का बोझ कम करने के लिए उसे अपनी लेखन शैली की संक्षिप्तता का अध्ययन करने और केवल मुख्य बिंदुओं को लिखने के लिए कहते थे। लेकिन मनु, महादेव की तरह, गांधी जी के कहे हर शब्द को लिखना चाहती थी। 'लेकिन मैंने आपत्ति जताई, 'क्या आपको नहीं लगता कि भविष्य में मेरे लिए यह उपयोगी होगा यदि मैं आपके कहे हर शब्द को याद रख सकूं और लिख सकूं?'

“जी हां, बापूजी सहमत हुए, मेरी विरासत आप सभी के लिए इसी तरह संरक्षित की जा सकती है। महादेव भी ठीक यही करते थे।” 15

27 दिसंबर को उन्होंने डायरी में अपने हस्ताक्षर के महत्व के बारे में बताते हुए उसकी लेखन शैली की प्रशंसा की।

‘मुझे नहीं पता था कि तुम इतनी लंबी और विस्तृत डायरी लिख सकते हो, लेकिन मुझे ये पसंद हैं। तुम्हें अपनी डायरी मुझसे पढ़वाकर उस पर हस्ताक्षर ज़रूर करवाने चाहिए। आज तुम्हें मेरी डायरी पर मेरे हस्ताक्षर का महत्व समझ नहीं आएगा। लेकिन यह इस बात का पक्का सबूत होगा कि मैं तुम्हें जो कुछ भी बताता हूँ, उसमें अपना पूरा दिल खोलकर रख देता हूँ।’ 16

वह डायरी लिखना जारी रखती थी, जिसे वह उनके साथ साझा करती थी। 27 अप्रैल 1947 को, वह और उनकी डायरी गांधीजी को महादेव की याद दिलाती थी। ‘मैं प्रतिदिन आपकी डायरी पढ़ता हूँ, जो मुझे महादेव की याद दिलाती है।’ 17 उन्होंने जयसुखलाल को भी लिखा, ‘डायरी लिखने में उसने बहुत प्रगति की है। उसे नोट्स लिखने में बहुत रुचि है और जब मैं उन्हें देखता हूँ, तो महादेव का चेहरा मेरी आँखों के सामने आ जाता है।’ 18

10 नवंबर 1947 को मनु ने मांग रखी—उन्हें लगा कि अब उन्हें ऐसी असामान्य मांग करने का अधिकार और क्षमता प्राप्त हो चुकी है—कि गांधी जी के हाथ से लिखे मूल लेख को वे अपने पास रखें और उसकी प्रतियां बनाकर संबंधित व्यक्तियों को भेजें। गांधी जी ने मनु की इस प्रवृत्ति को स्वीकार कर लिया। ‘केवल इस शर्त पर कि

15 गांधी, मनु; द ई लोनली पिलग्रिम (अहमदाबाद: नवजीवन, 1964), पी. 28.

16 गांधी, मनु; द ई लोनली पिलग्रिम (अहमदाबाद: नवजीवन, 1964), पी. 47.

17 सीडब्लूएमजी, खंड 87, पृष्ठ 384.

18 सीडब्लूएमजी, खंड 90, पृष्ठ 468.

कि आप खुद पर अत्यधिक दबाव न डालें। बेशक, मैं चाहूँगा कि आप ऐसा करें।' 19

23 जनवरी 1948 को गांधी जी ने एक अनोखी बात कही। उन्होंने मनु को संबोधित एक पत्र लिखवाया, जिस पर उन्होंने हस्ताक्षर करते हुए लिखा, 'आपकी सेवा फलदायी हो।' एक तरह से यह गांधी जी का मनु को अंतिम उपहार था, जो उनकी योग्यता, उनकी भक्ति, उनकी पवित्रता का प्रमाण था और साथ ही उनके कर्तव्य की याद दिलाने वाला भी था।

'मैं पिछले कुछ दिनों से तुम्हारी डायरी पढ़ रही हूँ। मुझे बहुत खुशी हुई। तुमने मेरी सेवा में अत्यंत निष्ठा दिखाई है। परिवार में हो या परिवार के बाहर, मैंने तुम्हारे जैसी पवित्र लड़की नहीं देखी। इसीलिए मैं तुम्हारे सिवा किसी और की माँ नहीं हूँ।' 20

उसी पत्र में उन्होंने 20 जनवरी 1948 को अपनी प्रार्थना सभा में हुए बम विस्फोट और अपनी आसन्न मृत्यु का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि यदि वह उनकी मृत्यु की साक्षी बन सकें, तो 'उन्हें पूर्ण विजय प्राप्त हो जाएगी।' उन्होंने लिखा, 'कौन जानता है, लेकिन शायद एक और बम विस्फोट हो जाए और रामनाम का जाप करते हुए मैं तुमसे बिछड़ जाऊं। यदि ऐसा हुआ तो तुम्हें पूर्ण विजय प्राप्त हो जाएगी, बस मैं इसे देखने के लिए वहां नहीं रहूंगा। लेकिन ये लिखे हुए शब्द बने रहेंगे और तुम भी।' 21

गांधी जी की मृत्यु, जब अंतिम क्षणों में उनके होठों पर रामनाम था, किसी हत्यारे के हाथों हुई, तो क्या यह मनु की पूर्ण विजय मानी जानी चाहिए? इसका उत्तर गांधी जी द्वारा अपने अंतिम यज्ञ कहे जाने वाले उस यज्ञ में निहित है, जो पवित्रता, अहिंसा और सत्य की प्राप्ति की ओर एक अर्पण था। यह यज्ञ इतना रहस्यमय था कि वे इसे किसी को भी समझाने में असफल रहे, यहाँ तक कि अपने परिवार और अपने निकटतम सहयोगियों को भी नहीं, और शायद इन डायरियों के पाठकों के लिए भी यह रहस्य बना रहेगा। इस यज्ञ को समझने के लिए, गांधी जी ने 'यज्ञ' शब्द का प्रयोग करने पर जोर दिया, एक ऐसा कर्तव्य जिसे त्यागा नहीं जा सकता था। हमें गांधी जी की ब्रह्मचर्य की खोज को समझना होगा, न कि केवल ब्रह्मचर्य और पवित्रता के सीमित अर्थ में, बल्कि इसके मूल अर्थ में, आचरण (चर्या) के रूप में जो सत्य (ब्रह्म) की ओर ले जाता है।

19 सीडब्लूएमजी, खंड 89, पृष्ठ 515.

20 सीडब्लूएमजी, खंड 90, पृष्ठ 481.

21 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 90, पृष्ठ 481-2, प्रस्तावना xvii

उनकी ‘सत्य के साथ प्रयोग’ मौलिक रूप से ब्रह्म के साथ प्रयोग थे।

शुद्धता की खोज

‘मेरी राय में यीशु एक महान कलाकार थे।’ 22

मैं ब्रह्मचर्य की संभावनाओं की इस खोज की शुरुआत इस सुंदर, रहस्यमय और उदात्त छवि के आह्वान से नहीं करना चाहता। बल्कि, मैं उस चीज़ की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ जो उदात्त सौंदर्य की अवधारणा के बिल्कुल विपरीत है, एक ऐसा अनुभव जो 'अपमानजनक', 'गंदा', 'अपमानजनक' है, कुछ ऐसा जो गांधी जी की अंतरात्मा को घोर रूप से विचलित करता है। सौंदर्यहीन या अधिक सटीक रूप से कहें तो संवेदनहीनता के माध्यम से ही गांधी जी के 'सर्वोच्च कलाकार' का जीवन जीने के प्रयास को समझा जा सकता है।

14 अप्रैल 1938 को गांधीजी को अनैच्छिक स्खलन हुआ। यह पहली बार नहीं था जब उन्हें अनैच्छिक स्खलन हुआ था। अनैच्छिक स्खलन तो उनके लिए एक नियमित घटना थी। 1936 में उन्होंने एक आश्रमवासी को लिखा, ‘मुझे हमेशा अनैच्छिक स्खलन होता रहा है। दक्षिण अफ्रीका में यह कई वर्षों के अंतराल पर होता था। मुझे ठीक से याद नहीं है। यहाँ भारत में तो कई महीनों तक यह होता रहा है।’ 23 1927 में उन्होंने स्वीकार किया था कि उन्हें दो सप्ताहों में दो बार ऐसा ही अनुभव हुआ था। ‘पिछले दो सप्ताहों में मुझे नींद में दो बार अनैच्छिक स्खलन हुआ। मुझे कोई सपना याद नहीं है।’ 24 14 अप्रैल की घटना उनके पिछले सभी अनुभवों से अलग थी। यह स्खलन तब हुआ जब वे पूरी तरह से जाग रहे थे और उनकी हालत इतनी ‘दयनीय’ और ‘दयनीय’ थी कि वे पूरी तरह से जागते हुए भी स्खलन को नियंत्रित नहीं कर सके। इससे लगभग दो साल पहले उन्हें इसी तरह का एक परेशान करने वाला, अपवित्र करने वाला अनुभव हुआ था। उन्हें अचानक संभोग की इच्छा हुई थी। उन्होंने इसका वर्णन इस प्रकार किया: ‘...बंबई में यह अनुभव तब हुआ जब मैं पूरी तरह जागा हुआ था और मुझे अचानक संभोग की तीव्र इच्छा हुई। ज़ाहिर है, मुझे उस इच्छा को पूरा करने की कोई तीव्र इच्छा नहीं थी।

22 सीडब्लूएमजी, खंड 25, पृष्ठ 255.

23 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 62, पृष्ठ 428–9

24 सीडब्लूएमजी, खंड 35, पृष्ठ 379

मुझे ज़रा भी आत्मविस्मृति नहीं थी। मैं अपने शरीर पर पूर्णतः नियंत्रण में था। लेकिन मेरे तमाम प्रयासों के बावजूद भी वह अंग उत्तेजित रहा। यह एक बिलकुल ही विचित्र और शर्मनाक अनुभव था।’ 25

उन्होंने अपनी घोर निराशा की भावनाओं के बारे में लिखा, '14 अप्रैल का वह अपमानजनक, गंदा और यातनापूर्ण अनुभव मुझे अंदर तक झकझोर कर रख दिया और ऐसा महसूस कराया मानो ईश्वर ने मुझे किसी काल्पनिक स्वर्ग से फेंक दिया हो, जहाँ मेरी अपवित्रता के कारण मुझे रहने का कोई अधिकार नहीं था।' 26 गांधी ने इस स्पष्ट बाइबिल संबंधी उपमा के माध्यम से न केवल अपने अपूर्ण ब्रह्मचर्य को, बल्कि अपर्याप्तता की गहरी भावना, एक अधिक मौलिक विफलता को भी व्यक्त करने का प्रयास किया। सत्य नारायण, यानी ईश्वर के रूप में सत्य के प्रति उनका समर्पण अपूर्ण था, और इसलिए उन्हें सत्य और अहिंसा का प्रतिनिधित्व करने का कोई अधिकार नहीं था। उन्होंने विलाप किया, 'मैं जहाँ हूँ, मेरा स्थान कहाँ है, और कैसे एक आवेशित व्यक्ति अहिंसा और सत्य का प्रतिनिधित्व कर सकता है?' 27

गांधी ने समर्पण और आत्मज्ञान के बीच, आत्मसमर्पण और सत्य तथा अहिंसा को प्रस्तुत करने की क्षमता के बीच एक संबंध स्थापित किया। इसी संबंध में एक सर्वोच्च कलाकार के रूप में जीवन जीने की उनकी प्रबल इच्छा उभरती है।

उनके घर, हृदय कुंज की दीवारें बिल्कुल खाली थीं, उन पर कलात्मक या अन्य किसी भी प्रकार का कोई निशान नहीं था। गांधीजी को मानव निर्मित सौंदर्य की बाहरी अभिव्यक्तियों की कोई आवश्यकता नहीं थी। उन्होंने कहा, 'चीजों के दो पहलू होते हैं - बाहरी और आंतरिक। मेरे लिए यह केवल जोर देने का विषय है। बाहरी का कोई अर्थ नहीं है सिवाय इसके कि वह आंतरिक की सहायता करे।' 28 गांधीजी का तर्क था कि ऐसे क्षण होते हैं, चाहे वे कितने ही दुर्लभ क्यों न हों, जब व्यक्ति का अपने आप से ऐसा पूर्ण मिलन होता है कि उसे कला सहित किसी भी बाहरी अभिव्यक्ति की आवश्यकता महसूस नहीं होती। उन्होंने कहा, 'एक समय ऐसा आता है जब वह उस कला से ऊपर हो जाता है जिसकी सराहना इंद्रिय बोध पर निर्भर करती है।' 29 गांधीजी ने अपने आप से मिलन के इस सुंदर क्षण का वर्णन एक ऐसे क्षण के रूप में किया जब

25 सीडब्लूएमजी, खंड 62, पृष्ठ 429

26 सीडब्लूएमजी, खंड 67, पृष्ठ 61

27 सीडब्लूएमजी, खंड 67, पृष्ठ 58.

28 सीडब्लूएमजी, खंड 25, पृष्ठ 248

29 सीडब्लूएमजी, खंड 29, पृष्ठ 397, प्रस्तावना xix

व्यक्ति में वह क्षमता विकसित हो जाती है जिससे वह 'अपने भीतर की उस छोटी, शांत आवाज' को सुन पाता है, जिसे वह अक्सर 'आंतरिक आवाज' के रूप में वर्णित करता था।

भीतर से आने वाली वाणी को सुनने की यह आवश्यकता, यह इच्छा और क्षमता ही गांधीजी की प्रमुख खोज थी। इसने उन्हें सत्य नारायण से उनकी निकटता या दूरी का संकेत दिया। अपनी आत्मकथा, 'एक आत्मकथा या सत्य के साथ मेरे प्रयोगों की कहानी' में गांधीजी ने अपने उद्देश्य और आह्वान को स्पष्ट किया। उन्होंने लिखा: 'मैं जो प्राप्त करना चाहता हूँ—जिसके लिए मैं इन

तीस वर्षों से प्रयासरत और व्याकुल रहा हूँ—वह है आत्म-साक्षात्कार, ईश्वर के साक्षात दर्शन, मोक्ष प्राप्ति। मैं इसी लक्ष्य की खोज में जीता हूँ, चलता हूँ और मेरा संपूर्ण अस्तित्व इसी लक्ष्य की प्राप्ति में समर्पित है।' 30 उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि उनके सभी कार्य, जिनमें राजनीतिक क्षेत्र के कार्य भी शामिल हैं, इसी उद्देश्य की ओर निर्देशित थे। ईश्वर के साक्षात दर्शन, मोक्ष प्राप्ति की यह अद्भुत इच्छा एक ही संभावना पर आधारित है: कि हमारे लिए स्वयं को जानना, आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करना संभव है। आत्म-साक्षात्कार की इस संभावना के बिना, ईश्वर सदा मायावी बना रहेगा।

वे इस बात से भी भलीभांति अवगत थे कि स्वयं द्वारा अनुभव की गई हर बात पूरी तरह से बोधगम्य नहीं होती, और उसे व्यक्त करना तो और भी कठिन होता है। उन्होंने कहा, 'कुछ बातें ऐसी होती हैं जो केवल स्वयं को और अपने सृष्टिकर्ता को ही ज्ञात होती हैं।' 31 मूल गुजराती पाठ अधिक रहस्यमय है। इसका शाब्दिक अनुवाद है: 'कुछ ऐसी बातें होती हैं जो आत्मा में उत्पन्न होती हैं और विश्राम पाती हैं, उनके बारे में लिखना मेरी क्षमता से परे है।' 32 इसी क्षेत्र में भाषा विफल हो जाती है। गांधी की स्वयं को जानने की खोज में ये दोनों क्षेत्र शामिल थे—प्रयोगों का एक सार्वजनिक क्षेत्र और साधना का एक निजी, अत्यंत व्यक्तिगत क्षेत्र जो केवल उन्हें और उनके सृष्टिकर्ता को ही ज्ञात था। ये दोनों क्षेत्र आध्यात्मिक, नैतिक और धार्मिक हैं।

30. गांधी, एम. के. आत्मकथा या सत्य के साथ मेरे प्रयोगों की कहानी, एक आलोचनात्मक संस्करण, त्रिदीप सुहरूद द्वारा टिप्पणियों सहित परिचय (नई दिल्ली: पेंगुइन रैंडम हाउस, 2018), पृष्ठ 46

31. गांधी, एम. के. आत्मकथा या सत्य के साथ मेरे प्रयोगों की कहानी, एक आलोचनात्मक संस्करण, त्रिदीप सुहरूद द्वारा टिप्पणियों सहित परिचय (नई दिल्ली: पेंगुइन रैंडम हाउस, 2018), पृष्ठ 46

32. गांधी, एम. के. आत्मकथा या सत्य के साथ मेरे प्रयोगों की कहानी, एक आलोचनात्मक संस्करण, त्रिदीप सुहरूद द्वारा टिप्पणियों सहित परिचय (नई दिल्ली: पेंगुइन रैंडम हाउस, 2018), पृष्ठ 46

यह समझ कि धर्म ही नैतिकता है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ साधक और उसकी खोज एक हो जाते हैं।

इस खोज के निहितार्थ तब स्पष्ट हो जाते हैं जब हम इसे प्रयोगों के स्थल, यानी आश्रम में स्थापित करते हैं; प्रयोग के तरीके, जो सत्य, अहिंसा (अहिंसा या प्रेम) और ब्रह्मचर्य हैं और स्वराज में उनकी अभिव्यक्ति है।

भीतर रहने वाला

आश्रम, या 'धर्मी पुरुषों का समुदाय' 33 गांधीजी के जीवन का केंद्र था। उन्होंने बाद में कहा: 'आश्रम मेरे जीवन की आवश्यकता थी।' 34 एक ही धर्म के लोगों के समुदाय के रूप में आश्रम न केवल एक साझा खोज से, बल्कि कुछ अनिवार्य अनुष्ठानों से भी बंधा होता है जो उन्हें आश्रमवासी बनाते हैं। इसलिए आश्रम वह है जहाँ आश्रमवासी होते हैं। इस प्रकार, यरवदा कारागार-मंदिर या मंदिर, जैसा कि उन्होंने इसे कहा था—आगा खान पैलेस कारागार—साबरमती के सत्याग्रह आश्रम और वर्धा के सेवाग्राम की तरह ही एक आश्रम था। इस प्रकार, आश्रम उनके साथ नोआखली और बिहार की उनकी एकल तीर्थयात्रा पर गया, जो उनके लिए कर्बला था।

25 मई 1915 को कोचराब में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना से पहले, गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में दो आश्रम-जैसे समुदाय स्थापित किए थे। उन्होंने इन्हें 'आश्रम-जैसे' ही रहने पर जोर दिया और इन्हें आश्रम कहने से लगातार इनकार किया। एक मात्र बस्ती थी—फीनिक्स सेटलमेंट —जबकि दूसरा एक फार्म था, टॉल्स्टॉय फार्म। फीनिक्स की स्थापना 1904 में रस्किन की रचना 'अनटू दिस लास्ट' के 'जादुई प्रभाव' से हुई थी, लेकिन इसे आश्रम का स्वरूप 1906 के बाद ही मिला। 1906 में ही गांधीजी ने ब्रह्मचर्य का व्रत लिया, प्रारंभ में केवल पवित्रता और ब्रह्मचर्य के सीमित अर्थ में। गांधीजी कहते हैं, 'इस समय से मैंने फीनिक्स को जानबूझकर एक धार्मिक स्थल के रूप में देखा।'

33 गांधी, एम.के., आश्रम अवलोकन क्रिया में, मूल गुजराती से वलीजी गोविंदजी देसाई द्वारा अनुवादित, (अहमदाबाद: नवजीवन, 1955, 1998), पृ. v.

34 गांधी, एम.के., आश्रम में क्रियात्मक अवलोकन, मूल गुजराती से वलीजी गोविंदजी देसाई द्वारा अनुवादित, (अहमदाबाद: नवजीवन, 1955, 1998), पृष्ठ v. प्रस्तावना xxi

संस्था।' 35 इस प्रकार, व्रत का पालन, जिसे अक्सर प्रतिज्ञाओं के रूप में गलत तरीके से अनुवादित किया जाता है, 36 आश्रम की परिभाषित विशेषता है। केवल इन पालनों के माध्यम से ही एक समुदाय सहधर्मियों का समुदाय बनता है और एक बस्ती सत्य के साथ प्रयोग करने का स्थान बन जाती है।

उन्हें उम्मीद थी कि इससे उन्हें और उनके साथी आश्रमवासियों को उस आदर्श को प्राप्त करने में मदद मिलेगी, 'जब सभी प्राणियों के लिए रात होती है, तब अनुशासित आत्मा जागृत होती है।' 37 यही उनके और आश्रम के लिए आदर्श था। उन्होंने कहा, 'आइए प्रार्थना करें कि जब हमारे चारों ओर अंधकार हो, तब हमें प्रकाश दिखाई दे... इस प्रकार हमें पूरे विश्व का भार अपने ऊपर लेने के लिए तैयार रहना चाहिए, लेकिन हम उस भार को तभी वहन कर सकते हैं जब हमारा अर्थ पूरे विश्व की ओर से तपस्या करना हो, तभी हम वहां प्रकाश देख पाएंगे जहां अन्य लोग केवल अंधकार देखते हैं।' 38

जागृत रहने की यह इच्छा, अंधकार से घिरे होने पर भी प्रकाश की उपस्थिति का अनुभव करना, गांधीजी के लिए एक सच्चे भक्त की एकमात्र पहचान है। भक्त वह है जिसके लिए ईश्वर अनन्य है, जिसके सिवा कोई दूसरा नहीं, क्योंकि भक्त सत्य की उपस्थिति से परिपूर्ण होता है। यह एकाग्रचित्त भक्ति परायण, ईश्वर के नामस्मरण से आती है। आश्रम में दिन की शुरुआत सुबह

4:15 से 4:45 बजे तक सामूहिक प्रार्थना से होती थी और शाम 7 से 7:30 बजे तक प्रार्थना के साथ समाप्त होती थी। यह प्रार्थना समुदाय के जीवन का इतना अभिन्न अंग थी कि गांधीजी यह दावा कर सकते थे: 'जब से आश्रम की स्थापना हुई है, एक भी दिन ऐसा नहीं बीता जब हमने प्रार्थना न की हो।'

35 गांधी, एम.के., आश्रम अवलोकन क्रिया में, मूल गुजराती से वलीजी गोविंदजी देसाई द्वारा अनुवादित (अहमदाबाद: नवजीवन, 1955, 1998), पृ. v-vi.

36. 31 अक्टूबर 1930 को गांधीजी ने जेसी कुमारप्पा को इसकी अपर्याप्तता समझाते हुए कहा, 'शब्द "व्रत" मूल शब्द के लिए अनुपयुक्त पर्यायवाची है।' सीडब्लूएमजी, खंड 44, पृष्ठ 264।

37 II: 69.

38 सीडब्लूएमजी, खंड 37, पृष्ठ 122.

39 सुबह की नमाज़ का समय बहुत प्रयोगों और बदलावों के अधीन था, लेकिन अंततः इसे सुबह 4.20 बजे तय किया गया, एक ऐसा समय जब खेत जोतने वाला और ईश्वर का सच्चा भक्त जागता था।

इस पूजा के बिना मेरा ज्ञान अधूरा है।' 40 गांधी जी इस बात से सहमत होंगे कि देहधारी प्राणी के लिए परम सत्ता का पूर्ण अहसास लगभग असंभव है, इसीलिए वे अपने इष्ट देव, अपने व्यक्तिगत ईश्वर का नाम दोहराते हैं। 'परम सत्ता सभी गुणों से रहित है और इसलिए मनुष्य के लिए उसकी कल्पना करना भी कठिन है। अतः वे सभी एक व्यक्तिगत ईश्वर के उपासक हैं, चाहे वे इसके प्रति सचेत हों या न हों।' 41 गांधी जी के लिए उनके इष्ट देव राम थे।

यह राम साक्षात राम नहीं थे, उनका कोई भौतिक रूप नहीं हो सकता था। इसलिए, 'जिस राम को हम याद करना चाहते हैं और जिसे हमें याद करना चाहिए, वह हमारी अपनी कल्पना के राम हैं, न कि किसी और की कल्पना के राम।' 42 गांधी की कल्पना के ये राम पूर्ण थे, वे ही थे जिन्होंने पापी और पतित पावन को भी बचाया और पवित्र किया। वे पतित पावन थे। ऐसे ही राम की वे पूजा करना चाहते थे। 'हमें उनकी पूजा करनी चाहिए, जो हमारे भीतर के स्वामी हैं, जो सबके हृदयों में निवास करते हैं, फिर भी सब कुछ से परे हैं और सबके स्वामी हैं। हम उन्हीं का गुणगान करते हैं: 43 निर्बलकेबल राम।' गांधी इसी निराकार और दोषरहित राम के साक्षात दर्शन करना चाहते थे। जिस राम का उन्होंने उल्लेख किया और जिस नाम को उन्होंने अपने जीवन भर और अपनी मृत्यु के समय दोहराया, वह वह राम नहीं थे जिन्हें हम दशरथ के पुत्र के रूप में जानते हैं। 44 यह वही राम थे जिनका नाम दशरथ ने अपने पुत्र को दिया था। राम का आत्माराम होना ही सत्य है। सत्य केवल वह नहीं है जो हमें बोलना चाहिए। यह वह है जो अकेला विद्यमान है, जिससे सब कुछ बना है, जो अपनी शक्ति से विद्यमान है, जो अकेला शाश्वत है। गांधी जी की तीव्र इच्छा थी कि ऐसा सत्य उनके हृदय को प्रकाशित करे।

40 सीडब्लूएमजी, खंड 56, पृष्ठ 152.

41 सीडब्लूएमजी, 49, पृ. 136.

42 सीडब्लूएमजी, खंड 36, पृष्ठ 164.

43 सीडब्लूएमजी, खंड 36, पृष्ठ 164.

44 समय के साथ-साथ राम को दशरथ का पुत्र मानने की धारणा भी विकसित होती गई। यदि राम केवल दशरथ के पुत्र हैं तो वे सर्वव्यापी नहीं हो सकते, परन्तु यदि कोई भक्त राम को सर्वव्यापी माने तो उसका दशरथ भी सर्वव्यापी हो जाता है। देखें, सीडब्लूएमजी, खंड 85, पृष्ठ 331-2, प्रस्तावना xxiii

राम के उनके पास 'घर' आ जाने के ज्ञान के बावजूद, वे उनके पर्याप्त निकट नहीं थे, और इसलिए उन्हें नाम का जाप करते रहना आवश्यक था। उन्होंने इस दूरी और नाम जपने की आवश्यकता के बारे में कहा: 'अभी भी, यद्यपि राम निकट हैं, वे मेरे पर्याप्त निकट नहीं हैं; इसलिए उन्हें संबोधित करने की आवश्यकता है। जब वे चौबीसों घंटे मेरे साथ रहेंगे, तब उन्हें एकवचन में भी संबोधित करने की आवश्यकता नहीं होगी।' 45

नाम ही मुक्तिदाता था, वही शुद्ध भक्ति थी। गांधी जी स्वयं को विद्वान नहीं, बल्कि प्रार्थनाप्रिय व्यक्ति कहना पसंद करते थे। प्रार्थना उनके जीवन का सार थी। उन्हें प्रार्थना की तीव्र आवश्यकता थी। यह केवल रामनाम का पाठ नहीं था; वास्तव में, प्रार्थना आत्मा की निश्चित और सचेत लालसा की अभिव्यक्ति थी; यह मार्गदर्शन के लिए ईश्वर की प्रतीक्षा करना था और उनकी इच्छा थी कि वे अपने भीतर दिव्य उपस्थिति का पूर्णतः अनुभव करें। केवल प्रार्थना से शुद्ध और पवित्र हुआ हृदय ही ईश्वर की उपस्थिति से भर सकता था, जहाँ जीवन एक निरंतर प्रार्थना, एक उपासना बन जाता था। उनके लिए प्रार्थना ही ईश्वर पर अंतिम भरोसा था, सब कुछ त्यागकर। वे जानते थे कि ऐसा तभी संभव है जब व्यक्ति निरंतर ईश्वर के दर्शन में रहे, हर क्षण हृदय में। ऐसी प्रार्थना केवल अनासक्ति की भावना से ही की जा सकती है। गांधी जी ने नामस्मरण की शक्ति का सुंदर वर्णन किया। 'तुम्हें राम के पवित्र नाम का जाप इतनी मधुरता और भक्ति से करना सीखना चाहिए कि पक्षी भी तुम्हारा नाम सुनने के लिए अपना गायन रोक दें—यहाँ तक कि वृक्ष भी उस नाम की दिव्य ध्वनि से प्रेरित होकर अपने पत्ते तुम्हारी ओर झुका लें।' 46 इस नामस्मरण, इस अनन्य भक्ति के लिए पूर्ण आत्मसमर्पण और सर्वव्यापी प्रेम की आवश्यकता थी। 47 उन्होंने दावा किया कि उनके सभी कार्य अपने भीतर ऐसी भक्ति उत्पन्न करने के उद्देश्य से किए गए थे। 48 उन्हें आशा थी कि यह भक्ति उन्हें आत्म-साक्षात्कार के मार्ग पर ले जाएगी, उन्हें ज्ञानी, आत्म-ज्ञानी बनाएगी। 'भक्ति का सच्चा अर्थ आत्मा की खोज है। जब आत्मा स्वयं को जान लेती है, तो भक्ति रूपांतरित हो जाती है।'

45 सीडब्लूएमजी, खंड 24, पृष्ठ 197.

46 सीडब्लूएमजी, खंड 57, पृष्ठ 446.

47 सीडब्लूएमजी, खंड 49, पृष्ठ 136.

48 सीडब्लूएमजी, खंड 54, पृष्ठ 468

ज्ञान।' 49 इस ज्ञान का साधक होना ब्रह्मचारी कहलाता है। गांधी जी ने विद्यार्थी (ज्ञान के लिए प्रयासरत व्यक्ति) शब्द के स्थान पर ब्रह्मचारी शब्द को प्राथमिकता दी। 'हमारी भाषाओं में विद्यार्थी शब्द के समानार्थक एक सुंदर शब्द है, वह है ब्रह्मचारी। विद्यार्थी एक गढ़ा हुआ शब्द है और ब्रह्मचारी का एक घटिया विकल्प है।'

गांधी जी के लिए शरीर, देह, ज्ञान की इस अवस्था, आत्म-साक्षात्कार के मार्ग में एक बाधा है। एक विचित्र रूपांतरण में गांधी जी ने कवि तुलसीदास के सबसे प्रसिद्ध दोहों में से एक को बदल दिया। 1909 में प्रकाशित अपने ग्रंथ हिंद स्वराज में आत्म-शक्ति या सत्य-शक्ति के स्वरूप पर चर्चा करते हुए गांधी जी ने तुलसीदास का उल्लेख किया। उन्होंने लिखा: 'कवि तुलसीदास ने कहा है, "धर्म की जड़ करुणा या प्रेम है, जैसे शरीर का अहंकार। इसलिए, जब तक हम जीवित हैं, हमें करुणा का त्याग नहीं करना चाहिए।"' यह रूपांतरण आकस्मिक नहीं है। यह ब्रह्मचर्य के लिए प्रयासरत व्यक्ति से अपेक्षित रूपांतरण है। 1906 से गांधी जी ने ब्रह्मचर्य का पालन सीमित और संयमित अर्थों में करना शुरू कर दिया था। उनके शरीर के साथ उनके संबंध में एक मौलिक परिवर्तन आया था और यह पालन उसी का एक बाहरी प्रतीक था। ब्रह्मचर्य, जिसे महाव्रत के रूप में वर्णित किया गया है, गांधीजी के लिए एक आवश्यक पालन के रूप में तब आया जब उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में ज़ुलू विद्रोह के दौरान एक एम्बुलेंस कोर का गठन किया था। उन्होंने महसूस किया कि ब्रह्मचर्य का पालन किए बिना समाज की सेवा संभव नहीं है। 37 वर्ष की आयु में, 1906 में, गांधीजी ने ब्रह्मचर्य का व्रत लिया। उसी वर्ष सत्याग्रह का उदय हुआ, जो आत्म-शक्ति, सत्य-शक्ति और मनुष्य तथा ईश्वर के बीच एक प्रतिज्ञा के रूप में प्रकट हुआ।

49 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 12, पृष्ठ 126

50 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 34, पृष्ठ 422

51. जोर दिया गया।

52 एम.के. गांधी का हिंद स्वराज: एक आलोचनात्मक संस्करण (सुरेश शर्मा और त्रिदीप सुहरूद द्वारा अनुवादित और संपादित, ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2010), पृष्ठ 72। मूल गुजराती में उद्धृत दोहा इस प्रकार है:

'daya dharam ko mool hai, deha mool abhiman

Tulsi daya na chhadiye, jab lag ghatmein pran.' Gandhi's citation diff ers- deha

पाप (पाप) के स्थान पर (शरीर) – हिंदी में प्रचलित 'दया धर्म' से लिया गया है।

वह दिन 11 सितंबर 1906 था। जोहान्सबर्ग में यहूदी स्वामित्व वाला एम्पायर थिएटर एशियाई मूल के पुरुषों से खचाखच भरा हुआ था। पुरुष, क्योंकि उस दर्शक दीर्घा में एक भी महिला नहीं थी। वे एशियाई पंजीकरण अधिनियम या ब्लैक एक्ट के विरोध में इकट्ठा हुए थे, जिसके तहत एशियाई मूल के प्रत्येक पुरुष, महिला और आठ वर्ष या उससे अधिक आयु के बच्चे को अपने सभी दस उंगलियों के निशान देकर पंजीकरण कराना अनिवार्य था; पंजीकरण न कराना कानून के तहत अपराध था और दोषी को देश निकाला दिया जा सकता था। बैठक में कई प्रस्ताव पारित होने की उम्मीद थी, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण चौथा प्रस्ताव था, जिसके द्वारा 'भारतीय दृढ़तापूर्वक यह संकल्प लेते हैं कि यदि यह अध्यादेश उनके विरोध के बावजूद कानून बन जाता है तो वे इसका पालन नहीं करेंगे और इसके पालन न करने पर सभी दंड भुगतेंगे।' 53

गांधी ने बाद में स्वीकार किया कि उन्होंने उस प्रस्ताव के सभी निहितार्थों को नहीं समझा था जिसे तैयार करने में उन्होंने मदद की थी। प्रस्ताव विधिवत रूप से प्रस्तुत किया गया, विभिन्न वक्ताओं द्वारा समर्थित किया गया। वक्ताओं में दक्षिण अफ्रीका के एक अनुभवी निवासी शेठ हाजी हबीब भी थे। अत्यंत भावुक होकर उन्होंने खुदा का आह्वान किया। उन्होंने दो शब्दों का प्रयोग किया, 'खुदा कसम' (ईश्वर के नाम पर ली गई शपथ) और 'खुदा' को 'हजार नजर' (ईश्वर की उपस्थिति में और ईश्वर को साक्षी मानकर) के रूप में। जब शेठ हाजी हबीब गंभीर घोषणा पर आए, तो गांधी 'एकदम चौंक गए और सतर्क हो गए। तभी मुझे अपनी और समुदाय की जिम्मेदारी का पूर्ण अहसास हुआ।' 54

गांधी जी इस बात से अवगत थे कि विश्व भर में सार्वजनिक जीवन में प्रस्ताव पारित करना एक आम बात है, जिन्हें या तो संशोधित किया जाता है या सभी संबंधित पक्षों द्वारा उनका पालन नहीं किया जाता। गांधी जी ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए, जैसा कि वे बार-बार करते रहे, बैठक में हस्तक्षेप किया और प्रस्ताव पारित करने के प्रस्तावित तरीके की वास्तविकता स्पष्ट की। उन्होंने कहा, “ईश्वर के नाम पर, उन्हें साक्षी मानकर शपथ लेना कोई मामूली बात नहीं है। यदि ऐसी शपथ लेने के बाद हम अपने वचन का उल्लंघन करते हैं, तो हम ईश्वर और मनुष्य दोनों के समक्ष दोषी हैं।”

53 दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह, पृष्ठ 95

54 दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह, पृष्ठ 96

उन्होंने अपने लंबे भाषण का समापन एक व्यक्तिगत टिप्पणी के साथ किया। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी के बारे में बात की। ‘मैं इस मामले में अपनी ज़िम्मेदारी से पूरी तरह अवगत हूँ। यह संभव है कि यहाँ उपस्थित अधिकांश लोग उत्साह या आक्रोश में आकर शपथ ले लें, लेकिन कठिन परीक्षा में कमज़ोर पड़ जाएँ, और शायद मुट्ठी भर लोग ही अंतिम परीक्षा देने के लिए बच जाएँ। तब भी मुझ जैसे व्यक्ति के लिए केवल एक ही रास्ता बचता है, मर जाना लेकिन

कानून के आगे न झुकना। यह बहुत ही असंभव है, लेकिन अगर बाकी सभी लोग पीछे हट जाएँ और मुझे अकेले ही परिणाम भुगतने के लिए छोड़ दें, तो भी मुझे विश्वास है कि मैं कभी भी अपनी शपथ का उल्लंघन नहीं करूँगा।'

इस निर्णायक क्षण की यह लंबी स्मृति हमें यह याद दिलाती है कि सत्याग्रह अपने उद्भव के समय एक प्रतिज्ञा है, स्वयं की ईश्वर के साथ और स्वयं की साकार व्यक्ति के साथ प्रतिज्ञा, यदि इन्हें एक दूसरे से भिन्न माना जा सकता है। प्रतिज्ञा का यह तत्व गांधी जी के सत्याग्रह संबंधी विचार और अभ्यास का एक केंद्रीय पहलू बन गया।

इस घटना के तीन वर्ष बाद गांधीजी ने अपने बीज ग्रंथ हिंद स्वराज में सत्याग्रह या निष्क्रिय प्रतिरोध शब्द का अर्थ समझाया, जो सत्याग्रह शब्द का अपर्याप्त अनुवाद था। गुजराती मूल में उन्होंने दो शब्दों का प्रयोग किया था जो एक ही अर्थ से संबंधित प्रतीत नहीं होते, ये हैं सत्याग्रह (सत्य की शक्ति) और आत्मबल (आत्मा की शक्ति)।

इस प्रयोग के महत्व का विश्लेषण करने से पहले, आइए उन शब्दों पर गौर करें जिनके माध्यम से वे सत्याग्रह के विचार की व्याख्या करते हैं। 'सत्याग्रह या आत्म-बल को अंग्रेजी में "असंयम प्रतिरोध" कहा जाता है। यह शब्द अपने अधिकारों की रक्षा के लिए मनुष्यों द्वारा चुने गए आत्म-पीड़ा के मार्ग को संदर्भित करता है। इसका उद्देश्य सशस्त्र बल के विपरीत है। जब मैं वह करने से इनकार करता हूँ जो मुझे स्वीकार्य नहीं है, तो ऐसा करने में मैं सत्याग्रह या आत्म-बल का प्रयोग करता हूँ।' 55 अपने अंग्रेजी अनुवाद में गांधी ने अंतरात्मा के विचार का आह्वान किया और इस प्रकार सत्याग्रह और आत्म-बल के बीच संबंध स्थापित किया। उन्होंने कहा, 'जब मैं कोई ऐसा काम करने से इनकार करता हूँ जो मेरी अंतरात्मा को भाता है, तो मैं आत्म-बल का प्रयोग करता हूँ।' यहाँ दो धारणाएँ प्रमुखता से प्रस्तुत की गई हैं: अंतरात्मा का विचार और पीड़ा का अभ्यास।

55 एम.के. गांधी का हिंद स्वराज: एक आलोचनात्मक संस्करण, पृष्ठ 74 प्रस्तावना xxvii

अंतरात्मा की अवधारणा गांधी के जीवन में लगातार महत्वपूर्ण भूमिका निभाती गई। 30 अप्रैल 1933 को गांधी ने सार्वजनिक रूप से बिना शर्त और अविचल उपवास करने की घोषणा की। यह उनका सबसे पवित्र उपवास था, इक्कीस दिनों का उपवास। यह आत्म-शुद्धि के लिए किया गया उपवास था। उन्होंने घोषणा की कि यह संकल्प उन्होंने अपनी अंतरात्मा की आवाज के प्रति समर्पण में लिया है। गांधी ने उपवास किया और निश्चित रूप से उसे पूरा किया। बाद में उन्होंने अंतरात्मा की आवाज के बारे में बताया। 'जिस रात मुझे प्रेरणा मिली, उस रात मेरे भीतर एक भयानक संघर्ष चल रहा था। मेरा मन बेचैन था। मुझे कोई रास्ता नहीं दिख रहा था। मेरी जिम्मेदारी का बोझ मुझे कुचल रहा था। लेकिन मैंने जो सुना वह दूर से आती हुई, फिर भी काफी करीब से आती हुई एक आवाज थी। यह इतनी स्पष्ट थी मानो कोई मानवीय आवाज मुझसे बात कर रही हो, और अप्रतिरोध्य थी। जब मैंने आवाज सुनी, उस समय मैं सपना नहीं देख रहा था। आवाज सुनने से पहले मेरे भीतर एक भयानक संघर्ष चल रहा था। अचानक आवाज मुझ पर आ पड़ी। मैंने सुना, मैंने सुनिश्चित किया कि यह वही आवाज थी; और संघर्ष समाप्त हो गया। मैं शांत हो गया।' 56

गांधी जी ने दावा किया कि उन्होंने एक आवाज़ सुनी, जिसे उन्होंने भगवान की आवाज़ बताया। लेकिन दो सवाल उठते हैं। पहला, किसी व्यक्ति में उस आवाज़ को सुनने की क्षमता कैसे आती है, और दूसरा, कोई कैसे जान सकता है, कैसे सुनिश्चित कर सकता है कि वह सत्य की आवाज़ है, राम की आवाज़ है न कि रावण की?

जो आवाज़ उन्होंने सुनी, वह भीतर से आई थी, न कि किसी बाहरी शक्ति से। गांधी ने बाहरी शक्ति और हमारे परे की शक्ति में अंतर बताया। हमारे परे की शक्ति का केंद्र हमारे भीतर ही होता है। यह हमसे श्रेष्ठ है, हमारे आदेश या इच्छा के अधीन नहीं है, फिर भी यह हमारे भीतर ही स्थित है। उन्होंने इस शक्ति के स्वरूप को समझाया। 'हमारे परे' का अर्थ है 'वह शक्ति जो हमारे अहंकार से परे है।' 57 गांधी के अनुसार, जब 'अहंकार शून्य हो जाता है', तभी व्यक्ति इस आवाज़ को सुनने की क्षमता प्राप्त करता है। 58 अहंकार को शून्य करने के लिए सत्य नारायण, यानी ईश्वर के रूप में सत्य के प्रति पूर्ण समर्पण आवश्यक है। यही ईश्वर के नाम पर और ईश्वर को साक्षी मानकर की गई प्रतिज्ञा का सच्चा अर्थ है।

सत्याग्रह की एक अन्य विशेषता यह है कि यह पीड़ा सहने की एक विधि है। पीड़ा सहने के लिए एक साक्षी, एक ऐसा प्राणी आवश्यक है जो उसे सहन कर सके।

56 सीडब्लूएमजी, खंड 55, पृष्ठ 255.

57 सीडब्लूएमजी, खंड 53, पृष्ठ 483.

58 सीडब्लूएमजी, खंड 53, पृष्ठ 483.

पीड़ा की गवाही देना, उसका साक्षी बनना। बेशक, गवाही देने का अंतिम कार्य ईश्वर का है। सत्य की खोज में तड़पते मानव हृदय की पीड़ा को वे ही सर्वथा समझते हैं। परन्तु हम, देहधारी प्राणियों के लिए भी पीड़ा और सत्य दोनों की गवाही देना उतना ही संभव है।

सत्याग्रह के कष्टों में साक्षी भाव के दोनों कार्य शामिल होते हैं। इसलिए, सत्याग्रही को दूसरों की अच्छाई को पहचानना चाहिए, विशेषकर उन लोगों की अच्छाई को जिनके कार्यों का सत्याग्रह के माध्यम से विरोध और परिवर्तन किया जाना है। इसके लिए मानव स्वभाव की ऐसी समझ आवश्यक है जो दूसरों को, चाहे वे कितने भी दुष्ट क्यों न हों, अच्छाई, सद्गुण, कष्ट और सत्य को पहचानने की क्षमता प्रदान करती है। यही कारण है कि गांधी ने सत्याग्रह को प्रेम की शक्ति कहा। प्रेम वह तरीका है जिससे ईसा मसीह ने जीवन जिया, कष्ट सहे और हमारे लिए अपना प्राण त्याग दिए।

सत्याग्रह, गांधी जी की अनूठी अवधारणा पर आधारित है, जिसमें साधन और साध्य की गहरी समझ निहित है। गांधी जी ने साधन और साध्य की तुलना बीज और वृक्ष से की, “जिस प्रकार बीज और वृक्ष के बीच अटूट संबंध होता है, उसी प्रकार साधन और साध्य के बीच भी अटूट संबंध होता है।” सत्याग्रह साधन और साध्य के बीच एक अन्य संबंध को भी मानता है, और वह

है दोनों की पवित्रता। सत्याग्रह के लिए शुद्ध साधन और शुद्ध साध्य दोनों आवश्यक हैं; साध्य की पवित्रता अशुद्ध साधनों के प्रयोग को उचित नहीं ठहराती। साधन हमें सत्याग्रही तक ले जाता है। सत्याग्रही के आचरण द्वारा साधन और साध्य आपस में जुड़े होते हैं। प्रश्न "शुद्ध साधन क्या हैं?" का उत्तर दो प्रकार से दिया जा सकता है। पहला, हम सत्याग्रही को केंद्र में रख सकते हैं। शुद्ध साधन वे हैं जिनका प्रयोग आत्म-शुद्धि की प्रक्रिया से शुद्ध हुए व्यक्ति द्वारा किया जाता है। दूसरा उत्तर यह हो सकता है कि शुद्ध साधन अहिंसक साधन हैं। अहिंसा की खोज सत्य की खोज और इसलिए सत्याग्रह के लिए केंद्रीय है। गांधी जी शुद्ध साधनों के प्रश्न को इन दोनों दृष्टिकोणों से देखते हैं।

गांधी जी ने सत्याग्रह को सर्वधारी बताया, जिसका अर्थ है सभी दिशाओं में, हर तरफ, और जिसे हर कोई सहन कर सकता है। यह सत्याग्रह करने वाले और जिन पर इसका प्रयोग किया जाता है, दोनों पक्षों को प्रभावित करता है। गांधी जी ने हिंद स्वराज में सत्याग्रह पर चर्चा करते हुए कई गुणों का उल्लेख किया है, जैसे साहस और भय से मुक्ति (अभय)।

59 हिंद स्वराज: एक आलोचनात्मक संस्करण, पृष्ठ 66. प्रस्तावना xxix

गरीबी (अपरिग्रह और अस्तेय-चोरी न करना), सत्य के प्रति दृढ़ता और ब्रह्मचर्य को अपनाएं। ये बाद में गांधी के एकदेश व्रत, ग्यारह प्रतिज्ञाओं में विकसित हुए।

सत्याग्रह और एकादेश व्रत के संबंध पर चर्चा करने से पहले, गांधी जी द्वारा अहिंसा पर दिए गए ज़ोर का विश्लेषण करना आवश्यक है, न कि केवल एक तकनीक या साधन के रूप में, बल्कि अहिंसा की दार्शनिक आवश्यकता के रूप में। यह हम उन श्रेणियों और शब्दों पर विचार करके कर सकते हैं जिनके माध्यम से गांधी जी ने हिंसा और अहिंसा के स्वरूप और उनके बीच के विरोधाभास को समझने का प्रयास किया। सबसे पहले, अनुवाद के संबंध में एक स्पष्टीकरण: 'अहिंसा' शब्द का अनुवाद अक्सर अहिंसा, हत्या न करना या चोट न पहुँचाना के रूप में किया जाता है। गांधी जी जानते थे कि ये शब्द हमेशा अहिंसा के अर्थ को पूरी तरह से व्यक्त नहीं करते। हालांकि, यरवदा जेल से आश्रमवासियों को लिखे गए एकादेश व्रत संबंधी पत्रों में उन्होंने अहिंसा का अनुवाद प्रेम के रूप में किया। और यही अर्थ हमें अहिंसा को समझने में सहायक होना चाहिए।

गांधी ने हिंसा को 'क्रूर बल' (गुजराती में शरीर बल या टॉप-बल) और अहिंसा को 'आत्मबल' (आत्मबल या दयाबल) के रूप में वर्णित किया।

इन दोनों के बीच, पशुवत और मानवीय के बीच की दूरी अहिंसा द्वारा चिह्नित है। क्रूर बल का विचार हिंसा को शरीर और उन उपकरणों में निहित करता है जिनका उपयोग शरीर चोट पहुँचाने या मृत्यु का कारण बनने के लिए कर सकता है। यह विशुद्ध साधनवाद का संकेत देता है। हिंसा को पशुवत क्षेत्र में रखकर, गांधी ने स्पष्ट रूप से विवेक, नैतिक मूल्यों के अभाव की ओर इशारा किया। उन्होंने लिखा, 'अहिंसा हमारी प्रजाति का नियम है, जैसे हिंसा पशुवत का नियम है। आत्मा पशुवत में सुप्त रहती है, लेकिन वह शारीरिक शक्ति की होती है। मनुष्य की गरिमा के लिए एक उच्चतर नियम—आत्मा की शक्ति—का पालन आवश्यक है।' 60 'आत्मा-बल' शब्द

विवेक, सत्य के मार्ग को पहचानने और उस निर्णय पर कार्य करने की मानवीय क्षमता का सूचक है। 1938 में गांधी सेवा संघ के सदस्यों के समक्ष दिए गए एक भाषण में उन्होंने इस अंतर को स्पष्ट रूप से उजागर किया। 'शारीरिक शक्ति को क्रूर बल कहा जाता है।' हम जन्म से ही इतनी ताकत लेकर पैदा होते हैं... लेकिन

60 सीडब्लूएमजी, खंड 18, पृष्ठ 133.

हम मनुष्य के रूप में इसलिए जन्म लेते हैं ताकि हम अपने हृदय में निवास करने वाले ईश्वर को जान सकें। यही हमारे और पशुओं के बीच मूलभूत अंतर है... मनुष्य रूप के साथ-साथ हमारे पास मानवीय शक्ति भी है—अर्थात अहिंसा की शक्ति। हम आत्म-शक्ति के रहस्य को समझ सकते हैं। इसी में हमारी मानवता निहित है।' 61 केवल अहिंसा की इसी क्षमता से हम मानवीय कर्तव्य को पूरा कर सकते हैं, जो गांधी के अनुसार आत्म-साक्षात्कार की खोज है। गांधी के अनुसार हिंसा आत्म-साक्षात्कार के मार्ग में एक अभेद्य बाधा उत्पन्न करती है। गांधी ने कहा, 'जितना अधिक वह हिंसा का सहारा लेता है, उतना ही वह सत्य से दूर होता जाता है।' 62 जैसे-जैसे हम हिंसा के प्रयोग से सत्य से दूर होते जाते हैं, सत्याग्रह संभव नहीं रह जाता, क्योंकि सत्याग्रह ही इस खोज और तड़प का सार है।

सत्याग्रह, सत्य की खोज के रूप में, स्वराज और एक ऐसी सभ्यता की खोज से जुड़ा है जिसमें आत्म-साक्षात्कार को संरचनात्मक रूप से बाधित न किया जाए। गांधी के सभ्यता और स्वराज के विचार स्वयं को जानने की इसी संभावना में निहित थे। गांधी ने 'हिंद स्वराज' में तर्क दिया कि आधुनिक पश्चिमी सभ्यता वास्तव में असभ्यता का कारण बनती है, और इसे कलियुग या शैतानी सभ्यता के रूप में वर्णित किया। ऐसा इसलिए था क्योंकि आधुनिक सभ्यता ने मानव मूल्य के केंद्र को स्थानांतरित करने का प्रयास किया, जिससे धर्म या नैतिकता की भावना का अस्तित्व असंभव हो गया। उन्होंने लिखा, 'इसकी सच्ची कसौटी इस तथ्य में निहित है कि इसके अधीन रहने वाले लोग शारीरिक कल्याण को जीवन का उद्देश्य बना लेते हैं।' 63 शारीरिक कल्याण को जीवन का उद्देश्य बनाकर, आधुनिक सभ्यता ने निर्णय के केंद्र को मनुष्य से बाहर स्थानांतरित कर दिया था। इसने सही आचरण को नहीं बल्कि वस्तुओं को मानव मूल्य का मापदंड बना दिया। ऐसा करके, इसने स्वयं को जानने की संभावना को समाप्त कर दिया था। उन्होंने लिखा, 'सभ्यता वह आचरण है जो मनुष्य को कर्तव्य का मार्ग दिखाती है। कर्तव्य का पालन और नैतिकता का अनुपालन परस्पर परिवर्तनीय शब्द हैं।' नैतिकता का पालन करना हमारे मन और भावनाओं पर विजय प्राप्त करना है। ऐसा करने से हम स्वयं को जान पाते हैं।' 64

61 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 66, पृष्ठ 420–1

62 एम.के. गांधी, येरवदा मंदिर से, पृष्ठ 5.

63 हिंद स्वराज: एक आलोचनात्मक संस्करण, पृ. 31.

64 हिंद स्वराज: एक आलोचनात्मक संस्करण, पृष्ठ 53, प्रस्तावना xxxi

स्वयं को जानना न केवल आध्यात्मिक जीवन का आधार है, बल्कि राजनीतिक जीवन का भी आधार है। उन्होंने स्वराज को इस प्रकार परिभाषित किया, 'स्वराज तब होता है जब हम स्वयं पर शासन करना सीख जाते हैं।' 65 स्वयं को जाने बिना स्वयं पर शासन करना संभव नहीं है। स्वयं को जानने के लिए अहिंसा की क्षमता, सत्य के प्रति दृढ़ता और अंतरात्मा की आवाज सुनने में सक्षम संवेदनशील हृदय की आवश्यकता होती है। सत्याग्रह के बिना स्वराज की कल्पना नहीं की जा सकती। सत्याग्रह, जिसमें आत्मशक्ति का आह्वान किया जाता है, इसी पर आधारित है। सत्याग्रह, जिसमें साधनों और लक्ष्यों की पवित्रता और सत्याग्रही की पवित्रता आवश्यक है, अंततः अपने अंतरात्मा की पहचान, अपने अंतरात्मा की आवाज सुनने और उसके प्रति समर्पण करने की क्षमता पर आधारित है।

सत्याग्रही की पवित्रता की यह आवश्यकता हमें गांधी जी के एकादश व्रत, यानी ग्यारह व्रतों की ओर ले जाती है। इन सभी को मिलाकर गांधी जी ने सत्य के साथ अपने प्रयोग कहा था। उनका मानना था कि यह निरंतर जागरूकता उन्हें असत्य की आवाज़ से अलग सत्य की पुकार सुनने में सक्षम बनाएगी। इससे उन्हें सत्य नारायण की प्रतीक्षा करने की क्षमता प्राप्त होगी। प्रार्थना ईश्वर में विलीन होने की उनकी तीव्र तड़प को व्यक्त करने का माध्यम थी। यह मार्गदर्शन के लिए ईश्वर की प्रतीक्षा करने का उनका तरीका था। केवल प्रार्थना से शुद्ध हृदय ही ईश्वर, सत्य की पूर्णतः शुद्ध उपस्थिति को अनुभव कर सकता है।

सत्याग्रह के संबंध में गांधीजी की अवधारणा में व्रत की आवश्यकता को कम नहीं आंका जाना चाहिए। गांधीजी ने बाद में महसूस किया कि ब्रह्मचर्य के अभ्यास के माध्यम से आत्म-शुद्धि सत्याग्रह के लिए एक आवश्यक शर्त थी। उन्होंने लिखा: 'अब मैं देख सकता हूँ कि मेरे जीवन की सभी प्रमुख घटनाएँ, जो ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा में परिणत हुईं, मुझे इसके लिए गुप्त रूप से तैयार कर रही थीं।' 66 यह सत्याग्रह के लिए आवश्यक आंतरिक तैयारी की सबसे महत्वपूर्ण झलक है। आत्म-जागरूक, आत्म-शुद्धि के बिना सत्याग्रह, जैसा कि गांधीजी ने समझा और अभ्यास किया, उनके पास नहीं आ पाता। उन्होंने यह भी कहा कि जीवन भर निरंतर शुद्धि के प्रयास के बिना सत्याग्रह कायम नहीं रह सकता।

65 हिंद स्वराज: एक आलोचनात्मक संस्करण, पृष्ठ 56.

66 आत्मकथा; सीडब्लूएमजी, खंड 39, पृष्ठ 254।

इससे हमें गांधी जी के प्रयोग और उनकी खोज की समझ मिलती है। उनकी खोज स्वयं को जानना, मोक्ष प्राप्त करना, अर्थात् ईश्वर (सत्य) के प्रत्यक्ष दर्शन करना है। अपनी इस खोज को पूरा करने के लिए उन्हें आश्रमवासी, सत्याग्रही और स्वराज का साधक होना आवश्यक था। इस अर्थ में सत्य का प्रयोग आत्मज्ञान, स्वयं पर विजय, कर्तव्य पालन और नैतिकता, सत्याग्रह, स्वराज, सच्ची सभ्यता और ब्रह्मचर्य का प्रयोग है।

चूंकि उन्होंने कभी सत्य को प्राप्त करने का दावा नहीं किया, इसलिए सत्य का अभ्यास प्रतिदिन, जागृति और नींद के हर क्षण में करना आवश्यक था। यह खोज आश्रम और उसके अनुष्ठानों के माध्यम से ही संभव हो पाती है। सत्याग्रह और स्वराज, आत्म-साक्षात्कार के साधन होने के नाते, सत्य पर आधारित हैं क्योंकि सत्य के बिना ज्ञान संभव नहीं है। इसीलिए 'चित' शब्द 'सत्' से जुड़ा है। अतः सत्य एक प्राथमिक अनुष्ठान बन जाता है, यह आश्रम का मूल है। सत्य से जो जाना जा सकता है, वही ज्ञान है; जो इससे बाहर है, वह सत्य नहीं, सच्चा ज्ञान नहीं है। मृत्यु तक सत्य के प्रति दृढ़ रहना, सत्य के ईश्वर में असीम और अटूट आस्था की मांग करता है। फिर भी, गांधी जी स्वीकार करते थे कि जब तक हम नश्वर शरीर में कैद हैं, तब तक ऐसा पूर्ण आत्म-ज्ञान, पूर्ण सत्य की प्राप्ति संभव नहीं हो सकती।

यह असंभवता साधक को अहिंसा या प्रेम की ओर ले जाती है। हिंसा और सत्य की खोज एक साथ नहीं हो सकते; क्योंकि सत्य बाहर नहीं बल्कि भीतर है, और जैसा कि गांधी जी ने कहा था, 'इसलिए, जितना अधिक वह हिंसा का सहारा लेता था, उतना ही वह सत्य से दूर होता जाता था।' 67 यदि हिंसा किसी व्यक्ति को सत्य से दूर करती है, तो वह उसे स्वयं से भी दूर करती है। इस प्रकार हिंसा आत्म-विस्मृति की ओर ले जाती है, इसलिए न तो सत्याग्रह और न ही स्वराज, जो आत्म-साक्षात्कार पर आधारित हैं, हिंसा के साथ संभव हैं। इस प्रकार सत्य ही लक्ष्य है और अहिंसा उसे प्राप्त करने का साधन है।

जिस व्यक्ति का एकमात्र लक्ष्य सत्य है, उसकी सत्याग्रह पद्धति सत्य के अलावा किसी और चीज के प्रति वफादार नहीं हो सकती। 'जो व्यक्ति सत्य से विवाहित है और केवल आस्था की पूजा करता है, वह उसके प्रति बेवफा साबित होता है, यदि वह

67 गांधी, एम.के.; येरवदा मंदिर से, मूल गुजराती से वलीजी गोविंदजी देसाई द्वारा अनुवादित (अहमदाबाद: नवजीवन, 1932, 2003), पृष्ठ 5. प्रस्तावना 33

वह अपनी प्रतिभा को किसी और चीज पर लागू करता है।' 68 यही ब्रह्मचर्य की सच्ची अवधारणा है, चर्या यानी आचरण का वह तरीका जो व्यक्ति को ब्रह्म के करीब लाता है, यानी सत्य के करीब।

ब्रह्मचर्य की इस अवधारणा के अनुसार, ग्यारहों व्रत आत्म-शुद्धि के लिए आवश्यक और समर्पण का अभिन्न अंग थे। अपने जीवन के अंत तक आते-आते इनका विशिष्ट स्वरूप समाप्त हो गया। उन्होंने कहा, ‘अतः यह आवश्यक है कि सभी व्रतों को एक ही मानकर चला जाए। इससे ब्रह्मचर्य का पूर्ण अर्थ और महत्व समझ में आता है। व्यवहार में वही सच्चा ब्रह्मचारी है जो विचार, वचन और कर्म से ग्यारहों व्रतों का पूर्णतः पालन करता है।’ 69 उन्होंने इस बात पर बल दिया कि व्रतों में कोई पदानुक्रम नहीं हो सकता, ‘सभी व्रतों का समान महत्व है। किसी एक व्रत का उल्लंघन सभी व्रतों का उल्लंघन माना जाता है।’ 70 गांधी के अनुसार, ऐसे साधक को ‘सुरक्षा कवच’ की आवश्यकता नहीं होती। 71 गांधी ने दावा किया कि उन्होंने भारत में ब्रह्मचारी के लिए निर्धारित पारंपरिक नियमों का कभी पालन नहीं किया। उन्होंने उनका उल्लेख किया: ‘इस प्रकार वह स्त्रियों, पशुओं और हिजड़ों के बीच नहीं रह सकता, वह किसी स्त्री को अकेले या समूह में भी शिक्षा नहीं दे सकता, वह किसी स्त्री के साथ एक ही चटाई पर नहीं बैठ सकता, वह

किसी स्त्री के शरीर के किसी भी अंग को नहीं देख सकता, वह दूध, दही, घी या किसी भी वसायुक्त पदार्थ का सेवन नहीं कर सकता और न ही स्नान या तेल मालिश कर सकता है।' 72 गांधी का मानना था कि उपरोक्त में से कोई भी संयम आवश्यक नहीं था, कम से कम स्वयं उनके लिए तो नहीं। उन्होंने कुछ संशोधनों के साथ पशु-संबंधी पदार्थों का त्याग किया। गांधी ने कहा, 'एक सच्चा ब्रह्मचारी झूठे संयमों से दूर रहेगा। उसे अपनी सीमाओं के अनुसार अपनी सीमाएँ स्वयं बनानी चाहिए, और जब उसे लगे कि वे अनावश्यक हैं तो उन्हें तोड़ देना चाहिए।' 73

68 गांधी, एम.के.; येरवदा मंदिर से, मूल गुजराती से वलीजी गोविंदजी देसाई द्वारा अनुवादित (अहमदाबाद: नवजीवन, 1932, 2003), पृ. 8.

69 सीडब्लूएमजी, खंड 88, पृष्ठ 59.

70 सीडब्लूएमजी, खंड 88, पृष्ठ 332.

71 8 जून 1947 को गांधी ने हरिजन के लिए इस शीर्षक से एक निबंध लिखा। देखें, सीडब्ल्यूएमजी, खंड 88, पृष्ठ 100-2।

72 सीडब्लूएमजी, खंड 88, पृष्ठ 101.

73 सीडब्लूएमजी, खंड 88, पृष्ठ 102.

गांधी जी ने बार-बार सुखदेव के समान ब्रह्मचारी बनने की अपनी इच्छा व्यक्त की, जिनके बारे में माना जाता है कि वे किसी भी प्रकार की वासना से मुक्त थे; उनका ब्रह्मचर्य इतना पूर्ण था कि उनके आसपास के लोग भी अपनी वासनाओं से मुक्त हो जाते थे; उस संपर्क के क्षण भर के लिए वे भी उनके समान शुद्ध और निर्मल हो जाते थे। यह आदर्श गीता में वर्णित स्थिरप्रज्ञ का भी आदर्श है, यानी वह व्यक्ति जिसकी बुद्धि स्थिर है। गांधी जी ने कहा कि ब्रह्मचर्य को अपने जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा मानने से बहुत पहले ही वे गीता के द्वितीय प्रवचन के श्लोक 62 और 63 में वर्णित स्थितप्रज्ञ की ओर आकर्षित हो गए थे। वे श्लोक इस प्रकार हैं:

यदि एक

इंद्रियों के विषयों पर चिंतन करता है, वहीं से प्रेरणा उत्पन्न होती है

आकर्षण से ही इच्छा उत्पन्न होती है।

इच्छा तीव्र जुनून में बदल जाती है, जुनून ही सब कुछ पैदा करता है।

लापरवाही, फिर स्मृति—सब धोखा खा गए—

नेक उद्देश्य को त्याग देता है, और मन को कमजोर कर देता है।

जब तक उद्देश्य, मन और मनुष्य सब नष्ट न हो जाएं। 74

ब्रह्मचारी का मूल प्रशिक्षण इंद्रियों द्वारा प्रदत्त सुखों के प्रति उदासीन रहना सीखना है। स्थितप्रज्ञ वह है जो मन में उत्पन्न होने वाली सभी लालसाओं को त्याग देता है और केवल आत्मा से ही सुख पाता है, और वह है जिसकी इंद्रियाँ चारों ओर से अपने विषयों से बंधी हुई हैं, ताकि मन दुःखों से मुक्त रहे और सुखों की लालसा न करे, जो जुनून, भय और क्रोध से मुक्त हो, जो कहीं भी आसक्ति न रखता हो; केवल ऐसा ब्रह्मचारी ही संसार में इंद्रियों के बीच विचरण कर सकता है, जिनकी इंद्रियाँ पसंद-नापसंद से मुक्त होकर आत्मा के वश में हों।

74 सर एडविन अर्नोल्ड का अनुवाद। देखें, गांधी, एम. के. आत्मकथा: एक आलोचनात्मक संस्करण, पृष्ठ 146।

75 II:55.

76 II:68.

77 II:56.

78 II:64. प्रस्तावना xxxv

मन को प्रशिक्षित करने का एक तरीका उपवास करना है, न कि शरीर को कष्ट देना, बल्कि उपवास करना। गांधी जी जानते थे कि गीता के अनुसार, 'जब मनुष्य अपनी इंद्रियों को भूखा रखता है, तो उन इंद्रियों के विषय उसके लिए लुप्त हो जाते हैं, लेकिन उनके लिए तड़प नहीं।' 79 परम सत्य के दर्शन होने पर तड़प लुप्त हो जाती है।

यज्ञ

गांधी ने तर्क दिया कि यह श्लोक वास्तव में आत्म-शुद्धि के लिए उपवास का समर्थन करता है। आत्म-शुद्धि के रूप में उपवास, उपवास (ईश्वर के निकट निवास करना) है, और उपवास तभी किया जा सकता है जब इंद्रियों के उपवास के साथ ईश्वर को देखने की इच्छा भी हो, क्योंकि 'उपवास के बिना प्रार्थना नहीं होती और प्रार्थना के बिना सच्चा उपवास नहीं होता।' 80

दूसरा है यज्ञ। गीता में कहा गया है कि 'सन्यास के साथ ही सृष्टि के स्वामी ने सृष्टि की रचना की,' 81 और संसार तब तक कायम रहेगा जब तक यज्ञ होता रहेगा, क्योंकि 'सन्यास से वर्षा होती है'। 82 गांधी जी को यज्ञ शब्द सौंदर्य और शक्ति से परिपूर्ण लगा। उन्होंने इस शब्द का अर्थ बलिदान, सेवा भाव समझा। उन्होंने बलिदान के इस विचार को सभी धर्मों का आधार माना। उनके आदर्श यीशु मसीह थे। गांधी जी ने कहा कि उन्होंने ही मार्ग दिखाया था, इसलिए यज्ञ शब्द को यीशु के जीवन और मृत्यु के तरीके से समझना चाहिए। जब दूसरों का जीवन नष्ट होता है तो

वह बलिदान नहीं होता, सर्वश्रेष्ठ बलिदान तो अपना प्राण त्यागना होता है। उन्होंने लिखा, 'यीशु ने अपने लोगों के उद्धार के लिए कांटों का ताज पहना, अपने हाथों और पैरों में कीलें ठोंकवाईं और प्राण त्यागने से पहले पीड़ा सहन की।' यह अनादि काल से यज्ञ का नियम रहा है, यज्ञ के बिना पृथ्वी एक क्षण के लिए भी अस्तित्व में नहीं रह सकती।' 83 गांधी जी के लिए यज्ञ का अर्थ था दूसरों की सेवा और परम अर्थ में आत्म-बलिदान। उन्होंने कहा, 'यह शरीर ईश्वर को समर्पित किया गया है।'

79 II:59.

80 सीडब्लूएमजी, खंड 53, पृष्ठ 259.

81 III:10.

82 III:14.

83 सीडब्लूएमजी, खंड 20, पृष्ठ 404.

हम केवल इसलिए इसका उपयोग करें ताकि हम इससे समस्त सृष्टि की सेवा कर सकें। इसलिए, गीता कहती है, जो यज्ञ किए बिना भोजन करता है, वह चोरी का भोजन करता है। जो व्यक्ति पवित्र जीवन जीना चाहता है, उसका प्रत्येक कार्य यज्ञ के समान होना चाहिए।

लेकिन रोजमर्रा की जिंदगी में ऐसा बलिदान कैसे किया जा सकता है? गांधी जी का जवाब दो तरह का था: एक तो उन्होंने एक बार फिर बाइबल का सहारा लिया और दूसरा पूरी तरह से उनका अपना था।

बाइबल कहती है, 'अपने माथे के पसीने से अपनी रोटी कमाओ।' गांधी ने इसे आश्रम के जीवन का केंद्र बनाया और काम की प्रकृति का वर्णन करने के लिए टॉलस्टॉय से 'रोटी श्रम' शब्द लिया। यह एक शाश्वत सिद्धांत था; रोटी श्रम करना धर्म, कर्तव्य था, क्योंकि गीता के अनुसार, जो लोग इस प्रकार का यज्ञ नहीं करते थे, वे चोरी का भोजन खाते थे। गांधी के अनुसार, यज्ञ का दूसरा रूप उनके समय की विशेषता थी, क्योंकि प्रत्येक युग का अपना विशिष्ट यज्ञ हो सकता है और होना चाहिए, यह युग-धर्म था। गांधी ने कहा कि उनके समय का यज्ञ कताई था; यही युग-धर्म था। कताई आश्रम का एक अनिवार्य अनुष्ठान था; प्रत्येक सदस्य को प्रतिदिन 140 धागे कातने होते थे, प्रत्येक धागा 4 फीट लंबा होता था। इस कताई को सूत्र-यज्ञ या यज्ञीय कताई कहा जाता था। जैसे-जैसे उनका यह विश्वास गहराता गया कि उनके समय में यज्ञात्मक कताई ही एकमात्र सच्चा यज्ञ है, उन्होंने आश्रमवासियों के साथ मिलकर आश्रम का नाम बदलने का संकल्प लिया। आश्रम, जिसे पहले सत्याग्रह आश्रम कहा जाता था, का नाम बदलकर उद्योग मंदिर (शाब्दिक रूप से, उद्योग का मंदिर) कर दिया गया। उद्योग शब्द की व्याख्या करते हुए गांधीजी ने कहा, 'उद्योग को भगवद् गीता के प्रकाश में पढ़ा जाना चाहिए।' 86

गांधी जी के लिए, भक्त, ज्ञानी, स्वराज के साधक, आश्रमवासी, सत्याग्रही बनने का प्रयास करना, जिसकी एकमात्र सच्ची भक्ति ब्रह्मचर्य के निरंतर अभ्यास के माध्यम से सत्य के प्रति थी, उनका एकमात्र वास्तविक पहलू था। 'स्थायी मूल्य की बात मेरा दृढ़ संकल्प है।'

84 देसाई, महादेव; निस्वार्थ कर्म का सुसमाचार या गांधी के अनुसार गीता, पृ. 177.

85 प्रारंभ में कताई समयबद्ध थी, आधा घंटा; बाद में माप को काते गए धागों में बदल दिया गया।

86 सीडब्लूएमजी, खंड 43, पृष्ठ 203, प्रस्तावना xxxvii

सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य पर, जो मेरा वास्तविक अंश है। मेरा वह स्थायी अंश, चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो, तुच्छ नहीं समझा जाना चाहिए। वही मेरा सब कुछ है।' 87 इसी कारण गांधी ने इस बात पर जोर दिया कि ब्रह्मचर्य किसी भी परिस्थिति में अक्षुण्ण रहना चाहिए। उन्होंने इसके माध्यम से अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनने, सत्य नारायण के प्रति समर्पण करने और जीवन की पवित्रता, कठोर सतर्कता और निरंतर अभ्यास से उत्पन्न शक्ति को प्राप्त करने की इच्छा रखी। उनका मानना और आशा थी कि सत्य के प्रति उनका समर्पण उनमें ऐसी अहिंसा उत्पन्न करेगा जो दूसरों को भी प्रभावित करेगी और उनमें वैसी ही अहिंसा भर देगी। वे इस खोज में तय की जाने वाली दूरी से अवगत थे। 'मैंने अपने विचारों पर वह नियंत्रण प्राप्त नहीं किया है जो मुझे अहिंसा के अपने शोध के लिए चाहिए। यदि मेरी अहिंसा को संक्रामक और प्रभावी होना है, तो मुझे अपने विचारों पर अधिक नियंत्रण प्राप्त करना होगा।' 88

उन्होंने बार-बार स्वयं को अपूर्ण ब्रह्मचारी बताया। अपूर्णता का बोध, अपने पापमय स्वभाव की जागरूकता, एक भक्त की पहचान है। भक्त पापी होता है और गांधी, तुलसी और सूरदास की तरह, स्वयं को ऐसा ही मानते थे। 'तुलसीदास स्वयं को सबसे पापी मानते थे, "मेरे जैसा कुटिल, दुष्ट और कामुक कौन है?" सूरदास ने गाया।' 89 यह विनम्रता की भाषा नहीं थी, बल्कि हृदय की अनुभूति की अभिव्यक्ति थी। गांधी का दावा यह नहीं था कि उन्हें पूर्ण ब्रह्मचारी कहा जाए, क्योंकि ऐसा दावा ब्रह्मचर्य को कलंकित करता और सत्य की चमक को धूमिल करता। 'संसार के लिए यह जानना ही क्यों पर्याप्त नहीं है कि मैं एक सच्चा साधक हूँ, मैं पूर्णतः जागृत हूँ, और मेरा प्रयास निरंतर और अडिग है?' 90 इसलिए वे यह दावा कर सकते थे कि उनका जीवन और विचार उस अवस्था की ओर अग्रसर हैं। अपने संन्यास की सार्वजनिक घोषणा के बाद, कई सहयोगियों ने उनकी इस असंभव सी खोज पर प्रश्न उठाए। उन्होंने तर्क दिया कि जिस पूर्ण ब्रह्मचर्य की वे खोज कर रहे थे, उसे संसार में जीने और उसकी सेवा करने वाला व्यक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। गांधी ने तर्क दिया कि आदर्श की अप्राप्यता आदर्श की कमी नहीं बल्कि साधक की कमी है।

87 सीडब्लूएमजी, खंड 30, पृष्ठ 16.

88 सीडब्लूएमजी, खंड 67, पृष्ठ 197.

89 सीडब्लूएमजी, खंड 26, पृष्ठ 33.

90 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 30, पृष्ठ 15

सिद्धि ही साधक को दिया गया एकमात्र प्रयास है। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि यदि यही मापदंड लागू किया जाए, तो अहिंसा का अभ्यास भी निष्फल हो जाएगा। 'एक सिद्ध ब्रह्मचारी को किसी भी परिस्थिति में वासना से अप्रभावित रहना चाहिए। यदि आप कहते हैं कि कोई भी कभी भी ऐसी वासना से मुक्ति प्राप्त नहीं कर पाया है, और न ही कभी कर पाएगा, तो इसका अर्थ है कि हमें ब्रह्मचर्य के अभ्यास का प्रयास छोड़ देना चाहिए। यदि यह सही है, तो इसका अर्थ यह है कि कोई भी कभी भी पूर्ण अहिंसा का अभ्यास नहीं कर सकता।' 91 गांधीजी इस बात से अवगत थे कि उनके द्वारा चुने गए मार्ग में कोई सापेक्षिक गुण नहीं था, या तो उन्हें सफल होना था या असफलता को अपना भाग्य स्वीकार करना था। एक करीबी सहयोगी ने उन्हें आश्वस्त करते हुए लिखा कि गांधीजी यौन चेतना के लिए बहुत पवित्र थे। उन्होंने इस धारणा को तुरंत खारिज कर दिया। 'काश यह एक सच्चा प्रमाण पत्र होता। मुझे आपको निराश करने का खेद है। मैं उस चेतना को खोने का प्रयास कर रहा हूँ। लेकिन मैंने इसे खोया नहीं है। उस चेतना का खोना सापेक्षिक नहीं हो सकता; यह पूर्ण होना चाहिए। मुझे किसी ऐतिहासिक उदाहरण का ज्ञान नहीं है।' मुझे पता है कि इतिहास के लिए ऐसे उदाहरणों को दर्ज करना मुश्किल है।' 92

यह तर्क भी दिया गया कि गांधीजी को हर हाल में, हर परिस्थिति में, सभी महिलाओं से संपर्क से बचना चाहिए। इससे उनकी असफलताओं का दोष महिला सहयोगियों पर मढ़ दिया गया। गांधीजी ने तुरंत इसका खंडन करते हुए कहा: 'आप मुख्य बात को नज़रअंदाज़ कर रहे हैं। इसमें महिला दोषी नहीं है। मैं दोषी हूँ। मुझे अपेक्षित पवित्रता प्राप्त करनी चाहिए।' 93 उनका एक और तर्क था। उन्होंने ब्रह्मचर्य के प्रयोग सत्याग्रही के रूप में किए थे। सत्याग्रही का प्रयोग किसी और को हानि नहीं पहुँचा सकता क्योंकि प्रयोग का विषय और वस्तु सत्याग्रही ही होता है। 'यदि मेरा प्रयोग सत्याग्रही का है, तो किसी को भी कोई हानि नहीं हो सकती।' 94

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में गांधी जी ने स्वयं को रामनामा में समर्पित कर दिया। वे असफलता और घोर निराशा से घिरे हुए थे। यह गांधी जी की गहरी आस्था और उनकी घोर निराशा और अकेलेपन का एक साथ प्रतीक था। रामनामा उनके लिए उपचार और शायद एकमात्र उपाय बन गया।

91 सीडब्लूएमजी, खंड 67, पृष्ठ 106

92 सीडब्लूएमजी, खंड 47, पृष्ठ 9.

93 सीडब्लूएमजी, खंड 67, पृष्ठ 118.

94 सीडब्लूएमजी, खंड 79, पृष्ठ 192.

जिस उपचार पर वे भरोसा करने लगे थे। भारत की स्वतंत्रता के स्वरूप पर चल रही गहन बहस के बीच, गांधीजी अक्सर उरुली-कंचन नामक एक प्राकृतिक चिकित्सा क्लिनिक में जाते थे। यह एकांतवास उनके लिए न केवल उन रोगियों के रोगग्रस्त शरीर के लिए, जिनका वे इलाज करते थे, बल्कि भारत के रोग के लिए भी एक उपचार, एक उपचार खोजने का माध्यम था। 95 उन्होंने सभी से शुद्ध हृदय से रामनाम का पाठ करने का आग्रह किया। भारत के शरीर और राजनीतिक व्यवस्था दोनों के रोग का उपचार रामनाम में निहित था। उन्होंने रामनाम को अचूक उपाय बताया, जैसा कि उन्होंने गुजराती में कहा था 96 रामबन। रामनाम अब न तो प्रतीक था और न ही रूपक। रामनाम स्वयं ही सार बन गया था। रामनाम अपने से बाहर किसी वास्तविकता या उपस्थिति का संकेत नहीं देता था। यह गांधीजी के लिए वास्तविक बन गया था। इस वास्तविकता को सिद्ध करना उनका कर्तव्य था। उन्हें विश्वास था कि उनके चारों ओर फैली हिंसा उनकी अपनी विफलता, उनकी अपूर्ण अहिंसा और अपूर्ण ब्रह्मचर्य के कारण थी। नोआखली और बिहार के तबाह गांवों से गुजरते हुए उन्हें नींद नहीं आ रही थी। रामनाम का जाप भी उन्हें शांति नहीं दे पाया। उन्होंने विलाप किया: 'मैं, जो दूसरों को रामनाम के सभी उपचार गुणों का उपदेश देता हूँ, स्वयं केवल इसी पर निर्भर रहकर संतुष्ट क्यों नहीं हो सकता?' 97

भयंकर अग्नि से घिरे गांधी जी ने अंतिम यज्ञ की शुरुआत की। मनु गांधी इस यज्ञ में भागीदार बने, जिसमें उन्हें उनके साथ बिस्तर साझा करना था। उनके सबसे करीबी सहयोगियों ने इस 'प्रयोग' को अनैतिक और अधर्म करार दिया। गांधी जी ने लगभग सर्वव्यापी निंदा का जवाब अप्रत्याशित आध्यात्मिक अहंकार से दिया। उन्होंने तर्क दिया कि उनका प्रयास ब्रह्मचर्य की अवधारणा का विस्तार करना था। 'एक सुधारक दूसरों के परिवर्तित होने का इंतजार नहीं कर सकता, उसे नेतृत्व करना चाहिए और सर्वव्यापी विरोध के बावजूद अकेले ही आगे बढ़ना चाहिए। मैं अपने अवलोकन, अध्ययन और अनुभव के आधार पर ब्रह्मचर्य की वर्तमान परिभाषा का परीक्षण, विस्तार और संशोधन करना चाहता हूं, जिसकी शपथ आप लेते हैं।' 98

95. बीमार भारत का रूपक उनके मन में हिंद स्वराज लिखने के समय से ही बसा हुआ था; जिसमें उन्होंने बीमार भारत के लिए चिकित्सक खोजने की आवश्यकता की बात कही थी।

96 शाब्दिक रूप से, राम का बाण, बाण के समान अचूक।

97 सीडब्लूएमजी, खंड 86, पृष्ठ 218.

98 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 87, पृष्ठ 90–1

उन्होंने दावा किया कि वे अपने सभी साथियों से बेहतर सच्चे ब्रह्मचर्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। 99

उनका दूसरा तर्क कहीं अधिक मौलिक था। उन्होंने दावा किया कि उन्होंने जो कार्य शुरू किया था वह यज्ञ था, प्रयोग नहीं। प्रयोग का आरंभ और अंत होता है, वह मानवीय इच्छाशक्ति के अधीन होता है, जबकि यज्ञ, जो कर्तव्य और धर्म है, ऐसा नहीं है। '"प्रयोग" एक अनुपयुक्त शब्द

है। मैंने इसका प्रयोग किया है। यह वर्तमान से इस मायने में भिन्न है कि एक को मैं रोक सकता था, जबकि दूसरा, जो धर्म है, उसे नहीं रोका जा सकता।' 100

गांधी का मानना था कि सत्य के प्रति उनके समर्पण ने उनमें स्वायत्तता का कोई अंश नहीं छोड़ा था। इसी कारण उन्होंने आशा जताई कि उनका यज्ञ उन्हें आदर्श का एक दर्शन प्रदान करेगा और यदि उन्हें वह क्षणिक दर्शन भी मिल जाए तो संसार का उद्धार हो जाएगा। 'मेरा मानना है कि यदि मेरी कल्पना के अनुरूप केवल एक ब्रह्मचारी भी जन्म ले ले, तो संसार का उद्धार हो जाएगा।' 101 इस अल्पकालिक यज्ञ में उन्होंने अनुभव किया कि उनके प्रयास चरम पर पहुँच गए हैं और अंततः उन्हें शुद्ध अवस्था का दर्शन हो गया है। उन्होंने यह बात अपने यज्ञ साथी मनु गांधी के साथ साझा की। 'मैंने अपने द्वारा लिए गए ग्यारह व्रतों का सफलतापूर्वक पालन किया है।' यह पिछले साठ वर्षों से मेरे प्रयासों की परिणति है... इस यज्ञ में मुझे सत्य और पवित्रता के उस आदर्श की झलक मिली जिसके लिए मैं प्रयासरत रहा हूँ।' 102 यह गांधी के दावे का सबसे प्रत्यक्ष और स्पष्ट कथन है; इस यज्ञ से पहले उन्होंने कभी भी सत्य और पवित्रता के आदर्श की थोड़ी सी भी झलक पाने का दावा नहीं किया था।

आत्मा की काली रात

गांधी जी की पूर्ण ब्रह्मचर्य और उसके माध्यम से पूर्ण अहिंसा प्राप्त करने की खोज को चुनौती मिली। आश्रम में उनके सहयोगियों (साबरमती और सेवाग्राम दोनों जगह) ने तर्क दिया कि वे, एक

99 सीडब्लूएमजी, पृ. 91.

100 सीडब्लूएमजी, पृ. 104.

101 सीडब्लूएमजी, खंड 88, पृष्ठ 348.

102 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 87, पृष्ठ 384. प्रस्तावना xli

ब्रह्मचारी जीवन का अभ्यास करने वाले व्यक्ति को महिलाओं से किसी भी प्रकार का संपर्क नहीं रखना चाहिए और ब्रह्मचारी के लिए निर्धारित नौ प्रकार की सुरक्षा का पालन करना चाहिए। साबरमती में, उनके सहकर्मियों (संभवतः सभी पुरुष) ने उनसे कहा कि वयस्क लड़कियों और महिलाओं के कंधों पर हाथ रखकर चलने का उनका अभ्यास शालीनता की स्वीकृत धारणाओं का उल्लंघन करता है। लेकिन आश्रमवासियों के साथ चर्चा के बाद भी यह प्रथा जारी रही। सितंबर 1935 में यही प्रश्न उनके समक्ष फिर से उठाया गया, लेकिन इस बार इसके विरोध में तर्क देने वाले लोग इस बात के प्रमाणों से लैस थे कि उनका यह अभ्यास दूसरों को प्रोत्साहित कर रहा था और उन्होंने गांधी के इस अभ्यास में औचित्य खोजने का प्रयास किया। गांधी, हालांकि ब्रह्मचारी जीवन का अभ्यास करने वाले व्यक्ति के लिए 'सुरक्षा की दीवारें' खड़ी करने की आवश्यकता से आश्वस्त नहीं थे, फिर भी उन्होंने 21 सितंबर 1935 को हरिजन में प्रकाशित

एक खुले पत्र के माध्यम से इस प्रथा का त्याग करने का निर्णय लिया। यद्यपि मैं ऐसे ब्रह्मचर्य में विश्वास नहीं करता जिसमें विपरीत लिंग के स्पर्श से बचाव के लिए सुरक्षा की दीवार की आवश्यकता होती है और जो जरा से भी प्रलोभन के संपर्क में आने पर विफल हो जाता है, फिर भी मैं उस स्वतंत्रता से जुड़े खतरों से अनभिज्ञ नहीं हूँ जो मैंने ग्रहण की है। 104 यह त्याग अल्पकालिक सिद्ध हुआ क्योंकि आश्रम की महिलाओं, विशेषकर सुशीला नायर, प्रभावती, राज कुमारी अमृत कौर और मीराबेन ने उनके स्पर्श से इस प्रकार के अलगाव का विरोध किया। अप्रैल 1938 में गांधीजी को वह 'अपमानजनक', 'नीचा दिखाने वाला' और 'गंदा' अनुभव हुआ जिसका हमने पिछले भाग में वर्णन किया है। जैसे ही उनके 'पतन' और उनकी निराशा की खबर व्यापक रूप से फैली, उन्हें एक बार फिर सभी महिलाओं से संपर्क से बचने की सलाह दी गई—जिनमें कस्तूरबा और उनकी चिकित्सक डॉ. सुशीला नायर भी शामिल थीं। गांधी जी व्याकुल, गहरे विचलित और ब्रह्मचर्य के अपने अभ्यास के बारे में मूलभूत संदेहों से घिरे हुए थे। वे पहले से कहीं अधिक सुझावों के प्रति ग्रहणशील थे और 2 जून 1928 को उन्होंने ब्रह्मचारी से अपेक्षित पारंपरिक आचरण का पालन करने और सभी महिलाओं, जिनमें बा भी शामिल थीं, जिनसे अब वे प्रतिदिन शारीरिक संबंध बनाते थे, के साथ किसी भी प्रकार के शारीरिक संपर्क से परहेज करने का निर्णय लिया। उन्होंने आश्रमवासियों को एक गोपनीय परिपत्र भेजा।

103 ये हैं i) सहवास, ii) बातचीत, iii) निकटता, iv) अवलोकन, v) बाधाओं की अनुपस्थिति, vi) गृहस्थ होने की यादें, vii) स्वाद पर नियंत्रण, viii) अधिक खाने से बचना, ix) आलस्य।

104 सीडब्लूएमजी, खंड 61, पृष्ठ 437.

जिसमें उन्होंने अपने आचरण को ब्रह्मचर्य का उल्लंघन बताया। उन्होंने तर्क दिया कि, संभवतः उन्हें दिए गए तर्क को दोहराते हुए, उनके द्वारा उन स्वतंत्रताओं का उपयोग करना गलत था जिन्हें उन्होंने अपने सहकर्मियों को लेने से मना किया था।

उन्होंने कहा, 'कल मुझे यह बात स्पष्ट हो गई कि मैंने अपने सहकर्मियों को वह स्वतंत्रता प्राप्त करने से रोकना गलत समझा था जो मैंने स्वयं को दी थी। मुझे समझ नहीं आता कि मैं इतने वर्षों तक इसे कैसे सहन करता रहा। मुझे लगता है कि मेरा यह कार्य अहंकार और ईर्ष्या से प्रेरित था। यदि मेरा प्रयोग खतरनाक होता, तो मैं इसे नहीं करता। और यदि यह करने लायक होता, तो मैं अपने सहकर्मियों को अपनी शर्तों पर इसे करने के लिए प्रोत्साहित करता। मेरा प्रयोग ब्रह्मचर्य के स्थापित मानदंडों का उल्लंघन था। ऐसा अधिकार केवल सुखदेवजी जैसे संत को ही प्राप्त हो सकता है जो दिन के सभी समयों में विचार, वचन और कर्म में शुद्ध रह सकते हैं। इस प्रकार विचार करने के बाद मैं कल इस निर्णय पर पहुँचा।' 105 एक अन्य पत्र में उन्होंने स्वयं को फटकारा और कहा कि उनका आचरण 'घोर अज्ञानता और निश्चित रूप से अहंकार का परिणाम था।' 106

घोर निराशा में डूबे हुए उन्होंने अपने कई 'बच्चों', विशेषकर अपनी 'बेटियों' से सहारा मांगा,

जिनके स्पर्श का उन्होंने अभी-अभी त्याग किया था। उन्होंने मीरा को लिखा, 'मुझे इतने सारे बच्चों का पिता होने पर गर्व होगा, यदि उनमें से कोई भी मुझे सहारा दे और निराशा के कुएँ से बाहर निकाल ले।' 107

गांधी जी की सोच में एक मूलभूत खामी थी, जिसका खुलासा उनकी 'बेटियों' ने किया। गांधी जी को यह विश्वास दिलाया गया था कि पूरी तरह जागृत अवस्था में भी उनका अनैच्छिक स्खलन महिलाओं के निकट रहने के कारण हुआ था। उनका तर्क था कि महिलाएं ही प्रलोभन के माध्यम से ब्रह्मचारी को उसकी उच्च अवस्था से गिरा देती हैं। जैसे-जैसे वे धीरे-धीरे 'निराशा के कुएँ से बाहर निकले', उन्हें अपनी बेटियों की वास्तविकता का एहसास हुआ, जिसे वे जानते तो थे, लेकिन निराशा के कारण भूल गए थे। वे जानते थे कि महिलाएं उनके पतन का कारण नहीं थीं। कस्तूरबा सहित किसी भी महिला ने, यहाँ तक कि उनके यौन संबंधों के दौरान भी, कभी भी उन्हें प्रभावित नहीं किया था।

105 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 67, पृ. 104–5.

106 सीडब्लूएमजी, खंड 67, पृष्ठ 132.

107 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 67, पृष्ठ 61. प्रस्तावना xliii

'मोहक स्त्री'। बाद में उन्होंने कहा कि 'मेरी पत्नी की तरह किसी भी स्त्री में मेरे लिए कोई आकर्षण नहीं था।' 108 उन्होंने यह भी महसूस किया कि जिन स्त्रियों के स्पर्श से उन्हें बचने के लिए कहा गया था, जिनकी निकटता को न केवल सीमित किया गया था बल्कि निषिद्ध भी किया गया था, वे सभी ब्रह्मचारी थीं—सुशीला, प्रभावती, मीरा, अमृत कौर और अन्य, वे सभी उन्हीं की तरह पवित्र थीं। उन्होंने यह भी महसूस किया कि स्त्रियों को अपने जीवन से और उन्हें उनके जीवन से अलग रखना, उनकी अनुपस्थिति, मौन और हाशिए पर धकेलना, उनके स्वयं के प्रयास को नकारना था, अर्थात् मानसिक रूप से स्त्री बनने का प्रयास। उन्होंने बिना किसी भय या संकोच के मासिक धर्म, शारीरिक क्रियाएं, संतानोत्पत्ति, स्तनपान और कारावास जैसे अत्यंत व्यक्तिगत और निजी विषयों पर आपस में चर्चा की थी। आश्रम में और सार्वजनिक जीवन में स्त्रियां उनकी 'सहकर्मी' थीं। वे जानते थे कि कई मुस्लिम स्त्रियां उनके सामने पर्दा नहीं करती थीं। वह और उनके आसपास की महिलाएं जानती थीं कि गांधी ने जानबूझकर कई ऐसी गतिविधियों और आत्म-अभ्यासों को अपनाया था जो परंपरागत रूप से स्त्रीत्व से जुड़ी हुई थीं या महिलाओं के कार्यक्षेत्र से संबंधित थीं। दो आत्म-अभ्यास जो उन्हें परिभाषित करते हैं—कताई और उपवास—महिलाओं के कार्यक्षेत्र और अनुष्ठानिक प्रथाओं से संबंधित थे। उनकी प्रिय आत्म-छवि एक 'नर्स' की थी। जैसे ही गांधी अपने गहरे विश्वासों के प्रति जागृत हुए, उन्हें एहसास हुआ कि उन्होंने एक असत्य बात कही थी। उनकी असफलताओं के लिए महिलाओं को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। उन्होंने लिखा, 'आप महत्वपूर्ण बिंदु को नहीं समझ पा रही हैं। दोषी महिला नहीं है, मैं हूं। मुझे आवश्यक पवित्रता प्राप्त करनी चाहिए।' 109 उन्होंने स्वीकार किया कि 'मुझमें ब्रह्मचर्य की अपूर्णता के कुछ अन्य कारण हैं।' 110 जैसे ही गांधी ने अपने मन में महिलाओं को सह-ब्रह्मचारी के रूप में समान स्थान दिया, सुरक्षा की दीवारों की आवश्यकता समाप्त हो गई। 17 सितंबर 1938 को, उन्होंने नौ गुना किलेबंदी का पालन करने की घृणित

प्रथा को त्याग दिया और महिलाओं के प्रति और इस प्रकार स्वयं के प्रति अपने स्वाभाविक आचरण को पुनः प्राप्त कर लिया।

23 नवंबर 1925 को, दो दिनों की पीड़ा के बाद, गांधी ने सात दिनों के उपवास पर जाने का फैसला किया। साबरमती स्थित सत्याग्रह आश्रम में कुछ युवा लड़कों और लड़कियों में 'नैतिक पतन' हो गया था।

108 सीडब्लूएमजी, खंड 70, पृष्ठ 314.

109 सीडब्लूएमजी, खंड 67, पृष्ठ 118.

110 सीडब्लूएमजी, खंड 67, पृष्ठ 363.

गांधी जी के लिए, प्रधान कार्यकर्ता की पवित्रता या अपवित्रता का प्रभाव पूरे समुदाय पर पड़ता था। यदि वह दोषरहित होता, तो भी वातावरण उसकी निर्दोषता से प्रभावित होता। इस प्रकार, उनके आसपास के लोगों में असत्य एक गहरी विफलता का लक्षण था, एक ऐसी विफलता जिसका श्रेय केवल उन्हीं को दिया जा सकता था। यह इस बात का संकेत था कि जिस प्रकाश के साथ वे अपना जीवन जीना चाहते थे, वह अभी भी उनसे दूर था। उन्हें जो करने की आवश्यकता थी, वह थी अपने भीतर गहराई तक जाकर अंधकार को दूर करने का प्रयास करना।

1946 में जब बंगाल और बाद में बिहार में हिंसा और नरसंहार का भयावह तांडव मचा, तो गांधीजी गहरे निराशा में डूब गए। उन्होंने अपने शरीर को भोजन से वंचित कर दिया और अर्ध-उपवास पर चले गए। 5 नवंबर 1946 को उन्होंने कलकत्ता के पास सोदेपुर से जवाहरलाल नेहरू को लिखा, “और मेरे भीतर से यह पुकार आई: “आप इस नरसंहार के साक्षी क्यों बनें? यदि आपके वचन, जो दिन के उजाले के समान स्पष्ट हैं, पर ध्यान नहीं दिया गया, तो आपका काम समाप्त हो गया। आप क्यों नहीं मर जाते?”” 111 उसी दिन उन्होंने सरदार पटेल को लिखा, “मेरा जीवित रहना पूरी तरह से भारत में पूर्ण शांति की स्थापना पर निर्भर करता है।” 112 हिंसा ने अहिंसा की गहरी और सामूहिक विफलता का संकेत दिया, फिर भी गांधीजी अहिंसा में अपने विश्वास में अडिग रहे। उन्होंने बिहार के लोगों से कहा, “मुझे अपनी अहिंसा पर जरा भी शर्म नहीं है। मैं बंगाल यह देखने आया हूँ कि मेरी अहिंसा कितनी देर तक मुझमें प्रकट हो पाती है।” 113

अहिंसा को उनमें स्वयं को प्रकट करना था। और जब ऐसा हुआ, तो गांधीजी का मानना था कि अहिंसा भारत में शांति को पुनः स्थापित करेगी। स्वयं में उस अहिंसा को खोजने के लिए गांधीजी ने शारीरिक एकांतवास में जाने का निर्णय लिया ताकि वे आत्मचिंतन कर सकें। ‘मैं कहाँ खड़ा हूँ? क्या मैं अपने व्यक्तित्व में इस अहिंसा का प्रतिनिधित्व करता हूँ? यदि मैं करता हूँ, तो छल और घृणा जो वातावरण को विषैला बना रहे हैं, घुल जाएंगे। केवल अपने साथियों से, जिन पर मैंने हमेशा भरोसा किया है, अलग होकर और अपने पैरों पर खड़े होकर ही मैं अपनी दिशा पा सकूँगा और ईश्वर में अपनी आस्था की परीक्षा भी ले सकूँगा।’ 114 20 नवंबर 1946 को उन्होंने लोगों के सामने हिंसाग्रस्त गाँव में रहने के अपने संकल्प की घोषणा की।

111 सीडब्लूएमजी, खंड 86, पृष्ठ 78.

112 सीडब्लूएमजी, खंड 86, पृष्ठ 79.

113 सीडब्लूएमजी, खंड 86, पृष्ठ 92.

114 सीडब्लूएमजी, खंड 86, पृष्ठ 134, प्रस्तावना xlv

श्रीरामपुर में गांधीजी अपने दो साथियों के साथ थे: प्रोफेसर निर्मल कुमार बोस, जो एक प्रमुख मानवविज्ञानी, उनके बंगाली शिक्षक और दुभाषिया थे, और श्री परशुराम, जो एक स्टेनोग्राफर थे। 1915 में भारत लौटने के बाद से गांधीजी शारीरिक रूप से इतने एकांत में कभी नहीं थे। श्रीरामपुर में 1450 मुस्लिम और 650 हिंदू निवासी थे, जिनमें से अधिकांश हिंदू गाँव छोड़कर जा चुके थे। निर्मल कुमार बोस ने उस झोपड़ी का वर्णन किया जिसमें उन्होंने 20 नवंबर 1946 से 1 जनवरी 1947 तक 43 रातें बिताईं। 'जिस घर में हम ठहरे थे, वह लकड़ी के ढाँचे से बनी कुछ अलग-अलग झोपड़ियों से मिलकर बना था, जिनकी दीवारें और छतें जस्ती लोहे की चादरों से बनी थीं। फर्श मिट्टी का था... गांधीजी एक आंगन के बीच में एक विशाल झोपड़ी में ठहरे थे, जो चारों ओर से सुपारी और नारियल के घने पेड़ों से घिरी हुई थी।' 115

अपने उस बयान में जिसमें उन्होंने एकांतवास में रहने का संकल्प लिया था, गांधी जी ने अपने जीवन में पहली और शायद एकमात्र बार सत्य और अहिंसा के गुणों पर संदेह व्यक्त किया। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या सत्य और अहिंसा उनके विश्वास के अनुरूप होंगे। अब तक गांधी जी सत्य और अहिंसा के अनुरूप ढलने की अपनी क्षमता और अपने प्रयासों पर संदेह करते रहे थे। इन मूल्यों में, जिन्हें वे शाश्वत और अपरिवर्तनीय मानते थे, उनका अटूट विश्वास डगमगा गया। उन्होंने कहा, 'मैं स्वयं को अतिशयोक्ति और असत्य के बीच पाता हूँ। मैं सत्य को खोज नहीं पा रहा हूँ। घोर अविश्वास व्याप्त है, पुरानी मित्रताएँ टूट गई हैं, सत्य और अहिंसा, जिनकी मैं शपथ लेता हूँ और जिन्होंने, जहाँ तक मुझे पता है, साठ वर्षों तक मेरा सहारा दिया है, वे उन गुणों को प्रदर्शित करने में विफल प्रतीत होते हैं जो मैंने उन्हें दिए हैं।' 116 उसी दिन उन्होंने सेवाग्राम के निवासियों को लिखा कि उन्हें उनके आश्रम लौटने की कोई भी उम्मीद छोड़ देनी चाहिए। उनका यह विश्वास कि वे कभी आश्रम नहीं लौटेंगे, सच साबित होने वाला था। उसी पत्र में उन्होंने सत्याग्रह की शक्ति पर संदेह व्यक्त किया। 'क्या सत्याग्रह, जैसा कि मैं समझता हूँ, दुर्बलों का हथियार है या वास्तव में बलवानों का? मुझे बलवान ही सिद्ध करना होगा, अन्यथा उसे प्राप्त करने के प्रयास में अपना प्राण न्योछावर कर देना होगा।' 117

115 बोस, निर्मल कुमार, माई डेज़ विद गांधी (नई दिल्ली: ओरिएंट लॉन्गमैन, 1974, 1987 पुनर्मुद्रण), पृ. 50.

116 सीडब्लूएमजी, खंड 86, पृष्ठ 138.

117 सीडब्लूएमजी, खंड 86, पृष्ठ 143.

गांधी जी ने जिस आत्मिक अंधकार का अनुभव किया, वह लंबा और निराशा से भरा था। उसी दिन उन्होंने सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह पर भी संदेह किया था। उन्होंने कवि टैगोर के दीर्घकालिक सहयोगी अमिया चक्रवर्ती से अपने अंधकार के बारे में कहा, "मैं प्रकाश की तलाश में भटक रहा हूँ। मैं अंधकार से घिरा हुआ हूँ, लेकिन मुझे सत्य के मार्गदर्शन में कार्य करना चाहिए या उससे बचना चाहिए। मुझे लगता है कि इन दुखद परिस्थितियों में मेरे पास आवश्यक धैर्य और तकनीक नहीं है; पीड़ा और बुराई अक्सर मुझे अभिभूत कर देती हैं और मैं अपने ही रस में जलता रहता हूँ।"

निर्मल कुमार बोस ने उन्हें अपने आप से बुदबुदाते हुए सुना, 'क्या करूँ? क्या करूँ? 119' एक सवाल जो 30 जनवरी 1948 तक उन्हें नहीं छोड़ता था, क्योंकि वे इसे एक कोरस, एक नामस्मरण की तरह दोहराते रहते थे।

4 दिसंबर 1946 को प्यारेलाल को लिखे एक पत्र में उन्होंने अंधकार और अपनी अपर्याप्तता के बारे में लिखा। 'मैं अभी भी भटक रहा हूँ। मुझे लगता है कि मुझे अभी तक अहिंसा की कुंजी नहीं मिली है। मैं एक विशाल यज्ञ करने जा रहा हूँ, लेकिन इस कार्य के लिए मेरी अयोग्यता हर कदम पर प्रदर्शित हो रही है।' 120

हालांकि निराशा से भरे और अंधकार की बात करते हुए लिखे गए प्यारेलाल को लिखे इस पत्र में गांधीजी की सोच में एक मौलिक बदलाव झलकता है। पिछले कई हफ्तों से वे सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह जैसे शाश्वत मूल्यों की विफलता के बारे में बात कर रहे थे, क्योंकि वे उन गुणों पर खरे नहीं उतरते थे जो उन्होंने गांधीजी को दिए थे। इससे उनके मन में एक मूलभूत संदेह पैदा हुआ, एक ऐसा संदेह जो इतना गहरा था कि सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह के अभ्यास की उनकी खोज को ही निष्फल कर देता, क्योंकि उनमें कमी पाई गई थी। श्रीरामपुर के एकांत और अपने अंतर्मन ने उन्हें यह एहसास दिलाया कि शायद उस विफलता और निराशा का मूल कारण उनके भीतर ही था। उन्होंने खुद को इस कार्य के लिए अयोग्य पाया, वे अहिंसा की कुंजी नहीं खोज पा रहे थे। एक बार जब यह परिवर्तन हुआ, तो गांधीजी को अपनी जिम्मेदारी का स्वरूप स्पष्ट हो गया। उन्हें अपने भीतर ध्यान लगाना था, सत्य से अपना जुड़ाव खोजना था, अपने भीतर हिंसा की खोज करनी थी और असत्य और हिंसा को जन्म देने वाली सभी इच्छाओं से खुद को शुद्ध करना था। उन्हें ब्रह्मचर्य का परीक्षण करना था—न कि ब्रह्मचर्य का, जिसके बारे में अब उन्हें कोई चिंता नहीं थी—कि क्या यही एकमात्र मार्ग है।

118 सीडब्लूएमजी, खंड 86, पृष्ठ 192.

119 'मुझे क्या करना चाहिए? मुझे क्या करना चाहिए?', गांधी के साथ मेरे दिन, पृ. 63.

120 सीडब्लूएमजी, खंड 86, पृष्ठ 195, प्रस्तावना xlvii

जो उसे सत्यनारायण तक ले जाएगा। यदि वह इस प्रकार के ब्रह्मचर्य का पालन करने में असफल

रहा, तो सत्य और अहिंसा दोनों ही उससे दूर हो जाएँगे और उसकी अंधकारमय रात और भी लंबी हो जाएगी। उसने लिखा, 'मुझे अपने जीवन में पहले कभी ऐसा अंधकार अनुभव नहीं हुआ, और रात लंबी प्रतीत होती है।' 121

अंधकार और निराशा की इस कभी न खत्म होने वाली रात में ही अठारह वर्षीय युवती मनु ने उनके जीवन में पुनः प्रवेश किया, ताकि वह उनके यज्ञ में भागीदार बन सके, उनके प्रयासों की साक्षी बन सके और उनकी मृत्यु के क्षण में उनके रामनाम के उच्चारण की गवाही दे सके।

आगा खान महल की कैद से रिहा होने के बाद से मनु और गांधी अलग हो गए थे। गांधी आगा खान के महल से कस्तूरबा और महादेव का अंतिम संस्कार करके लौटे थे और उन्हें लगा कि उनके पास मनु को देने के लिए कुछ नहीं है। मनु कभी-कभी सेवाग्राम, महाबलेश्वर और पंचगनी में उनके साथ समय बिताती थीं, सेवाग्राम में डॉ. सुशीला नायर से और बाद में पुणे में डॉ. दिनशॉ मेहता के क्लिनिक में उन्होंने नर्सिंग का औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने शादी न करने का फैसला किया था और उनकी आर्थिक सुरक्षा के लिए उनके पिता जयसुखलाल ने एक ट्रस्ट फंड की व्यवस्था की थी, जिसका मसौदा गांधी ने तैयार किया था।

नोआखली जाने से दो दिन पहले, 4 नवंबर 1946 को, गांधीजी को मनु और जयसुखलाल दोनों के पत्र मिले। जवाब में, गांधीजी ने बिहार में हो रही हिंसा को देखने में अपनी असमर्थता व्यक्त की। उन्होंने लिखा, 'इसलिए इन दिनों मनु को मेरे साथ होना चाहिए था। लेकिन अब लगता है कि उसका आना असंभव है। ईश्वर करे वह कष्टों से मुक्त रहे और सुखी रहे।' 122

1 दिसंबर 1946 को जब यह पत्र सौराष्ट्र के महुवा में मनु तक पहुँचा, तब तक गांधी जी ने एकांतवास का निर्णय ले लिया था और अपने सभी सहयोगियों को नोआखली के तबाह गाँवों में भेज दिया था। गांधी जी के इस कथन से द्रवित होकर कि उनका स्थान उनके साथ है, मनु ने उसी दिन उन्हें पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने एक शर्त रखी कि वे आएँगी, लेकिन उनसे दूर किसी गाँव में नहीं रहना चाहेंगी। 'यदि आप चाहते हैं कि मैं आपसे दूर किसी गाँव में काम करूँ, तो मैं नहीं आना चाहती। मैं...

121 सीडब्लूएमजी, खंड 86, पृष्ठ 198.

122 सीडब्लूएमजी, खंड 86, पृष्ठ 73.

मैं इस तरफ से यथासंभव अपना काम कर रही हूँ। दूसरी ओर, मैं आपके साथ रहने के लिए उत्सुक और बेचैन हूँ, बशर्ते आप मुझे आपकी मदद करने और आपका ख्याल रखने की अनुमति दें।' 123 गांधी ने मनु और जयसुखलाल को नोआखली आमंत्रित किया, इस शर्त के साथ कि यदि उन्हें वातावरण खतरनाक लगे तो वह वापस जा सकती हैं। मनु, जयसुखलाल के साथ 19 दिसंबर 1946 को दोपहर 3 बजे श्रीरामपुर पहुँचीं, गांधी ने उनका स्वागत करते हुए कहा, 'तो आप आ गईं।' 124 वास्तव में वह आ गई थीं, और उनकी मृत्यु तक उनके साथ रहीं।

उस रात 12:45 बजे गांधीजी ने मनु को जगाया और उनसे काफी देर तक बात की। उन्होंने मनु को उनके धर्म का पाठ पढ़ाया और उनसे जयसुखलाल से सलाह लेने और उनके साथ रहने या उन्हें छोड़ने के बारे में निर्णय लेने को कहा। उन्होंने अपनी डायरी में लिखा कि मनु अपने निर्णय पर अडिग रहीं।

हमें सटीक तिथि तो ज्ञात नहीं है, लेकिन संभवतः श्रीरामपुर पहुँचने के कुछ ही समय बाद गांधी और मनु ने एक ही बिस्तर साझा किया। और यहीं से गांधी जी के उस यज्ञ का आरंभ हुआ जिसे वे अपना कर्तव्य मानते थे—एक ऐसा कर्तव्य जिसे त्यागा नहीं जा सकता था—और जिसे उनके सभी साथियों और परिवार के सदस्यों ने बिना किसी अपवाद के अधर्म कहा। इस और इसके बाद के कालखंडों से संबंधित डायरियाँ दूसरे खंड में प्रकाशित की जाएँगी।

गांधी जी के लिए यह प्रथा कोई नई बात नहीं थी। उन्होंने इसे तब एक 'प्रयोग' कहा था, और एक प्रयोग होने के नाते यह दूसरों के लिए जांच के दायरे में था और इसे उनके स्वयं के निर्णय से या कभी-कभी दूसरों के आग्रह पर रोका जा सकता था। यह बात सार्वजनिक रूप से ज्ञात थी कि उन्होंने अतीत में ऐसे प्रयोग किए थे, न केवल उनके करीबी सहयोगियों के बीच, बल्कि सार्वजनिक रूप से भी, क्योंकि उन्होंने विभिन्न पत्रों में इसके बारे में लिखा था और अपनी पत्रिकाओं के माध्यम से इसे सार्वजनिक किया था। व्यापक आलोचनाओं के बावजूद, गांधी जी ने इस प्रथा को जारी रखा। गांधी जी का तर्क था कि एक अभ्यासी ब्रह्मचारी होने के नाते उनका कर्तव्य है कि वे अपने भीतर किसी भी प्रकार की अशुद्धता, कामुक इच्छा और वासना का आत्मनिरीक्षण करें, और वे इस प्रथा को तब तक जारी रखेंगे जब तक कि ऐसा आत्मनिरीक्षण आवश्यक है।

इस यज्ञ के साक्षी निर्मल कुमार बोस ने गांधीजी के संभावित उद्देश्यों पर अटकलें लगाईं। उन्होंने कहा, 'भारत में ऐसे संत हुए हैं जो...'

123 द लोनली पिलग्रिम, पृ. 5.

124 द लोनली पिलग्रिम, पृष्ठ 8. प्रस्तावना xlix

विपरीत लिंग के लोगों के साथ स्वयं को जोड़कर, वे यौन आवेग से ऊपर उठने में सक्षम होते हैं। रहस्यवादी श्री रामकृष्ण के मामले में, ऐसा कहा जाता है कि उनका मनोवैज्ञानिक जुड़ाव इस हद तक पहुँच गया था कि शारीरिक परिवर्तन होने लगे और उनके जीवन के एक चरण में, महिलाओं की तरह, उनकी त्वचा के छिद्रों से समय-समय पर रक्त का स्राव होने लगा। लेकिन गांधीजी ने अपने हृदय के एकांत में भी, कभी भी भावनाओं की तीव्रता के आगे पूर्णतः आत्मसमर्पण नहीं किया।

बोस ने गांधीजी से इस प्रथा के बारे में सवाल किया और उन्हें यह भी चेतावनी दी कि उन्होंने गांधीजी की महिला सहकर्मियों के बीच गांधीजी को 'एकमात्र संपत्ति' के रूप में देखने की प्रवृत्ति देखी थी। 126

बोस ने बातचीत का ब्योरा देते हुए कहा: 'अपनी बात समझाते हुए गांधीजी ने कहा कि यह सच है कि उन्होंने महिला कामगारों को अपना बिस्तर इस्तेमाल करने की इजाज़त दी थी, जिसे कभी-कभी आध्यात्मिक प्रयोग के तौर पर किया जाता था। भले ही उनमें वासना का कोई अंश न हो, लेकिन यह मुमकिन है कि कुछ अंश बचा रह जाए, और इससे इस प्रयोग में हिस्सा लेने वाली लड़कियों को परेशानी हो सकती है। उन्होंने उनसे यह भी पूछा था कि क्या अनजाने में भी उन्होंने उनके दिलों में थोड़ी सी भी बुरी भावना जगाई है।' 127

इस यज्ञ पर आपत्ति जताने वाले पहले व्यक्ति परशुराम थे, जो एन.के. बोस के अलावा गांधीजी के साथ एकमात्र अन्य व्यक्ति थे। एक पत्र में, उन्होंने गांधीजी से कर्तव्य से मुक्त होने का अनुरोध किया क्योंकि वे एक ऐसी प्रथा के साक्षी नहीं बनना चाहते थे जिससे वे सहमत नहीं थे। संभवतः उन्होंने गांधीजी से इस प्रथा को तुरंत रोकने के लिए कहा था। गांधीजी ने उत्तर दिया, 'मैं आपकी मांगों को नहीं मान सकता।' 128 परशुराम 2 जनवरी 1947 को गांधीजी से विदा हो गए। गांधीजी के सबसे करीबी सहयोगी, वे लोग जो गांधीजी की आध्यात्मिक खोज, उनके सभी क्षेत्रों में प्रयोगों - न केवल ब्रह्मचर्य - से अवगत थे, परशुराम के प्रति गांधीजी की प्रतिक्रिया और दृष्टिकोण से बहुत विचलित हुए। फरवरी 1947 में किशोरलाल मशरूवाला,

125 माई डेज़ विद गांधी, पृ. 177.

126 माई डेज़ विद गांधी, पृ. 115.

127 माई डेज़ विद गांधी, पृ. 116.

128 सीडब्लूएमजी, खंड 86, पृष्ठ 299.

स्वामी आनंद और नरहरि पारिख ने गहरी आपत्ति व्यक्त की और हरिजन दस्तावेज़ों और उनसे संबंधित सभी पत्राचारों का प्रभार त्याग दिया। सरदार पटेल और गांधी के सबसे छोटे पुत्र देवदास ने भी आपत्ति जताई; न केवल प्रयोग की प्रकृति पर, बल्कि मनु की भागीदारी पर भी, हालांकि यह संभव है कि उनकी बेचैनी इस तथ्य से भी उपजी हो कि मनु गांधी की पोती थीं। जैसा कि गांधी के लेखन से स्पष्ट होता है, उनकी आलोचना मौलिक थी। उन्होंने तर्क दिया कि गांधी अधर्म को धर्म मानने लगे थे और इस अभ्यास को ब्रह्मचर्य का उल्लंघन ही माना जा सकता है। अधर्म का उनका आरोप गांधी पर लगाया जा सकने वाला सबसे मौलिक आरोप था। गांधी ने इस अभ्यास की आवश्यकता का जो दावा किया था, वह इस विश्वास पर आधारित था कि यह कोई 'प्रयोग' नहीं, बल्कि एक यज्ञ था, जो उनका धर्म था, एक कर्तव्य जिसे त्यागा नहीं जा सकता था। गांधी जी ने जी डी बिरला को लिखे एक पत्र में इस संभावना को स्वीकार किया कि 'यदि कोई सत्याग्रही असत्य को सत्य मान ले तो वह अंततः दुराग्रही बन सकता है।' 129 सत्याग्रही और दुराग्रही के बीच एकमात्र अंतर सत्य और असत्य को पहचानने की क्षमता है। ऐसे में गांधी जी ने महसूस किया, 'सभी मित्रों का यह कर्तव्य बन जाता है कि वे मेरा पुरजोर विरोध करें।' 130 उन्होंने बिरला से कहा, 'सरदार को यह बात पूरी तरह से स्पष्ट है कि जिसे मैं अपना धर्म मानता हूँ, वह वास्तव में अधर्म है। देवदास ने भी यही लिखा है।' 131

संभवतः उनके सबसे करीबी सहयोगियों की सर्वसम्मत राय थी कि वे सत्य और असत्य में अंतर करने की क्षमता खो चुके थे और उनका आचरण अधर्म था तथा न केवल नैतिक आचरण का उल्लंघन था, बल्कि ब्रह्मचर्य का भी उल्लंघन था। इसी बात ने गांधीजी को पत्र लिखने और उन तीन व्यक्तियों की राय लेने के लिए प्रेरित किया, जिनके आध्यात्मिक प्रशिक्षण और खोज को वे सम्मान की दृष्टि से देखते थे। ये थे सतीश चंद्र मुखर्जी (जिन्हें नांगा बाबा के नाम से भी जाना जाता था), जिन्होंने साबरमती आश्रम में दो महीने बिताए थे, और भावे बंधुओं - विनोबा और बालकृष्ण।

129 सीडब्लूएमजी, खंड 86, पृष्ठ 464.

130 सीडब्लूएमजी, खंड 86, पृष्ठ 464.

131 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 86, पृष्ठ 464. परिचय li

मुखर्जी को उन्होंने लिखा, 'अब मैं आपके सामने एक प्रश्न रखता हूँ। एक युवती (19), जो रिश्ते से मेरी पोती है, मेरे साथ एक ही बिस्तर पर सोती है, किसी शारीरिक संतुष्टि के लिए नहीं, बल्कि मेरे लिए (मेरे अनुसार) वैध नैतिक कारणों से। वह दावा करती है कि वह उस वासना से मुक्त है जो उसकी उम्र की लड़कियों में आम तौर पर होती है और मैं एक अभ्यासित ब्रह्मचारी होने का दावा करता हूँ। क्या आपको इस प्रस्ताव में कुछ बुरा या अनुचित लगता है? मैं यह प्रश्न इसलिए पूछता हूँ क्योंकि मेरे कुछ घनिष्ठ सहयोगी इसे पूरी तरह से अनुचित और यहाँ तक कि ब्रह्मचर्य का उल्लंघन मानते हैं। मेरा विचार इससे बिल्कुल विपरीत है।' 132

विनोबा को उन्होंने लिखा: 'मनु के मेरे साथ सोने से हमारे दोस्त बहुत परेशान हैं। किशोरलाल की पीड़ा असहनीय है। वह इतना दुखी है कि टूटने की कगार पर है। ...लेकिन मेरा मन पहले से

कहीं अधिक दृढ़ हो रहा है। क्योंकि मेरा यह लंबे समय से मानना रहा है कि ब्रह्मचर्य वही है जिसमें किसी बंधन की आवश्यकता नहीं होती। मेरा प्रयोग इसी विश्वास से प्रेरित है... मनु का मेरे साथ सोना मेरे प्रयोग का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह वर्तमान यज्ञ का हिस्सा है।'

बालकृष्ण भावे को उन्होंने लिखा: 'मेरे लिए मनु का मेरे साथ सोना धर्म का विषय है, और मैं यह बात स्पष्ट रूप से समझाना चाहता हूँ कि कोई भी व्यक्ति अपने प्रियजनों के प्रेम या किसी के भय से अपने धर्म का त्याग नहीं कर सकता। यदि ऐसी स्थिति में मैं मित्रों के प्रति झूठे आदर, भय या प्रेम के कारण अपने धर्म का त्याग कर दूँ, तो मेरा यज्ञ अधूरा रह जाएगा और फलहीन हो जाएगा। यह मेरा पक्ष है। जहाँ तक मैं समझता हूँ, किशोरलाल का पक्ष इसके विपरीत है। उनका मानना है कि मैंने अधर्म को धर्म मान लिया है और इसलिए मेरा यह आचरण मेरे ब्रह्मचर्य का अपमान करता है और लोगों के लिए एक बुरा उदाहरण प्रस्तुत करता है।'

गांधी जी के पत्रों से हमें पता चलता है कि विनोबा ने उन्हें एक 'स्पष्ट पत्र' लिखा था, जिसमें संभवत: गांधी जी के विचारों और व्यवहार से असहमति व्यक्त की गई थी। मार्च 1947 में गांधी जी ने लिखा था...

132 सीडब्लूएमजी, खंड 86, पृष्ठ 414.

133 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 86, पृ. 452–3.

134 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 86, पृ. 475–6.

उन्होंने उससे कहा, 'मुझे आपका स्पष्ट पत्र मिल गया है। किसी तरह मैं आपके तर्क से सहमत नहीं हूँ।' 135

जैसे-जैसे 'छोटी-मोटी बातचीत' और 'फुसफुसाहट' अपने आप में एक अलग रूप लेने लगीं, गांधी ने सार्वजनिक रूप से अपने यज्ञ को स्वीकार करने का फैसला किया और लोगों को इस प्रयास को आशीर्वाद देने के लिए आमंत्रित किया।

1 फरवरी 1947 को अमीशपारा गांव में एक सार्वजनिक प्रार्थना सभा में गांधीजी ने उन 'छिपी हुई बातों, कानाफूसी और इशारों' का जिक्र किया, जिनकी उन्हें जानकारी थी। उन्होंने सभा को बताया कि इतने संदेह, अविश्वास और झूठ के बीच वे नहीं चाहते कि उनके 'निर्दोष कार्यों' को गलत समझा जाए या गलत तरीके से पेश किया जाए। उन्होंने सभा को बताया कि उनकी पोती उनके साथ है। पैगंबर मुहम्मद ने ऑपरेशन द्वारा हिजड़ा बनाए गए लोगों को अस्वीकार कर दिया था। लेकिन उन्होंने ईश्वर की प्रार्थना से हिजड़ा बनाए गए लोगों का स्वागत किया। यही उनकी आकांक्षा थी। ईश्वर के हिजड़े की भावना से प्रेरित होकर उन्होंने उस कार्य को किया जिसे वे अपना कर्तव्य मानते थे। यह उनके यज्ञ का एक अभिन्न अंग था और उन्होंने सभा को इस प्रयास को आशीर्वाद देने के लिए आमंत्रित किया। 136 गांधी जी द्वारा अपने यज्ञ की घोषणा करना और अमीशपारा में प्रार्थना के लिए एकत्रित लोगों से आशीर्वाद मांगना शायद

एन.के. बोस को अनुचित लगा, जिनका काम गांधी जी के भाषण का बंगाली में अनुवाद करना था। उन्होंने अनुवाद में इस भाग को छोड़ दिया, जिसे गांधी जी ने देखा और बोस के प्रति अपनी असहमति व्यक्त की। ये 'छोटी-मोटी बातें', 'फुसफुसाहट' और 'इशारे' गांधी जी को बहुत परेशान कर रहे थे। उन्होंने कभी भी गुप्त रूप से कार्य नहीं किया था और स्वयं उन्होंने ही अपने सहयोगियों और परिवार को अपने इस कार्य के बारे में बताया था। प्रार्थना भाषण वाले दिन उन्होंने मनु से डायरी की रक्षा करने को कहा, 'और इस डायरी को किसी के भी हाथ में मत पड़ने देना।'

ऐसे अविश्वास, गलतफहमियों और अपने सबसे पुराने सहयोगियों के अभूतपूर्व रूप से उनसे मुंह मोड़ लेने के माहौल में, अमृतलाल वी ठक्कर (ठक्कर बापा) नोआखली के हमीचर गांव गए, जहां वे 24 फरवरी 1947 से छह दिनों तक रहे। एक विस्तृत नोट

135 सीडब्लूएमजी, खंड 87, पृष्ठ 63.

136 सीडब्लूएमजी, खंड 86, पृष्ठ 420. प्रस्तावना liii

इस विषय पर चर्चा उपलब्ध है जिसमें गांधी ने यज्ञ और यज्ञ करने की अपनी आवश्यकता को समझाने का प्रयास किया था।

ठक्कर बापा ने स्वाभाविक प्रश्न से बातचीत शुरू की: 'यहाँ यह प्रयोग क्यों?' गांधी ने उत्तर दिया, 'आप गलत हैं बापा, यह कोई प्रयोग नहीं बल्कि मेरे यज्ञ का अभिन्न अंग है। कोई व्यक्ति प्रयोग छोड़ सकता है, लेकिन अपने कर्तव्य को नहीं छोड़ सकता। अब यदि मैं किसी चीज को अपने यज्ञ का हिस्सा मानता हूँ—एक पवित्र कर्तव्य—तो मैं उसे नहीं छोड़ सकता, भले ही जनमत पूरी तरह से मेरे विरुद्ध हो। मैं आत्म-शुद्धि प्राप्त करने में लगा हुआ हूँ। पाँच प्रमुख नियम मेरे आध्यात्मिक प्रयास के पाँच आधार हैं। ब्रह्मचर्य उनमें से एक है। लेकिन ये सभी पाँच मिलकर एक अदृश्य संपूर्णता का निर्माण करते हैं। वे परस्पर संबंधित और एक दूसरे पर निर्भर हैं। यदि उनमें से एक भी टूट जाए, तो सभी टूट जाते हैं... मैं बाकी नियमों के संबंध में सिद्धांत और व्यवहार में किसी भी प्रकार का मतभेद नहीं होने देता। यदि मैं ब्रह्मचर्य के मामले में टालमटोल करता हूँ, तो क्या यह मेरे ब्रह्मचर्य की धार को कुंद नहीं कर देगा और सत्य के मेरे अभ्यास को दूषित नहीं कर देगा?' नोआखली आने के बाद से मैं स्वयं से यह प्रश्न पूछता रहा हूँ: 'मेरी अहिंसा की क्रिया में क्या बाधा उत्पन्न कर रहा है? मंत्र का प्रभाव क्यों नहीं पड़ रहा? कहीं ऐसा तो नहीं कि मैंने 137 ब्रह्मचर्यों के मामले में ढिलाई बरती है?'

इस वार्तालाप के माध्यम से गांधीजी ने दो बातें रखीं। पहली, उनकी अहिंसा विफल रही, जैसा कि नोआखली और बिहार में उनके आसपास हुई हिंसा से स्पष्ट है। दूसरी, अहिंसा की यह विफलता इस तथ्य से उत्पन्न हुई कि उन्होंने ब्रह्मचर्य के अभ्यास को लौकिक बना दिया था। इस पर कुछ विस्तार से चर्चा आवश्यक है।

गांधी जी इस संवाद में कहते हैं, या अधिक उपयुक्त रूप से कहें तो दोहराते हैं, कि उनका आध्यात्मिक संघर्ष पाँच प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित था—सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह और चोरी न करना। वे कहते हैं कि उनकी विफलता इस विश्वास में निहित थी कि वे इन सभी प्रथाओं

के प्रति दृढ़ रहते हुए भी इन्हें एक-दूसरे से भिन्न मान सकते हैं। इस प्रकार, गांधी जी का मानना था कि अहिंसा का अभ्यास उतना ही ब्रह्मचर्य का अभ्यास है जितना कि विचारों, शब्दों और कर्मों में अहिंसा का। ये सभी मिलकर सत्य की ओर ले जाते हैं। कई महीनों बाद

137 सीडब्लूएमजी, खंड 87, पृष्ठ 14.

इस बातचीत के बाद गांधीजी ने हरिजन पत्रिका में जून 1947 में प्रकाशित 'यह कैसे शुरू हुआ?' शीर्षक वाले एक निबंध के माध्यम से अपने यज्ञ पर विचार किया। यह हरिजन के लिए लेखन के लंबे अंतराल के बाद उनका पहला निबंध था जिसमें उन्होंने शाश्वत मूल्यों पर लिखने का विकल्प चुना।

उन्होंने ब्रह्मचर्य को एक ऐसी जीवनशैली के रूप में वर्णित किया जो हमें ब्रह्म की ओर ले जाती है। उन्होंने दोहराया कि एक पूर्ण ब्रह्मचारी में गीता में वर्णित स्थितप्रज्ञ के सभी गुण होते हैं। गांधी ने ब्रह्मचर्य प्राप्त करने के लिए आवश्यक अनुशासन का वर्णन किया, जिसमें उन्होंने पतंजलि द्वारा योगसूत्र में वर्णित पारंपरिक पाँच नियमों से आगे बढ़कर बात की। 'पतंजलि ने पाँच अनुशासनों का वर्णन किया है। इनमें से किसी एक को अलग करके उसका अभ्यास करना संभव नहीं है। सत्य के मामले में यह संभव हो सकता है, क्योंकि इसमें वास्तव में अन्य चार भी शामिल हैं। और इस युग के लिए इन पाँचों को ग्यारह में विस्तारित किया गया है।' 138 ये ग्यारह नियम हैं सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, चोरी न करना, रोटी के लिए श्रम करना, और स्वाद पर नियंत्रण, निर्भयता, सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान, स्वदेशी और अस्पृश्यता का उन्मूलन। ये एकादश व्रत हैं, वे ग्यारह नियम जो आश्रम जीवन का आधार हैं। गांधी जी का दावा है कि ब्रह्मचारी जीवन शैली, ब्रह्म की ओर ले जाने वाला आचरण, केवल आश्रम जीवन के पालन से ही संभव है। आश्रम के नियमों की आवश्यकता को स्थापित करते हुए, गांधी जी ने तर्क दिया कि वे एक अविभाज्य इकाई हैं और उनका अभ्यास अलग-थलग नहीं किया जा सकता। 'यह ध्यान रखना आवश्यक है कि सभी नियम समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। यदि एक नियम टूट जाए तो सभी टूट जाते हैं... जब इसे अलग-थलग किया जाता है तो एक बुनियादी नियम का पालन करना भी कठिन, बल्कि असंभव हो जाता है। इसलिए, यह आवश्यक है कि सभी नियमों को एक साथ लिया जाए। इससे व्यक्ति ब्रह्मचर्य के पूर्ण अर्थ और महत्व को समझ पाता है। व्यवहार में वही सच्चा ब्रह्मचारी है जो विचार, वचन और कर्म से ग्यारह व्रतों का पूर्ण रूप से पालन करता है।' 139

इससे गांधीजी का यज्ञ स्पष्ट हो जाता है। उनके लिए अहिंसा की विफलता उनके ब्रह्मचर्य की विफलता थी, न कि उनके ब्रह्मचर्य की।

138 सीडब्लूएमजी, खंड 88, पृष्ठ 58.

139 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 88, पृष्ठ 59, परिचय lv

आश्रम जीवन के प्रति उनका समर्पण। गांधीजी का मानना था कि यदि वे ग्यारह आश्रम व्रतों का पालन करने में कोई कमी न करें, तभी अवरुद्ध अहिंसा को पूर्ण अभिव्यक्ति मिल सकती है। गांधीजी का यज्ञ आश्रमवासी बनने का था, न कि स्वयं या मनु के ब्रह्मचर्य की परीक्षा लेने का।

गांधी जी इस तर्क को स्वीकार करने को तैयार नहीं थे कि एक आदर्श ब्रह्मचारी, यानी एक आदर्श आश्रमवासी, एक अप्राप्य आदर्श है। 'पूर्ण ब्रह्मचर्य की संभावना को नकारना ऐसा कहने के समान है कि ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं है क्योंकि हमने उन्हें प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा है या ऐसे लोगों से नहीं मिले हैं जिन्हें यह अनुभव प्राप्त हुआ हो।' 140

गांधी जी अपने यज्ञ की आवश्यकता, एक आदर्श आश्रमवासी बनने की अपनी इच्छा और पूर्ण ब्रह्मचर्य की संभावना को ए.वी. ठक्कर या आश्रम के अन्य सहयोगियों तक पहुंचाने में असफल रहे।

ए.वी. ठक्कर की हिमचर यात्रा और वहां ठहरने का परिणाम उनके दृष्टिकोण से और उन सभी लोगों के दृष्टिकोण से अप्रत्याशित था जिन्होंने गांधी के यज्ञ को अधर्म करार दिया था।

मनु ने इस यज्ञ में भागीदार बनने से अपनी सहमति वापस लेने का निर्णय लिया। मनु की सहमति वापस लेने के साथ ही यज्ञ या प्रयोग समाप्त हो गया। प्यारेलाल ने उस क्षण का वर्णन किया है जब मनु ने गांधीजी को इस प्रथा से अपने अलगाव के बारे में बताया—यह एक रियायत थी जो उन्होंने ठक्कर बापा और अन्य वरिष्ठों को दी थी जिन्होंने इस प्रथा का विरोध किया था। 'इस बातचीत का एक अप्रत्याशित परिणाम निकला। मनु ने आकर गांधीजी को बताया कि यद्यपि आरंभ में ठक्कर बापा को गांधीजी के कार्यों की उपयुक्तता पर संदेह था, लेकिन छह दिनों के उनके निकट संपर्क और अवलोकन ने उनके संदेह को पूरी तरह से दूर कर दिया और वे आश्वस्त हो गए कि उनकी प्रथा में या इससे जुड़े किसी भी व्यक्ति में कुछ भी गलत या अनुचित नहीं है और उन्होंने इस आशय का पत्र अपने मित्रों को भी लिखा था। उन्होंने मनु को यह भी बताया कि इस परिवर्तन का सबसे बड़ा कारण उनकी पूर्णतः निर्दोष और अबाधित नींद थी, जैसा कि उन्होंने उन्हें प्रतिदिन देखते हुए देखा था, और कर्तव्य के प्रति मनु की एकनिष्ठ और अथक निष्ठा थी। इसलिए, उन्हें सहमति देने में कोई हर्ज नहीं दिखा।

140 सीडब्लूएमजी, खंड 88, पृष्ठ 234.

ठक्कर बापा ने गांधीजी की सहमति से इस प्रथा को कुछ समय के लिए स्थगित करने का अनुरोध किया। उन्होंने यह बिल्कुल स्पष्ट कर दिया कि मानसिक रूप से वह गांधीजी के साथ पूर्णतः एकरूप थीं, उन्होंने कुछ भी त्यागा नहीं था, जरा सा भी आत्मसमर्पण नहीं किया था।

अचूक प्रमाण

मनु के यज्ञ में भागीदार न बनने के निर्णय के साथ ही पलंग पर सोने की प्रथा बंद हो गई, लेकिन

गांधी जी की सत्य प्राप्ति की खोज नहीं रुकी। जैसे-जैसे उनका अकेलापन गहराता गया, गांधी जी को यह अहसास हुआ कि उनके सत्य, उनकी अहिंसा, उनके ब्रह्मचर्य और ग्यारह आश्रम व्रतों के पालन की सच्ची परीक्षा उनकी मृत्यु का तरीका और उस समय उनका आचरण ही होगा। उन्हें लगा कि यज्ञ ने उन्हें ईश्वर और सत्य के निकट ला दिया है। 29 अप्रैल 1947 को उन्होंने मनु से कहा, "मैं अतिशयोक्ति और असत्य से घिरा हुआ हूँ। अपनी खोज के बावजूद, मुझे नहीं पता कि सत्य कहाँ है। लेकिन मुझे यह अवश्य ही महसूस होता है कि मैं ईश्वर और सत्य के निकट आ गया हूँ... मैंने अपने द्वारा लिए गए ग्यारह व्रतों का सफलतापूर्वक पालन किया है। यह पिछले साठ वर्षों के मेरे प्रयासों की परिणति है... इस यज्ञ में मुझे सत्य और पवित्रता के उस आदर्श की झलक मिली, जिसके लिए मैं प्रयासरत था।" और आपने इसमें पूर्ण योगदान दिया है।' 142 उनका मानना था कि उनकी पवित्रता—केवल उनकी ही नहीं, बल्कि उनकी भी—दूसरों के पापों के प्रायश्चित का मार्ग प्रशस्त करेगी। 'करोड़ों मनुष्यों के पापों के विरुद्ध, दो व्यक्तियों की पूर्ण पवित्रता भी निश्चय ही प्रभाव डालेगी। हाँ, यह सत्य है कि इन दोनों व्यक्तियों की कड़ी परीक्षा होगी।' 143

मनु की खराब सेहत, जिसका बाद में निदान अपेंडिसाइटिस और आंतों की टीबी के रूप में हुआ, ने गांधी जी को यह एहसास दिलाया कि रामनाम के प्रति उनकी भक्ति में एक बार फिर कमी रह गई है। यदि राम उनके हृदय में इस प्रकार विराजमान हो जाएं कि नाम का जाप भी अनावश्यक हो जाए, तो मनु रोगमुक्त हो जाएंगी। एक पत्र में उन्होंने अपनी पीड़ा व्यक्त की। 'उनकी सेहत में उतना ही सुधार होगा जितना कि वह...'

141 Emphasis in the original. Pyarelal, Mahatma Gandhi: Th e Last Phase , part 1, Book II, p. 226, (Ahmedabad: Navajivan, 1956, 1997 (reprint)).

142 सीडब्लूएमजी, खंड 87, पृष्ठ 384.

143 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 88, पृष्ठ 212. परिचय lvii

और मैं रामनाम को अपने हृदय में स्थापित करने में सक्षम हैं। यह कन्या इस यज्ञ में मेरी सहचर है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसके विचार, वचन और कर्म जो भी हों, वे मेरे कर्मों पर प्रभाव डालेंगे और मेरे विचार, वचन और कर्म की शुद्धता या अशुद्धता का उसके कर्मों पर भी असर पड़ेगा। इसलिए, मैं जितनी ईमानदारी से रामनाम का पाठ करूँगा, उसका उतना ही अधिक सुधार होगा।' 144 डॉ. बी.सी. रे को उन्होंने इसी प्रकार लिखा: 'आखिरकार मैंने उसे इस यज्ञ में अपनी सहचर बनाया है। यदि रामनाम मेरे हृदय में दृढ़ता से स्थापित है, तो यह कन्या रोगमुक्त होनी चाहिए।' 145

15 मई 1947 को पटना में कर्नल डॉ. द्वारका प्रसाद भार्गव द्वारा मनु का अपेंडिक्स का ऑपरेशन किया गया। गांधी जी ने सर्जिकल मास्क पहनकर पूरा ऑपरेशन देखा। घर लौटकर उन्होंने जयसुखलाल को लिखा कि उनका 'अभिमान चूर हो गया है'। उन्होंने ईश्वर के इतने करीब होने का अनुभव किया जितना पहले कभी नहीं हुआ था, उस पवित्रता की झलक पाई जिसके

लिए वे प्रयासरत थे, फिर भी राम के प्रति उनकी भक्ति में कमी पाई गई। उन्होंने जयसुखलाल से स्वीकार किया: 'इस प्रकार ईश्वर मनुष्य के अभिमान को चूर कर देता है। मुझे नहीं पता कि वह मुझे अभी और कौन से नए पाठ सिखाने वाले हैं।' 146

गांधी जी के लिए, मनु का ऑपरेशन इस बात का अकाट्य प्रमाण था कि उनका प्रयास अधूरा था और उनके प्रयास का कोई भी प्रमाण उनकी मृत्यु के क्षण में ही उपलब्ध होगा। मनु उस मृत्यु की साक्षी होंगी और या तो उन्हें पाखंडी घोषित करेंगी या उनके प्रयास की गवाही देंगी। 22 मई 1947 को, जिस दिन उन्हें अस्पताल से छुट्टी मिली, उन्होंने मनु से कहा कि उन्हें ही साक्षी बनना है। 'पिछले आठ दिनों से, जब से मैंने तुम्हें अस्पताल भेजा है, मैं सोच रहा हूँ कि मैं कहाँ खड़ा हूँ, ईश्वर मुझसे क्या चाहता है, वह अंततः मुझे कहाँ ले जाएगा... यदि मैं दीर्घकालीन बीमारी से मर जाऊँ, तो यह तुम्हारा कर्तव्य होगा कि तुम पूरी दुनिया को घोषित करो कि मैं ईश्वर का भक्त नहीं बल्कि एक पाखंडी और धोखेबाज था। यदि तुम इस कर्तव्य में विफल रहती हो, तो मैं जहाँ भी रहूँगा दुखी रहूँगा। लेकिन यदि मैं अपनी अंतिम साँस के साथ ईश्वर का नाम लेते हुए मरता हूँ, तो यह एक संकेत होगा कि मैं वही था जिसके लिए मैंने प्रयास किया और होने का दावा किया।' 147

144 सीडब्लूएमजी, खंड 87, पृष्ठ 401.

145 सीडब्लूएमजी, खंड 87, पृष्ठ 468.

146 सीडब्लूएमजी, खंड 87, पृष्ठ 476.

147 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 87, पृ. 521–2.

रखा जाना है

हमने अब तक गांधीजी के संघर्ष, उनके यज्ञ और उनके अधर्म के प्रति उनके निकटतम सहयोगियों की गहरी और स्थायी अस्वीकृति को उनके लेखन और उपलब्ध होने पर उनके सहयोगियों के लेखन के गहन अध्ययन के माध्यम से समझा है।

इस परिचयात्मक निबंध में दो पहलुओं पर प्रकाश नहीं डाला गया है। पहला है मनु की रचनाएँ। यहाँ प्रस्तुत उनकी डायरी के दो खंड मनु की हस्तलिपि में हैं। अनुवाद में मूल पाठ का कोई अंश नहीं छोड़ा गया है, और जहाँ मूल पाठ क्षतिग्रस्त या अपठनीय है, वहाँ इसका उल्लेख किया गया है। अनुवाद के साथ संपादकीय टिप्पणियाँ भी दी गई हैं, जिनका उद्देश्य संदर्भ प्रदान करना, उन व्यक्तियों के जीवनी संबंधी विवरण देना है जिनकी उपस्थिति हमारी स्मृति से मिट चुकी है, और कुछ स्थानों पर ये टिप्पणियाँ पाठक का ध्यान अन्य स्रोतों की ओर आकर्षित करती हैं। गुजराती मूल पाठ के साथ भी ऐसा ही किया गया है, जिसे गांधी द्वारा स्थापित प्रकाशन गृह नवजीवन ट्रस्ट द्वारा अंग्रेजी अनुवाद के लगभग साथ ही प्रकाशित किया जाएगा, जिसने मनु गांधी

की सभी रचनाएँ प्रकाशित की हैं।

दूसरा पहलू भी उतना ही महत्वपूर्ण है। यह सहमति की प्रकृति, अधिकार और शक्ति के प्रश्न से संबंधित है।

गांधी जी ने यज्ञ में मनु को लगातार 'साझेदार' बताया, जबकि उनके बीच स्पष्ट रूप से एक पदानुक्रम मौजूद था। 'साझेदार' शब्द समानता, बराबरी, स्वतंत्र इच्छाशक्ति के प्रयोग और स्वायत्तता का प्रतीक है।

हमें इस बात पर जोर देना चाहिए कि सहमति की वर्तमान परिभाषाएँ समानता के उस विचार को स्वीकार नहीं करेंगी जो 'साझेदार' शब्द गांधी और मनु के बीच स्थापित करता है।

हम जानते हैं कि मनु ने इस यज्ञ में भागीदार बनने की सहमति दी थी और उनकी सहमति वापस लेने के बाद यह प्रथा बंद हो गई। उनकी डायरियों में, गांधी जी के लेखों में, या एन.के. बोस और प्यारेलाल के लेखों में ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता कि जब उन्होंने इस प्रथा को बंद करने की इच्छा व्यक्त की, तो गांधी जी ने उन्हें ऐसा न करने के लिए मनाने का प्रयास किया हो।

लेकिन, हम सहमति को एक स्वीकृत लेकिन बहुत ही संकीर्ण और सीमित अर्थ में देख रहे हैं। सहमति का प्रश्न इस अर्थ में पूछा जाना चाहिए कि यह गांधी जी को समझ में आए, या बेहतर होगा कि समझ में आना चाहिए। (प्रस्तावना lix)

हालांकि यह अभ्यास ऐतिहासिक रूप से गलत, काल्पनिक और इसलिए अनुमान पर आधारित है।

हम जानते हैं कि गांधी जी ब्रह्मचारियों के उस पारंपरिक विचार से सहमत नहीं थे कि स्त्रियाँ ब्रह्मचर्य के उल्लंघन या विफलता का कारण होती हैं। अपने जीवन में केवल एक बार ही उन्होंने इस विचार को माना, परन्तु शीघ्र ही उन्हें इस धारणा की घोर असत्यता का अहसास हुआ और उन्होंने पुनः पुष्टि की कि उनके ब्रह्मचर्य की विफलता या पूर्ण ब्रह्मचर्य प्राप्ति में कोई भी कमी केवल उन्हीं के भीतर थी। इसी से उन्हें महिला ब्रह्मचारियों की खोज को समझने में सहायता मिली।

और इसी कारण से, उनकी विश्वदृष्टि के संदर्भ में सहमति का जो प्रश्न हमें पूछना आवश्यक है, वह यह है: क्या गांधी जी किसी महिला ब्रह्मचारी द्वारा संपन्न किए जाने वाले यज्ञ में भागीदार बनने के लिए सहमत होते? क्या वे उस यज्ञ में भागीदार बनने के लिए सहमत होते, जहाँ ईश्वर के प्रत्यक्ष दर्शन करने, आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने, आदर्श आश्रमवासी और पूर्ण ब्रह्मचारी बनकर मोक्ष प्राप्त करने का प्राथमिक प्रयास एक महिला सहकर्मी द्वारा किया जा रहा हो?

यदि वह ऐसा करने को तैयार हो, तो यह सच्ची सहमति और साझेदारी होगी। लेकिन यदि उसका उत्तर नकारात्मक हो, तो वह अपने ही दृष्टिकोण से अधर्म का उल्लंघन करेगा, न केवल नैतिकता, सही आचरण और कर्तव्य का उल्लंघन करते हुए, बल्कि सत्य और असत्य में अंतर करने में असमर्थ होने के कारण, वह स्वयं के द्वारा वर्णित सत्याग्रही नहीं रह जाएगा।

मनु गांधी को अपनी माँ मानती थीं। वह अकेली थीं जिन्होंने कहा कि वह उन्हें एक स्त्री, एक माँ के रूप में देखती हैं, जबकि बाकी सभी के लिए वे बापू ही रहे। उन्होंने यज्ञ के दौरान गांधी को अपनी माँ पाकर खुशी जाहिर की।

और, ओह, कितनी खुशी! मुझे सचमुच यह अनुभव हो रहा है! मैं ही तो माता बापू की प्रिय संतान हूँ! मैं अपने इस दुर्लभ सौभाग्य पर अत्यंत प्रसन्न हूँ! 148

148 द लोनली पिलग्रिम, पृ. 111. त्रिदीप सुहरूद. जून 2019.

अनुवाद पर टिप्पणी

यह डायरी मनु गांधी की मूल गुजराती डायरियों का अनुवाद है, जो वर्तमान में भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार में संग्रहित हैं। उस समय मनु गांधी 14-15 वर्ष की किशोरी थीं, जिनकी शिक्षा अनियमित और बहुत ही कम स्तर की थी। गुजराती डायरी उनकी अविकसित लिखावट में लिखी गई है, उनकी वर्तनी अनिश्चित और असंगत है, और व्याकरण अपूर्ण है। डायरी लेखन स्वयं एम. के. गांधी के साथ उनकी शिक्षा का एक हिस्सा था। डायरी का उत्तरार्ध और प्रकाशित होने वाला दूसरा खंड, गांधी की अभिलेखपाल के रूप में और कभी-कभी उनकी सचिव के रूप में पत्राचार का प्रबंधन करते हुए, डायरी लेखन की कला में उनके द्वारा प्राप्त परिष्कार का प्रमाण है।

फिर भी, यह खंड, विशेष रूप से शुरुआती महीनों की प्रविष्टियाँ,

उनकी प्रारंभिक शिक्षा के निशान कीलाकार लिपि जैसे दिखाई देते हैं। यह अनुवाद दो तरह से मूल पाठ के प्रति निष्ठावान रहने का प्रयास करता है। संपादक/अनुवादक ने डायरी का कोई भी भाग या कोई भी प्रविष्टि नहीं छोड़ी है। अनुवाद में उनकी गद्य शैली की लयबद्धता और सरल भाषा को बनाए रखने का प्रयास किया गया है। पाठ पर दिए गए फुटनोट वर्तनी की त्रुटियों को दर्शाते हैं, विशेष रूप से यदि गांधी ने पिछली प्रविष्टि में उसी शब्द को सुधारा हो। यह इस आशा के साथ किया गया है कि अनुवाद गुजराती में स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाली डायरी लेखन की प्रक्रिया को पकड़ सके। अंग्रेजी अनुवाद के बाद नवजीवन ट्रस्ट द्वारा मूल गुजराती डायरियों का प्रकाशन किया जाएगा।

मनु गांधी की डायरी

1943–1944

मनु गांधी की डायरी। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के त्रिदीप सुहरूद द्वारा संपादित और अनुवादित।

प्रेस (2019). © ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. डीओआई: 10.1093/
oso/9780199496167.003.0001.

दिनांक: 11.4.43 रविवार 1

आज मैं सुबह 5:30 बजे नमाज़ के लिए उठा, दांत साफ किए, शौचालय गया और नमाज़ में शामिल हुआ। नमाज़ 6 बजे समाप्त हुई। मैंने 6 से 6:20 तक बीस मिनट स्नान किया। फिर लगभग 6:45 तक थोड़ी-बहुत अंग्रेज़ी पढ़ी और लिखी।

6:45 से 7 2 3 4 बापूजी के लिए थोड़ा रस निकाला और फिर

मैंने अपना दूध पी लिया और बा के लिए चाय तैयार की।

7 से 7:30 तक सब्जियां काटीं, बर्तन साफ किए और अन्य काम किए।

विविध कार्य।

7:30 से 8 बजे तक गीता और गुजराती व्याकरण पढ़ी। 8 से 8:30 बजे तक बापूजी के साथ सैर की। 8:30 से 9:30 बजे तक बापूजी की मालिश की और उनके बाल धोए। 9:30 से 11:30 बजे तक बापूजी के लिए दोपहर का भोजन तैयार किया, खाखरा पकाया और

अन्य बातें।

1 Manu Gandhi reached the Aga Khan Palace prison on 20.3.1943.

2. 'निचोड़ा' शब्द गांधीजी द्वारा पेंसिल से जोड़ा गया।

3 वह हमेशा गांधीजी और कस्तूरबा के लिए 'पूज्य बापूजी' और 'पूज्य मोतिबा' लिखती थीं।

4. 'और फिर' गांधीजी द्वारा पेंसिल से जोड़ा गया।

4. मनु गांधी की डायरी

11:30 से 12:15 तक मैंने अपना खाना बनाया और बा के साथ दोपहर का भोजन किया। 12:15 से 1 बजे तक मैंने थोड़ी देर पढ़ा। 1 से 2 बजे तक मैंने बापूजी और बा के चरणों में घी लगाया। 2 से 2:15 तक मैंने अंग्रेजी पाठों का होमवर्क पूरा किया। 2:15 से 3 बजे तक मैंने मुरब्बी सुशीला के साथ अंग्रेजी की कक्षाएं लीं।

बेहन 6.

3 से 3:15 तक अखबार पढ़े। 3:15 से 4 तक आज कताई नहीं कर सका। थोड़ा आराम किया

और पढ़ा।

4 से 4:30 बजे तक बापूजी के साथ गीता और व्याकरण की कक्षाएं। 4:30 से 5:30 बजे तक बापूजी के बालों में तेल लगाया, रामायण पढ़ी और...

उसे अखबार भेजे जाते थे।

5:30 से 6 बजे तक: बा के लिए चाय बनाई और खाना पकाया। 6 से 6:30 बजे तक: धुले हुए कपड़े तह किए और टहनी तैयार की।

दांत साफ करने और बापूजी द्वारा इस्तेमाल किए गए बर्तनों को साफ करने के लिए।

शाम 6:30 से 7:45 तक बा के कपड़े सिले। शाम 7:45 से रात 8 बजे तक खेला और घूमा। 8 से 8:30 तक नमाज पढ़ी। 8:30 से 10 तक बचा हुआ सारा काम पूरा किया और मालिश की।

बा के पास जाकर, मैंने उसे कुछ देर तक पढ़कर सुनाया, लेकिन उसे नींद नहीं आई, इसलिए मैं उसकी सेवा में ही रुका रहा।

10:15 7 सोने चले गए।

5. मुरब्बी: 'आदरणीय' शब्द का प्रयोग अब आगे नहीं किया जाएगा। इसे केवल पहली बार ही अंकित किया गया है।

6. डॉ. सुशीला नायर (1914-2000) ने लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज से चिकित्सा की पढ़ाई की और सेवाग्राम आश्रम में शामिल हुईं। उन्होंने एमके गांधी की निजी चिकित्सक के रूप में काम किया और उनके साथ आगा खान पैलेस जेल में कैद रहीं। स्वतंत्रता के बाद उन्होंने लोकसभा सदस्य और केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री के रूप में कार्य किया। वे कई पुस्तकों की लेखिका हैं, जिनमें एमके गांधी की जीवनी के पांच खंड और उनकी अंतिम कैद की कहानी, बापू की करवास की कहानी शामिल हैं। वे प्यारेलाल नायर की बहन थीं।

7. पेंसिल से 'बापू' के हस्ताक्षर।

मनु गांधी की डायरी 5

दिनांक: 12.4.43 सोमवार

सुबह 6 बजे उठा। 6:30 बजे प्रार्थना पूरी की।

6:30 से 6:45 के बीच मैंने अपने दांत साफ किए, शौचालय का इस्तेमाल किया और अन्य काम किए।

दैनिक कामकाज।

6:45 से 7:30 तक जूस निकाला, चाय बनाई, दूध पिया, और भी बहुत कुछ किया।

खाखरा और रोटी के लिए आटा गूंथ लें, सब्जियां काट लें।

7:30 से 8:30 तक। आज चल नहीं सका, लेकिन बा को मसाज दी।

नहाने के बाद।

8:30 से 9 बजे तक थोड़ा पढ़ें (गीता और इतिहास)। 9 से 11:30 बजे तक पका हुआ खाखरा, रोटी, सब्जियां, उबला हुआ दूध।

वगैरह।

11:30 से 12:30 तक मैंने बा और अपना दोपहर का खाना बनाया और कुछ लिखा।

अंग्रेज़ी।

12:45 से 1 बजे तक बर्तन साफ किए, बा का बिस्तर लगाया, उनकी मालिश की

शरीर।

1 से 2 तक बापूजी और बा के चरणों में घी लगाया। 2 से 3 तक पढ़ते-पढ़ते सो गया। 3 से 3:30 तक मीराबेन के पास 'फ्लैग' गाने का अभ्यास करने गया।

उठाना।

3:30 से 4 9 कताई (चूंकि यह मौन का दिन था इसलिए नहीं हो सका)

अध्ययन)।

8. मीराबेन (मैडेलीन स्लेड) (1892-1981) ने इंग्लैंड में अपना कुलीन जीवन त्यागकर एमकेजी के साथ काम करना शुरू किया और 1925 में साबरमती स्थित सत्याग्रह आश्रम में शामिल हो गईं; उन्हें आगा खान पैलेस जेल में बंदी बनाया गया था। स्वतंत्रता के बाद उन्होंने ऋषिकेश के पास पशुलोक आश्रम की स्थापना की, 1959 में यूरोप लौट आईं और वियना में रहकर बीथोवेन के संगीत के प्रति अपने प्रेम को आगे बढ़ाया। उनकी आत्मकथा का शीर्षक 'द स्पिरिट्स पिलग्रिमेज' (1960) है। उनके और गांधी के बीच हुए पत्राचार के लिए 'बिलव्ड बापू: द गांधी-मीराबेन कॉरेस्पोंडेंस' देखें, जिसका संपादन त्रिदीप सुहरूद और थॉमस वेबर ने किया है (नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2014)।

9 यह गांधीजी का मौन दिवस था, सोमवार को मौन दिवस के रूप में मनाने की प्रथा 17 जनवरी 1921 से शुरू हुई। 9 सितंबर 1923 से, 6 मनु गांधी की डायरी

4 से 4:45 तक बा को रामायण और अखबार पढ़कर सुनाएं।

4:45 से 5:30 तक चाय बनाई और खाना तैयार किया। 5:30 से 6:30 तक दांत साफ करने के लिए टहनी तैयार की और उसे मोड़ा।

कपड़े धोए और बर्तन साफ किए।

6:30 से 7:30 तक 10 लोगों ने खेला।

7:30 से 8 बजे तक टहलने गए। 8 से 10 बजे तक प्रार्थना की, बा की मालिश की और उनकी देखभाल की।

अन्य आवश्यकताएँ पूरी कीं। अन्य कार्य पूरे किए, (गुजराती व्याकरण) पढ़ा और 10:15 बजे सो गया। 11

दिनांक: 13.04.1943 12

मैं आज सुबह 5:15 बजे उठा। प्रार्थना 5:30 बजे समाप्त हुई। मैं 5:30 से 6:30 बजे तक पढ़ना चाहता था, लेकिन सो गया।

6:30 से 7 बजे तक पढ़ें।

7 से 8 बजे तक जूस, चाय, साफ बर्तन आदि। 8 से 8:30 बजे तक, आज 13 अप्रैल को, झंडे को सलामी दी गई और

टहलने चला गया।

8:30 से 9 बजे तक बा के बालों में तेल लगाया और कंघी की। 9 से 10:30 बजे तक बा की मालिश की, उसके बाद हम दोनों ने स्नान किया।

10:30 से 11 बजे तक बा के लिए दूध तैयार किया, चाय की पत्तियां खत्म हो गई थीं, इसलिए बनाया

जड़ी-बूटियों वाली चाय। 14

इस प्रथा में बदलाव किया गया। रविवार को दोपहर 3 बजे मौन शुरू हुआ और 24 घंटे तक चला।

10 डायरी में अन्यत्र कैरम और बैडमिंटन के खेल का उल्लेख है। 30.8.43 की प्रविष्टि देखें।

11 पेंसिल से 'बापू' के हस्ताक्षर।

डायरी में 12वें दिन का उल्लेख नहीं है, इसका उल्लेख केवल मूल प्रति में होने पर ही किया जाएगा।

13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग में हुए नरसंहार की याद में ध्वजारोहण किया गया था।

14 गुजराती में इस शब्द का अर्थ 'औषधियाँ' है, जो जड़ी-बूटियों को दर्शाता है।

मनु गांधी की डायरी 7

11 से 11:30 तक अंग्रेजी लिखी। 11:30 से 12 तक बापूजी के चरणों में घी लगाया और कुछ साफ-सफाई की।

कपास। 15

12 से 1 ने बा के पैरों पर घी लगाया। उसे गंभीर शारीरिक समस्या थी।

दर्द हो रहा था, इसलिए मैंने उसकी मालिश की।

1 से 1:30 तक अखबार पढ़े और आराम किया। 1:30 से 2:30 तक सूत काता, अखबार पढ़े (और रामायण भी पढ़ी)।

2:30 से 3:30 तक व्याकरण संबंधी प्रश्नों के उत्तर दिए। 3:30 से 4:45 तक खाना पकाया।

4:45 से 6 बजे तक हमने खाना तैयार किया और साथ में खाया। 6 से 6:30 बजे तक हमने ग्रामोफोन सुना। 6:30 से 7 बजे तक हमने धुले हुए कपड़े तह किए और टहनी तैयार की।

दांत ब्रश करना और बर्तन साफ करना।

7 से 7:30 तक खेल हुआ।

7:30 से 8 बजे तक टहलने गई। 8 से 10:30 बजे तक प्रार्थना की। बा को मसाज दी और उनकी अन्य देखभाल की।

मैंने अपनी जरूरतें पूरी कीं, बाकी सारा काम निपटाया और सोने चला गया।

नोट: चूंकि आज 13 अप्रैल था और 'राष्ट्रीय सप्ताह' का समापन था, इसलिए हम सभी ने उपवास रखा था। हमने कैदियों को शिरो, नमकीन और चाय वितरित की थी, स्वयं बापूजी ने भी।

15. कताई के लिए सूत के टुकड़े बनाने के लिए।

16 राष्ट्रीय सप्ताह को हर साल 1919 में रॉलेट अधिनियम के विरोध में चलाए गए राष्ट्रीय

सप्ताह की स्मृति में मनाया जाता था।

17 एम.के.जी. द्वारा संशोधित; 'आधे दिन का उपवास रखा था'।

येरवादा जेल के 18 कैदियों को आगा में ड्यूटी पर लगाया गया था।

खान महल की जेल। उन्हें आगा खान महल के कैदियों की व्यक्तिगत जरूरतों का ध्यान रखने की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन वे अधिकारियों की सेवा करते थे और बगीचों की देखभाल भी करते थे।

8. मनु गांधी की डायरी

हमने उन्हें खाना परोसा। शाम को हमने उन्हें खिचड़ी, सब्जियां, केले और प्याज दिए। 19

दिनांक: 14.4.43

आज मैं सुबह 5:15 बजे प्रार्थना के लिए उठा, जो 5:30 बजे समाप्त हुई।

शाम 5:30 से 6 बजे तक नमाज के बाद मैंने सोने की कोशिश नहीं की।

लेकिन नींद मुझ पर हावी हो गई 20 21 और मैं सो गया।

शाम 6 से 7:30 बजे तक स्नान किया। चूंकि मुझे देर हो गई थी, इसलिए सुशीलाबेन ने मेरे लिए खाना तैयार किया।

मैंने जूस पिया। मैंने दूध पिया, बा के लिए चाय बनाई, खाखरा के लिए आटा गूंथा, बर्तन साफ किए, आदि।

7:30 से 8 बजे तक बाल संवारे, गीता पढ़ी, सब्जियां काटीं। 8 से 8:30 बजे तक 22 बजे सैर पर गए, दर्शन किए। 8:30 से 10 बजे तक बा के बालों में तेल लगाया और कंघी की, उन्हें भेंट दी।

बा की मालिश की और उसके स्नान की सारी तैयारी की, उसे नहलाया। 23

10 से 11 24 पका हुआ खाखरा, सब्जियां, उबला हुआ दूध आदि। 11 से 12:30 भोजन तैयार किया और खाया। 12:30 से 1 अंग्रेजी लिखी। 1 से 2 बापूजी और बा के चरणों पर घी लगाया और मालिश की।

बा को मसाज।

19. 'बापू' के हस्ताक्षर के साथ गुजराती में एक नोट: 'कताई की गिनती नोट की जानी चाहिए। मन में आने वाले विचारों को लिख लेना चाहिए। दिन के पाठ पर एक नोट प्रदान किया जाना चाहिए।'

20 एमकेजी द्वारा संशोधित करके 'मुझ पर जीत हासिल करता है' के रूप में।

21 एमकेजी द्वारा संशोधित करके 'मैं सोने जाता हूँ' कर दिया गया।

22 दर्शन से तात्पर्य महादेव देसाई की समाधि से है जिनका देहांत हो चुका था।

15 अगस्त 1942 को जेल में रहते हुए भाग गया।

23 एमकेजी ने दो व्याकरणिक सुधार किए। 'मोतिबा ने स्नान थी' की जगह 'मोतिबा ना स्नान थी'।

24 एमकेजी में पेंसिल से अक्षर 'श' (sh) के लिए सही रूप दिखाया गया है, जो 'शक' के लिए है; यानी सब्जियां।

मनु गांधी की डायरी 9

2 से 2:30 तक सो गया [कताई नहीं कर सका], क्योंकि मैं सो गया था। 2:30 से 3:25 तक व्याकरण के प्रश्नों के उत्तर लिखे।

Bapuji.

3 से 3:30 तक अंग्रेजी पढ़ी। 3:30 से 4 तक अखबार पढ़ा, नहाने की तैयारी की। 4 से 4:30 तक बापूजी के साथ पढ़ाई की, गीता पढ़ी और

व्याकरण के प्रश्न और उत्तर। 26

आज राम नवमी थी, इसलिए मैंने 4:30 से 5:30 बजे तक दस श्लोक पढ़े।

रामायण के अध्याय—सामान्य से पाँच अधिक—बा को समर्पित।

5:30 से 6:30 तक बा के लिए भोजन तैयार किया, चाय और फल बनाए।

बर्तन साफ किए।

6:30 से 7 बजे तक दांत साफ करने के लिए टहनी तैयार की, उसे मोड़ा

मैंने कपड़े धोए और अन्य छोटे-मोटे काम किए।

7 से 7:30 तक खेल हुआ।

7:30 से 8 बजे तक टहलने गए, दर्शन किए। 8 से 10 बजे तक प्रार्थना की, बा को दवाइयां दीं और उनकी मालिश की।

बॉडी 27 और इसे दबाया।

10 से 10:30 बजे तक, 28 ने मुरब्बी के साथ प्राकृतिक भूगोल का अध्ययन किया।

प्यारेलालजी. 29 पृथ्वी का आकार कैसा है? इसका आधार क्या है? दिन और रात कैसे होते हैं? क्या सूर्य घूमता है या पृथ्वी? ये और इसी तरह के प्रश्न

25 एमकेजी ने व्याकरण की वर्तनी को सही किया।

26 पहले जैसा ही।

27 मनु ने 'मालिश देना' और 'दर्द वाले शरीर को दबाना' के बीच अंतर बताया।

28 एमकेजी ने वर्तनी को सही किया, 'प्रकृतिक'।

29 प्यारेलाल नायर (1899-1982) असहयोग आंदोलन के दौरान साबरमती स्थित सत्याग्रह आश्रम में शामिल हुए और गांधी सचिवालय में महादेव देसाई के साथ काम किया। उनकी कुछ रचनाएँ हैं महात्मा गांधी: प्रारंभिक चरण (1956) और महात्मा गांधी: अंतिम चरण (1956)।

10 मनु गांधी की डायरी

कुछ मुद्दों पर चर्चा हुई। यह बेहद दिलचस्प था। मेरी नींद उड़ गई, लेकिन मैं रात 10:30 बजे सो गया। मैंने भूगोल से संबंधित कुछ प्रश्न भी पूछे थे, जिनका समाधान हो गया।

दिनांक: 15.4.43, गुरुवार

नोट: कल रात बा को बहुत तेज बदन दर्द हो रहा था, जिसका पता मुझे आज सुबह ही चला। रात को मैं इतनी गहरी नींद में सो रही थी कि मुझे कुछ पता ही नहीं चला। लेकिन बा ने आज सुबह मुझसे कहा कि मुझे रात में उठने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि मैं दिन भर काम करती हूँ और थकान से गहरी नींद में सो जाती हूँ। लेकिन मुझे लगा कि उन्हें इतना दर्द हो रहा था, बाकी सब तो जाग रहे थे, फिर भी मैं क्यों नहीं उठी? मैंने ठान लिया कि बा के बुलाते ही मैं उठ जाऊंगी। मैं इसी इरादे से सोई और मैं अपना इरादा निभा सकी। सुबह करीब 1 बजे बा को दर्द होने लगा। मैं उनके बुलाते ही तो नहीं उठी, लेकिन मैं उठी और करीब 1:30 बजे तक धीरे-धीरे उनके पैर, हाथ, पीठ आदि दबाती रही। उसके बाद मैं फिर सो गई। मुझे इस बात की तसल्ली थी कि मैं अपनी मर्जी से उठी और बा की सेवा कर सकी। कितना अच्छा होता अगर मैं इसी तरह रात में

जब भी ज़रूरत हो, उठ पाती? मैंने यह संकल्प लिया और भगवान से प्रार्थना की कि मुझे इतनी गहरी नींद में न रखा जाए। लेकिन आज मेरी प्रार्थना का फल मिला या मेरे संकल्प का, यह तो केवल राम ही जानते हैं, लेकिन मैं उठ गया, जिससे मुझे बहुत खुशी हुई।

15.04.1943

आज मैं सुबह 5:15 बजे उठा, जब प्रार्थनाएं आधी हो चुकी थीं।

5:15 से 6 बजे के बीच मैं फिर सो गया। मुझे नींद नहीं आ रही थी, लेकिन मेरे पास कोई चारा नहीं था।

बहुत जरूरी काम था। प्यारेलालजी के साथ पढ़ाई करने के बाद मुझे देर हो गई थी और हल्का सिरदर्द भी था। इसलिए मैं सो गया।

30 एमकेजी ने उसकी व्याकरण संबंधी गलतियों को सुधारा।

मनु गांधी की डायरी 11

6 से 7 31 मैंने अपने दांत ब्रश किए, स्नान किया, जूस तैयार किया, पिया

दूध डाला, चाय बनाई, बर्तन साफ किए, आदि।

7 से 7:30 तक खाखरा और रोटी के लिए आटा तैयार किया, काटा

सब्जियां धोईं, अलमारी साफ की, बाल संवारे।

7:30 से 8:32 गीता पढ़ी, व्याकरण पढ़ा। 2:30 से 3: बा के लिए स्नान तैयार किया, सरसरी नज़र डाली।

अखबारों में पूज्य रामदासकाका का 33वां पत्र पढ़कर सुनाया गया, और उनके द्वारा बताए अनुसार उत्तर लिखा गया।

3 से 3:30 बजे तक सुशीलाबेन के साथ अंग्रेजी पढ़ी। 3:30 से 4 बजे तक मैंने सूत काता (मैंने बुने हुए धागे की गिनती नहीं की है)।

सूत कातते समय उठना पड़ा, इसलिए ज्यादा देर तक सूत कात नहीं कर पाई। दो दिन सूत कातने के बाद मैं बुने हुए धागे की गिनती करूंगी।

4 से 4:30 तक बापूजी के साथ गीता और व्याकरण का अध्ययन किया। 4:30 से 5:30 तक बापूजी को रामायण पढ़कर सुनाई और उन्हें अन्य पुस्तकें भी पढ़कर सुनाईं।

अखबारों ने उसके पैरों को दबाया।

5:30 से 6:30 तक बा के लिए चाय बनाई, उन्हें दवाइयां दीं, चाय और...

फल। मैंने अपना भोजन कर लिया।

6:30 से 7 बजे तक दांत साफ करने के लिए टहनी तैयार की, घी बनाया

लैंप, तह करके रखे हुए धुले हुए कपड़े।

7 से 7:30 तक खेल हुआ।

7:30 से 8 बजे तक बापूजी के साथ टहलने गया। 8 से 8:30 बजे तक प्रार्थना की।

8:30 से 11 बजे तक बा की मालिश की, फिर उसके शरीर को दबाया।

मैंने उसे दवाइयाँ दीं, उसका बिस्तर ठीक किया और पढ़ाई के लिए प्यारेलालजी के पास चली गई। लेकिन मैं जल्दी पहुँच गई थी और प्यारेलालजी तैयार नहीं थे। उन्होंने क्लास ले ली।

31 यह संकेत मिलता है कि उसने एमकेजी के लिए जूस तैयार किया था।

32 एमकेजी द्वारा 14.03.43 की प्रविष्टि में सुधार के बावजूद उसने 'व्याकरण' की वर्तनी गलत लिखी।

33 रामदास गांधी (1897-1969)। कस्तूरबा और एम.के.जी. के तीसरे पुत्र।

34 एमकेजी ने 'व्याकरण' की वर्तनी को सही किया।

सिर्फ 20 मिनट का समय लगा, जिसमें कल के पाठ का कुछ अंश दोहराया गया था और उन्होंने सौर मंडल और पृथ्वी के अक्षांशीय क्षेत्रों के बारे में थोड़ी जानकारी दी। मैं रात 11 बजे सो गया।

दिनांक: 16.4.43

आज मैं सुबह 5:15 बजे नमाज़ के लिए उठी। नमाज़ 5:45 बजे समाप्त हुई, लेकिन मैं वापस नहीं सोई। मैंने बा को पीने का पानी दिया और तुरंत नहाने चली गई।

5:45 से 6 बजे तक स्नान किया, दांत साफ किए, बाल संवारे आदि। 6 से 6:30 बजे तक अंग्रेजी लिखी। 7:45 से 8 बजे तक चाय बनाई, दूध पिया, रस निकाला और खाना तैयार

किया।

आटा। 35

8 से 8:30 बजे तक टहलने गए। 8:30 से 9:45 बजे तक मालिश की, बा के बाल संवारे, आदि। 9:45 से 11 बजे तक मक्खन बनाया, खाखरा, रोटी और सब्जियां बनाईं।

उबला हुआ दूध, आदि।

11 से 12:30 तक मैंने अपना खाना बनाया और खाया। 12:30 से 1 बजे तक मैंने अंग्रेजी पढ़ी। 1 से 2:30 तक मैंने बर्तन साफ किए, बापूजी के हाथों में घी लगाया और

बा के चरणों में बैठकर, उनके लिए स्नान तैयार किया, उन्हें गर्म पानी दिया, उन्हें पूज्य मनीलालकाका के 36 पत्र और साथ ही समाचार पत्र पढ़कर सुनाए।

2:30 से 3 बजे तक सोया।

35 हाशिये में, इस प्रविष्टि के सामने एमकेजी ने 'बापू' लिखकर हस्ताक्षर किए थे, जिससे यह संकेत मिलता है कि उन्होंने पिछले दिन की प्रविष्टि पढ़ ली थी। इस दिन की प्रविष्टि पर प्रविष्टि के अंत में हस्ताक्षर किए गए हैं।

36 मनीलाल गांधी (1892-1956) कस्तूरबा के दूसरे पुत्र थे और

एमकेजी ने दक्षिण अफ्रीका के फीनिक्स से इंडियन ओपिनियन का संपादन और प्रकाशन किया और रंगभेद विरोधी आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मनु गांधी की डायरी 13

3 से 3:30 बजे तक सुशीलाबेन के साथ अंग्रेजी पढ़ी। 3:30 से 4 बजे तक 37 धागे बुने (160 धागे) 60 कल के और 100 आज के।

आज। मैं लगातार आधे घंटे तक चरखा नहीं चला पाई; मुझे कई बार उठना पड़ा।

4 से 4:30 तक बापूजी के साथ गीता और व्याकरण का अध्ययन किया। 4:30 से 5:30 तक बा को रामायण पढ़कर सुनाई। 5:30 से 6:30 तक चाय, भोजन, बर्तन साफ करना आदि किया। 6:30 से 7 तक धुले हुए कपड़े तह किए, टहनी, दीपक आदि तैयार किए।

7 से 7:30 तक खेल हुआ।

7:30 से 8 बजे तक बापूजी के साथ टहलने गया। 8 से 8:30 बजे तक प्रार्थना की।

8:30 से 9:45 तक बा को दवाइयां दीं, उनकी मालिश की और

उसने अपने पैर दबाए।

9:45 से 10:30 तक प्यारेलालजी से पढ़ाई। उसने मुझे देशांतर दिखाया,

एटलस में अक्षांश और अक्षांशीय क्षेत्र दिखाए गए। और संक्षेप में यह भी बताया गया कि युद्ध कहाँ लड़ा जा रहा है।

मैंने 10:30 से 11 बजे तक अंग्रेजी लिखी और व्याकरण पढ़ी।

मुझे व्याकरण का एक नया अध्याय पढ़ने को दिया गया। मैं 11 बजे सो गया। 38

दिनांक: 17.4.43

आज मैं प्रार्थना के लिए सुबह 5 बजे उठ गया।

5 से 5:30 बजे तक प्रार्थनाएं संपन्न हुईं। 5:30 से 6:30 बजे तक बा को पानी पिलाने के बाद मैं वापस सो गया।

बापूजी ने सुझाव दिया कि मुझे सो जाना चाहिए।

37. एक वर्ष में कताई की जाने वाली लंबाई चरखे की परिधि पर निर्भर करती है, आदर्श परिधि चार फीट होती है। 160 धागों से 640 फीट कताई का धागा बनेगा।

38 हस्ताक्षर 'बापू'।

6:30 से 7:30 तक: रस निकाला, चाय बनाई, दूध पिया, चाय पिलाई

और दवाइयाँ निकालीं, बर्तन साफ किए और खाखरा और रोटी के लिए आटा गूंथा।

7:30 से 8 बजे तक बाल संवारे, कपड़े सिले। 8 से 8:30 बजे तक टहलने गई। 8:30 से 9:30 बजे तक बा की मालिश की, उनके बाल संवारे और कपड़े बनाए।

स्नान की तैयारी।

9:45 से 11 बजे तक खाखरा, रब, रोटी, सब्ज़ियाँ आदि पकाईं। 11 से 12 बजे तक मैंने भोजन किया और बा को भोजन परोसा। 12 से 1 बजे तक मैंने गीता और व्याकरण पढ़ी। 1 से 2 बजे तक बापूजी और बा के चरणों में घी लगाया। 2 से 2:45 बजे तक सो गई।

2:45 से 3:30 तक 39 पूज्यभाई का पत्र पढ़ें, उसे बापूजी को पढ़कर सुनाएं और

उन्होंने बीए किया और अंग्रेजी की पढ़ाई की।

3:30 से 4 बजे तक सूत काता, गिनती नहीं की। 4 से 4:30 बजे तक बापूजी के साथ गीता का अध्ययन किया। 4:30 से 5:30 बजे तक रामायण पढ़ी। बालकांड पूरा किया।

आज। बा को नींद आ गई थी, इसलिए अयोध्या-कांड शुरू नहीं कर पाई, लेकिन थोड़ी देर के लिए गुजराती की पांचवीं किताब पढ़ी।

5:30 से 6:45 तक चाय, भोजन, तह किए हुए धुले कपड़े, तैयार टहनी

दांत साफ करने और अन्य विविध कार्यों के लिए।

6:45 से 7 बजे तक ग्रामोफोन पर रिकॉर्ड सुने। 7 से 7:30 बजे तक खेले।

7:30 से 8 बजे तक बापूजी के साथ टहलने गया। 8 से 8:30 बजे तक प्रार्थना की।

8:30 से 9:45 तक बा की मालिश की और उनके शरीर को दबाया। 9:45 से 11 तक प्यारेलालजी के साथ अंग्रेजी लिखी। सो गई।

11. 40

39 उनके पिता, जयसुखलाल गांधी।

40 हस्ताक्षर 'बापू'।

दिनांक: 18.4.43

मैं आज सुबह 5 बजे उठा। प्रार्थना 5:30 बजे हुई।

5:30 से 6 बजे तक सोया।

6 से 7:30 बजे तक स्नान किया, रस निकाला, चाय बनाई और दूध पिया।

7:30 से 8 बजे तक बा को दवाइयाँ और चाय दी। आटा तैयार किया।

खाखरा के लिए और गीता का पाठ करें।

8 से 8:30 बजे तक टहलने गए। 8:30 से 9:45 बजे तक बा के बालों की मालिश और कंघी की। 9:45 से 11 बजे तक खाना बनाया।

11 से 12 बजे तक मैंने अपना भोजन तैयार किया और खाया। 12 से 1 बजे तक मैंने अंग्रेजी पढ़ी (लिखी और पढ़ी)। 1 से 2:30 बजे तक मैंने बा और बापूजी के चरणों में घी लगाया और बा के पैर दबाए।

शरीर।

2:30 से 3:15 तक सोया (आज अंग्रेजी नहीं पढ़ सका)। 3:15 से 3:30 तक बा को अखबार पढ़कर सुनाया। 3:30 से 4:15 तक एक बार फिर बा के शरीर को दबाया, 100 धागे काते।

उसने नहाने की तैयारी की।

4:15 से 4:30 तक बापूजी के साथ गीता का अध्ययन किया। 4:30 से 6:30 तक दांत साफ करने के लिए टहनी तैयार की और उसे मोड़ा।

कपड़े धोए, खाना पकाया, चाय बनाई और अन्य छोटे-मोटे काम निपटाए। 'प्रसाद' पढ़ें।

6:30 से 7:30 तक खेल हुआ।

7:30 से 8 बजे तक टहलने गया। 8 से 10:30 बजे तक प्रार्थना की, बा की मालिश की, उनके शरीर को दबाया।

मैंने थोड़ी सी व्याकरण पढ़ ली। प्यारेलाल जी के पास आज समय नहीं था, इसलिए मैं सो गया।

नोट: आज रात भी, लगभग 2:45 बजे बा को चक्कर आ रहे थे और उसकी तबीयत बिल्कुल ठीक नहीं थी। आज मैं सुबह उठते ही उठ गई। मैंने उसे पानी पिलाया और 3:30 बजे तक उसके सिर, पैरों, पीठ, हाथों आदि को दबाया, फिर 3:30 बजे वापस सो गई। 41

41 हस्ताक्षर 'बापू'।

16 मनु गांधी की डायरी

दिनांक: 19.4.43

आज रात करीब 3:30 बजे बा को बेचैनी और परेशानी महसूस हुई, इसलिए मैं जाग गया। मैं करीब 3:45 से 5 बजे तक बा के साथ बैठा रहा। उन्हें इससे पहले भी बेचैनी महसूस हो रही थी। मेरे बैठने से पहले प्यारेलालजी बा के साथ बैठे थे। मैं 3:45 बजे बा के पास गया, जिसके बाद वे चले गए।

प्रार्थनाएं शाम 5 बजे शुरू हुईं।

शाम 5 से 5:30 बजे तक नमाज़ पढ़ी। उसके बाद मैं सो गया और केवल तभी उठ पाया।

लगभग 7.

7 से 8 बजे तक दांत ब्रश किए, जूस निकाला, दूध पिया, बनाया

रोटी का आटा गूंथा, बा के लिए चाय बनाई और उन्हें दवाइयां दीं, सब्जियां काटीं, आदि।

सुबह 8 से 8:30 बजे तक मैंने स्नान नहीं किया था क्योंकि मैं देर से उठा था।

मैं टहलने नहीं गई; मैंने दर्शन किए और वापस आ गई। मैंने अपने बाल धोए इसलिए नहाने में ज्यादा समय लग गया।

8:30 से 9:45 तक बा के बालों में तेल लगाया, कंघी की और उन्हें एक

उसकी मालिश की और नहाने के लिए पानी तैयार किया।

9:45 से 10:30 तक पकी हुई रोटी, सब्जियां और उबला हुआ दूध। आज मैंने

did not make khakharas.

10:30 से 11:30 तक अंग्रेजी पढ़ें। अनासक्ति पढ़ना शुरू कर दिया है।

मैंने Yoga41 कोर्स शुरू किया है लेकिन इसे पूरा नहीं किया है।

11:30 से 12:30 तक मैंने खाना बनाया और खाया, बर्तन साफ किए। 12:30 से 1 बजे तक मैंने गुजराती व्याकरण पढ़ा। 1 से 2 बजे तक मैंने बापूजी और बा के चरणों में घी लगाया। 2 से 2:30 बजे तक मैं सो गया।

2:30 से 3:30 तक रामायण पढ़ी। 3:30 से 4 तक तेल लगाया और बालों में कंघी की, अखबार पढ़े।

4 से 4:30 बजे तक सुशीलाबेन के साथ अंग्रेजी का अध्ययन किया।

42 पिछले दिन की प्रविष्टि में सुबह 2:30 बजे हैं।

43 Anasakti Yoga is MKG's translation of the Bhagvad Gita into Gujarati. First published in 1930.

मनु गांधी की डायरी 17

4:30 से 5 बजे तक कताई की (120 धागे)। 5 से 5:30 बजे तक पूल में नहाने गई। 5:30 से 6:30 बजे तक चाय बनाई, बा को दवाइयाँ और चाय दी। खेला।

मैंने दिलरुबा 44 ऑर्डर किया और अपना भोजन किया।

6:30 से 7 बजे तक ग्रामफोन पर रिकॉर्ड सुने। 7 से 7:30 बजे तक खेले।

7:30 से 8 बजे तक टहलने गए। 8 से 8:30 बजे तक प्रार्थना की।

8:30 से 11 बजे तक बा की मालिश की और उनके शरीर को दबाया। मोड़ा

और कपड़ों को उनकी सही जगह पर रखा। बा के ब्लाउज में दो बटन सिले। प्यारेलालजी के साथ पढ़ाई की, थोड़ा पढ़ा और सो गई। 45

दिनांक: 20.4.43

आज बापूजी ने मुझे सुबह 5:15 बजे प्रार्थना के लिए जगाया।

5:15 से 5:45 तक प्रार्थना।

5:45 से 6:30 तक नमाज़ के बाद मैं वापस सो गई। 6:30 से 7:30 तक खाखरा के लिए

आटा गूंथा, रस निचोड़ा।

दूध पिया, बा को चाय और दवाइयां दीं, बर्तन साफ किए और स्नान किया।

7:30 से 8 बजे तक बाल संवारे, सब्जियां काटीं और गीता पढ़ी। 8 से 8:30 बजे तक टहलने गई। 8:30 से 9:45 बजे तक बा की मालिश की, तेल लगाया और उनके बाल संवारे।

उसके बाल तैयार किए, नहाने की तैयारी की। उसके लिए एनीमा तैयार किया।

9:45 से 11 बजे तक खाखरा, रोटी, सब्जियां, दूध आदि पकाया। 11 से 11:30 बजे तक अंग्रेजी लिखी।

44. एक तारयुक्त वाद्य यंत्र—सितार और सारंगी का मिश्रण—

एसराज से काफी मिलता-जुलता। 'दिलरुबा' का शाब्दिक अर्थ है 'दिल का लुटेरा'।

45 हस्ताक्षर ‘बापू’।

11:30 से 12:30 तक मैंने खाना पकाया और खाया। 12:30 से 1 बजे तक मैंने गुजराती व्याकरण पढ़ा। 1 से 1:45 तक मैंने बा और बापूजी के चरणों में घी लगाया। 1:45 से 2:30 तक मैं सो गया।

2:30 से 3:30 तक बा के लिए मिट्टी का पैक तैयार किया और लगाया, तैयार किया

वह स्नान करती थी और रामायण पढ़ती थी।

3:30 से 4 बजे तक संतरे खाए, कपड़े तह किए और उन्हें रखा

उन्हें उनके उचित स्थान पर रखना चाहिए।

4 से 4:30 तक बापूजी के साथ गीता और व्याकरण का अध्ययन किया। 4:30 से 5 तक सूत काता (130 धागे)। 5 से 5:30 तक सुशीलाबेन के साथ अंग्रेजी का अध्ययन किया। 5:30 से 6 तक चाय बनाई, बापूजी को चाय और दवाइयाँ परोसीं।

मैं नहाने गया।

6 से 6:30 बजे तक बर्तन साफ किए और खाना खाया। 6:30 से 7 बजे तक दांत साफ करने के लिए टहनियाँ तैयार कीं, उन्हें मोड़कर धोया।

कपड़े पहने और खेलने चले गए।

7 से 7:30 तक खेल हुआ।

7:30 से 8 बजे तक बापूजी के साथ टहलने गया। 8 से 8:30 बजे तक प्रार्थना की।

8:30 से 10:15 तक मैंने बा की मालिश की और उसके शरीर को दबाया।

प्यारेलालजी के साथ पढ़ाई की और सो गए।

आज मुझे पुणे में बापूजी के साथ रहने आए एक महीना हो गया है।

दिनांक: 21.4.43

आज रात मैं लगभग जागती रही क्योंकि बा को कमर में बहुत दर्द हो रहा था। लेकिन लगभग 3 बजे तक सुशीलाबेन बा के बगल में सोईं। 3 बजे के बाद मैं भी उनके बगल में सो गई। बा ने मुझे बड़े प्यार से सहलाया। मेरी माँ के निधन को चार साल हो गए हैं।

चार साल पहले, मैं अपनी माँ की गोद में सोता था और वह मुझे प्यार से सहलाकर सुला देती थीं। मुझे वह अनुभव याद आया और लगा कि चार साल बाद बा ने मुझे अपनी गोद में सुलाया, ठीक वैसे ही जैसे मेरी माँ सुलाया करती थीं। और उन्होंने मुझे अपने प्यार भरे हाथों से छुआ, जिससे मुझे सुकून मिला।

मनु गांधी की डायरी 19

मुझे असीम आनंद मिला। और मेरी माँ की धुंधली यादें फिर से जीवंत हो उठीं। मेरी आँखों में आंसू आ गए। आज ऐसा लगा जैसे मेरी माँ ने मुझे प्यार से सहलाया हो, इतना आनंद था। 46

5:15 से 5:45 तक प्रार्थना।

5:45 से 7 बजे तक फिर सो गई। 7 से 8 बजे तक जूस बनाया, नहाया, दूध पिया, चाय बनाई और कंघी की।

बाल। बा को दवा दी, खाखरा के लिए आटा तैयार किया और 'अनासक्ति योग' पर एक प्रवचन पढ़ा।

8 से 8:30 बजे तक टहलने गए। 8:30 से 9:45 बजे तक बा की मालिश की और उनके बाल संवारे। 9:45 से 10:30 बजे तक खाखरा, दूध, सब्जियां, रोटियां आदि पकाईं।

10:30 से 11 बजे तक अंग्रेजी लिखी। 11 से 11:30 बजे तक अपना भोजन किया और बा को भी भोजन परोसा। 11:30 से 12:15 बजे तक व्याकरण पढ़ी। 12:15 से 1 बजे तक प्यारेलाल जी को सभी अखबारों को व्यवस्थित करने में मदद की।

तिथिवार।

1 से 2 बजे तक बा और बापूजी के चरणों में घी लगाया। 2 से 3:15 बजे तक सो गया।

3:15 से 4 बजे तक रामायण और अखबार पढ़े। 4 से 4:30 बजे तक बापूजी के साथ गीता और व्याकरण का अध्ययन किया।

46 इस अंश को एम.के.जी. द्वारा संशोधित किया गया है। मनुबेन का पहला अनुवाद इस प्रकार था:

और जब उन्होंने मुझे अपने प्यार भरे हाथों से सहलाया, तब मुझे लगा कि चार साल बाद इस सहलाने से मुझे असीम आनंद मिला है। मैं अपनी माँ की यादों को पूरी तरह से भूली नहीं हूँ, बल्कि उनकी कई भूली हुई यादें ताज़ा हो गईं। मेरी आँखों में आँसू आ गए। लेकिन आज का आनंद ऐसा था मानो मेरी माँ ने ही मुझे सहलाया हो।

पृष्ठ के हाशिये पर एमकेजी ने निम्नलिखित टिप्पणी लिखी।

'ये सुधार केवल व्याकरण और वाक्य संरचना से संबंधित हैं। इन्हें समझा जाना चाहिए।'

4:30 से 5 बजे तक स्नान किया।

5 से 5:30 तक मैंने बापूजी के लिए चाय बनाई, रस निचोड़ा और पढ़ा।

कुछ समय के लिए 'वंदे मातरम'।

5:30 से 6 बजे तक मैंने खाना खाया। 6 से 6:30 बजे तक मैंने बर्तन साफ किए और टहनी तैयार की।

दांत साफ करना, धुले हुए कपड़ों को तह करके उनकी सही जगह पर रखना।

6:30 से 7:30 तक खेल हुआ।

7:30 से 8 बजे तक बापूजी के साथ टहलने गया। 8 से 8:30 बजे तक प्रार्थना की।

8:30 से 10:30 तक मैंने बा की मालिश की और उसके शरीर को दबाया।

उसने अपना बिस्तर तैयार किया और उस पर मच्छरदानी लगा दी। मैंने प्यारेलालजी से पढ़ाई की। आज मैंने झरनों, जलप्रपातों और गंधकयुक्त जल के बारे में सीखा। रात 10:30 बजे सो गई। 47

दिनांक: 22.4.43

आज सुबह बापूजी ने मुझे प्रार्थना के लिए सुबह 5 बजे जगा दिया।

शाम 5 से 5:30 बजे तक प्रार्थना।

5:30 से 5:45 तक फिर सो गई। 5:45 से 7:30 तक नहाया, जूस निकाला, बाल संवारे, चाय बनाई।

मैंने दूध पिया और खाखरा और रोटी के लिए आटा गूंथा।

7:30 से 8:48 तक गीता ध्वनि पढ़ें, गीता पढ़ें, और साथ ही

गीता का मराठी अनुवाद 49. (प्रत्येक में पहला प्रवचन।)

8 से 8:30 तक बापूजी के साथ टहलने गई। 8:30 से 9:45 तक बा को मसाज दी, उनके बालों में तेल लगाया और

मैंने इसे कंघी किया।

47 हस्ताक्षर 'बापू'।

48 किशोरलाल मशरूवाला द्वारा गीता का गुजराती पद्य में अनुवाद।

49 विनोबा भावे द्वारा श्लोक में गीता का मराठी अनुवाद।

मनु गांधी की डायरी 21

9:45 से 10:15 तक सब्जियां, दूध, खाखरा, रोटी आदि पकाईं। 10:15 से 11:15 तक अंग्रेजी लिखी। 11:15 से 12:30 तक मैंने और बा ने खाना खाया। 12:30 से 1 बजे तक बा की मालिश की। 1 से 2 बजे तक बापूजी की मालिश की और एक व्यक्ति की लंबी आस्तीनें काटीं।

मैंने फ्रॉक बनाई और उन्हें सिल दिया।

आज मैं 2 से 2:30 बजे तक नहीं सोया। आज से मैं कभी नहीं सोऊंगा।

मैं दोपहर में सो जाता हूँ, सिवाय उस दिन के जब मुझे रात को ठीक से नींद न आई हो या मैं अस्वस्थ हूँ। अन्यथा, मैं तब भी नहीं सोता, भले ही मेरे पास कोई और काम न हो।

2:30 से 3:30 तक थोड़ी देर तक घूमती रही, जैसे ही बा जागी मैंने उसे पानी दिया।

और उसे रामायण और अखबार पढ़कर सुनाते थे।

3:30 से 4 बजे तक गुजराती व्याकरण पढ़ा। 4 से 4:30 बजे तक बापूजी के साथ गीता और व्याकरण का अध्ययन किया। 4:30 से 5 बजे तक सूत काता (आज मैंने 200 धागे काते)। 5 से 6:30 बजे तक आज सुशीलाबेन को कुछ और काम था, इसलिए वह नहीं आ सकीं।

मैं उसके साथ पढ़ाई नहीं कर पाई। मैंने स्नान किया और भोजन किया। दांत साफ करने के लिए टहनी को पानी में भिगोया, धुले हुए कपड़े तह करके उनकी सही जगह पर रखे, चाय बनाई और रस निचोड़ा।

मैंने ग्रामोफोन पर संगीत सुना।

6:30 से 7:30 तक खेल हुआ।

7:30 से 8 बजे तक बापूजी के साथ टहलने गया। 8:30 से 10:30 बजे तक बापूजी की मालिश की, उनके शरीर को दबाया, और उन्हें आराम दिया।

मैंने उसे दवाइयाँ दीं और उसे सुला दिया। मैंने प्यारेलालजी से पढ़ाई की। आज से: एक, मैं दोपहर में नहीं सोऊँगी और दो; मैं खेल खेलने के लिए अपने कपड़े नहीं बदलूँगी। मैं साड़ी में ही खेलूँगी और अगर यह संभव नहीं हुआ, तो मैं वह खेल खेलना छोड़ दूँगी। 50

50 हस्ताक्षर 'बापू'।

22 मनु गांधी की डायरी

दिनांक: 23.4.43

आज बापूजी ने मुझे सुबह 5:15 बजे प्रार्थना के लिए जगाया।

5:15 से 5:45 तक प्रार्थना।

5:45 से 6:30 तक फिर से सो गया। 6:30 से 7:45 तक खाखरा और रोटी के लिए आटा गूंथा।

रस निकाला, स्नान किया, सब्जियां काटीं, दूध पिया, आदि।

7:45 से 8 बजे तक मैंने अपने बाल संवारे, गीता का अध्ययन किया और प्रवचन दिए।

from 51 Gita Dhvani , Gitai and the Gita.

8 से 8:30 बजे तक बापूजी के साथ टहलने गई। 8:30 से 11 बजे तक बापूजी की मालिश की और उनके बालों में तेल लगाया।

और उसने बाल संवारे, सब्जियां पकाईं, रोटी, खाखरा, खीर और भाखरी बा के लिए बनाई।

11 से 11:30 तक साबुन के पानी में कपड़े भिगोए, सब्जियां धोईं।

और अन्य भोजन भी दिया और बा को भोजन परोसा।

मैंने 11:30 से 12:30 बजे के बीच भोजन किया। बापूजी ने मेरी अंग्रेजी की परीक्षा ली।

मैंने अपनी नोटबुक में अपनी गलतियाँ बताईं। मैंने बर्तन साफ किए और वार्डर को बापूजी की थाली साफ करते हुए देखा।

12:30 से 1 बजे तक अंग्रेजी लिखी। 1 से 2 बजे तक बापूजी और बा के चरणों में घी लगाया। 2 से 2:30 बजे तक गुजराती व्याकरण पढ़ा। 2:30 से 3:15 बजे तक सूत काता (190 धागे)। 3:15 से 4:30 बजे तक बापूजी के साथ अध्ययन किया। 4:30 से 5:30 बजे तक बा को रामायण और अखबार पढ़कर सुनाया।

5:30 से 6 बजे तक मैंने चाय बनाई और स्नान किया। मैंने चाय दी और

बा को दवाइयाँ दीं। गुड़ रखने वाली कांच की बोतल साफ की। बर्तन साफ किए और थोड़ी देर बापूजी के साथ बैठी।

51 विनोबा भावे द्वारा श्लोक में गीता का मराठी अनुवाद।

मनु गांधी की डायरी 23

शाम 6 से 7:30 बजे तक मैंने खाना खाया, ग्रामोफोन पर गाने सुने।

आज मेरे पैर में बहुत दर्द था, इसलिए मैं नहीं खेल पाया। और पता ही नहीं चला कि समय कहाँ चला गया। समय व्यर्थ ही बीत गया। मैंने कुछ देर दूसरों को खेलते देखा।

7:30 से 8 बजे तक बापूजी के साथ टहलने गया। 8 से 8:30 बजे तक प्रार्थना की।

8:30 से 9:45 तक बा की मालिश की और उनके शरीर को दबाया। 9:45 से 10 तक प्यारेलालजी के साथ पढ़ाई की। 10:10 52 मैं सोने चला गया।

दिनांक: 24.4.43

आज बापूजी ने मुझे सुबह 5:15 बजे प्रार्थना के लिए जगाया।

5:15 से 5:45 तक प्रार्थना।

5:45 से 6:30 तक सोया। बापूजी ने मुझे फिर से 6:30 बजे जगाया। 6:30 से 7:45 तक दांत साफ किए, नहाया, बाल संवारे और कपड़े बनाए।

चाय बनाई, दूध पिया, बा को चाय और दवाइयां दीं, रोटी और खाखरा के लिए आटा गूंथा, सब्जियां काटीं, आदि।

7:45 से 8 तक गीता ध्वनि का तीसरा प्रवचन पढ़ें।

and Anasakti Yoga.

8 से 8:30 तक बापूजी के साथ टहलने गए। 8:30 से 10 तक बापूजी के बालों में तेल लगाया और कंघी की, उन्हें एक

मालिश।

10 से 11 पके हुए खाखरा, रोटी और सब्जियां बनाईं

खीर और भाखरी बा के लिए।

11 से 11:30 तक अंग्रेजी लिखी। 11:30 से 12:30 तक बा के लिए खाना तैयार किया, उन्हें परोसा और मैंने अपना खाना खाया।

52 हस्ताक्षर 'बापू'।

12:30 से 1 बजे तक कहानी की किताब पढ़ी। 1 से 2 बजे तक बा और बापूजी के पैरों में घी लगाया। 2 से 2:30 बजे तक बा की ब्रा तंग थी, इसलिए मैंने उसे ढीला किया (खोला)।

दर्जी द्वारा लगाए गए टांके)।

2:30 से 3:15 तक सुशीलाबेन के साथ अध्ययन किया। 3:15 से 3:45 तक 53 धागे (120 धागे) काते हुए आज एक गुच्छा पूरा किया। 3:45 से 4:45 तक बापूजी के साथ अध्ययन किया। 4:45 से 5:30 तक बापूजी को रामायण और समाचार पत्र पढ़कर सुनाए।

मैं 5:30 से 6:45 के बीच नहाने गया। चाय बनाई, और एक टहनी तैयार की।

मैंने दांत साफ किए, घी के दीपक के लिए बाती बनाई, बर्तन साफ किए, कपड़े तह करके रखे और फिर भोजन करने चला गया।

6:45 से 7 बजे तक मैंने अपना भोजन किया और कुछ अन्य काम निपटाए।

काम।

7 से 7:30 तक खेल हुआ।

7:30 से 8 बजे तक बापूजी के साथ टहलने गया। 8 से 8:30 बजे तक प्रार्थना की।

8:30 से 10:30 तक बा की मालिश की, उसके पैरों को दबाया, उसे

medicines and studied with Pyarelalji.

10:30 54 सो गया।

दिनांक: 25.4.43

मैं सुबह 5:15 बजे प्रार्थना के लिए उठा, बापूजी ने मुझे जगाया।

5:15 से 5:45 तक प्रार्थना।

5:30 से 6:30 तक फिर सो गया।

53 यह शब्द 'गाड़ी' है, जिसका अर्थ गाँठ होता है; कताई की शब्दावली में इसे 'आंती' या हैंक कहा जाता है। 375 लंबाई या धागे मिलकर 500 गज का एक हैंक बनाते हैं। देखें सीडब्ल्यूएमजी, खंड 24, पृष्ठ 483।

54 हस्ताक्षर 'बापू'।

55. सुबह 5:45 बजे होना चाहिए।

6:30 से 7:45 56 57 स्नान कराया, रस निचोड़ा, बा का बिस्तर लगाया, सफाई की

बर्तन बनाए, चाय बनाई, दवाइयां दीं और दूध पिया।

7:45 से 8:58 तक बा की ब्रा सिली। 8 से 8:30 तक टहलने गई। 8:30 से 10:59 तक मसाज दी। आज रविवार होने के कारण, एक

बा में सिर धोने के लिए थोड़ा अधिक समय लगा।

10 से 11 60 खाखरा, खीर, सब्जियां आदि पकाईं। 11 से 11:30 61 बा के लिए खाना तैयार किया और खुद भी खाना खाया। 11:30 से 12:30 बा की ब्रा का काम पूरा किया। बटन होल बनाए और

बटन पर काम करने की आवश्यकता है। 62

12:30 से 1:63 आज बकरी ने बच्चे दिए, मैं उन्हें लेने गया था

उन पर एक नज़र।

1 से 2:64 बापूजी और बा के चरणों में घी लगाया। 2 से 3:45 बटनहोल और बटन की सिलाई पूरी की।

बा की ब्रा पहनी, अंग्रेजी लिखी और सुशीलाबेन के साथ अंग्रेजी का अध्ययन किया।

3:45 से 4:15 तक बापूजी के साथ गीता और व्याकरण का अध्ययन किया। 4:15 से 5:45 तक बापूजी के बालों में तेल लगाया, उनके बाल संवारे और पढ़ा।

रामायण और अखबार पढ़े, चाय बनाई। 65

56 स एमकेजी ने अपनी वर्तनी को सही किया: ‘’ को ‘रस’ में बदल दिया।

57 पथारी MKG corrected ‘’ .

58 एमकेजी ने अपने ‘ब’, ‘स’ और ‘श’ को ठीक किया और हाशिये में एक नोट लिखा ‘द, ઠ, ઢ (दा, था, ध) इस अंतर को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

59 एमकेजी ने 'रविवारे' को 'रिववारे' में सुधारा, और 'ठ' के रूप को सही किया।

60 एमकेजी ने अक्षर ‘ख’ के रूप को सही किया।

61 एमकेजी ने बताया कि शब्द ‘तैया२’ का अर्थ तैयार करना या पकाना होगा, जबकि उपयुक्त शब्द ‘भोजन परोसना’ ‘પી२સવું’ होगा।

62 एमकेजी ने अक्षर ‘ब’ के रूप को सही किया और हाशिये में एक टिप्पणी लिखी ‘ब, न, ख, , का अंतर।’

63 यह शब्द ‘ब चा’ है, जिसे ‘बरचा’ लिखा गया था, अक्षर जुड़े हुए नहीं थे। एम.के.जी. ने सुधार किया।

64 ब एमकेजी ने ‘’ के रूप को सही किया, जो ‘ख’ की तरह पढ़ा जाता था।

65 ब एमकेजी ने ‘’, ‘न’, ‘थ’, ‘घ’ अक्षरों के रूप को सही किया। 26 मनु गांधी की डायरी

5:45 से 6:30 तक दांत साफ करने के लिए टहनी तैयार की, साफ किया

बर्तन धोए, कपड़े तह करके उनकी सही जगह पर रखे। कुछ देर गुजराती की पाँचवीं पुस्तक पढ़ी और दीपक जलाने की तैयारी की। 66

6:30 से 7 बजे तक खाना खाया। 7 से 7:30 बजे तक खेला।

8 से 10:30 तक बा की मालिश की और उसके शरीर को दबाया, रखा

मैंने उसके बिस्तर पर मच्छरदानी लगा दी। उसके बाद मैं प्यारेलाल जी के पास गया। आज उन्होंने मुझे तीन कहानियां सुनाईं। आज रविवार है और हमने यह नियम बनाया है कि हर रविवार को वे मुझे एक कहानी सुनाएंगे। थोड़ी देर के लिए उनका तीसरी कहानी सुनाने का मन नहीं हुआ क्योंकि उन्हें सिरदर्द था, मैंने उनका सिर दबाया, जिसके बाद उन्होंने तीसरी कहानी सुनाई। मैं रात 10:30 बजे सो गया। 67

दिनांक: 26.4.43, सोमवार

आज बापूजी ने मुझे सुबह 5:30 बजे प्रार्थना के लिए जगाया।

5:30 से 6:68 प्रार्थनाएँ।

आज मैंने अपने बाल धोए इसलिए मुझे ज्यादा समय लग गया। 6 से 6:30 बजे तक मैंने अपने बाल धोए, इसलिए ज्यादा समय लगा।

स्नान करना।

6:30 से 7:30 तक: जूस निकाला, चाय बनाई, सब्जियां काटीं, तैयारी की।

खाखरा के लिए आटा गूंथा, बर्तन साफ किए, इत्यादि। 69

66 एमकेजी ने 'मुख्य' को 'मुख्य' में सुधारा, जिसका शाब्दिक अर्थ है, रखा गया।

67 एमकेजी ने 'दख्यूं' को 'दायू' (दबाया) में बदल दिया। 'टेमने' को 'टेमने' में बदला, अक्षर 'बी' को सही किया 'आपुन' को 'आ यु', अक्षर 'म' को सही किया और 'बापू' पर हस्ताक्षर किए।

68 एमकेजी ने ‘प्राथरना’ में अक्षर ‘थ’ के रूप को सही किया।

69 ‘इत्यादि’ शब्द का अनुवाद ‘વગેરે’ होता है। एम.के.जी. ने लिखा, “अब से ‘इत्यादि’ शब्द

का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए, विवरण स्पष्ट रूप से दिए जाने चाहिए। डायरी में 'इत्यादि' शब्द का कोई स्थान नहीं है।"

मनु गांधी की डायरी 27

7:30 से 8 बजे तक मैंने बा और अपनी अलमारियाँ साफ कीं। 8 से 8:30 बजे तक मैं बापूजी के साथ टहलने गया। 8:30 से 10:30 बजे तक मैंने बा के बाल संवारे, उनकी मालिश की और...

उसने नहाने और एनीमा की तैयारी की।

10:30 से 11:15 तक खाखरा, सब्जियां आदि पकाईं। 11:15 से 12:15 तक बा के भोजन की तैयारी की और अपना भोजन किया।

खाना।

12:15 से 1 तक बा को 'वंदे मातरम' सुनाया। 1 से 1:45 तक बा और बापूजी के चरणों में घी लगाया। 1:45 से 2:15 तक 71 मैं सो गया।

दोपहर 2:15 से शाम 5:30 बजे तक इस दौरान रामायण के सातवें सर्ग का पाठ करें।

अखबार पढ़ते हुए, बाकी समय में बालों में तेल लगाया। चूंकि बापूजी का मौन दिवस था, इसलिए मैंने उनके साथ पढ़ाई नहीं की, और सुशीलाबेन को कुछ काम था, इसलिए मैंने उनके साथ भी पढ़ाई नहीं की। बस सूत काता। लेकिन पता ही नहीं चला समय कहां चला गया। आलस में ही समय बीत गया। 72

5:30 से 6:30 तक दांत साफ करने के लिए टहनी तैयार की, उसे मोड़ दिया

मैंने कपड़े रखे और उन्हें व्यवस्थित किया, 73 मैंने दीपक तैयार किया, मैंने भोजन किया, बा के लिए चाय बनाई, इत्यादि। 74

6:30 से 7:30 तक खेल हुआ।

7:30 से 8 बजे तक टहलने गए। 8 से 8:30 बजे तक प्रार्थना की। 8:30 से 11 बजे तक बा की मालिश की, उनके शरीर को दबाया और

उसने अपने बिस्तर पर मच्छरदानी लगा दी। प्यारेलालजी के साथ पढ़ने गई। वह उससे बहुत गहराई से जुड़ गए।

70 एमकेजी ने इस प्रविष्टि में अक्षर 'थ' के रूप को सही किया।

71वें एमकेजी ने इस प्रविष्टि में अक्षर " के रूप को सही किया।

72 उसने लिखा था, 'समय आलस्य की तरह बीत गया', एम.के.जी. द्वारा संशोधित।

73 उनके सूत्र में यह लिखा था 'कपड़ों को तह करके रखा', जिसे एम.के.जी. ने संशोधित किया।

74 एम.के.जी. द्वारा 'आदि' शब्द को काट दिया गया।

नक्शे में इतना मग्न हो गए कि समय का ध्यान ही नहीं रहा। 11 बज गए। उसके तुरंत बाद मैं सो गया।

27.4.43 से 1.5.42 तक 75 मेरी आँखों में दर्द था, इसलिए मुझे मना किया गया था

कुछ भी लिखने से पूरी तरह असमर्थ। इसलिए, लिख नहीं सका।

दिनांक: 1.5.43

आज बापूजी ने मुझे सुबह 5 बजे प्रार्थना के लिए जगाया। हमने 5 बजे से 5:30 बजे तक प्रार्थना की।

मैं 5:30 से 6:45 तक सोया।

मैं सुबह 6:45 बजे फिर से जाग गया और...

6:45 से 7 बजे तक मैंने दांत ब्रश किए, जूस निकाला, सफाई की

टेबल आदि पर चाय बनाई गई।

7 से 8 बजे तक स्नान कराया, बाल संवारे, दूध पिलाया, चाय पिलाई और

बा को दवाइयाँ।

8 से 8:30 तक बापूजी के साथ टहलने गई। 8:30 से 9:30 तक बा को मसाज दी, उनके बाल संवारे और

उसने अपना स्नान तैयार किया 76 इत्यादि।

सुबह 9:30 से 10 बजे के बीच मुझे तेज सिरदर्द हो रहा था; इसलिए मैंने अपनी आंखें बंद कर लीं।

और लेट गया।

10 से 11 बजे के बीच रसोई में गए, सब्जियां, दूध आदि बनाए।

11 से 12 तक कुछ देर 'रीडर' पढ़ा, तैयारी की

भोजन के लिए गए और खाया।

मैं रात 12 बजे से 1 बजे तक सोया।

1 से 2 बजे तक बापूजी ने मुझे जगाया। मैं उठ गया। पढ़ने के बाद...

रामायण के दौरान, बापूजी लेट गए और मैंने उन पर घी लगाया।

75 यह 43 होना चाहिए।

76 ान उसने अंग्रेजी शब्द 'बाथ' का इस्तेमाल किया था, एमकेजी ने उस पर लिखा था " .

मनु गांधी की डायरी 29

उनके पैर। आज मैं बापूजी को आसानी से घी लगा सकी, वरना वो मुझे सिर्फ पाँच मिनट के लिए घी लगाने को कहते हैं ताकि मैं सो सकूँ। लेकिन आज बापूजी अपने पैरों पर घी नहीं लगवाना चाहती थीं। इसके बाद बचे हुए समय में मैंने अपनी अलमारी साफ की और कपड़े ठीक से व्यवस्थित किए।

दोपहर 2 से 2:30 बजे तक मैंने सुशीलाबेन के साथ पढ़ाई की। 2:30 से 3 बजे तक मैंने बा को पानी आदि दिया और अखबार पढ़े।

3 से 4 मेरी आँखों में आई ड्रॉप डाली गई। मैंने पढ़ाई की।

बापूजी आंखें बंद किए हुए।

4 से 4:30 तक 77 बा को एक बार फिर रामायण पढ़कर सुनाई। 4:30 से 5 तक संतरे खाए और अंग्रेजी लिखने बैठ गए। 5 से 7 तक चाय बनाई, कुछ अंग्रेजी पढ़ी और लिखी, खाना खाया और लेट गए।

मैं आंखें बंद करके सो गया। मैं खेलने गया और नहाने चला गया।

7 से 7:30 तक खेल हुआ।

7:30 से 8 बजे तक टहलने गया। 8 से 10 बजे तक मैंने बा की मालिश की, उसके शरीर को दबाया और पढ़ाई की।

प्यारेलालजी के साथ सो गए।

नोट: आज के 'वंदे मातरम' में खबर है कि आनंदलाल बापूजी की पत्नी विजया बहन के पति प्रोफेसर प्रभुदासभाई का 29 अप्रैल 2043 की रात निधन हो गया। उन्हें कैंसर था।

नागपुर में मुझे जो सिरदर्द हुआ था, वह यहां भी शुरू हो गया है।

दिनांक: 2.5.43

आज बापूजी ने मुझे सुबह 5 बजे जगा दिया।

शाम 5 से 5:30 बजे तक प्रार्थना।

5:30 से 6:30 बजे तक फिर सो गया।

77 एमकेजी ने अक्षर 'ब' के रूप को सही किया।

78 हस्ताक्षर 'बापू'।

30 मनु गांधी की डायरी

6:30 से 7:30 तक 79 रस निचोड़ा, दूध पिया, स्नान किया, चाय बनाई,

80 दवाइयाँ व्यवस्थित कीं, बाल संवारे।

7:30 से 8:81 तक गीता पढ़ी और बा का कमरा साफ किया। 8 से 8:30 तक बापूजी के साथ टहलने गई। 8:30 से 9:30 तक बा के बालों में तेल लगाया और कंघी की, उनकी मालिश की।

और उसने नहाने की तैयारी की।

9:30 से 10:30 तक पकाया गया।

10:30 से 11 बजे तक मैंने अंग्रेजी लिखी। 11 से 12:15 बजे तक मैंने सब्जियां, दूध आदि गर्म किए और खाना बनाया।

मैंने भोजन की तैयारी की, खाना खाया, बर्तन साफ किए, अन्य छोटे-मोटे काम निपटाए और सो गया।

12:15 से 1 बजे तक सोया।

1 से 2 बजे तक मैंने बा और बापूजी के चरणों में घी लगाया। 2 से 3:30 बजे तक आज मैंने सुशीलाबेन के साथ पढ़ाई नहीं की क्योंकि उन्हें कुछ और काम था।

कुछ और काम। मैंने स्वयं रामायण पढ़ी। 82

3:30 से 4 बजे तक अखबार पढ़े। 4 से 4:30 बजे तक बापूजी के साथ पढ़ाई की। 4:30 से 5:30 बजे तक 83 सूत काते, गिनती नहीं की। 5:30 से 6:45 बजे तक दांत साफ करने और दीपक जलाने के लिए टहनी तैयार की।

बत्तियाँ जलाईं, 84 ने चाय बनाई और उसके बाद पूल में नहाने चले गए। खाना खाने के बाद बर्तन साफ किए।

6:45 से 7:30 तक खेल हुआ।

79 एमकेजी ने अक्षर ‘क’ के रूप को सही किया।

80 उसने 'सारखी' के स्थान पर 'रसखी' लिखा है।

81 एमकेजी ने गीताजी को गीता में संशोधित किया।

82 'खुद से पढ़ना' एक ऐसे वाक्यांश का अनुवाद है जिसका शाब्दिक अनुवाद 'इसे अपने मन में पढ़ना' होगा, जो चुपचाप पढ़ने और जोर से पढ़ने (जरूरी नहीं कि दूसरों के लिए) के बीच अंतर को दर्शाता है।

83 एमकेजी का प्रश्न 'कितना?'

84 यह शब्द गुजराती शब्द 'दीवा बत्ती' का अनुवाद है, जबकि 'प्रकाश' शब्द विद्युत प्रकाश को इंगित करता है।

मनु गांधी की डायरी 31

7:30 से 8 बजे तक तेज हवाओं के कारण हम खेल नहीं सके।

लंबा सफर था। सैर करने का भी समय था। बापूजी के साथ सैर की।

सुबह 8 बजे से 8:30 बजे तक प्रार्थना।

8:30 से 10 बजे तक तूफान आया और बारिश हुई। इसलिए, उसके बाद

प्रार्थना के बाद हम सभी पलंग अंदर ले आए। बापूजी की मालिश की और उनके चरणों में घी लगाने के बाद सो गए। 85

दिनांक: 3.5.43, सोमवार

आज अरंडी का तेल पीने का दिन था। मैंने अरंडी के तेल के चंगुल से बचने के कई तरीके सोचे थे, बाकी सब चीजों से तो बच सकते हैं लेकिन बापूजी से बचना आसान नहीं है। ठीक सुबह 5:15 बजे बापूजी अरंडी के तेल का एक गिलास, पानी और नींबू का एक गिलास लेकर मेरे बिस्तर पर आए और मुझे जगाया। आज उनका मौन दिवस था, इसलिए उन्होंने कुछ नहीं कहा। मैंने अपने दांत साफ किए और बापूजी ने मुझे अरंडी के तेल का गिलास थमा दिया। मुझे यकीन था कि मुझे उल्टी हो जाएगी। लेकिन बापूजी की उपस्थिति में भला कोई कैसे उल्टी कर सकता है? बापूजी उसे मेरे गले में उतारने को तैयार थे, लेकिन मैंने उसे अपने हाथों से पी लिया। बड़ी मुश्किल से मैंने उसे गटक लिया और तुरंत बापूजी ने मुझे नींबू दिया जिसे मैंने चूस लिया। इससे मुझे थोड़ी राहत मिली। सुबह करीब नौ बजे तक मेरे मुंह से बदबू नहीं गई। मैंने तीन बार पानी पिया। मैं सिर्फ दो बार शौचालय गया। आज मैंने अपने जीवन में पहली बार बापूजी के हाथों से 88 ग्राम अरंडी का तेल पिया, वरना मैं कभी अरंडी का तेल नहीं पीता, चाहे कोई कितना भी ज़ोर दे। लेकिन बापूजी ने मुझे पिलाया। बाकी रोज़मर्रा के काम चलते रहे। चूंकि आज बापूजी का मौन दिवस था, इसलिए मैंने उनके साथ पढ़ाई नहीं की। उस समय मैं

85 हस्ताक्षर 'बापू'।

86 एमकेजी ने 'नॉट' को 'वॉज नॉट' में संशोधित किया।

87 एमकेजी ने 'मेरी हाते' को 'मारे हाते' (अपने हाथों से) में सुधार किया।

88 एमकेजी ने 'पाधु' को 'पिधुं' (पिया) में सुधारा।

सुशीलाबेन के साथ पढ़ने का समय था, लेकिन मैं सो रही थी, इसलिए उनके साथ भी नहीं पढ़ी। मैंने रामायण के दस सर्ग पढ़े, जो पच्चीस पृष्ठों में फैले हुए थे। इन दिनों प्यारेलाल जी बहुत व्यस्त हैं और मुझे नहीं पढ़ाते। आज मैंने मुरब्बी रामदशक को एक पत्र लिखा। आज भी तेज बारिश और आंधी आई। कई दिनों से मैंने यह किताब बापूजी को नहीं दिखाई है। मैंने अपना सारा काम 10 बजे खत्म किया और सो गई। आज मैंने सूत नहीं काता, लेकिन अब से मैं रोजाना आधा घंटा सूत कातने के लिए निकालूंगी। आज सिरदर्द थोड़ा कम था। सुबह से दोपहर 2 बजे तक मेरा सिर दर्द करता रहा, जिसके बाद मुझे आराम मिला। 89

दिनांक: 4.5.43

आज का दिन तय कार्यक्रम के अनुसार ही बीता। आज वजन करने का दिन था। मेरा वजन 99 था, बा का 88 और बापूजी का 108 था।

दिनांक: 5.5.43

आज का दिन बाकी दिनों की तरह ही बीता। इसके अलावा, मैंने अपनी एक चादर सिली और एक ब्लाउज पर तीन बटन लगाए। आज से मैंने ठान लिया है कि मैं हर हाल में अपनी लिखावट सुधारूंगी। आज बा ने मेरी इस नोटबुक की जाँच की और एक-दो गलतियाँ बताईं। आज मैंने पूज्य मणिलालकाका और मनुबेन को पत्र लिखे। मैंने पूज्यभाई 91 को भी पत्र लिखा। आज रात बा ने मुझे उनकी मालिश करने की अनुमति दी, लेकिन उनके पैर दबाने की नहीं। मैंने चौथे प्रवचन 92 के श्लोक 8 से 17 तक पढ़े और सर्वनाम से संबंधित व्याकरण का पाँचवाँ अध्याय पूरा किया। इन दिनों मैं सुशीलबेन के साथ पढ़ाई नहीं करती। आज भी मैंने रामायण के पच्चीस पृष्ठ पढ़े। हम यहाँ तक पहुँच गए हैं।

89 'बापू' के हस्ताक्षर के साथ एक नोट: 'लिखाई में सुधार होना चाहिए।' कताई

गिनती नहीं दी गई है। आपको जो कुछ भी पढ़ा है, उसे लिखना चाहिए, ताकि पता चल सके कि आपने कितना ग्रहण किया है।

90 यह माप पाउंड में है।

91 उसके पिता।

गीता का 92वां अध्याय।

मनु गांधी की डायरी 33

उस भाग तक जहाँ भरत राजा गुहा से मिलते हैं। 93 मैंने आज और कुछ खास नहीं पढ़ा। मैंने 120 धागे बुने। मैं 10:30 बजे सो गई।

दिनांक: 6.5.43

आज का दिन बाकी दिनों जैसा ही था। मैंने एक पेटीकोट सिला। पेटीकोट और ओढ़नी पहनने के लिए मुझे साड़ी फाड़ने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। आज हमें विनोदबेन का कार्ड मिला। पूज्य काशीकाकिबा का भी एक पत्र था। मुरब्बी नारंदास बापूजी का भी एक पत्र था, जिसका मैंने उत्तर लिखा। आज मैंने चौथे प्रवचन के श्लोक 20 से 30 तक पढ़े। बापूजी ने मुझे व्याकरण के छठे अध्याय का अर्थ समझाया, जो विशेषणों से संबंधित है। कल से बा मुझे अपने पैर दबाने नहीं देतीं। आज मेरी आँखों और सिर दोनों में दर्द था। आज रात मेरी आँखों में कुछ बूँदें डाली गईं। प्यारेलालजी ने मुझे फिर से पढ़ाना शुरू कर दिया है। उन्होंने मुझे एक कहानी सुनानी शुरू की, कहानी के आधे तक पहुँचते-पहुँचते मैंने पहचान लिया कि यह एंड्रोक्लेस की कहानी है। 94 उन्होंने कहानी आगे नहीं बढ़ाई। सोने का समय हो गया था। मैंने 110 धागे काते।

दिनांक: 7.5.43

आज मेरी आँखें ठीक थीं। सिरदर्द भी नहीं था। जयाफोइबा का पत्र आया था। आज मैंने बापूजी के साथ ज्यामिति पढ़ी। मैंने चौथे श्लोक के 30 से 41 तक भी पढ़े। आज मैंने चौथा श्लोक पूरा कर लिया। मैंने रामायण के पंद्रह पृष्ठ पढ़े। आज प्यारेलालजी ने नहीं पढ़ाया। मेरे सोने का समय हो गया था, इसलिए बापूजी ने मुझे सोने को कहा। मैं सो गया। आज मैंने 130 धागे काते।

दिनांक: 8.5.43

आज मैंने परिवर्तनीय (बदलने वाले) और अपरिवर्तनीय (न बदलने वाले) विशेषणों के बारे में और विधेय और उप-विधेय के बारे में सीखा।

93 एमकेजी ने 'छे' को 'छेयें' में सुधारा।

94 ईसप की कहानियों में से एंड्रोक्लेस और शेर की कहानी। 34 मनु गांधी की डायरी

विशेषणों के अलावा, मैंने पाँचवें प्रवचन के श्लोक 1 से 10 तक भी सीखे। मैंने सुशीलाबेन से दोपहर 2 से 2:30 बजे के बीच 'रीडर' का दसवाँ अध्याय पढ़ा। मैंने व्याकरण की कक्षा में 'पूर्ण वाक्य' (पृष्ठ 95-96) के बारे में सीखा। मैंने सुबह 5 से 5:30 बजे तक व्याकरण का अध्ययन किया। प्यारेलाल जी ने मुझे वायुमंडलीय दाब के बारे में पढ़ाया, साथ ही मैंने ऋतुओं के बारे में भी सीखा, जैसे कि सर्दी और गर्मी कैसे आती हैं और इसके क्या कारण होते हैं। आज मुझे कुछ कपड़े मिले: 4 साड़ियाँ, 3 अंडरशॉर्ट्स, 4 ब्लाउज़ और 4 ब्रा। मुझे कुछ किताबें भी मिलीं। आज मैंने 120 धागे काते।

दिनांक: 9.5.43

आज बापूजी ने पदयात्रा का समय बदल दिया है। सुबह 8 बजे के बजाय अब पदयात्रा का समय सुबह 7:45 से 8:30 बजे तक निर्धारित किया गया है।

आज ऐसा हुआ कि बापूजी ने मुझसे कहा कि मैं 12 बजे से सो जाऊं और उसके बाद उनके चरणों में घी लगाऊं। लेकिन मुझे अंग्रेजी लिखनी थी। अगर मैं 12 से 1 बजे के बीच अंग्रेजी नहीं लिखती, तो 2 बजे क्या दिखाती? अगर मैं 12 से 1 बजे तक सोती और 1 से 2 बजे तक बापूजी और बापूजी के चरणों में घी लगाती, तो मुझे लगा कि सोने के बजाय मुझे अपना अंग्रेजी लेखन कार्य पूरा कर लेना चाहिए। क्योंकि जब सुशीलाबेन अंग्रेजी का होमवर्क मांगती हैं, तो मेरे पास लिखने के लिए कुछ और नहीं होता और मैं सिर्फ अंग्रेजी का होमवर्क ही लिखती हूं, इसलिए मुझे यह कहना अच्छा नहीं लगता कि मैंने वह भी पूरा नहीं किया है। तो फिर मैं बापूजी के चरणों में घी लगाने गई, जहां मैंने देखा कि सुशीलाबेन पहले से ही लगा रही थीं। मैं हैरान रह

गई और कुछ बोल नहीं पाई। मैं बस देखती रही। मैं क्या जवाब देती, मेरी आंखों से आंसू बहने लगे। फिर भी मैंने बापूजी से पूछा: यह क्या है? बापूजी ने जवाब दिया कि अगर तुम नहीं सोओगी तो मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे घी लगाओ। अगर आप नियम बदल देंगे तो मैं भी वैसा ही कर सकती हूँ, है ना? उन्होंने इसी तरह की बातें कहीं। और मैं वहाँ से चली गई। मुझे बहुत दुख हुआ, अगर मैं सच में सो जाती तो क्या होता? दिन ऐसा था कि मुझे रोना ही पड़ा। तीन-चार घटनाएँ हुईं, लेकिन मैंने खुद को संभाला, पर मुझे नहीं पता था कि आखिरकार बापूजी भी ऐसा करेंगे और इससे मुझे दुख होगा। ऐसा भी हुआ है कि एक दिन

95 मूल में अंग्रेजी शब्द।

96 मूल में अंग्रेजी शब्द।

कभी-कभी जब बा नाराज़ होती हैं तो मुझे उनके पैर दबाने या उनके पैरों पर घी लगाने नहीं देतीं। आज बापूजी ने भी कुछ ऐसा ही किया। अगर बा मुझे उनके पैर दबाने या उनके पैरों पर घी लगाने की इजाज़त नहीं देतीं तो मुझे क्यों तकलीफ़ हो? लेकिन आज तो बापूजी ने भी मुझे घी लगाने से मना करके अपनी नाराज़गी ज़ाहिर कर दी। इसलिए, अगर बापूजी ऐसा कर सकते हैं, तो बाकी लोगों को कैसे दोष दिया जाए? बापूजी को मुझे पहले ही चेतावनी दे देनी चाहिए थी कि अगर मैं नहीं सोई तो वो मुझे घी लगाने नहीं देंगे। बापूजी ने आखिरकार यह बात मान ली। आज मैंने 160 धागे काते।

दिनांक: 10.5.43

आज सोमवार था, बापूजी का मौन दिवस था, इसलिए मैंने उनके साथ पढ़ाई नहीं की। मैंने सुशीलाबेन के साथ 'रीडर' का ग्यारहवाँ अध्याय पढ़ा। मैंने व्याकरण में सरल वाक्य विश्लेषण (97) का अध्ययन किया। मैंने प्यारेलालजी के साथ ज्वालामुखी पर्वत के बारे में पढ़ा। मुरब्बी निमुकाकी और मनुबेन के पत्र थे। आज मैंने सौ धागे काते।

दिनांक: 11.5.43

आज रात बा की तबीयत बिगड़ गई थी; मैं दोपहर 3 बजे से शाम 5:30 बजे तक उनके साथ बैठी रही। उन्हें तेज सिरदर्द और पीठ दर्द था। दिन भर उनकी तबीयत खराब रही। बापूजी और सुशीलाबेन दोनों व्यस्त थे, इसलिए उन्होंने मुझे पढ़ाया नहीं। प्यारेलालजी ने ज्वालामुखी पहाड़ों के बारे में थोड़ा और बताया। आज रात मेरी आँखों में तेज दर्द था और सिरदर्द भी था। मैंने आँखों में अरंडी का तेल लगाया और जल्दी सो गई। आज मैंने चरखा नहीं चलाया।

दिनांक: 12.5.43

आज बापूजी की सेहत बेहतर थी। मुझे हल्का सिरदर्द था। मेरी आंख ठीक है। बापूजी व्यस्त थे, इसलिए उन्होंने मुझे पढ़ाई से छुट्टी दे दी थी। आज मैंने 90 धागे काते।

97 मूल में अंग्रेजी शब्द।

दिनांक: 13.5.43

आज मुझे बापूजी के पाठ के लिए पहुँचने में देर हो गई, इसलिए हमने गीताजी के पाँचवें प्रवचन के केवल 10 श्लोक ही पढ़े। आज दिन भर मुझे सिरदर्द नहीं हुआ, लेकिन रात में हल्का सिरदर्द था। बाकी सब कुछ सामान्य रूप से चल रहा है। आज मैंने मुरब्बी काकीबा और मुरब्बी निमुकाकी को पत्र लिखे।

दिनांक: 14.5.43

आज मैंने सुशीलाबेन के साथ 'रीडर' का ग्यारहवाँ अध्याय पढ़ा। बापूजी ने आज छठा प्रवचन शुरू किया। हमने दस श्लोक पढ़े। आज मैंने प्यारेलालजी के साथ नहीं पढ़ा।

दिनांक: 15.5.43

आज मैंने सुशीलाबेन के साथ 'रीडर' का 11वां अध्याय पूरा किया, हमने 12वां अध्याय भी पढ़ा। मैंने बापूजी के साथ छठे प्रवचन के श्लोक 10 से 20 तक पढ़े। मैंने दिशात्मक मानचित्र बनाना और उनके माप (पैमाना) भी सीखे। 98

दिनांक: 16.5.43

कई दिनों बाद आज संयुक्ता बहन का पत्र मिला। मैं उनकी सेहत को लेकर चिंतित थी। उनका पत्र पढ़कर मुझे राहत मिली।

दिनांक: 17.5.43

आज बापूजी के लिए मौन का दिन था। मैंने दोपहर में सुशीलाबेन के साथ पढ़ाई नहीं की, लेकिन सुबह ग्यारहवाँ अध्याय पढ़ा। आज मैंने पूज्य रामदशक को पत्र लिखा। प्यारेलालजी ने मुझे ग्रामोफोन के बारे में सिखाया।

98 मूल अंग्रेजी शब्द।

मनु गांधी की डायरी 37

दिनांक: 18.5.43

आज वजन करने का दिन था। मेरा वजन 102 पाउंड था; 2 पाउंड बढ़ गया। बापूजी का वजन 110 पाउंड था। उनका भी 2 पाउंड बढ़ गया। इस हफ्ते हम सबका वजन बढ़ गया है। आज हमने श्लोक 20 से 30 तक पढ़े। बापूजी ने व्याकरण की कक्षा में संज्ञाओं के बारे में समझाया। आज मैंने रामायण का अयोध्याकांड पढ़ना समाप्त किया। आज सुबह बा ने कहा कि तुम सब दिन भर बापूजी के साथ बैठे रहते हो, कोई मेरे पास नहीं आता। लेकिन मैं केवल निर्धारित समय पर ही पाठ के लिए जाती हूँ, और उस समय बा आमतौर पर सो रही होती हैं। पिछले कुछ दिनों से मैं उनके कमरे में बैठकर लिखती हूँ। इसके बाद भी बा ने यही कहा कि कोई उनके साथ नहीं बैठता। इसलिए, आज मैंने पूरी दोपहर उनके साथ बिताई, और इसी कारण मैं पाठ के लिए भी नहीं गई। मैं पूरे समय बा के साथ बैठी रही। मुझे लगता है कि उन्हें यह बहुत अच्छा लगा।

दिनांक: 19.5.43

आज मैंने अंग्रेज़ी पढ़ी और 13वाँ अध्याय पूरा किया। आज बापूजी छठे प्रवचन के केवल पाँच श्लोक ही पढ़ा पाए। इसका कारण यह था कि बापूजी ने उनके अर्थों की व्याख्या की, जिसमें बहुत समय लगता है। कल से वे मुझे उच्चारण सिखाएँगे और सभी प्रवचन पूरे होने के बाद अर्थों पर आएँगे। आज शाम तेज़ बारिश हुई; हम खेल नहीं पाए।

दिनांक: 20.5.43

आज हमने छठा प्रवचन पूरा किया। व्याकरण में उन्होंने मुझे कर्ता कारक और कर्म कारक सिखाए। आज अंग्रेजी व्याकरण पढ़ने की बारी थी, जो मैंने पढ़ा। बापूजी ने मुझे कर्ता कारक और कर्म कारक सिखाए। आज भी बारिश जारी रही, इसलिए हम खेल नहीं खेल पाए। लेकिन हमने कई नए खेल खेले।

गीता के छठे प्रवचन का 99वां भाग।

मूल रूप में 100 अंग्रेजी शब्द।

101 यह वाक्य मूल पाठ में दोहराया गया है।

खेल। हमने कूद-फांद की, धमाल गोटा खेला और अंगूठी से खेला। हमारी कसरत तो हो गई, लेकिन हम इतना हँसे कि नमाज़ के समय तक मेरे पेट में दर्द होता रहा। बापू ने अपने भाषण के दौरान ट्यूनीशिया की जीत के बारे में बात की, 102 103 उन्होंने मैक्सवेल को लिखे अपने पत्र के बारे में भी बताया।

उन्होंने पूज्य महादेवभाई के बारे में भी बात की। बाकी गतिविधियाँ अपने-अपने क्रम में चलती रहीं। मैं दोपहर में बा के साथ बैठती हूँ। उन्हें अच्छा लगता है जब मैं उनके साथ बैठती हूँ। मैं उन्हें पढ़कर भी सुनाती हूँ।

दिनांक: 21.5.43

आज हमने सातवाँ प्रवचन शुरू किया और दस श्लोक पढ़े। बापूजी ने ज्यामिति में समकोण के बारे में समझाया। हमने 'पाठक' का चौदहवाँ अध्याय शुरू किया और रामायण का किष्किंधा-कांड पढ़कर सुंदर-कांड पढ़ना शुरू किया। आज सुबह मैंने रोटी और खाखरा बनाया। कई दिनों से मैंने यह नोट बापूजी को नहीं दिखाया था, इसलिए उन्होंने कहा कि मैं अपनी डायरी उनके पास नहीं छोड़ती। लेकिन मैं डायरी रोज़ लिखती हूँ, पर उन्हें नहीं दिखाती क्योंकि मैंने उसमें उस दिन का ज़िक्र किया था जब उन्होंने मुझे अपने पैरों पर घी लगाने से मना कर दिया था। मुझे उन्हें डायरी दिखाने में शर्म आती है, इसलिए मैंने उन्हें दिखाना बंद कर दिया है। लेकिन आज मैं उन्हें दिखा दूँगी। सूत कातने में मुझे आलस आ गया है।

दिनांक: 22.5.43

आज मैंने डायरी बापूजी को दी, लेकिन मेरा मन बदल गया और बापूजी ने अन्य कामों में व्यस्त होने के कारण डायरी नहीं देखी थी। मैंने उन्हें याद नहीं दिलाया क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि वे इसे पढ़ें। 104 आज हमने सातवें प्रवचन के 14 श्लोक दस मिनट में पूरे कर लिए। हमने तय किया है कि अब से हम इसके लिए केवल 10 मिनट ही देंगे और उस समय में जितने श्लोक हो सकेंगे उतने करेंगे।

102 मूल में 'ट्यूनिया' लिखा गया है।

103 सर रेजिनाल्ड मैक्सवेल, गृह सदस्य, भारत सरकार।

एमकेजी द्वारा उन्हें लिखे गए पत्र के लिए देखें, सीडब्लूएमजी, खंड 77, पृष्ठ 85-98।

104 उसने हाशिये में लिखा, 'और फिर भी, मैं उसे यह दिखाऊंगी।'

दिनांक: 23.5.43

आज तेज़ हवा चल रही थी। आसमान में बादल भी छाए हुए थे। आज बा का सिर धोने का दिन था, लेकिन मौसम की वजह से उन्होंने ऐसा नहीं किया। आज बा मुझसे नाराज़ थीं क्योंकि सुबह उनकी पेटीकोट थोड़ी गीली थी। लेकिन आजकल मैं उनके कपड़े तह नहीं करती और मुझे इसका एहसास भी नहीं था। कपड़े इस्त्री होकर वापस आते हैं और अगर मैं उन्हें खोलूँ तो सिलवटें बिगड़ जाती हैं। यह मेरी गलती थी कि मैंने उन्हें निकालने से पहले कपड़े चेक नहीं किए। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह वही पहनेंगी जो मैंने उनके लिए निकाला है। अगर पेटीकोट गीली थी, तो उन्हें उसी समय मुझे बता देना चाहिए था, उन्हें दूसरी पेटीकोट मांग लेनी चाहिए थी। उन्होंने मुझे देर रात बताया, जब हम किसी और बात पर चर्चा कर रहे थे। मैंने बस इतना कहा कि यह मेरी गलती है और मैं अब से ध्यान रखूँगी। लेकिन उसके बाद मुझे दो-तीन घंटे नींद नहीं आई और मैं सोचती रही। क्या बा मुझसे दूर हो गई हैं? जब मैं यहाँ नई आई थी तब वह मुझसे जो काम करवाती थीं, अब क्यों नहीं करवातीं? और, मैंने बहुत बड़ी गलती की है, इसके लिए मुझे क्या प्रायश्चित करना चाहिए? मैंने बहुत सोचा कि मैं बा को संतुष्ट क्यों नहीं कर पा रही हूँ। निश्चित रूप से, मुझसे गलती हुई है। अंततः, मैंने अधिक सावधान रहने का निर्णय लिया। मैं बापूजी से ऐसी बातें साझा नहीं करती, और न ही ऐसा करने का मेरा कोई इरादा है। 105 क्योंकि, ऐसी छोटी-छोटी बातें उनके सामने नहीं रखनी चाहिए। यह चुगली करने का एक तरीका है। और बा निर्दोष हैं, उन्हें गुस्सा आता है लेकिन उसके बाद कुछ नहीं होता। उन्हें बताने के लिए क्या है? मुझे जरा भी बुरा नहीं लगा। 106

दिनांक: 25.5.43

आज मैंने बापूजी के साथ आठवां प्रवचन शुरू किया और ज्यामिति में 90 डिग्री के कोणों के बारे में अध्ययन किया।

105 उसने हाशिये में लिखा, ‘बापूजी ने पूछा, लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा’।

106 उनकी डायरी के पृष्ठ 61 और 62 के ऊपरी हाशिये पर लिखा नोट: 'लेकिन, मुझे सौंपे गए सभी कामों में बहुत सावधान रहना चाहिए। मैंने ध्यान नहीं दिया, और यही मेरी गलती थी। लेकिन, मैं सावधान रहने की कोशिश करती हूँ। और वह मेरी बड़ी हैं। उन्हें बताना ही होगा कि मैं कहाँ गलती करती हूँ। वह नाराज़ नहीं थीं, उन्होंने मुझे हल्के से चेतावनी दी। मैं भी रोई, मैंने यह गलती क्यों की?'

दिनांक: 26.5.43

सुबह की सैर के दौरान बापूजी ने गीताजी का पाठ किया। हमने आठवाँ प्रवचन पूरा किया। तभी सुशीलाबेन आईं, तो उन्होंने कहानी सुनाना शुरू किया। 107 उन्होंने हमें पोर्ट सईद पहुँचने तक की कहानी सुनाई। आज सरकार ने बापूजी को श्री जिन्ना को लिखे पत्र के संबंध में जवाब दिया। 108 सरकार ने जवाब में लिखा कि जब तक आप अपना आचरण नहीं बदलते, राजनीतिक मामलों पर कोई पत्राचार नहीं होगा, आपका लिखा पत्र नहीं पहुँचाया जाएगा और हम इस तथ्य को सार्वजनिक करेंगे। श्री जिन्ना कहते हैं कि गांधीजी मुझे पत्र क्यों नहीं लिखते? अब जबकि पत्र लिखा जा चुका है लेकिन अधिकारी उसे पहुँचाने से इनकार कर रहे हैं, हमें देखना होगा कि श्री जिन्ना क्या करते हैं। आज मैंने बापूजी के साथ नौवाँ प्रवचन शुरू किया। जैसे ही मैं सुशीलाबेन के साथ पढ़ने बैठा, बा ने मुझे काशीकाकी को संबोधित एक पत्र लिखने को कहा। मैंने लिखवा लिया और इसलिए पढ़ नहीं सका। आज सुबह मैं प्रार्थना शुरू होने के बाद उठा। बापूजी ने मुझे जगाया था, लेकिन मैं सो गया था और प्रार्थना नहीं सुन पाया। भजन गाए जाने के समय मैं जागा। मैं देर से सोया था, रात 11:30 बजे। बापूजी ने मुझसे कहा कि मैं देर से सोता हूँ और कब तक मुझे इस बात के लिए टोकते रहेंगे। लेकिन असल बात तो यह थी कि मैं शाम को देर से खेलने गया था, इसलिए देर से सोया। आजकल बापूजी

107 यह वर्णन उनके जीवन की कहानी और अनुभवों का प्रतीत होता है।

108 एम.ए. जिन्ना ने 24 अप्रैल 1943 को दिल्ली में मुस्लिम लीग के वार्षिक अधिवेशन में अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा था: “यदि श्री गांधी अब भी वास्तव में पाकिस्तान के आधार पर मुस्लिम लीग के साथ समझौता करने को तैयार हैं, तो मुझसे अधिक इसका स्वागत कोई नहीं करेगा... यदि उन्होंने मन बना लिया है, तो श्री गांधी को सीधे मुझे पत्र लिखने से क्या रोक सकता है?... मुझे विश्वास नहीं होता कि यदि ऐसा पत्र मुझे भेजा जाता है तो वे इसे रोकने का साहस करेंगे।” (सीडब्ल्यूएमजी, खंड 77, पृष्ठ 75, फुटनोट 1)। इसके जवाब में एम.के. गांधी ने 4 मई 1924 को उन्हें पत्र लिखा (देखें, सीडब्ल्यूएमजी, खंड 77, पृष्ठ 75-6), और सरकार से अनुरोध किया कि पत्र श्री जिन्ना को भेज दिया जाए। 24 मई को गृह विभाग के सर रिचर्ड टोटेनहम ने एम.के. गांधी को लिखा: “मैं आपको सूचित करना चाहता हूँ कि भारत सरकार ने निर्णय लिया है कि आपका पत्र आगे नहीं भेजा जा सकता।” देखिए, गांधीजी का सरकार के साथ पत्राचार 1942-44, (अहमदाबाद: नवजीवन, 1945), पृ. 90-1.

दोपहर में वह बापूजी के कमरे में सोती है। इसलिए मैं उसके साथ नहीं बैठती। मैं अपने विचार इस डायरी (पृष्ठ 109) में लिखती हूँ और इसे बापूजी को दिखाना नहीं चाहती। क्योंकि मैंने इसे अपने ज्ञान के लिए लिखा है और दिखाना नहीं चाहती। फिर भी, अगर बापूजी इसे मांगेंगे तो मैं उन्हें दे दूंगी। इसमें शर्म की कोई बात नहीं है। मुझे लगता है कि अगर किसी से गलती हो जाए तो उसे क्षमा मांगनी चाहिए, इसमें शर्म की क्या बात है? इसलिए मैं डायरी (पृष्ठ 110) उन्हें दिखा दूंगी।

दिनांक: 27.5.43

सुबह से ही मुझे ये महसूस हो रहा था कि दिन में कम से कम एक बार तो मुझे रोना ही पड़ेगा। और ऐसा ही हुआ। 10:30 बजे प्यारेलाल जी बापूजी के लिए रोटियां बनाने आए। उस समय मैं दो चूल्हों पर खाना बना रही थी, एक बड़ा और दूसरा छोटा। छोटे चूल्हे पर मैं बापूजी के लिए सब्ज़ियां पका रही थी और बड़े चूल्हे पर रोटियां बना रही थी। वो जल्दी से अंदर आए और मेरी सब्ज़ियों का बर्तन उठाकर बिजली वाले चूल्हे पर रख दिया। उन्होंने बड़ा चूल्हा खुद ले लिया और मुझे छोटा वाला चूल्हा दे दिया जिसकी आंच धीमी थी। तब मैंने कहा, प्यारेलाल जी, अगर सब्ज़ियां बिजली वाले चूल्हे पर पकाऊंगी तो बापूजी नाराज़ हो जाएंगे, और मुझे अभी बहुत सारी रोटियां बनानी हैं, कब तक खत्म करूंगी? 10:30 बज चुके थे। मुझे देर भी हो रही थी। मैंने बस इतना ही कहा था कि वो बहुत गुस्सा हो गए। तो मैंने उनसे कहा कि आप देर से आते हैं और सब कुछ जल्दी में चाहते हैं। आपको मुझे बताना चाहिए था कि आपको चूल्हे की ज़रूरत पड़ेगी। वह सब कुछ छोड़कर चला गया और मुझे चेतावनी दी कि वह बापूजी को बता देगा कि वह आज उनके लिए रोटी नहीं बनाएगा। मुझे बहुत बुरा लगा और मैं बहुत रोई। मेरी वजह से बापूजी को आज रोटी नहीं खानी पड़ेगी। लेकिन मैंने अपनी रोटी पूरी बनाई और तय किया कि चाहे कुछ भी हो जाए, मैं आज नहीं खाऊंगी। बापूजी ने मुझसे कहा कि मेरी कोई गलती नहीं है, मुझे खाना चाहिए। लेकिन मैंने न खाने का फैसला कर लिया था, शायद बापूजी भी नहीं खाएंगे। उन्होंने मुझसे कहा कि अगर मैं नहीं खाऊंगी, तो वह भी नहीं खाएंगे। इसलिए, मैं खाने बैठ गई। लेकिन वही विचार बार-बार मेरे मन में आ रहा था।

109 मूल अंग्रेजी शब्द।

मूल में 110 अंग्रेजी शब्द।

वापस आते ही मेरी आँखों में हर बार आँसू आ जाते थे। कनुभाई ने मुझसे कहा था कि मुझे बहुत सावधान रहना चाहिए और धैर्य रखना चाहिए। मैं इतनी सावधानी से चलती हूँ कि कोई मुझ पर दोष न लगाए। ये कैसे हो सकता है? अगर मेरी कोई गलती नहीं है, तो कोई मुझसे नाराज़ क्यों होगा? मेरी कोई गलती नहीं है, फिर भी प्यारेलाल जी मुझसे नाराज़ क्यों होंगे? पूरा दिन बीत गया, यही विचार मेरे मन से नहीं निकला। रात को मुझे तेज़ सिरदर्द हुआ। सुबह तक दर्द रहा। अभी भी दर्द हो रहा है। आँखों में भी दर्द है। रात को मेरी पलकें चिपक गई थीं। मैं सुबह 3 बजे उठी, आँखें धोईं और सिर पर रुमाल बाँधा, जिससे थोड़ी राहत मिली और मैं सो सकी। तब तक नींद नहीं आई थी। बापूजी मुझे 5 बजे जगाने आए होंगे। लेकिन मैं नहीं उठी। मैंने प्रार्थना भी नहीं सुनी। आज मैंने बापूजी से छुट्टी माँगी क्योंकि मुझे कुछ और काम था, लेकिन शाम की सैर के दौरान बापूजी ने मुझे आठवाँ प्रवचन दिया, जिसे हमने पूरा किया। आज रात बा को अपनी पसलियों में दर्द हो रहा था।

दिनांक: 28.5.43

आज टहलते समय बापूजी ने मुझे नौवें प्रवचन के 18 श्लोक सिखाए।

दिनांक: 29.5.43

आज मैंने बापूजी के साथ 15 मिनट तक पढ़ाई की, लेकिन उन्होंने मुझे चलते-चलते गीताजी सिखा दी। मैंने मुरब्बी रामदस्काका को एक पत्र लिखा।

दिनांक: 30.5.43

आज बापूजी व्यस्त थे, इसलिए उन्होंने मुझे पढ़ाई से छुट्टी दे दी, लेकिन साथ में टहलते हुए उन्होंने मुझे गीताजी के बारे में पढ़ाया।

दिनांक: 31.5.43

आज संयुक्ताबेन ने मेरे लिए मुंबई से चार आंध्र साड़ियाँ, ब्लाउज और अन्य कपड़े, एक कंघी आदि मंगवाईं। अब कपड़ों की कोई कमी नहीं है।

मनु गांधी की डायरी 43

कपड़े। आज रात सब लोग ज़ोर-ज़ोर से हंस रहे थे। मैं वहां गया। डॉक्टर गिल्डर 111 को छह पत्र मिले थे, जो उन्होंने बापूजी को दिखाए। हर पत्र में 31 मई की तारीख लिखी थी। साल 19__? लिखा था, यानी साल को लेकर प्रश्नचिह्न लगा था। डॉक्टर साहब ने कहा था कि हमें 31 तारीख को रिहा कर दिया जाएगा, तो किसी ने उनके साथ मज़ाक किया था। जब मैंने इसके बारे में पूछा, तो दूसरों ने मेरे साथ भी मज़ाक किया।

दिनांक: 1.6.43

आज मैंने संयुक्ताबेन को कपड़े मिलने की सूचना देते हुए पत्र लिखा। बापूजी ने मुझे पढ़ाई से छुट्टी दे दी, लेकिन कुछ देर बाद उन्होंने मुझे फिर बुलाया। मैंने उनसे कहा कि वे थके हुए लग रहे हैं, इसलिए मेरी पढ़ने की इच्छा नहीं है। लेकिन बापूजी ने ज़ोर दिया कि अगर हम गीता के कुछ श्लोक पढ़ें तो ही उन्हें आराम मिलेगा। लेकिन मैंने मना कर दिया। शाम की सैर के दौरान भी उन्होंने मुझे गीताजी लाने को कहा, लेकिन उनके चेहरे और आवाज़ से थकान झलक रही थी, इसलिए मैं गीताजी नहीं ला पाई। फिर उन्होंने महादेवभाई के निधन के बारे में बताया। उससे पहले मैंने उनसे रामायण के बारे में कुछ सवाल पूछे थे। सुशीलाबेन ने आज पढ़ाया नहीं। डॉ. पटवर्धन ने मेरी आँखों की जाँच की और कुछ दवाइयाँ डालीं। वे कल वापस आएँगे।

दिनांक: 2.6.43

आज डॉक्टर पटवर्धन ने मेरी आँखों की दोबारा जाँच की। उन्होंने कहा कि मुझे नए चश्मे की ज़रूरत पड़ेगी। आज भी बापूजी व्यस्त थे और उन्होंने मुझे पढ़ाई से छुट्टी दे दी।

111 डॉ. मंचरशा धनजीभाई दोराबजी गिल्डर (1882-1979), हृदयरोग विशेषज्ञ, बॉम्बे विधान परिषद के सदस्य, बॉम्बे के महापौर, बॉम्बे सरकार में स्वास्थ्य मंत्री (1936-1939 और 1945-1952), राज्यसभा के सदस्य (1952-1960)। 1932 में यरवदा जेल में कैद के दौरान एमकेजी का पहली बार इलाज किया।

112 Dr Patwardhan of Amraoti, President of Hanuman Vyayam Prasarak

मंडल, रचनात्मक कार्यकर्ता।

दिनांक: 3.6.43

आज मैंने बापूजी के साथ अध्ययन किया। हमने तेरहवें प्रवचन के 15 श्लोक पढ़े और साथ में टहलते हुए दस और श्लोक पढ़े। तेरहवां प्रवचन आज पूरा हो गया। आज शाम डाक से पूज्यभाई का पत्र आया।

दिनांक: 4.6.43

आज बा ने मुझे घी लगाने नहीं दिया क्योंकि मेरी उंगली थोड़ी जल गई थी। मैंने इस बारे में किसी को नहीं बताया था। मैं इस बारे में बात करना नहीं चाहती थी, क्योंकि मेरी उंगलियां अक्सर जल जाती हैं और अपने आप ठीक भी हो जाती हैं। लेकिन सुशीलाबेन ने मुझे बता दिया, इसलिए बा ने कहा कि मुझे घी लगाने की ज़रूरत नहीं है। आज मैंने सपना देखा कि हमें रिहा कर दिया गया है। जब मैंने इस बारे में बापूजी को बताया, तो बा ने कहा कि हमें जल्द ही मनु को रिहा करना होगा। हम किसी और को ढूंढ लेंगे। इससे मैं सोचने लगी: क्या मैं अपना काम ठीक से नहीं कर रही हूँ? क्या मैंने कोई बड़ी गलती की है? इसीलिए बा किसी और को ढूंढने की बात कर रही हैं। क्या बा अब भी मुझे अपना नहीं मानतीं? मुझे यहाँ बहुत अच्छा लगता है। मुझे नहीं लगता कि मैंने कभी महसूस किया है कि मैं कैद में हूँ या मुझे जेल में रहने के लिए मजबूर किया गया है। न ही मैंने कभी चाहा है कि भाई हमारे साथ हों। इसके विपरीत, मैं ईश्वर का धन्यवाद करती हूँ कि मुझे सेवा करने का इतना अच्छा अवसर मिला है। जो होना है, वही होगा। आज हमने वाल्मीकि रामायण पूरी कर ली। कल से मैं बा को भगवद् पाठ पढ़ाऊँगी। भंडारी 113 ने आज बापूजी को

बताया कि मुझे अपने पैसों से नया चश्मा खरीदना चाहिए। बापू ने जवाब में लिखा कि कैदियों की देखभाल करना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है। तुम्हें उसे चश्मा देना होगा, नहीं तो उसकी आँखों की रोशनी जाने का खतरा होगा। मैंने पूछा कि क्या मुझे घर से पैसे माँगने चाहिए? बापूजी ने मना कर दिया और कहा कि वे मुझे नया चश्मा दिलवा देंगे। और उन्हें इस पर सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली।

113. भारतीय चिकित्सा सेवा के कर्नल मदन गोपाल भंडारी, जो बंबई में कारागार महानिरीक्षक थे, को 1942 में कंपेनियन ऑर्डर ऑफ द इंडियन एम्पायर (सीआईई) से सम्मानित किया गया था।

मनु गांधी की डायरी 45

दिनांक: 5.6.43

आज रात बा की तबीयत और बिगड़ गई। उन्हें दिल की धड़कन तेज हो गई और अस्थमा का दौरा पड़ गया। मैं प्रार्थना में नहीं गया और बा के पास बैठ गया। थोड़ी देर बाद मैं उनके पास लेट गया। दिन भर उनकी तबीयत खराब रही। आज मैंने बा, बापूजी और सबके पैर छुए। शाम को बापूजी ने कहा कि मैं सभी बच्चों से उनके जन्मदिन पर कोई न कोई वचन लेने को कहूँ। 'अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें वचन दिला दूँगा।' उन्होंने मुझसे कहा कि मैं कभी झूठ न बोलूँ। मैंने वह वचन ले लिया।

दिनांक: 6.6.43

आज डॉक्टर गिल्डर की तबीयत ठीक नहीं थी। इसलिए मैंने उनसे कहा कि मैं उन्हें अरंडी का तेल दे दूँगी। उन्होंने कहा कि अगर मैं उन्हें सुबह 4 बजे अरंडी का तेल दूँ तो वे ले लेंगे, लेकिन अगर पाँच मिनट भी देर हो गई तो वे नहीं पिएँगे। मैं मान गई। सब देखना चाहते थे कि क्या मैं सुबह 4 बजे खुद उठ पाऊँगी। मेरी नींद बहुत गहरी है; मैं रात के बीच में नहीं जागती। एक बार सो जाने के बाद मैं सिर्फ सुबह ही जागती हूँ। मेरे लिए सुबह 4 बजे उठना मुश्किल था। लेकिन मुझे अपना वादा निभाना था, इसलिए हम सबने सारी तैयारियाँ कर लीं और सो गए। सोने से पहले मैंने खूब पानी पिया, ताकि रात में जागना पड़े। अचानक मैं जाग गई, लेकिन तब तक सिर्फ 12:30 ही बजे थे। मैं फिर सो गई और 1 बजे फिर जाग गई। मैं फिर सो गई। 2 बजे बाथरूम में मेरी मुलाकात बापूजी से हुई। उन्होंने हैरानी से कहा, 'ओह हो!' मैं बहुत डर गई थी। मुझे लगा कि बापूजी प्रार्थना के लिए उठ गए हैं; और पाँच बज चुके थे। मुझे डर लग रहा था कि अब सब लोग मेरा खूब मज़ाक उड़ाएँगे। जब मैंने घड़ी देखी तो दो बजने में पाँच मिनट बाकी थे। मुझे लगा कि अगर मैं सो गया तो सुबह से पहले नहीं उठ पाऊँगा। इसलिए मैंने नहाने का फैसला किया। मैंने अपने बाल धोए और जब मैं बाहर आया तो केवल 2:30 बजे थे। मैं महादेवभाई के सोफे पर गया और लेट गया। और मैंने डॉक्टर साहब को ठीक चार बजे अरंडी का तेल दिया। दिन की शुरुआत अरंडी के तेल के वितरण से हुई और दिन भर यही चलता रहा।

114 उसने मूल पाठ में अपने लिए बहुवचन 'हम' का प्रयोग किया है। 46 मनु गांधी की डायरी

बाकी चार लोगों को भी यही दिया गया। मैं दिन में सिर्फ तीन घंटे सोया।

दिनांक: 9.6.43

आज से ठीक दस महीने पहले बापूजी को गिरफ्तार किया गया था। ग्यारहवां महीना आज से शुरू होता है। मैंने बापूजी के मार्गदर्शन में गीता के सभी अठारह प्रवचनों का पहला पाठ पूरा किया।

दिनांक: 10.6.43

मीराबेन को लगातार पीठ दर्द रहता है। बापूजी ने उन्हें उपवास रखने को कहा है। उन्होंने आज से उपवास शुरू कर दिया है।

दिनांक: 11.6.43

आज रात मेरी तबीयत बिल्कुल ठीक नहीं थी। मुझे बहुत बेचैनी हो रही थी। सिरदर्द था। उल्टी करने के बाद थोड़ा आराम मिला। लेकिन मैंने किसी को नहीं बताया क्योंकि सब यही कहते रहते, 'मैं बीमार पड़ गया हूँ', 'मैं बीमार पड़ गया हूँ', और तो और, बा मुझे उनके लिए कुछ और करने भी नहीं देतीं। आज मैं जल्दी सो गया। मैंने भगवान से प्रार्थना की: कृपया मुझे अपने साथ ले जाओ। कभी-कभी मुझे महादेवभाई से ईर्ष्या होती है, क्योंकि वे बापूजी के साथ एक हो गए। अगर भगवान मुझे बापूजी के साथ रहते हुए ही अपने पास बुला लें तो क्या होगा? लेकिन ऐसा सौभाग्य किसे मिलता है? आज शाम प्रार्थना करते समय मुझे युक्तिबेन का पत्र मिला। मैं लंबे समय से उनके पत्र का इंतजार कर रहा था। यह अचानक आया। यह एक लंबा और सुंदर पत्र था, जिसमें सबके बारे में खबरें थीं। मैं बहुत खुश हुआ; लेकिन कुछ ही देर बाद उदासी ने मुझे फिर से घेर लिया।

दिनांक: 12.6.43

अब बापूजी मुझे गीता का अर्थ समझाना शुरू कर चुके हैं। आज सुशीलाबेन ने मुझे सिर्फ दस मिनट दिए। मीराबेन ने डेढ़ दिन का उपवास रखा और अब संतरे का रस पीना शुरू कर दिया है। उनका दर्द कम हो गया है।

दिनांक: 13.6.43

आज हमने पिंग पोंग का पहला मैच खेला। बापूजी ने खेल शुरू किया। हमें बहुत मज़ा आया।

दिनांक: 14.6.43

आज बा ने विजयबेन को शोक संदेश लिखवाया, जिस पर उन्होंने हस्ताक्षर किए।

दिनांक: 15.6.43

पिछले तीन दिनों से मैं युक्तिबेन को पत्र डाक से भेजने के लिए नहीं दे पाई हूँ। मैं इसे टालती रहती हूँ और भूल जाती हूँ।

दिनांक: 16.6.43

आज खेलते समय मेरी एक पसली में चोट लग गई। मैंने उसे खींचा तो नहीं था, लेकिन असहनीय दर्द हो रहा था। 115 मैंने प्रार्थना के लिए बैठने की कोशिश की, लेकिन बैठ नहीं पाई। रामायण पाठ के समय मैं उठ गई। मैं आई और बिस्तर पर लेट गई। 116 सुशीलाबेन ने मुझे मालिश करने की पेशकश की, लेकिन मैंने मना कर दिया। उसने बा से शिकायत की कि मैं उसकी बात नहीं सुनती और उसे मेरी जांच नहीं करने देती। मैं उसके पास गई, उसने मेरी जांच की और मुझे गर्म सिकाई की। गर्म सिकाई करते समय मैं सो गई। मुझे बहुत अच्छा लगा। शुरू में मुझे बहुत दर्द हुआ, मुझे अपनी माँ की बहुत याद आई क्योंकि जब भी मेरी पसलियाँ खिंचती थीं... 117

115 एमकेजी द्वारा वाक्यविन्यास में सुधार: ‘was emerging’ को ‘was emerging’ में बदला गया

116 एमकेजी द्वारा सही किया गया: 'આવિ સુતી' से 'પડી'

117 मूल में अपूर्ण प्रविष्टि। डायरी 1 का अंत। 16.4.1943 और 26.6.1943 के बीच के दिनों के लिए कोई प्रविष्टि नहीं है।

दिनांक: 27.6.43 रविवार 118

सुशीलाबेन के बाल कट गए!

शायद इस नई नोटबुक की शुरुआत सुशीलाबेन के बाल कटवाने के बारे में लिखने के लिए ही थी। शायद इसी वजह से मैंने नई नोटबुक नहीं लिखी थी। सुशीलाबेन को बहुत रूसी थी, इसलिए बापूजी ने उसके बाल काट दिए, और अब वह पूरी तरह गंजी है। उसके बाल कितने प्यारे थे! मेरी आँखों में आँसू आ गए। बापूजी, कृपया उसके बाल मत काटिए, मैंने उनसे विनती की। लेकिन बापूजी अपना मन बदलने वाले नहीं थे। उनके बाल काट दिए गए। सारा दिन सब लोग इस पर मज़ाक करते और हँसते रहे। आज मैंने काकीबा, कांतिभाई और भगवानजीभाई को पत्र लिखे। शाम को बापूजी ने उन लड़कियों की गिनती की जिनके बाल उन्होंने काटे हैं। उन्होंने लगभग तेरह लड़कियों के बाल काटे हैं। सुशीलाबेन के बाल घुंघराले और बहुत सुंदर थे। मुझे उसके बालों से ईर्ष्या हो रही थी। लेकिन उसने उत्साह और चेहरे पर मुस्कान के साथ अपने बाल कटवाए—यह तो साहस की सच्ची निशानी है। अगर मुझे अपनी मर्ज़ी से भी बाल कटवाने पड़ें, तो मैं अपने आँसू नहीं रोक पाऊँगी। उसकी आँखों में एक भी आँसू नहीं था। वैसे भी, रोना मेरी एक आम कमजोरी है। इसलिए मेरे लिए यह कोई बड़ी बात नहीं होगी।

दिनांक: 28.6.43

आज से मैंने गर्म पानी से नहाना बंद कर दिया है। मैंने कभी ठंडे पानी से बाल नहीं धोए, इसलिए वे अच्छे से साफ नहीं होते। खैर, देखते हैं क्या होता है। लेकिन मुझे गर्म पानी इस्तेमाल करने की आदत छोड़नी ही होगी। हालांकि आज मैंने गर्म पानी से बाल धोए, लेकिन आगे से ऐसा नहीं करूंगी।

दिनांक: 29.6.43

बा को आज बुखार था। मैं लगभग पूरे दिन उसके पास ही बैठी रही। मैंने आज पढ़ाई नहीं की।
119

118 डायरी 2 की शुरुआत इस प्रविष्टि से होती है।

119 30.6.43 के लिए कोई डायरी प्रविष्टि नहीं है।

दिनांक: 1.7.43

सुशीलाबेन को आज बुखार था। तापमान 100.6 डिग्री सेल्सियस था। शाम को यह लगभग 100 डिग्री सेल्सियस था। संभवतः मलेरिया है। आज हमें पूज्यभाई, कानूभाई और रामदस्काका

के पत्र प्राप्त हुए।

दिनांक: 2.7.43

आज मैंने पूज्य काकीबा को पत्र लिखा। सुशीलाबेन को आज बुखार नहीं था। लेकिन वह कमजोर थी। इसलिए मैंने उसके साथ पढ़ाई नहीं की। बा का स्वास्थ्य स्थिर है। वह आमतौर पर कैरम खेलती हैं। आज उन्होंने पिंग पोंग भी खेला। वह खेल के दौरान खुश रहती हैं। 120

दिनांक: 4.7.43

आज मैंने पूज्यभाई, रामदस्काका और मनुबेन को पत्र लिखे। आज पत्र लिखने का दिन था, इसलिए मैं सारा दिन पत्र लिखने में व्यस्त रहा और समय का ध्यान ही नहीं रहा और (बापूजी के साथ) पढ़ाई भी नहीं कर पाया।

दिनांक: 5.7.43

आज मुरब्बी सुशीलाकाकी का पत्र आया। इन दिनों मैं साड़ी पर कढ़ाई कर रही हूँ, लगभग सारा समय उसी में बीत जाता है। आज सुबह से हल्का सिरदर्द था, मुझे लगा कि ठीक हो जाएगा। मैंने बापूजी के चरणों में घी लगाया और उससे पहले खाना भी बनाया। बापूजी के चरणों में घी लगाते ही मुझे हल्की ठंड लग गई। लेकिन मैंने इसे हल्की हवा का असर समझा। उसके बाद मैंने कंबल ओढ़ लिया और लगभग पाँच मिनट तक लेट गई। मैं दोपहर दो बजे उठी और पढ़ाई की। ठंड बनी रही। पढ़ाई के बाद मैंने अखबार पढ़ा, लेकिन बहुत थकान महसूस हुई और साँस फूलने लगी। मैं ज्यादा देर तक अखबार नहीं पढ़ पाई। मैं बिस्तर पर लेट गई। मुझे बुखार चढ़ गया। साथ ही कंपकंपी भी हो रही थी। आज बापूजी का मौन दिवस था। मुझे तेज सिरदर्द था, जो और भी बढ़ गया।

120 3.7.43 के लिए कोई डायरी प्रविष्टि नहीं।

50 मनु गांधी की डायरी

शाम को दर्द और बढ़ जाता था। सुशीलाबेन ने दो-तीन बार मेरा हालचाल पूछा और मेरा सिर दबाने की पेशकश की, लेकिन मुझे इसकी ज़रूरत महसूस नहीं हुई। शाम को बापूजी ने मेरे माथे पर मिट्टी की पट्टी लगाई, जिससे मुझे आराम मिला।

दिनांक: 6.7.43

आज भी मुझे बुखार था। आज बापूजी ने मुझसे बात की और कहा कि सोना मेरी आँखों के लिए अच्छा होगा, और उन्हें भी यही अच्छा लगेगा। 121 इसलिए, मैं आज से सोऊंगा। लेकिन उन्होंने एक बात और कही, जो मेरे लिए बहुत दुख की बात है। उन्होंने कहा, मैं देखता हूँ कि तुम वादा तो करते हो लेकिन उसे निभा नहीं पाते। 122 यह बिल्कुल सच है, लेकिन रात में मैंने इस वाक्य पर विचार किया। मैं ऐसा क्यों दिखाता हूँ? यह बात मेरे लिए एक चेतावनी है और अच्छा होगा अगर मैं इस धारणा को बदल सकूँ। आज मुझे युक्तिबेन, कांतबेन, कपिलबेन और अन्य लोगों के पत्र मिले। इन दिनों बापूजी रामायण का अनुवाद कर रहे हैं। आज डॉ. गिल्डर को बुखार था। 123

दिनांक: 25.7.43

आज सुशीलाबेन मुझसे नाराज़ हैं। पता नहीं किस वजह से। कल से ही वो थोड़ी नाराज़ थीं, लेकिन आज उनका गुस्सा कुछ ज़्यादा ही ज़ाहिर था। एक-दो बार तो वो भड़क भी गईं। कुछ देर पहले तक हमारे बीच सब कुछ ठीक था। उनकी नाराज़गी से मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। वो मुझे छोटी बहन की तरह मानती हैं। लेकिन उनकी नाराज़गी का कारण समझ नहीं आ रहा। खैर, कोई बात नहीं! बा अचानक नाराज़ हो जाती हैं और फिर तुरंत खुश हो जाती हैं, ऐसा ही चलता रहता है। मैं भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि जब तक मैं यहाँ हूँ, किसी को कोई नुकसान न पहुँचाऊँ। लेकिन कभी-कभी मुझसे भी गलती हो जाती है। कल सब्ज़ियाँ थोड़ी सी

121 यह दोपहर की नींद को संदर्भित करता है। दोपहर की नींद से परहेज करने के संकल्प के संबंध में 22.4.43 की डायरी प्रविष्टि देखें।

122 मूल पाठ में जोर दिया गया है।

123. 7.7.43 से 24.7.43 तक कोई डायरी प्रविष्टि नहीं।

खाना बनाते समय मुझसे जल गया। कल रात मुझे बदन में बहुत तेज दर्द हुआ, जिसके लिए मैंने कुनैन ली। कई दिनों के अंतराल के बाद मैंने ये नोट्स लिखे हैं—पन्ने तो महंगे होते हैं, है ना? 124

दिनांक: 27.7.43

आज मुझे फिर से बुखार आ गया। बुखार आने से पहले मुझे सर्दी-जुकाम महसूस हो रहा था। मैंने कुनैन की गोली ली, लेकिन बुखार कम नहीं हुआ। मैंने किसी को बिना बताए लेट गई। बाद में मैंने बापूजी को बताया और तब सबको पता चल गया। तापमान 103 डिग्री सेल्सियस था। बुखार पूरी रात बना रहा। मुझे बहुत बेचैनी हो रही थी। इन दिनों मुझे घर की याद नहीं आई,

लेकिन आज मुझे घर की बहुत याद आ रही थी। मुझे युक्तिबेन की चिंता है। उसकी तबीयत ठीक नहीं है।

दिनांक: 28.7.43

मुझे आज भी बुखार था।

दिनांक: 29.7.43

आज मुझे बुखार नहीं था। मैंने आज से सलवार-कुर्ता पहनना शुरू कर दिया है। बापूजी ने कहा कि मेरी पेटीकोट वगैरह वाली पोशाक खतरनाक है। उन्होंने कहा कि मुझे ठंड से बचना चाहिए। सुशीलाबेन काफी समय से यही कहती आ रही हैं। लेकिन मुझे लगा कि मुझे कम से कम तीन जोड़ी सलवार-कुर्ता चाहिए; वो क्या करतीं? मैं तीन जोड़ी नहीं लेना चाहती थी, लेकिन उनके आग्रह पर मुझे तीन जोड़ी लेनी ही पड़ीं। अब मीराबेन, सुशीलाबेन और मैं, हम तीनों सलवार-कुर्ता पहनते हैं। हम पंजाबी बन गए हैं। आज भी मैंने पढ़ाई नहीं की।

124. 26.7.43 के लिए कोई डायरी प्रविष्टि नहीं है।

125 उसने पूरी प्रविष्टि में सलवार (salwar) के बजाय सरवाल (sarwal) लिखा है।

दिनांक: 30.7.43

बापूजी ने आज से 'मार्गोपदेशिका' सिखाना शुरू कर दिया है। मैंने बापूजी को फिर से मालिश करना शुरू कर दिया है।

दिनांक: 1.8.43

आज मैंने मुरब्बी सुशीलाकाकी, काकीबा और मथुरादास भाई को पत्र लिखे। अब मुझे हर सोमवार और गुरुवार को कुनैन की गोली लेनी पड़ती है। इन दिनों बापूजी रामायण का अनुवाद कर रहे हैं। वे खूब सूत कातते हैं। वे सुशीलाबेन और मुझे सिखाते हैं। आज मुझे बहुत बदन दर्द था।

दिनांक: 2.8.43

पिछले साल इसी दिन बापूजी एआईसीसी सत्रों के लिए बॉम्बे गए थे। और आज वे आगा खान पैलेस में हैं। पिछले साल मैं उनसे मुझे दिल्ली ले जाने के लिए बहुत आग्रह कर रही थी, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। 126 लेकिन शायद मेरी किस्मत में यही लिखा था कि आज इस दिन मैं उनके साथ हूँ, इसलिए मैं यहाँ आई हूँ। किसने सोचा था कि मुझे यहाँ आने का अवसर मिलेगा? भगवान की इच्छा तो केवल वही जानते हैं। आज मैंने बापूजी को भगवद् पाठ पढ़कर सुनाया। बापूजी इसे एक बार फिर सुनना चाहते थे, इसलिए मैंने इसे फिर से शुरू किया है।

दिनांक: 8.8.43

आज बापूजी की गिरफ्तारी को एक साल हो गया है। पिछले साल इसी दिन एआईसीसी का प्रस्ताव पारित हुआ था। हमने झंडे को सलामी दी और 2:30 से 3:30 तक फेरे लिए। प्यारेलालजी ने याद दिलाया कि पिछले साल इसी दिन बापूजी का भाषण सुबह 9 बजे शुरू हुआ था। महादेवभाई और उन्होंने बापूजी के कहे हर शब्द को लिख लिया था और आज महादेवभाई सबके सामने उपस्थित हैं।

126 यह बॉम्बे होना चाहिए न कि दिल्ली, क्योंकि एआईसीसी का सत्र बॉम्बे में आयोजित किया गया था।

मनु गांधी की डायरी 53

हे भगवान! किसने सोचा था कि महादेवभाई का देहांत हो जाएगा! उनके जाने में लगभग एक साल बाकी है।

दिनांक: 9.8.43

बापूजी को पिछले साल इसी दिन सुबह गिरफ्तार किया गया था; उन्हें आगा खान महल लाया गया था। आज उस घटना को एक साल हो गया है। कल, डॉ. साहब ने हमें ध्वज को सलामी दी। हम सबने 'झंडा ऊंचा रहे हमारा', 'सारे जहां से अच्छा' और 'वंदे मातरम' गाया। बा भी मैदान में आईं, जो मेरे यहां आने के बाद पहली बार हुआ। आज मैंने कुवरजीभाई, पूज्यभाई, रामदस्काका और काकीबा को पत्र लिखे। यरवदा से 'जय, जय' की आवाजें सुनाई दे रही थीं।

दिनांक: 10.8.43, मंगलवार

मैं काफी समय से दही जमाती, कपड़े भिगोती आदि काम करती आ रही हूँ। मुझे ये काम पसंद हैं। लेकिन आज से ये काम बंद हो गए हैं। आज हमारा वजन नापने का दिन था। मेरा वजन 103 पाउंड, बापूजी का 112 पाउंड, प्यारेलालजी का 120 पाउंड, सुशीलाबेन का 106 पाउंड और

बा का 90 पाउंड था। किसी का भी वजन कम नहीं हुआ है।

दिनांक: 11.8.43

15 तारीख को महादेवभाई की पुण्यतिथि है और हमने उस दिन संपूर्ण गीता पाठ करने का निर्णय लिया है। सुशीलाबेन, प्यारेलालजी और मैं बापूजी के साथ गीता का अध्ययन करते हैं। इसलिए, आज से बापूजी के साथ मेरा निर्धारित समय (शाम 4 से 4:30 बजे तक) बदल दिया गया है। आज मुझे पोरबंदर से विजयबेन का पत्र मिला। मुझे पूज्यभाई का एक पोस्टकार्ड भी मिला, जिसमें उन्होंने उपलेटा में आई बाढ़ के बारे में लिखा है, जिसमें लगभग 15 खंडी 127 मूंगफली नष्ट हो गईं। इस साल चारों ओर अत्यधिक बारिश हुई है। बंगाल में बाढ़ आती है, काठियावाड़ और मारवाड़ में भी। मारवाड़ में लगभग बीस से पच्चीस हजार लोगों की मृत्यु हो चुकी है।

127 20 मन = 1 खंडी = लगभग 746.48 किलो। 54 मनु गांधी की डायरी

बाढ़ में हम अकेले हैं। कौन जाने कितने मवेशी आदि मर गए होंगे? हमें यह खबर अखबारों से मिली। एक तरफ भूख से मौत है तो दूसरी तरफ पानी का यह कहर! हिंदुस्तान कितना बदनसीब हो सकता है? जब हम अखबारों में यह सब पढ़ते हैं तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। हमने रसोई की अलमारी में ताला लगाना शुरू कर दिया है क्योंकि कुछ चोरियां हुई हैं। आज बा की तबीयत ठीक नहीं थी। 128

दिनांक: 14.8.43

आज बा को दिल का दौरा पड़ा। दोपहर 2 बजे शुरू हुआ, थोड़ी देर के लिए शांत हुआ और फिर शुरू हो गया और रात करीब 11 बजे तक जारी रहा। डॉक्टर शाह और अन्य लोग आए। उन्होंने मशीन से उनकी जांच की। आज रात मैं बा के बगल में सोया। ओह! कितना सुखद एहसास था। बा ने मेरे सिर पर हाथ फेरा और मेरा कंबल ठीक किया। मैंने उन्हें ऐसे सहलाया जैसे कोई बच्चे को सहलाता है। रात 12 बजे उन्होंने मुझे अपने बिस्तर पर जाकर सोने को कहा क्योंकि उन्हें बेहतर महसूस हो रहा था। वह बहुत कमजोर हो गई हैं।

दिनांक: 15.8.43

आज महादेवभाई की पुण्यतिथि थी। कल शाम सुशीलाबेन ने खिचड़ी, सब्ज़ियाँ और कढ़ी बनाने का सामान अलग रख दिया था। आज सुबह उसे बाँट दिया गया। महादेवभाई जिस कमरे में रहते थे, उसकी सफाई की गई। मीराबेन और सुशीलाबेन ने उस चबूतरे को फूलों से सजाया जहाँ महादेवभाई का अंतिम संस्कार किया गया था। मैं बा के साथ थी और

128 12 और 13 अगस्त, 1943 के लिए कोई डायरी प्रविष्टियाँ नहीं हैं।

129 यह संभवतः टैकीकार्डिया का दौरा था। 12 मार्च 1943 को कर्नल भंडारी को भेजी गई एक रिपोर्ट में, डॉ. गिल्डर और डॉ. नायर ने कस्तूरबा की चिकित्सीय स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया: 'वह ब्रोंकाई के फैलाव के साथ दीर्घकालिक ब्रोंकाइटिस से पीड़ित हैं। उन्होंने हाल ही में एंजाइना जैसे दर्द की भी शिकायत की है और उन्हें 180 प्रति मिनट की हृदय गति के साथ टैकीकार्डिया के दौरे भी पड़े हैं।' गांधीजी का सरकार के साथ पत्राचार 1942-44, (अहमदाबाद: नवजीवन, 1945), पृष्ठ 275।

मनु गांधी की डायरी 55

इसलिए मुझे वहाँ पहुँचने में थोड़ी देर हो गई। आज बापूजी फिर बाहर गए और 7:45 बजे श्मशान घाट पहुँचे। मैं वहाँ तब पहुँचा जब वे श्लोक पढ़ रहे थे। वह स्थान बहुत ही सुंदर ढंग से सजाया गया था। उनके कमरे का सारा फर्नीचर हटा दिया गया था। जहाँ उनका पार्थिव शरीर रखा गया था, वहाँ जेल की चादर बिछाई गई थी। जहाँ उनका सिर रखा गया था, वहाँ ॐ का चिह्न लगाया गया था और जहाँ उनके पैर रखे गए थे, वहाँ एक क्रॉस (†) बनाया गया था। अलमारियों समेत चारों ओर फूल रखे गए थे। यह सब मीराबेन ने किया था। 10 बजे घंटी बजी। मैंने उनके पैर रखे जाने की जगह पर एक दीपक रखा। डॉक्टर साहब, कटेली साहब, प्यारेलालजी, मीराबेन, सुशीलाबेन, बा और मैं प्रार्थना में बैठ गए। हमने 'ईसा वश्य' का पाठ किया, जिसके बाद 'वैष्णव जन', 'राम धुन', 'मज़्दा' का पाठ किया गया। मीराबेन ने अंग्रेजी में एक भजन गाया। उसके बाद मीराबेन, डॉक्टर साहब और कटेली साहब चले गए, हम सबने पूरी गीता जी का पाठ किया। वातावरण अत्यंत शांत और गंभीर था। गीता का पाठ करने में हमें लगभग एक घंटा दस मिनट लगे। इसके बाद सुशीलबेन ने बापूजी को पानी पिलाया और मैंने बा को। मैंने कपड़े भिगोए और सुशीलबेन के साथ कैदियों के लिए बन रहे भोजन की देखरेख करने चली गई। भोजन से आधे घंटे पहले मैंने मार्गोपदेशिका का अध्ययन किया। लगभग एक बजे भोजन लाया गया और कैदी भी आ गए। बापूजी, डॉक्टर साहब और मीराबेन ने उन्हें खिचड़ी, कढ़ी और सब्जियाँ परोसीं। बा एक कुर्सी पर बैठ गईं। सुशीलबेन को हल्की मतली हो रही थी, मैंने उन्हें थोड़ा रस दिया। बापूजी तब तक वहीं रहे जब तक सबने खाना नहीं खा लिया। मैंने बापूजी और बा के चरणों में घी लगाया। मैं लगभग 2:30 बजे सो गई। पिछली रात मुझे अच्छी नींद नहीं आई थी। मैं 3:30 बजे उठी। कुछ चरखा चलाया जा रहा था। सबने 24 घंटे का उपवास रखा था। तो सुशीलाबेन और मैं हलवा बनाने के लिए रसोई में गए। सुशीलाबेन ने बादाम और इलायची से स्वादिष्ट हलवा बनाया। हमने बापूजी को 5:45 बजे भोजन परोसा, जिसके बाद हमने अपना भोजन किया। मैंने धुले हुए कपड़े तह किए और प्रार्थना की तैयारी की। शाम को मेरे हाथ में चोट लग गई। ऐसा कई बार हो चुका है, लेकिन आज चोट थोड़ी गहरी थी और दर्द हो रहा था। मैं चोट लगे हाथ के साथ बापूजी के पास गई, हालांकि मेरा ऐसा करने का कोई इरादा नहीं था। सुशीलाबेन ने आयोडीन लगाया और पट्टी बांधी। फिर हम टहलने गए और प्रार्थना की। प्रार्थना के बाद बापूजी मौन हो गए। मैंने उनके चरणों में घी लगाया, उनकी मालिश की और सो गई। आज रात चंद्रग्रहण होने वाला था, इसलिए सुशीलाबेन ने मनु गांधी की डायरी (56) में लिखा है कि...

मुझे रात के 2 बजे जगा दिया। हमने ग्रहण देखा। महादेवभाई के निधन को एक साल बीत गया है। साल यूं ही बीतते चले जाएंगे। कितना सौभाग्यशाली था उनका किला बापूजी के चरणों में बीता। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें, यही मेरी एकमात्र प्रार्थना है। महादेवभाई एक दिन हमारे बीच थे और अगले ही दिन हमें छोड़कर चले गए! आज रविवार था, लेकिन मैं पत्र नहीं लिख पाई। मैं कल लिखूंगी।

दिनांक: 16.8.43

आज मैंने कनुभाई और नरन्दस्काका को पत्र लिखा। आज भी बा की तबीयत ठीक नहीं थी। हाथ में चोट होने के कारण आज मैं उन्हें मालिश नहीं कर पाई; यहाँ तक कि उनके सिर को भी नहीं धो पाई। इन दिनों मुझे लगता है कि मुझे सिर्फ उबला हुआ खाना ही खाना चाहिए। मैं बापूजी से पूछूंगी और अगर वे मान गए तो मैं ऐसा ही कर लूंगी। लेकिन उनमें हिम्मत नहीं है कि मैं उनसे पूछ सकूं। 130

दिनांक: 18.8.43

कल रात मेरे बिस्तर में एक चूहा घुस आया। मैं जाग गई तो देखा कि चूहा वहीं था। मैंने सुशीलाबेन को बताया, जिन्होंने उसे भगा दिया। दिन भर सब मुझे चिढ़ाते रहे कि मैं रोटी खाकर सोई थी। आज मुझे पूज्यभाई और युक्तिबेन के पत्र मिले।

दिनांक: 19.8.43

मैंने आज से बा को मालिश देना फिर से शुरू कर दिया है। कल से हमने गीता के शब्दों के अर्थों का अध्ययन बंद कर दिया है। अब हम उच्चारण पर ध्यान देंगे। हमने तीसरे प्रवचन से शुरुआत कर दी है।

दिनांक: 20.8.43

मेरे हाथ के घाव में संक्रमण हो गया है। सुशीलाबेन ने कहा कि इस वजह से मैं बा की मालिश नहीं कर सकती। बा कुछ नाराज़ हैं;

130 17.8.43 के लिए कोई डायरी प्रविष्टि नहीं है।

कल उसने मुझसे कहा था कि आज मैं उसकी मालिश करूँ, लेकिन सेप्टिक की वजह से मैं उसकी मालिश नहीं कर पाऊँगी। डॉक्टर साहब ने उसे इस बारे में बता दिया। वह मुझसे नाराज़ हो गई। पिछले दो दिनों से उसने कुछ नहीं खाया है। वह सिर्फ़ दूध पीती है। मैंने आज से फिर से चरखा चलाना शुरू कर दिया है। बापूजी ने उबली हुई सब्ज़ियाँ खाने और हलवा न खाने की इजाज़त दे दी है। मैंने उबली हुई सब्ज़ियाँ खाना शुरू कर दिया है, देखते हैं कब तक। बापूजी ने मुझसे कहा कि 'तुम प्रार्थना के दौरान गीताजी का पाठ नहीं करती और जागती भी नहीं हो, तुम्हें सोना चाहिए, क्योंकि तुम यह सिर्फ़ मुझे प्रसन्न करने के लिए करती हो; लेकिन यह सही नहीं है। तुम भजन भी नहीं गाती हो।' इसलिए, मैंने तय किया है कि मैं खुद ही जागूँगी और सतर्क रहूँगी। पिछले तीन दिनों से मैं खुद ही जाग जाती हूँ और सतर्क भी रहती हूँ। रात में कम से कम तीन-चार बार जागती हूँ, जब तक कि प्रार्थना का समय न हो जाए! मैं वापस सो जाती हूँ लेकिन सतर्क रहती हूँ। 131

दिनांक: 22.8.43 शनिवार

बा अब भी नाराज़ हैं। वो किसी से ज़्यादा बात नहीं करतीं। उन्होंने मेरे साथ गीता जी का अध्ययन शुरू कर दिया है। मैं उन्हें क्या सिखाऊँ? हम गीता ध्वनि भी पढ़ते हैं। आज मैं बा के साथ शाम 5:30 बजे तक थी।

दिनांक: 23.8.43 रविवार

आज हमें सेवाग्राम से एक टाइपराइटर और किताबें मिलीं। इनमें से कई गुजराती किताबें आई हैं। आज भी मुझे बुखार सा महसूस हो रहा था। कल तापमान 99.4 डिग्री सेल्सियस था।

दिनांक: 24.8.43 सोमवार

आज जन्माष्टमी है। मीराबेन ने बाल-कृष्ण को सजाया है। आज दोपहर मुझे फिर से बुखार आ गया। कल पत्र लिखने का दिन था। पत्र लिखने में मुझे एक घंटा लग गया। चार बजे मैं सूत कातने बैठ गई, इसलिए पढ़ाई नहीं कर पाई। मैंने पढ़ाई की।

131 21.8.43 के लिए कोई प्रविष्टि नहीं

सुशीलाबेन के साथ लगभग 15 मिनट बिताने के बाद मैंने थोड़ी देर चरखा चलाया और खेलने चली गई। लेकिन आज हमने 11 से 11:30 बजे तक छूटे हुए आधे घंटे की भरपाई कर ली। बापूजी ने कहा, 'तुम्हें सभी गतिविधियों के लिए निर्धारित समय का पालन करना चाहिए।' आज

हमने आधे घंटे का समय निर्धारित किया जिससे बापूजी बहुत प्रसन्न हुए। अच्छा होगा अगर यह सिलसिला जारी रहे। हाथ अभी तक ठीक नहीं हुआ है। मैंने अभी तक मालिश शुरू नहीं की है। आज आठ दिनों बाद बा ने शकरकंद, टमाटर और दूध खाया। मीराबेन शाम की प्रार्थना में शामिल हुईं। प्रार्थना बहुत सुंदर थी।

दिनांक: 25.8.43

आज भी मुझे बुखार था। तापमान 99 डिग्री सेल्सियस था। मुझे तेज सिरदर्द और शरीर में थकान महसूस हो रही थी।

दिनांक: 26.8.43

आजकल मैं नियमित रूप से चरखा चलाती हूँ। 15.8.43 को महादेवभाई की पुण्यतिथि पर मैंने चरखा चलाने का निश्चय किया था, पर मैं नहीं चला सकी। बात वहीं खत्म हो गई। अगले दिन बापूजी ने सुशीलाबेन से बात की क्योंकि वह भी चरखा चलाने का अपना संकल्प पूरा नहीं कर पाई थीं। उन्होंने कहा, 'सच्चा संकल्प हमेशा पूरा होता है। अगर तुम कल चरखा नहीं चला सकीं तो आज सुबह चला लेना चाहिए था। और इतना ही नहीं, रोजाना चरखा चलाना चाहिए।' यह बात मुझ पर भी लागू होती थी। इसलिए मैंने चरखा चलाने का संकल्प लिया। उन्होंने आगे कहा, 'अगर हम सब रोजाना आधे घंटे चरखा चलाएँ तो 40 करोड़ लोगों की भयानक भूख और गुलामी आज ही खत्म हो जाएगी।' मैं इस तर्क से सहमत हो गई। चरखा चलाना आज तक जारी है।

दिनांक: 30.8.43

आज मैंने काकीबा और मनुबेन को पत्र लिखे। आज मुझे दो शॉल मिले, इसलिए मैंने युक्तिबेन को जवाब लिखा। पिछले दो दिनों से मैं

132 27, 28, 29 अगस्त 1943 के लिए कोई डायरी प्रविष्टियाँ नहीं हैं।

मैंने बैडमिंटन खेलना फिर से शुरू कर दिया है। मैंने सुबह खेला। मैं डॉ. गिल्डर और बापूजी के कहने पर गई थी। सच कहूँ तो मेरा खेलने का मन नहीं था, दो दिन बाद भी मैं पूरी तरह से खेल में रम नहीं पाई हूँ। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं पर्याप्त व्यायाम नहीं करती, इसलिए मैं खेलने जाती हूँ। आज बापूजी ने मेरी एक परीक्षा ली। उन्होंने अपने बाल धोए थे। मैं रोज़ शाम 4 बजे उनके बालों में तेल लगाती हूँ। 4 बजे मैंने उनसे पूछा कि क्या मुझे तेल लगाना चाहिए। उन्होंने जवाब दिया, 'यह तो मेरे लिए सौभाग्य की बात होगी।' उसी क्षण मेरी आँखों में आँसू आ गए। मैंने उनसे पूछा कि बापूजी ने मुझे 3:30 बजे तेल लगाने के लिए पहले क्यों नहीं कहा? उन्होंने जवाब दिया, 'मैं देखना चाहती थी कि तुम पूछोगी या नहीं, क्योंकि 4 बजे तक तुमने नहीं पूछा। शायद तुमने सोचा होगा कि कल सुबह तेल लगाने से काम चल जाएगा। लेकिन तभी तुमने पूछ लिया। तुम परीक्षा में पास हो गई।' मेरी लगातार ऐसी परीक्षाएँ होती रहती हैं। इससे मेरे बारे में एक अच्छी धारणा बनी है, यह मैंने बापूजी की बातों से समझा। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं समय की पाबंद हूँ, लेकिन अगर मैं कल से थोड़ा पहले तेल लगा लूँ, तो हमें भगवद् पढ़ने के लिए और अधिक समय मिल जाएगा। 133

दिनांक: 2.9.43

आज से हमने भगवद् गीता पढ़ना बंद कर दिया है। हमने महाभारत और रामायण के पात्रों के बारे में पढ़ना शुरू कर दिया है। हम सभी प्रतिदिन बापूजी के साथ आधा घंटा गीता का अध्ययन करते हैं। यदि हमारे उच्चारण सुधर जाते हैं, तो यह एक बड़ी उपलब्धि होगी। हमने चार प्रवचन पूरे कर

लिए हैं। बापूजी कहते हैं कि इसमें दो महीने लगेंगे, लेकिन अंततः हमारे उच्चारण सुधर जाएंगे। यह तय किया गया है कि हम सप्ताह में दो बार कुनैन लेंगे।

दिनांक: 3.9.43

आजकल मैं सुशीलाबेन के साथ शाम 6 से 6:30 बजे तक इतिहास पढ़ती हूँ। आज मैं उनके पास नहीं जा सकी क्योंकि मैंने अपने सारे काम 6:20 बजे ही खत्म किए। पढ़ाई के लिए मेरे पास सिर्फ दस मिनट बचे थे, मैंने सोचा, सिर्फ दस मिनट के लिए क्यों जाऊँ? मैंने धुले हुए कपड़े तह करके रख दिए।

133 31.8.43 और 1.9.43 के लिए कोई प्रविष्टियाँ नहीं हैं।

उस समय बापूजी आए और बोले, 'तय समय से भटकना नहीं चाहिए। अगर आप समय का पालन नहीं कर सकते, तो बेहतर है कि आप ऐसा न करें। चार मिनट में खाना निगलना ठीक नहीं है।' मैंने उन्हें बताया कि मैं 5:45 बजे खाना खाऊंगा। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं खाने से पहले प्रार्थना करता हूँ। मैंने जवाब दिया कि मैं कभी-कभी भूल जाता हूँ। बापूजी ने कहा, 'ईश्वर हमें भोजन देते हैं, जिसके लिए हमें उनका आभारी होना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए कि वे हमें दूसरों की सेवा करने की क्षमता दें।' समय की पाबंदी और प्रार्थना से संबंधित ये दोनों सलाहें मेरे मन में बस गई हैं। अब मैं 5:45 बजे खाना खाने बैठता हूँ और प्रार्थना करना भी याद रखता हूँ।

दिनांक: 4.9.43

आज बा की तबीयत ठीक नहीं है। हमने पाँचवाँ प्रवचन समाप्त कर लिया है और छठा शुरू कर दिया है।

दिनांक: 5.9.43

आज पारसी नव वर्ष था। सुशीलाबेन सुबह जल्दी उठ गईं और दरवाजे पर आटे से 'साल मुबारक' लिखा। कटेली साहब बापूजी के लिए एक माला, एक नारियल, चप्पल की एक जोड़ी और डॉक्टर साहब के लिए गुलाब जल लेकर आईं। सुशीलाबेन ने उनके माथे पर टीका लगाया। सूरत से बहुत सारी मिठाइयाँ आई थीं, इसलिए उन्होंने कहा कि घर में मिठाई न बनाएँ। दोनों ने बापूजी के पैर छुए, जिसके बाद हम सब बैडमिंटन खेलने चले गए। बापूजी की तबीयत आज भी ठीक नहीं है।

दिनांक: 6.9.43

बा की नाक पर सूजन है और पीठ में असहनीय दर्द है। कई दिनों बाद मैंने रात को उसकी मालिश की। आज मैंने उससे नहीं खेला।

दिनांक: 7.9.43

आज भी मैंने रात को उसकी मालिश की।

दिनांक: 8.9.43

मेरी हालत थोड़ी बेहतर है। कल रात मुझे लगभग 99 डिग्री सेल्सियस बुखार था। मैंने इस बारे में किसी से बात नहीं की।

दिनांक: 10.9.43, बुधवार

आज सबका वज़न नापा गया। मेरा वज़न 104 पाउंड से घटकर 100 पाउंड हो गया है। मेरा वज़न 4 पाउंड कम हो गया। मुझे नहीं पता वज़न कम होने का कारण क्या है। सबने कहा कि उबली हुई सब्ज़ियाँ खाने और हलवा खाना बंद करने की वजह से वज़न कम हुआ है। लेकिन सच तो यह है कि यहाँ आने से पहले मेरा वज़न कभी 100 पाउंड नहीं था। मैंने जितना वज़न बढ़ाया था, उतना कम हो गया है। मुझे बीच-बीच में बुखार आता था, जिसके बारे में मैंने किसी को नहीं बताया क्योंकि कुनैन लेने के बाद मैं ठीक हो गई थी। अगर मैं इसके बारे में बताऊँ तो परेशानी होगी, और अगर न बताऊँ तो भी। अगर मैं इसके बारे में बताऊँगी तो बा नाराज़ हो जाएँगी। वो कहेंगी, 'उसे बोरियत हो रही है, इसलिए उसे बुखार आ रहा है।' अगर मैं इसके बारे में नहीं बताऊँगी तो मुझे नुकसान होगा, लेकिन मुझे इसकी चिंता नहीं है।

आज शाम मुझे जबरदस्ती खीर, मलाई और तेल में पकी सब्ज़ियाँ खिलाई गईं। मुझे एक कटोरी भरकर दूध भी पीना पड़ा। मुझे इतना कुछ खाने को दिया गया कि आखिरकार मुझे थोड़ी उल्टी हो गई। मैं नहीं चाहती थी कि किसी को इसके बारे में पता चले, क्योंकि इससे बाबा को और भी ज़्यादा बुरा लगता। सुशीलाबेन मेरे बगल में बैठी थीं। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या हुआ। मैंने उन्हें बताया कि मुझे उल्टी हो गई है। उन्होंने कहा, 'कुछ लोगों को यह आदत होती है। मेरी भाभी को भी यही आदत थी। शादी के बाद जब भी हम उन्हें ज़्यादा खाने के लिए कहते, तो उन्हें उल्टी हो जाती थी। हमने उन्हें खूब चिढ़ाया और उनकी यह आदत छुड़वा दी।' वह मुझे चिढ़ा रही थीं, लेकिन मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने अपनी इच्छा से उल्टी की हो। असल बात तो यह है कि मेरा वज़न कम होने की वजह से सब मुझसे नाराज़ हैं। इसका असर मुझ पर सुबह से ही पड़ा हुआ

था। मेरी सेहत भी ठीक नहीं थी; और मैंने ज़रूरत से ज़्यादा खा लिया, इसलिए उल्टी हो गई। इसके बाद वह डॉक्टर साहब के पास गईं और उन्हें भी इस बारे में बताया। जब मैंने इसके बारे में सुना तो मैं खुद को संभाल नहीं पाई। मैं रोने लगी। मैंने खुद को बाथरूम में बंद कर लिया और रोने लगी। उसके साथ पढ़ने का समय हो गया था, इसलिए मैं चली गई। मैंने खुद को रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन मैं नहीं रोक पाई और रोने लगी। मैंने बस इतना कहा कि मैंने उल्टी नहीं की क्योंकि मुझे ऐसा करना अच्छा लगता है। (मनु गांधी की डायरी का 62वां भाग)

उसने स्पष्ट किया कि उसका ऐसा कोई इरादा नहीं था। उसने बस अपनी भाभी के बारे में बात की थी। मैंने रोना बंद कर दिया। मैं खेल खेलने चली गई, लेकिन खेल पर ध्यान नहीं दे पा रही थी। जब वह वहाँ आई, तो मैं चली गई। मैं अपने कमरे में आ गई। मैं शाम की सैर पर नहीं जाना चाहती थी, लेकिन फिर भी चली गई। उसके बाद जो कुछ हुआ, वह शायद नियति थी। बापूजी ने मुझसे पूछा, 'तुम क्यों रोई?' मैंने कोई जवाब नहीं दिया। फिर उन्होंने मुझसे कहा, 'हमारा एक समझौता है। जो कुछ भी हो, तुम्हें मुझे बताना होगा।' मैंने उन्हें बताया कि मुझे किस बात से दुख हुआ था। मैंने उनसे कहा कि मैं समझती हूँ कि उसने मुझसे प्यार से बात की थी और भाई-बहन दोनों मुझसे प्यार करते हैं, लेकिन आज मुझे दुख हुआ था। मैंने उनसे कहा कि मैं उसके इरादे समझती हूँ। बापूजी ने मुझसे कहा कि मुझे ऐसी बातों से दुखी नहीं होना चाहिए। हमने गीताजी के बारे में बात की और उन्होंने मुझे कितनी जल्दी गीता सिखाई थी।

खेल के बाद सुशीलाबेन वहाँ आईं और बोलीं, 'मनु, तुम्हें रोने का भरपूर मौका मिला?' बापूजी ने उनसे पूछा कि उन्होंने मुझसे क्या कहा था। वह आहत हुईं और बोलीं कि मैं इस लड़की से कभी कुछ नहीं कहूँगी, मज़ाक में भी नहीं। बापूजी ने जवाब दिया कि उनका मतलब ऐसा नहीं था। सुशीलाबेन ने मुझसे पूछा कि हमारे बीच मामला सुलझ जाने के बाद मैंने बापूजी से क्यों बात की। मैंने उन्हें बताया कि मैंने कोई शिकायत नहीं की थी, बल्कि पूछे जाने पर उन्हें बताया था। वह क्रोधित हो गईं। इससे मुझे और भी दुख हुआ। मैं जल्दी सो गई, लेकिन 2 बजे तक सो नहीं पाई। मैं सोचती रही कि मुझे यहाँ सबके बीच क्यों लाया गया है? 2 बजे तक मेरी आँखों में आँसू थे। मुझे दुख था कि मुझे बापूजी से किसी भी बात पर बात करने की इजाज़त नहीं है। मुझे कराची का अपना जीवन याद आ गया। मैं कई बहनों के साथ पली-बढ़ी हूँ, लेकिन हम कभी आपस में नहीं लड़ती थीं। मैं सबसे डरती हूँ और भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि वह मेरे सभी के साथ संबंध मधुर बनाए रखें। आखिर ऐसी बातें क्यों होती हैं? हम सुबह उठे; मुझे किसी से बात करने का मन नहीं था। मैंने दूध पिया। उसने 11 बजे दोपहर का खाना नहीं खाया। उसने गुस्से में आकर खाना नहीं खाया। मुझे बुरा लगा कि मेरी वजह से उसे उपवास रखना पड़ रहा है। मैंने भी तय किया कि मैं भी नहीं खाऊँगी। आखिरकार मैंने थोड़ा सा खाना खा लिया।

134 उसने मूल रूप से 'सु.बेह्न' यानी सुशीला नायर लिखा था, जिसे उसने मिटाकर 'हर कोई' लिख दिया।

135 मूल रूप से 'उसकी', बदलकर 'सभी' कर दिया गया।

बा के कहने पर मैंने मटर के चावल का थोड़ा सा हिस्सा खाया। शाम को जब मैं रो रही थी, तो प्यारेलाल जी आए और मुझे सारी बात समझाई। मैंने रात के खाने में आधा खाखरा और आधा कटोरी दूध पिया। उन्होंने भी बहुत कम खाया और कहा कि उन्होंने गुस्से के कारण नहीं खाया। ठीक है, यही भगवान की मर्जी है। आज मैंने एक नया सबक सीखा कि मुझे किसी की बातों को दिल पर नहीं लेना चाहिए और अगर किसी को दुख हो तो उसे ज़ाहिर नहीं करना चाहिए। मैं उन्हें अपनी बड़ी बहन की तरह मानती हूँ और हमेशा ऐसा ही मानती रहूँगी। आखिर वो बहुत स्नेहशील हैं। प्यारेलाल जी ने मुझसे कहा, 'तुम्हें इस दुख को भूल जाना चाहिए। तुम गीता जी पढ़ती हो, लेकिन यह बापू जी का समय बर्बाद करना है। हर किसी की बातों से इतना दुखी नहीं होना चाहिए।' मैंने उनसे कहा कि मुझे दुख इसलिए हुआ क्योंकि उन्होंने नहीं खाया, उनकी बातों से उतना दुख नहीं हुआ। मुझे यह भी महसूस हुआ कि मैं बार-बार ऐसी गलतियाँ करती हूँ। मेरा दुख मेरे कर्मों के कारण था, दूसरों के कर्मों के कारण नहीं।

दिनांक: 10.9.43 136

आज मुझे मानेकलाल बापूजी और पूज्यभाई के पत्र मिले। चंद्रावली और विजया के भी पत्र थे, लेकिन वे रिश्तेदार न होने के कारण वापस आ गए। पूज्य आनंदलाल बापूजी का स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया है। वे कंकाल जैसे हो गए हैं। पूज्यभाई को मेरे पत्र अनियमित रूप से मिलते हैं, जिससे वे चिंतित रहते हैं। वे इस बात से भी परेशान हैं कि युक्तिबेन और विनोदबेन का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। अब क्या किया जाए?

दिनांक: 11.9.43

आज से एक साल पहले प्यारेलाल जी बापूजी के पास आए थे। उन्होंने मुझसे कहा था कि नया साल शुरू होने वाला है और मुझे मन में कोई कड़वाहट नहीं रखनी चाहिए, पहले की तरह खेलना-कूदना और हंसना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि सुशीलाबेन का मन भी शुद्ध हो गया है। मैंने उनसे कहा कि मेरा हृदय शुद्ध हो गया है। उन्होंने वादा किया कि वे मुझे रोज़ सुबह दस मिनट अंग्रेजी पढ़ाएंगे। आज बा की तबीयत ठीक नहीं है, उन्हें पेट में दर्द है।

136 10.9.43 के लिए दो प्रविष्टियाँ हैं।

दर्द। उसने दोपहर करीब 2 बजे खाना खाया। पिछले तीन दिनों से मुझे सिरदर्द है। दोपहर के भोजन के तुरंत बाद मैं सो गई। मैं अपने बिस्तर पर सोई।

दिनांक: 12.9.43

बा बेहतर है। सुशीलाबेन भी ठीक है। सब कुछ ठीक है। 137

दिनांक: 16.9.43

आज दोपहर, नींद से जागने के बाद, जब मैं बापूजी के चरणों में घी लगा रहा था, तभी कटेली साहब यह खबर लेकर आए कि मेरी रिहाई के आदेश मिल गए हैं। मैंने इसे मज़ाक समझा, लेकिन उन्होंने आदेश बापूजी को दिखाया। मैं डर गया। लेकिन बापूजी ने कहा कि आदेश मेरी रिहाई का है, लेकिन इसमें मुझे वर्तमान प्रतिबंधों के तहत यहीं रहने का विकल्प भी दिया गया है और अगर मैं बाद में कभी रिहा होना चाहूँ, तो मैं जाने के लिए स्वतंत्र हूँ। बापूजी ने मुझसे मेरी राय पूछी। बाकी सबने कहा कि हमें भाई से उनकी राय पूछनी चाहिए। मैंने कहा कि भाई चाहेंगे कि मैं यहीं रहूँ और सेवा करूँ; इसके अलावा उन्होंने मुझे अपने फैसले लेने की पूरी स्वतंत्रता दी है। बापूजी ने कहा कि 'मैं जयसुखलाल के लिए जिम्मेदार हूँ, वह कुछ नहीं कहेंगे।' मैंने कहा, 'मैं नहीं जाना चाहता। मेरी पढ़ाई भी बहुत अच्छी चल रही है।' बापूजी जैसे व्यक्ति से कौन दूर जाना चाहेगा? क्या मुझे जीवन में ऐसा अवसर फिर कभी मिलेगा? मैंने इन बातों पर विचार किया और कहा कि मैं नहीं जाना चाहता। इसके अलावा, मैं यहाँ बोझ नहीं हूँ, मुझे क्यों जाना चाहिए? एक क्षण के लिए मेरा मन हुआ कि मैं बाहर जाकर भाई और युक्तिबेन से मिल लूँ, लेकिन यह क्षण भर के लिए ही था। मैंने उस गलत विचार को तुरंत त्याग दिया। बापूजी ने विश्राम के तुरंत बाद मुझे उत्तर लिख दिया।

'Maherban Kateli Sahib,

आपने मुझे सूचित किया है कि मध्य प्रांतों की सरकार, जिसकी मैं कैदी हूँ, मुझे रिहा करना चाहती है। लेकिन, यदि मैं अपनी इच्छा से वर्तमान प्रतिबंधों के तहत यहाँ रहने का निर्णय लेता हूँ, तो मैं ऐसा करने के लिए स्वतंत्र हूँ। आपने इस संबंध में मेरी प्रतिक्रिया मांगी है। मैं इसके द्वारा अपनी प्रतिक्रिया देता हूँ।

137 13, 14, 15 सितंबर 1943 के लिए कोई प्रविष्टियाँ नहीं हैं।

मनु गांधी की डायरी 65

आपको मेरा जवाब। मैं कस्तूरबा की सेवा करने यहाँ आया हूँ। मैं यहाँ तब तक रहना चाहता हूँ जब तक वह चाहे। मैं वर्तमान में लागू सभी प्रतिबंधों को स्वीकार करता हूँ। मैं यह भी समझता हूँ कि यदि भविष्य में मुझे रिहाई की आवश्यकता हो, तो मैं ऐसा करने के लिए स्वतंत्र हूँगा। इसलिए मुझे इस मामले में अपने पिता की राय लेने की आवश्यकता नहीं है, हालाँकि मैं उन्हें पत्र द्वारा यहाँ रहने की अपनी इच्छा के बारे में सूचित करूँगा।' 138 बापूजी ने यह मसौदा लिखा। मैंने इसे साफ-सुथरे अक्षरों में लिखा और श्री कटेली को दे दिया। मैं आज सूत कात नहीं सकता था।

दिनांक: 17.9.43

बा ने आज मनीलालकाका को एक टेलीग्राम भेजा। वह मुकदमा हार गया है और बा बहुत चिंतित है। सरकार ने टेलीग्राम भेजा था, लेकिन बाद में बापूजी के पास टेलीग्राम के पैसे मांगने आई। बापूजी ने श्री कटेली से कहा कि आप सरकार को बता दें कि बा के पास अपना कोई पैसा नहीं है, लेकिन उसके पास कुछ कपड़े हैं जिन्हें नीलाम करके उससे तीन रुपये वसूले जा सकते हैं। सब लोग जोर से हंस पड़े। 139

दिनांक: 23.9.43

मैंने आज पूज्यभाई को पत्र लिखा। बापूजी को स्नान कराने के बाद, सुशीलाबेन स्नान कर रही थीं। स्नान करते समय उनका पैर फिसल गया, ज़ोरदार आवाज़ हुई, जो हममें से किसी ने नहीं सुनी। वह बेहोश हो गईं। लेकिन शावर चालू था, जिससे पानी उन पर गिरा और उन्हें होश आ गया। उन्होंने ठंडे पानी से स्नान किया, कपड़े पहने और बाहर आकर लेट गईं। उनके सिर पर ज़ोर से चोट लगी थी। भगवान ने उन्हें बचा लिया! रात में मैंने लगभग आधे घंटे तक उनके सिर की मालिश की। उन्होंने दोपहर का भोजन नहीं किया। मुझे रसोई में बहुत काम था। मैं दोपहर 1 बजे सोई और दोपहर 3 बजे उठी; जूस और हलवा बनाया। आज मुझे सामान्य से ज़्यादा काम था।

138 यह पत्र सीडब्ल्यूएमजी, खंड 77, पृष्ठ 200-1 में भी पुन: प्रस्तुत किया गया है, हालांकि डायरी और सीडब्ल्यूएमजी के बीच थोड़ा अंतर है।

139 18.9.43 से 22.9.43 तक कोई प्रविष्टियाँ नहीं।

मूल पाठ में अंग्रेजी शब्द ‘बाथ’ 140 है।

141 मूल में अंग्रेजी शब्द 'शावर'।

मैंने पिंग पोंग खेला—बारिश की वजह से हम बाहर रिंग पर नहीं खेल पाए। आज मेरी पढ़ाई से छुट्टी थी।

दिनांक: 24.9.43

आज सुबह बा को मालिश देने के बाद, सुशीलाबेन और मैं मिठाई और चिवड़ा बनाने के लिए रसोई में गए। सुशीलाबेन ने मुझसे पहले काम शुरू कर दिया था। मालिश के बाद मैं उनके साथ शामिल हो सकी। हमने चिवड़ा आदि बनाया। मिठाई बहुत अच्छी बनी है। चिवड़ा भी स्वादिष्ट है। ये मिठाइयाँ बापूजी के जन्मदिन पर कैदियों में बाँटने के लिए बनाई गई हैं। मिठाई बनाने में हमने गुड़ का इस्तेमाल किया। आज हम पढ़ाई नहीं कर पाए क्योंकि सुशीलाबेन को अभी भी बेहोशी

के दौरे पड़ते हैं। दोपहर की नींद के बाद मैंने बा और बापूजी के पैरों पर घी लगाया। तार के खर्च के बारे में सरकार का जवाब आज आया। बापूजी को अपने खाते से भुगतान करने के लिए कहा गया है। बापूजी ने कहा, 'मुझे सूचित करने की क्या ज़रूरत थी? अगर वे पत्थरों से पानी निकाल सकते हैं, तो मुझसे पैसे भी निकाल सकते हैं।' हम सब इस पर हँस पड़े। बापूजी ने 'कांग्रेस की ज़िम्मेदारी' के आरोप का जवाब दिया है। टॉटेनहम ने रसीद स्वीकार कर ली है और कहा है कि बापूजी के जवाब पर विचार किया जा रहा है। 142

दिनांक: 25.9.43

आज हमने कल के कार्यक्रम पर चर्चा की। मीराबेन ने सुझाव दिया कि हममें से एक रूजवेल्ट का वेश धारण करे, दूसरा चर्चिल का; मैं सुधु का वेश धारण करूं और सुशीलाबेन मैडम चांग-ए-शेक का। लेकिन बाद में यह विचार खारिज कर दिया गया। प्यारेलालजी ने कार्यक्रम में शामिल होने से इनकार कर दिया।

142. 15 जुलाई को एम.के.जी. ने सरकार द्वारा लगाए गए '1942-43 के दंगों के लिए कांग्रेस की जिम्मेदारी' के आरोप का विस्तृत उत्तर दिया (देखें, गांधीजी का सरकार के साथ पत्राचार, 1942-44, पृष्ठ 117-264)। 10 सितंबर को उन्होंने गृह विभाग के अतिरिक्त सचिव को लिखा कि उन्हें अपने उत्तर की प्राप्ति की पुष्टि नहीं मिली है। इस पर सर रिचर्ड टोटेनहम ने 20 सितंबर 1943 को उत्तर दिया कि उनका उत्तर प्राप्त हो गया है और उस पर विचार किया जा रहा है। देखें, गांधीजी का सरकार के साथ पत्राचार, 1942-44, पृष्ठ 265।

इस कहावत का एक हिस्सा यह भी था कि बापूजी को ऐसे नाटक पसंद नहीं थे। लेकिन मीराबेन ने ज़िद की कि हमें कुछ तो करना ही होगा। सुशीलाबेन ने मेरी फ्रॉक पहनी; वह उन पर बहुत अच्छी लग रही थी। वह काफी छोटी लग रही थीं, उन्हें पारसी लड़की का वेश धारण करना था। आखिरकार, मुझे भी फ्रॉक और कढ़ाई वाली टोपी पहनाकर पारसी लड़की का वेश धारण कराया गया। डॉक्टर साहब ने सरदार अकबर खान (सीमावर्ती प्रांत के व्यक्ति) का वेश धारण किया, मीराबेन ने सिख का, प्यारेलालभाई ने दक्षिणी ब्राह्मण का, सुशीलाबेन ने क्रॉस और मीराबेन का लंबा कोट पहना। मीराबेन ने सुशीलाबेन के बालों से दाढ़ी बनाई और डॉक्टर साहब का कोट और पतलून अपने कुर्ते के ऊपर पहन ली। वह बिल्कुल सरदारजी जैसी लग रही थीं। डॉक्टर साहब ने मीराबेन की सलवार और सफेद पगड़ी पहनी। प्यारेलालभाई ने उनकी पगड़ी बांधी। हम इतना हंसे कि हमारी सांस फूल गई। रिहर्सल के बाद, मैंने बा को अखबार पढ़कर सुनाया और बापूजी के लिए गोल-पापड़ी बनाई क्योंकि वे मिठाई नहीं खाते। उसमें ज़्यादा अदरक डालने की वजह से वह ज़्यादा तीखी हो गई। शाम चार बजे कटेली साहब शांति कुमारभाई से मिले फलों और कपड़ों का एक पार्सल लेकर आए। 144 उसमें दो धोती, चार रुमाल, दो रुमाल आदि थे, जिनमें से दो रुमाल बा के लिए थे। पार्सल में एक सुंदर माला और स्वास्तिक बना हुआ एक नारियल भी था। उसमें सूखे मेवे भी थे, जो कराची से मंगवाए गए लगते हैं। मैंने शाम चार से साढ़े चार बजे तक पढ़ाई की और बा को पढ़कर सुनाया। लगभग छह बजे, मैंने सुशीलाबेन के साथ थोड़ी देर पढ़ाई

की। हमें कल के लिए एक माला बनानी थी, इसलिए मैं सूत कातने बैठ गई। थोड़ी देर सूत कातने के बाद मैं खेलने चली गई। खेल खत्म होने के बाद मैंने एक गठरी बनाई और उसे थोड़ा भिगोया। प्रार्थना के बाद हम बरामदे को सजाने में जुट गए और फलों की टोकरियों में फूल बांधे। प्यारेलालजी ने लिखा, 'हम सौ शरद ऋतुओं तक जीवित रहें।' 'सत्य की ही जीत होती है, असत्य की नहीं।' 'हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।'

'हम सौ शरद ऋतुएँ देखें।' 'हम सौ शरद ऋतुओं की ध्वनि सुनें।' मीराबेन ने दहलीज पर एक कमल बनाया और ॐ लिखा। मैंने साथ काम किया।

143 सरवाल यहाँ भी उन्होंने 'सलवार' (सलवार) की जगह '' लिखा है।

144 शांति कुमार मोरारजी (1902-1982) एक प्रसिद्ध उद्योगपति और सिंधिया स्टीमशिप नेविगेशन कंपनी के अध्यक्ष थे। वे और उनकी पत्नी सुमति मोरारजी एम.के.जी. के करीबी सहयोगी थे।

कुछ देर के लिए उन्हें सुला दिया। सुशीलाबेन ने मुझे रात करीब 12 बजे सुला दिया और कहा कि अगर मैं देर तक जागती रही तो बापूजी नाराज़ हो जाएँगे; वे करीब 2:30 बजे सोए। उन्होंने रात में मालाएँ बनाईं और उन्हें दरवाज़ों के चौखटों पर बाँध दिया। आज और कल मुझे पोरबंदर में मनाए जाने वाले नव वर्ष के उत्सवों की याद दिलाते हैं। वह एक नई और अलग तरह की खुशी थी। भगवान करे यह दिन हमें युगों-युगों तक मिले, इस प्रार्थना के साथ मैंने माला के मनके गिने और सो गई। हमें अगले दिन सुबह जल्दी उठना था।

दिनांक: 26.9.43 रविवार

शुभ क्षण! न केवल क्षण बल्कि पूरा दिन ही शुभ था। बापूजी अपने जीवन के 75वें वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं। हे भगवान, बापूजी को दीर्घायु प्रदान करें। आज बापूजी ने मुझे सुबह 5 बजे जगाया। मैंने अपने दांत साफ किए। मैं स्नान करना चाहता था, लेकिन प्रार्थना का समय हो चुका था। सुशीलाबेन बापूजी के चरण स्पर्श कर चुकी थीं। मैंने नहीं किया था। मुझे लगा था कि स्नान करने के बाद और उन्हें माला पहनाते समय उनके चरण स्पर्श करने होते हैं। प्रार्थना के समय सुशीलाबेन ने मुझे याद दिलाया और कहा कि उन्होंने बापूजी के चरण स्पर्श करके उनका अभिवादन कर दिया है। मैं बापूजी के पास गया। वे पलंग पर बैठे थे। मैंने उन्हें प्रणाम किया और उन्होंने मेरी पीठ थपथपाई। उसके बाद हमने प्रार्थना की। आज बापूजी भी हमारे साथ प्रार्थना में शामिल हुए। हमने निम्नलिखित भजन गाया।

और निह कछु कामके

में भरोसे अपने रामके...

भजन के बाद हमने रघुपति राघव गाया। प्रार्थना के बाद सुशीलाबेन और मैं थोड़ी देर सोए और सुबह 6 बजे उठे। मैं नहाने नीचे गया। मैंने बापूजी के चरण छुए और प्रार्थना की कि आप दीर्घायु हों और ईश्वर आपकी सभी मनोकामनाएं पूरी करें। फूलों की मालाएं बहुत सुंदर थीं। मीराबेन तो इस खूबसूरत दृश्य को देखकर लगभग नाचने ही लगी। इसके बाद मैं चला गया।

145 यह जन्मदिन विक्रम संवत के अनुसार मनाया गया और इसे रेन्तिया बरस के रूप में चिह्नित किया गया।

मैं नहाने के लिए नीचे गई। 146 मैंने अपने बाल संवारे। आज हम सबने लाल बॉर्डर वाली साड़ियाँ पहनी थीं। बा ने बापूजी की बुनी हुई साड़ी पहनी थी। मैंने एक बार फिर बापूजी के पैर छुए और मुझे पीठ पर दो थपथपाहट मिलीं। मैंने जूस बनाया और बापूजी को दिया। मैंने चाय बनाई। 7:30 बजे हमारा छोटा नाटक शुरू होना था, इसलिए मैं कपड़े बदलने चली गई। प्यारेलालजी ने अपनी धोती लुंगी की तरह पहनी थी, सुशीलाबेन ने मीराबेन का कोट पहना था और डॉक्टर साहब ने मीराबेन के सलवार के ऊपर पगड़ी और कोट पहना था, 147 वे बिल्कुल सरदार शमशेर सिंहजी जैसे दिख रहे थे। 148 हम सब तैयार होकर मीराबेन के कमरे में इंतजार करने बैठ गए। कटेली साहब बापूजी के पास गए और उन्हें बताया कि उनके पाँच मेहमान आए हैं। बापूजी कमरे में आए। कटेली साहब ने हमारा परिचय कराया। मेरा दिया हुआ नाम जरबल जरीवाला था। हम सबके नाम थे। मैं सबसे पहले उनके पास गया और उन्हें 'महात्माजी साल मुबारक' कहकर अभिवादन किया। बापूजी खूब हँसे और मेरे गालों पर प्यार से थपथपाया। मेरे बाद सुशीलाबेन ने बापूजी को प्रणाम किया, फिर डॉक्टर साहब ने। हम सब हँसी से लोटपोट हो रहे थे। सुशीलाबेन और मुझे इतना हँसना पड़ा कि बैठना पड़ा। बहुत मज़ा आया। मीराबेन सबसे आखिर में आईं। उन्होंने कहा, 'यह हमारे पंजाब का हलवा है।' 149 बापूजी ने जवाब दिया, 'स्वागत है सरदारजी, मुझे आपका हलवा ज़रूर लेना चाहिए।' 150 हमने थोड़ी देर तक मज़ाक किया। बापूजी हम सबको हमारे अपनाए हुए कपड़ों में टहलने के लिए ले गए। बा भी हमारे साथ थे। हम समाधि की ओर जा रहे थे, 151 तभी कटेली साहब ने कहा कि अगर सार्जेंट यह रिपोर्ट कर दे कि परिसर में कुछ अजनबी हैं तो कितना मज़ा आएगा! जैसे ही हम सीढ़ियों से नीचे उतरे, कटेली साहब ने 'जमादार' कहकर पुकारा। रघुनाथ डरा हुआ लग रहा था। उसने अपना कोट नहीं पहना था। वह दौड़ता हुआ आया। कटेली साहब ने पूछा, 'इन अजनबियों को अंदर क्यों आने दिया गया?' 152 बेचारा अचेत हो गया। हम हंस रहे थे, लेकिन वह इतना घबराया हुआ था कि कोई जवाब नहीं दे सका। थोड़ी देर बाद उसे होश आया और

146 यह वाक्य दोहराया गया है।

147 सलवार की जगह सरवाल।

148 पिछली प्रविष्टियों में नाम सरदार अकबर खान है।

149 ये वाक्य हिंदुस्तानी में हैं।

150 ये वाक्य हिंदुस्तानी में हैं।

महादेव देसाई की 151वीं पुस्तक।

152 यह वाक्य हिंदुस्तानी में है।

मैंने कहा कि मैं मनुबाई और सुशीलाबाई को पहचान सकती हूँ, लेकिन डॉक्टर साहब और मीराबाई को नहीं पहचान पा रही हूँ। इस तरह हमारा खेल समाप्त हो गया। हमने समाधि पर प्रार्थना की। सुशीलाबेन ने बापूजी को माला पहनाई और कहा कि यह महादेवभाई की ओर से है। हम वापस आ गए। बापूजी ने कहा कि हमें खेलना चाहिए। हम गए और बैडमिंटन का खेल खेला। हम 17 अंकों पर हार गए। सुशीलाबेन और मैं जोड़ीदार थे, जबकि डॉक्टर साहब और कटेली साहब जोड़ीदार थे। वापस आते समय बापूजी ने बरामदे में लिखे हमारे सभी अभिवादन पढ़े। पहला अक्षर ॐ था। उसके बाद थे...

तमसो मा ज्योतग्मय।

मृत्यु के अमृत की ओर जाओ।

सत्य की ही विजय होती है, अमृत की नहीं।

जिवेन शरद ऋतु सौ

पी. शरद ऋतु शताब्दी है

ुषयुम शरद शताब्दी

अरनार्यम शरद ऋतु सौ

नौवीं शरद ऋतु शताब्दी है

भुय शरद ऋतु सौ

हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो

मृत्यु से अमरता की ओर।

सत्य की ही जीत होती है, असत्य की नहीं।

हम सौ शरद ऋतुओं तक जीवित रहें।

हम सौ शरद ऋतुएँ देख सकें

क्या हम सौ पतझड़ों को सुन सकते हैं?

हम सौ शरद ऋतुओं तक फलते-फूलते रहें।

सौ शरद ऋतुओं के लिए हम आपको नमन करते हैं।

हम बार-बार सौ वर्ष तक जीवित रहें।

इन पंक्तियों के बाद एक कमल का चित्र बनाया गया था। बापू ने सारी पंक्तियाँ पढ़ीं। इसके बाद हम काम पर लौट आए। मैंने उनकी मालिश की। हमने मिठाइयाँ हटा दीं और कैदियों के लिए संतरे अलग रख दिए। मीराबेन भूल गई थी...

मनु गांधी की डायरी 71

दूध पियो। उसने बापू के कमरे को एस्टर से सजाया और उससे ॐ बनाया। हमने मालाएँ बनाईं और उन पर 75 बिंदियाँ लगाईं। बापूजी के निर्देश थे कि मालाएँ इस प्रकार बनाई जानी चाहिए कि उनमें सूत का प्रयोग हो सके। डॉक्टर साहब ने भी अपने काते हुए सूत से एक छोटी माला बनाई। हम सबने अपने कपड़े बदले और बापूजी को माला पहनाने के लिए आगे बढ़े। मैंने अपने काते हुए सूत से बनी एक सूती शॉल बापूजी के कंधों पर लपेटी। डॉक्टर साहब ने बा और बापूजी दोनों को माला पहनाई, जिसके बाद प्यारेलालभाई, सुशीलाबेन और मैंने टीका लगाकर दोनों को माला पहनाई, बदले में हमें स्नेहपूर्ण थपथपाहट मिली। हम तीन नए कटोरे में गुड़, चीनी और गेहूँ लाए थे। हमने ये उन्हें दिए। हम बापूजी और बा के लिए चप्पलों की एक-एक जोड़ी लाए थे, साथ ही घी, तेल और गोंद और शिकाकाई साबुन जैसी अन्य चीजें भी बाजार से लाए थे। हमने ये सब एक थाली में रखा और उन्हें दे दिया। दृश्य स्पष्ट रूप से भव्य था। बा और बापूजी चारों ओर फूलों और मालाओं के बीच बहुत भव्य लग रहे थे। हम सबने एक साथ प्रार्थना की। प्रार्थना के बाद हम भोजन बनाने चले गए। हमने सबके लिए बाजरे की खिचड़ी बनाई थी। बापूजी ने कहा कि वे दूसरों का बना खाना नहीं खाएंगे, उन्हें बाजरे की खिचड़ी अकेले खानी है। हमने उसे अलग से पकाया। बा और बापूजी एक साथ भोजन करने बैठ गए। उन्होंने मिठाई में गोल पापड़ी ली। उस कमरे में बा और बापूजी फूलों के ढेर के बीच बैठकर भोजन कर रहे थे! वह दृश्य बहुत ही भव्य था। उनके भोजन के बाद कैदी और वार्डर बापूजी को माला पहनाने आए। बा ने सबको दो-दो संतरे दिए। हमने उन्हें लगभग एक बजे भोजन परोसा। पूरे परिवार को दोपहर के भोजन में सब्जी, कढ़ी, खिचड़ी और दो संतरे परोसे गए। इसके बाद हम सब खाने बैठ गए। खिचड़ी और कढ़ी बहुत मसालेदार थी। मैंने बहुत कम खाई, लेकिन मेरी आंखों और नाक से पानी आ गया। भोजन के बाद मैं नीचे चला गया। बापूजी ने कहा था कि वे घी लगाने की अनुमति तभी देंगे जब मैं सो जाऊं। मैंने जल्दी से बापूजी के पैरों में घी लगाया और 2:30 से 3:30 तक सूत कातने बैठ गई। डॉक्टर साहब, सुशीलाबेन, प्यारेलालजी और मैंने साथ-साथ सूत काता। सूत कातने के बाद मैंने बापूजी के चरणों में घी लगाया और उनके साथ गीताजी का अध्ययन किया। आज

रविवार होने के कारण मैंने पत्र लिखे। 4:30 बजे बापूजी ने सबको चाय, मिठाई, चिवड़ा और सेव-गांठिया परोसी, हमने भी खाया। चार बजे से मीराबेन ने मिट्टी से मंदिर, मस्जिद और गिरजाघर बनाना शुरू किया और 6 बजे तक काम करती रही। आज बारिश हो रही थी इसलिए हमारा खेल नहीं हो सका। हम टहलने निकल गए। मैंने मिट्टी के आटे से 16 दीपक बनाए। हमने उन्हें बापूजी के कमरे में रख दिया। (मनु गांधी की डायरी का पृष्ठ 72)

वह टहलने निकले थे। मीराबेन ने मिट्टी की तीनों मूर्तियों को लकड़ी के चबूतरे पर रखा और उसके चारों ओर पौधे लगा दिए। उनके चारों ओर दीपक भी रखे गए थे। ऐसा लग रहा था मानो मंदिर किसी जंगल में हो। यह व्यवस्था मुझे गिरनार की यात्रा की याद दिला रही थी। हमने प्रार्थना के समय तक कमरा बंद रखा, जब तक कि बाकी सभी को अंदर आने की अनुमति नहीं मिल गई। हमने दीपक जलाए। रात के उजाले में दीपकों की कतार बहुत सुंदर लग रही थी। प्रार्थना के दौरान हमने 'हरि ने भजता' गाया। मीराबेन भी प्रार्थना में शामिल हुईं। प्रार्थना बहुत भावपूर्ण थी। प्रार्थना के बाद हम थोड़ी देर बैठे बातें करते रहे और दिन भर के मज़े के बारे में बातें करते रहे। मीराबेन और मैं मंदिर की सजावट आदि को देखते-देखते नहीं थके। हमारी नज़रें बार-बार उन पर टिक जाती थीं। मैंने बापूजी के पैर दबाए, बा की मालिश की और सो गई। इस तरह हमने पूरा दिन आनंद से बिताया।

दिनांक: 27.9.43

सुशीलाबेन ने आज मंदिर की रंगाई शुरू की। आज बापूजी ने वायसराय को पत्र लिखा। 'चूंकि आप जाने वाले हैं, मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ। आपने कभी मुझे मित्र समझा था, इसीलिए यह पत्र लिख रहा हूँ। आपने जितनी झूठी बातें फैलाई हैं और जितना दुख मुझे दिया है, उतना किसी ने नहीं दिया। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपके हृदय में निवास करें और आपको एहसास हो कि आपने रामराज्य को समझने में कितनी बड़ी और गंभीर गलती की है।' 154 155 उन्होंने कुछ इस तरह लिखा।

दिनांक: 27.9.43 156

Today I received a letter from Kaka, Bachi, Mota Babubhai, Vinodbehn, Bhagubhai, Anandji Bapuji, Indira, etc. After a long time

153 मूल में अंग्रेजी शब्द।

154 उसने हाशिये में लिखा, 'मुरब्बी भाई (प्यारेलाल) ने मुझे वायसराय को लिखे पत्र का सार गुजराती में समझाया, जिसे मैंने लिख लिया।'

155 लॉर्ड लिनलिथगो को लिखे पत्र के पाठ के लिए, देखें, सीडब्लूएमजी, खंड 77, पृष्ठ 201।

156 27.09.43 के लिए दो प्रविष्टियाँ हैं।

पूरे परिवार ने मुझे पत्र लिखा। मुझे अच्छा लगा। इंदिरा मुझे 'मनु फोई' कहकर बुलाती थी, अब सब मुझे 'फोइबा' कहकर चिढ़ाते हैं।

दिनांक: 28.9.43

कई दिनों बाद मुझे युक्तिबेन का पत्र मिला। उन्होंने मुझे बताया कि पूज्य मोतीलाल बापूजी का देहांत श्रावण वद 7 को हुआ। काकीबा का पत्र भी है जिसमें लिखा है कि शाकरी मौसी, वसुमतीबेन, सेवकभाई और मनोजनाभाभी नागपुर जेल से रिहा हो गए हैं। हम सब जो एक साथ जेल में थे, उनमें से कोई भी अब जेल में नहीं है।

दिनांक: 29.9.43

आज मुझे भाई का पत्र मिला, उन्होंने उमियाबेन को पत्र लिखने के लिए मुझे डांटा है। मुझे बॉम्बे सरकार से पत्र मिला है कि अगर मैं रिहा होना चाहूँ तो मुझे तुरंत रिहा कर दिया जाएगा; मैं बाद में रिहाई का फैसला नहीं कर सकती। यह मेरी मर्जी का मामला नहीं है। मैंने जवाब में लिखा कि मैं यहाँ सेवा और देखभाल करने आई हूँ और इसी कारण से यहाँ हूँ। इसलिए, मैं यह शर्त स्वीकार करती हूँ।

दिनांक: 30.9.43

सुशीलाबेन ने मेरा अंग्रेजी का टेस्ट लिया। मैं पास तो हो गई, लेकिन वाक्य रचना में बहुत खराब प्रदर्शन किया। उन्होंने मुझे तीन प्रश्नपत्र दिए थे। परीक्षा दो घंटे की थी। मैंने दोपहर के आराम के बाद परीक्षा दी। 157

दिनांक: 2.10.43

आज 2 तारीख थी, बापूजी का जन्मदिन था। मैंने उनके पैर छुए। हमने कुछ खास नहीं किया। 158

157 1.10.43 के लिए कोई प्रविष्टि नहीं।

158 3 और 4 अक्टूबर, 1943 के लिए कोई प्रविष्टि नहीं।

दिनांक: 5.10.43

पिछले तीन दिनों से मुझे हल्का बुखार है। आज मुझे बहुत कमजोरी महसूस हुई। मैं खेलने बाहर नहीं गया। सब लोग सोच रहे थे कि मैं क्यों नहीं गया। मैंने किसी को नहीं बताया क्योंकि मुझे यकीन था कि अगर मैं बता दूंगा तो वे मुझे कोई काम नहीं करने देंगे। मैंने कुछ नहीं कहा, लेकिन बापूजी समझ गए। उन्होंने मुझसे कहा, 'तुम्हें मुझे बताना चाहिए। आजकल तुम प्रार्थना के लिए समय पर नहीं उठते।' आज हमारा वजन नापा गया। एक बार फिर मेरा वजन 100 पाउंड आया, शायद इसलिए कि कल मैंने जुलाब की दवा ली थी। लेकिन बाकी लोग मुझे चिढ़ाते हुए कहने लगे कि मैं किसी बात को लेकर परेशान हूँ।

दिनांक: 6.10.43

आज मैंने विनोदबेन को पत्र लिखकर डाक से भेज दिया। आज भी काम करते समय थकान और कमजोरी महसूस हुई। आजकल बा, बापू के साथ 45 मिनट गीताजी का अध्ययन करती हैं। दोपहर 12 बजे रामायण सुनती हैं। सभी अपने-अपने कामों में मग्न हैं। स्वास्थ्य भी अच्छा है। 159

दिनांक: 8.10.43

आज मैंने श्री कटेली को एक पत्र दिया। 160 सरकार की ओर से एक सूचना आई थी कि मैं भविष्य में कभी भी रिहाई की गुहार नहीं लगा सकता। अगर मुझे आज़ाद होना था, तो मुझे अभी जाना होगा। मैंने रिहाई का प्रस्ताव ठुकरा दिया। बा को आज बुखार था। तापमान 102.5 डिग्री सेल्सियस था, जो बा के लिए

159 7.10.43 के लिए कोई प्रविष्टि नहीं।

160 सीडब्ल्यूएमजी, खंड 77, पृष्ठ 203 के अनुसार, यह पत्र 2 अक्टूबर को एमकेजी द्वारा लिखा गया था। पत्र में लिखा था: 'मैंने बॉम्बे सरकार के पहले पत्र को अपनी समझ के अनुसार समझा। लेकिन अब मुझे समझ आ गया है कि एक बार यहाँ रहने की अपनी इच्छा व्यक्त करने के बाद, मैं बाद में अपना विचार नहीं बदल सकती। यह "अपनी स्वतंत्र इच्छा" के पूर्ण विचार की पुष्टि नहीं करता है। लेकिन मैं सेवा के लिए यहाँ आई हूँ और यहीं रह रही हूँ। इसीलिए मैं अपने पत्र के उत्तर में रखी गई शर्त को स्वीकार करती हूँ, और यह मुझे ठीक लगती है। एक सेविका को अपनी कोई इच्छा क्यों रखनी चाहिए? जब तक पूज्य कस्तूरबा यहाँ हैं, मैं भी यहाँ रहूँगी।'

उनकी हालत गंभीर है। उन्हें मूत्रमार्ग में जलन हो रही है। वे बहुत कमजोर हो गई हैं। कल रात उन्हें बिल्कुल नींद नहीं आई। वे लेटतीं, उठतीं और बैठ जातीं। मैं बा के साथ उनके बिस्तर पर थी। वे मुझसे ऐसे लिपट गईं जैसे कोई बच्चा अपनी माँ से लिपटता है। उन्होंने अपना सिर मेरी गोद में रखा और सोने की कोशिश की। मैं उनके बगल में सो गई और फिर उन्हें नींद आ गई। मैं जाकर अपने बिस्तर पर सो गई। वे सुबह 3 बजे उठीं, मैं उनके पास गई और थोड़ी देर उनका सिर दबाया। उन्होंने मुझे गले लगाया और लेट गईं। मैं 4 बजे तक उनके पास रही, जब वे सो गईं तो मैं जाकर अपने बिस्तर पर सो गई। मुझे नींद नहीं आ रही थी। मुझे चिंता थी कि अगर मैं सो गई तो जब उन्हें मेरी ज़रूरत होगी तब मैं जाग नहीं पाऊँगी। बापूजी 5 बजे प्रार्थना के लिए आए। उन्होंने मुझसे रात के बारे में पूछा। मैंने उन्हें सब कुछ बताया और यह भी बताया कि वे रात में लगभग दो घंटे सोई थीं। उन्होंने मुझे सुशीलाबेन के बिस्तर पर जाकर सोने के लिए कहा। मैं लगभग 8 बजे तक वहीं लेटी रही। मैं उठा, दूध पिया, मेरा सिर बहुत भारी लग रहा था। मैंने जल्दी खाना खाया और 12:30 बजे सो गया और 3 बजे उठा। आज मैं पढ़ाई नहीं कर पाया। मैं बापूजी के चरणों में घी केवल 4:30 बजे ही लगा पाया। आजकल बापूजी 'कटाई' करने में बहुत समय बिताते हैं। बाकी सब काम समय पर होते हैं। आजकल शाम 5 बजे के आसपास आंधी और बारिश होती है। आज बारिश हमारे खेल के बाद आई। हमारा खेल अच्छा रहा। पिछले दो दिनों से मुझे नींद नहीं आ रही है। आज मैंने युक्तिबेन को एक पत्र लिखा।

दिनांक: 9.10.43

बा की सेहत आज भी ठीक नहीं है। पेशाब में जलन बनी हुई है। उनका शरीर जैसे जल रहा है। वो बहुत चिड़चिड़ी हो गई हैं। खेलने से पहले ही तूफान आ गया। आज एक मज़ेदार घटना हुई। बारिश और तूफान के दौरान बा बाहर जाकर एक बेंच पर बैठ गईं। सुशीलाबेन ने उनसे कहा, 'बा अंदर आ जाओ, नहीं तो बीमार पड़ जाओगी।' बा ने जवाब दिया कि वो ठीक हैं। बापूजी ने मिट्टी की पट्टी ली हुई थी, उन्होंने उसे हटाया और बा के पास जाकर कहा, 'अंदर आ जाओ, बीमार पड़ जाओगी।' बा चिढ़ गईं। 'तो क्या आपको मेरी ज़रा भी परवाह है? आप मुझसे मेरा हालचाल भी नहीं पूछते। कल रात तो मैं लगभग मर ही गई थी, लेकिन आप मेरे पास तक नहीं आए।'

161 मूल में अंग्रेजी शब्द, संभवतः समाचार पत्रों की कतरनों को संदर्भित करता है। 76 मनु गांधी की डायरी

बहुत गुस्से में थी। बापूजी ने जवाब दिया, ‘मैंने सुशीला को तुम्हारे पास भेजा था। मैं भी आया था, लेकिन तुम सो रही थी और तुम्हें जगाना नहीं चाहता था। अंदर आओ, हम बात करेंगे।’ बा ने कहा, ‘मैं नहीं आना चाहती।’ आखिरकार वह अंदर नहीं आई। वह गुस्से में थी और किसी को भी सही जवाब नहीं दे रही थी। मुझे डर था कि वह इसलिए गुस्सा है क्योंकि मैं उसके कमरे के बाहर सो गया था। मैंने बापूजी से पूछा, जिन्होंने कहा कि ऐसी कोई बात नहीं है। वह बापूजी से गुस्सा थी। मुझे राहत मिली कि मैंने उसे गुस्सा नहीं दिलाया था। हमने बरामदे में अपना खेल खेला। इन दिनों बंगाल में हर दिन लगभग सौ लोग मर रहे हैं। गुजरात में भी अकाल पड़ा है। कीमतें बेतहाशा बढ़ गई हैं। वनस्पति तेल (डालडा) का एक डिब्बा जो 2 रुपये का मिलता था, अब 10

रुपये का हो गया है। 162

दिनांक: 14.10.43

आठ दिन बाद मैं यह डायरी लिख रहा हूँ। कितनी आलसी हूँ मैं! मैंने गीताजी का दो बार पाठ पूरा कर लिया है। बापूजी ने कहा कि अब हम हर सात दिन में सभी 18 प्रवचनों का पाठ पूरा करेंगे। मैं दैनिक प्रार्थना में पढ़े जाने वाले सभी प्रवचनों का एक बार फिर पाठ करता हूँ। मैं मार्गोपदेशिका का पंद्रह मिनट अध्ययन करता हूँ। बापूजी कहते हैं कि यदि मैं मार्गोपदेशिका का अच्छे से अध्ययन करूँ, तो मेरी पढ़ाई में अच्छी प्रगति होगी। यह गीताजी के अध्ययन के समान होगी। इसलिए, मैं हर सुबह आधे घंटे अध्ययन करता हूँ। 22 अक्टूबर को डॉक्टर साहब का जन्मदिन है। हमने सिगरेट के आकार की चॉकलेट बनाने और उन पर सुनहरी पन्नी लपेटने का फैसला किया। हमने गाढ़ा दूध उबालकर तीन प्रकार की चॉकलेट बनाईं, एक कोको से, दूसरी कोको और मूंगफली से और तीसरी केवल मूंगफली से। चॉकलेट अच्छी बनी हैं। प्यारेलालभाई ने उन पर सुनहरी पन्नी लपेटकर उन्हें एक टिन में पैक कर दिया। आज शरद पूर्णिमा थी, इसलिए बा ने हमें दूध-पोहा और भजिया बनाने को कहा था। आजकल हम बरामदे में खेल खेलते हैं। भारी बारिश के कारण कोर्ट 163 गीला हो गया है, वे मिट्टी की नई परत बिछा रहे हैं और उस पर रोलर 164 चला रहे हैं। भारी बारिश के कारण आज हमें अपने कमरों के अंदर सोना पड़ा।

162. 10 से 13 अक्टूबर, 1943 तक कोई डायरी प्रविष्टियाँ नहीं हैं।

मूल पाठ में 163 अंग्रेजी शब्द हैं।

मूल पाठ में 164 अंग्रेजी शब्द हैं।

दिनांक: 15.10.43 शनिवार

मैंने उमियाबेन को बहुत दिनों बाद पत्र लिखा। मुझे बहुत दुख है कि इतने दिनों तक उन्हें पत्र न लिखकर मैंने बहुत बड़ी गलती की है। इस सप्ताह मैंने बा के लिए चार पत्र लिखे, मामा, काकीबा, मनुबेन और माथुरदासभाई को। इस सप्ताह मैंने केवल एक व्यक्तिगत पत्र लिखा। आज महादेवभाई के निधन को सवा वर्ष हो गया है। हमने बहुत सारे फूल चढ़ाए। सुशीलाबेन और मैं समाधि पर जल्दी पहुँच गए और फूल सजाए। जब हम फूल सजा ही रहे थे कि बापूजी सुबह 8:30 बजे वहाँ पहुँच गए। हमने बाकी फूल सजाए और बापूजी के साथ चले। चलते-चलते उन्होंने हमें बताया कि कैसे उन्होंने रामदासकाका को गणित पढ़ाया था। उन्होंने कहा, 'वह लड़का बहुत मंदबुद्धि था। मैं उसे डरबन से फीनिक्स तक पैदल चलते हुए गणित पढ़ाया करता था। वह लड़का एक होशियार व्यक्ति बन गया।' मैं प्रार्थना के लिए समय पर नहीं उठी।

दिनांक: 16.10.43 रविवार

आज भाई ने हमारे लिए मीठे खरबूजे भेजे हैं। ये शांति कुमारभाई के ज़रिए मुंबई से आए हैं। शायद वो मुंबई गए थे। आजकल मैं ठीक हूँ। मैं नमाज़ के लिए समय पर उठ गई थी। 165 जैसे ही ज़हरीला साँप गायब होता है, वो ज़हर उगल देता है। मैंने काकीबा और निमुकाकी को पत्र लिखे हैं। मैंने अभी तक उमियाबेन को पत्र डाक से भेजने के लिए नहीं दिया है। बा की तबीयत ठीक नहीं है।

दिनांक: 17.10.43 सोमवार

सुशीलाबेन डॉक्टर साहब के जन्मदिन पर उन्हें भेंट करने के लिए एक मेज़पोश बना रही हैं। उन्होंने मुझे एक नई तरह की क्रोशिया बुनाई सिखाई। उन्होंने सारा दिन यही काम किया। आज बापूजी का मौन दिवस था, लेकिन उन्होंने मेरी कक्षा ली, अन्यथा हम गीताजी का पाठ पूरा नहीं कर पाते।

165 तीन पंक्तियों को मिटाकर काला कर दिया गया है। अतः निम्नलिखित वाक्य का संदर्भ अस्पष्ट है।

166 मूल में अंग्रेजी शब्द।

167 उन्होंने क्रोशे के लिए गुजराती शब्द 'क्रोचिया' का प्रयोग किया है। 78 मनु गांधी की डायरी

सात दिनों में। अगर मैंने कोई गलती की तो वह इशारा करते। आज बापूजी ने मुझे ज़ोरदार थप्पड़ मारा। बापूजी ने तय कर लिया है कि अगर मैं नमाज़ के लिए नहीं उठा तो वह मुझे थप्पड़ मारेंगे। वह ज़ोर से मारते हैं, लेकिन बहुत प्यार से भी मारते हैं। आज मैं घूम गया। 168

दिनांक: 18.10.43

आज मेज़पोश का काम पूरा हो गया। आज मैं भाई के पास चिट्ठी समझने गई थी। उन्होंने पहला पैराग्राफ पढ़ा और उसे एक तरफ रख दिया। उन्होंने मुझसे पूछा, 'तुम ऐसी गंदी चिट्ठी क्यों पढ़ना चाहती हो?' मुझे भी ऐसा ही लगा। हमने उसे आगे नहीं पढ़ा। मैं 11:30 बजे सो गई। बा की तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए मैं वहीं बैठकर उनके शरीर को धीरे से दबाती रही। बापूजी ने मेज़पोश पर काम पूरा करने की इजाज़त दी थी और मैंने आधे घंटे तक वही काम किया।

दिनांक: 19.10.43

172 अखबारों ने खबर दी है कि नए वायसराय वेवेल आ गए हैं। बा का स्वास्थ्य अभी भी खराब है।

दिनांक: 20.10.43

मुझे आज भाई का पत्र मिला। लगता है उन्हें मेरे पहले के पत्र नहीं मिले, इसलिए उन्हें यह जानकारी नहीं थी कि मध्य प्रांत की सरकार ने मेरी रिहाई का आदेश जारी कर दिया है। नए वायसराय ने आज शपथ ली। लिनलिथगो जा चुके हैं। देखते हैं ये कैसे साबित होते हैं। ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि प्रदान करें।

168 सात पंक्तियों को खरोंच कर मिटा दिया गया है और उन पर काला रंग कर दिया गया है।

169 मूल में अंग्रेजी शब्द।

170 यहाँ से एक वाक्य काट दिया गया है।

171 मूल में अंग्रेजी शब्द।

172 फील्ड मार्शल आर्चीबाल्ड पर्सीवल वेवेल ने 1943 से 1947 तक भारत के वायसराय के रूप में कार्य किया।

दिनांक: 21.10.43

आज के अखबार में खबर है कि भंसालीकाका और मोहन सहासी को गिरफ्तार कर लिया गया; भंसालीकाका को वर्धा ले जाया गया और रिहा कर दिया गया। आज बा को तेज जलन हो रही थी इसलिए बापूजी ने उन्हें गर्म और ठंडे पानी से स्नान कराया। 173 174 उन्हें पांच-पांच मिनट के लिए बारी-बारी से गर्म और ठंडे पानी से स्नान कराया गया। 175 इन दिनों मैं टहलने के बाद प्यारेलालजी के साथ अंग्रेजी व्याकरण पढ़ता हूँ। आज मैंने गीताजी का एक पाठ पूरा किया और अठारहवाँ प्रवचन एक बार फिर पढ़ा। बापूजी कहते हैं कि जब तक मुझे 10 से 18 तक के प्रवचन त्रुटिहीन रूप से याद न हो जाएं, तब तक मुझे कुछ और करने के बारे में नहीं सोचना चाहिए। इन दिनों मैं काका साहब की 176 स्मरण यात्रा बा को पढ़ता हूँ। आज हमें कराची से सूखे मेवों का एक पार्सल मिला, जिसमें काजू, बादाम, सूखे अंजीर, खुबानी और मगस शामिल थे। मैंने उन्हें आज दोपहर ठीक से रख दिया। गलती से मैंने भैंस के दूध की मलाई को बकरी के दूध की मलाई में डाल दिया। कल रात मैं दूध को दही जमाने के लिए रखना भूल गया था। आज सुबह जब मैं दूध रखने गई तो वहाँ मलाई का एक कटोरा रखा था जिसे राम नरेश ने अलग रखा था। मैंने उसे दही समझकर इस्तेमाल कर लिया। नाश्ते में खाते समय उसका स्वाद अजीब लगा;

मुझे आश्चर्य हुआ कि मलाई खराब हो गई थी। डॉक्टर साहब ने मुझे उसे न खाने के लिए कहा, लेकिन फिर भी मैंने खा लिया। बाद में मुझे एहसास हुआ कि राम नरेश ने चालाकी से बकरी के दूध की मलाई निकालकर मेज पर रख दी थी। 177 मुझे बहुत बुरा लगा कि मुझे पता नहीं चला कि वह मलाई थी। जल्दबाजी में मुझे यह बात समझ नहीं आई। अच्छा हुआ कि हमारे पास कल का कुछ मक्खन था, नहीं तो हमें बापूजी को घी देना पड़ता। सारा दिन मैं इसी बारे में सोचती रही। आज सुबह भी मैं प्रार्थना के लिए नहीं उठ पाई। रात में किसी तरह दो कुत्ते अंदर आ गए थे और बापूजी की सीट पर बैठे थे; मैंने उन्हें भगा दिया। आज सुबह मुझे थप्पड़ पड़ा। इन दिनों मैं सुबह मार्गोपदेशिका पढ़ती हूँ। बापूजी का वजन 111 पाउंड था। उनका वजन 1 पाउंड कम हो गया। बापूजी का वजन 89 से घटकर 111 पाउंड हो गया।

173 मूल में अंग्रेजी शब्द।

174 मूल में अंग्रेजी शब्द।

175 मूल में अंग्रेजी शब्द।

उनकी आत्मकथात्मक रचना 'स्मरण यात्रा', जो उनके बचपन का वृत्तांत है, 1934 में प्रकाशित हुई थी।

177 मूल में अंग्रेजी शब्द।

मेरा वजन 100 पाउंड से घटकर 99 पाउंड हो गया। भाई का वजन 7 पाउंड कम हुआ और वह 125 पाउंड से घटकर 119 पाउंड हो गया। हम सभी का वजन इस सप्ताह कम हुआ है, हालांकि इस कमी का कोई कारण नहीं है। आजकल मैं बापूजी के स्नानघर में गर्म पानी से नहाता हूँ। मैं सुबह 11 बजे नहाता हूँ। मैंने कुछ देर तक चरखा चलाया। आजकल मैं शाम को चरखा चलाता हूँ।

दिनांक: 22.10.43 शुक्रवार

आज डॉ. गिल्डर का जन्मदिन था। काफी चहल-पहल थी। मैं प्रार्थना के लिए समय पर उठ गई और उसके तुरंत बाद स्नान किया। सुबह 7:30 बजे हम सभी फूलों और मालाओं के साथ डॉक्टर साहब के कमरे में गए। बा ने उन्हें टीका लगाया, उनके गले में माला डाली और आशीर्वाद दिया। उनके बाद बापूजी ने उन्हें 62 धागों की माला पहनाई, जिसे उन्होंने खुद काता था। उनके बाद मैंने, सुशीलाबेन और प्यारेलालजी ने भी उन्हें एक-एक माला पहनाकर बधाई दी। हमने उनके माथे पर टीका लगाया, उन्हें फूलों की माला, क्रिस्टल चीनी और मिठाई दी। बा ने सभी को चीनी बांटी। हम उन्हें भोजन कक्ष में ले गए और हमने ऐसा सजाया जैसे उन्हें कई उपहार मिले हों। एक डिब्बा था जिसमें सुनहरी पन्नी में लिपटी हुई 'धुआं रहित' सिगार और चॉकलेट थी। एक टोकरी में अन्य मिठाइयाँ थीं। एक बंडल में सूती मेज़पोश था, जिसे मैंने खुद काता था।

सुशीलाबेन और मैंने किनारों और कोनों पर कढ़ाई की थी, जिन पर बापूजी, मीराबेन और प्यारेलालजी ने गुजराती, हिंदी, तमिल और उर्दू में 'जी' की कढ़ाई की थी। बापूजी ने तमिल अक्षर की कढ़ाई की थी, जबकि प्यारेलालजी ने उर्दू में और मीराबेन ने हिंदी और गुजराती अक्षरों की कढ़ाई की थी। हमने एक लेबल पर 'धुआं रहित सिगरेट' लिखा था। 186 हमने ये सभी चीज़ें अलग-अलग दीं। हम एक-दूसरे को चिढ़ाते रहे।

178 मूल में अंग्रेजी शब्द।

179 मूल में अंग्रेजी शब्द।

मूल में 180 अंग्रेजी शब्द।

181 मूल में अंग्रेजी शब्द।

182 मूल में अंग्रेजी शब्द।

183 मूल में अंग्रेजी शब्द।

184 मूल में अंग्रेजी शब्द।

185 मूल में अंग्रेजी शब्द।

186 मूल में अंग्रेजी शब्द।

मनु गांधी की डायरी 81

और खूब हँसे। हम सब टहलने गए और उसके बाद नाश्ता किया। हमने नाश्ते में कई तरह की चीजें बनाई थीं। बैडमिंटन का खेल आज से फिर शुरू हो गया है। पूरा दिन आनंदमय बीता। कैदियों को दोपहर के भोजन में कढ़ी, खिचड़ी और सब्जियां और दोपहर में चाय, चिवड़ा और जलेबी परोसी गई। मीराबेन भी शाम के खेल में शामिल हुई। हमने खूब मज़ा किया। बा तीन दिन बाद आज खेलने के लिए बाहर आई।

दिनांक: 23.10.43 शनिवार

आज मैं प्रार्थना के लिए नहीं उठी। आज एकादशी होने के कारण मुझे मालिश करने की आवश्यकता नहीं थी।

दिनांक: 24.10.43

बा को मूत्रमार्ग में तेज जलन हो रही है इसलिए बापूजी उसे गर्म और ठंडे पानी से कूल्हे का स्नान कराते हैं। 187 बा को बहुत राहत मिलती है।

दिनांक: 25.10.43 सोमवार

इन दिनों मार्गोपदेशिका का मेरा अध्ययन अच्छी तरह से चल रहा है। मैं प्यारेलाल जी से लगभग 15 मिनट अंग्रेजी पढ़ता हूँ। मुझे अच्छा लगता है। वे मुझे काल (टेन्सेस) 188 पढ़ा रहे हैं, जिसमें मैं बहुत कमजोर हूँ। मैं सुशीलाबेन से नियमित रूप से पढ़ता हूँ। आज मेरे लिए एक नया कार्यक्रम बनाया गया है, जिसमें यह निर्धारित है कि मुझे तीन घंटे से अधिक अध्ययन नहीं करना चाहिए। मुझे सुबह इलेक्ट्रॉनिक लाइट में पढ़ने की मनाही है। मैं जल्दी नहाता हूँ और बैडमिंटन खेलता हूँ। पढ़ाई अच्छी चल रही है। अच्छा लग रहा है। आज सोमवार होने के कारण मैं डॉ. गिल्डर के पास गया। कुछ समय से मैं सोमवार को उनसे पढ़ने जाता हूँ। उन्होंने मुझे वायरलेस, ऋतुओं के परिवर्तन, कैंसर के कारणों और अंडे के अंदर चूजे के विकास के बारे में पढ़ाया। वे बहुत अच्छे से समझाते हैं। बा ने भाई और मनुबेन के लिए पत्र लिखवाए। काकीबा का पत्र दिल्ली से आया है। पूज्यभाई का भी एक पत्र है। उन्होंने अपना पत्र भेजा है।

187 मूल में अंग्रेजी शब्द।

188 मूल में अंग्रेजी शब्द।

मेरे यहाँ रुकने के फैसले पर भगवान का आशीर्वाद है। वह बहुत खुश हैं। मैं डॉ. गिल्डर गई थी और बापू के बर्तन साफ करना भूल गई थी। बापूजी ने बर्तन साफ करना शुरू किया, तभी मीराबेन आई और उसने यह काम अपने हाथ में ले लिया। बापूजी ने मुझसे कहा, 'जो काम तुमने लिया है, उसे तय समय पर करना चाहिए। तुम बहुत मेहनत करती हो। तुम्हारी उम्र की लड़कियाँ अक्सर बहुत गैरजिम्मेदार होती हैं, तुम नहीं हो, इसलिए तुम पर काम का दबाव नहीं डाला जा सकता। तुम्हें बर्तन साफ करने के बाद ही जाना चाहिए था।' बापूजी की बात बिल्कुल सही थी, लेकिन सच तो यह है कि कभी-कभी मैं उन्हें देर से साफ करती हूँ। बापूजी ने कहा, 'यह अच्छी बात है कि तुम्हें काम याद रहा। मीराबेन ने बर्तन साफ कर दिए, इसमें कोई बुराई नहीं है, लेकिन तुम्हें अपना लिया हुआ काम तय समय पर ही करना याद रखना चाहिए।'

दिनांक: 26.10.43, मंगलवार

189 ई बाथ से बा को बहुत फायदा हुआ है। उन्होंने बताया कि अब उन्हें जलन नहीं होती। बादाम, काजू, सूखे अंजीर और खुबानी जैसे सूखे मेवे कराची से मंगवाए गए हैं।

दिनांक: 27.10.43, बुधवार

आज मैं नमाज़ के समय पर उठ गई। कल रात करीब 12 बजे सोई थी। माला जपने के बाद मैं उन परिस्थितियों के बारे में सोचने लगी जिनके चलते मैं यहाँ आई, उस अवसर के बारे में जो मुझे मिला। मुझे यह भी याद आया कि यहाँ आने के बाद मैंने एक बार झूठ भी बोला था। पूज्यभाई और बहनों की यादें मेरे मन में उमड़ आईं। भगवान उन सबकी रक्षा करें। बंगाल की हालत ने भी मुझे चिंतित कर दिया। मुझे सिरदर्द भी था। मैंने कुनैन की गोली ली।

दिनांक: 28.10.43

मैं नमाज़ के लिए नहीं उठ पाई। आज सुबह जूस निचोड़ने के तुरंत बाद मुझे एक थप्पड़ पड़ा। आजकल मैं सुबह जल्दी नहाती हूँ। ठंड लग रही है।

189 मूल अंग्रेजी शब्द।

मनु गांधी की डायरी 83

मौसम बदल गया है। सुबह-सुबह मुझे बहुत ठंड लगती है। आज मैंने प्यारेलालजी का कमरा साफ किया। मैंने सारी किताबें निकालीं, गुजराती, अंग्रेजी, मराठी और हिंदी की किताबों की अलग-अलग सूचियाँ बनानी पड़ीं। बा की मालिश करने के बाद सारा समय मैंने इसी में बिताया। पढ़ाई नहीं की, क्योंकि आराम करने के बाद भी मैं काम पर लग गई, जो शाम तक चलता रहा। हमने भगवद् पढ़ना फिर से शुरू कर दिया है, अब मैं शब्दों के अर्थ समझाते हुए पढ़ती हूँ।

दिनांक: 29.10.43

आज दिवाली है। मैंने सुबह जल्दी स्नान किया। आज मुझे पूरन-पोली बनानी है। बापूजी भी खाएंगे। पहले तो उन्होंने मना कर दिया, लेकिन फिर उन्होंने मुझे बा से पूछने को कहा। अगर बा न खाएँगी, तो बापूजी खा लेंगे। बा ने कहा कि वो नहीं खाएँगी। बा ऐसी चीजें खाने के बाद बीमार पड़ जाती हैं। मैंने बापूजी के लिए बकरी के दूध के घी से अलग पूरन-पोली बनाई। मैंने बाकी लोगों के लिए भी अलग से बनाई। इन्हें बनाने में 11:30 बजे तक का समय लग गया। आज सुबह मैं बिल्कुल भी पढ़ नहीं पाई। शाम को हमने कैदियों को भजिया, चाय और खजूर दिए। आज हमें कुवरजीभाई, कानूभाई, उमियाबेन, प्रताप, शंकरलालजी और युक्तिबेन के पत्र मिले। मुझे उमियाबेन का पत्र पाँच-छह महीने बाद मिला। इससे मुझे बहुत खुशी हुई; मैंने बापूजी की धोती के बॉर्डर का एक किनारा सिल दिया, दूसरा किनारा अभी बाकी है। शाम की सैर के बाद हम अंधेरा होने पर समाधि पर गए। डॉक्टर साहब, कटेली साहब और प्यारेलाल जी ॐ के चारों ओर अगरबत्तियाँ सजा रहे थे, हमने भी उनकी मदद की। उन्हें तारे के आकार के चारों ओर भी रखा गया था। हवा तेज़ थी और अगरबत्तियाँ जलने में थोड़ा समय लगा। हमने भी दीपक जलाए।

यह बहुत सुंदर लग रहा था, जैसे अंधेरी रात में तारे चमक रहे हों। कुछ दीपक तालाब के चारों ओर भी रखे गए थे। प्रार्थना के बाद मैं सुंदर सजावट देखने नीचे गया। कई वर्षों बाद बापूजी ने पूरन-पोली खाई और वह भी मेरे हाथों से बनी हुई। हमने पूरा दिन आनंदपूर्वक बिताया। रात में बा ने बापूजी के चरण छुए।

दिनांक: 30.10.43

आज नव वर्ष है। ईश्वर इस शुभ अवसर पर संसार के सभी लोगों को शांति और सुख प्रदान करें तथा सभी को स्वस्थ रखें। (मनु गांधी की डायरी)

दिन—बस यही मेरी प्रार्थना है। असल में नया साल नया नहीं है। दुनिया की तो बात ही छोड़िए, भारत में ही हर दिन 2000 से ज़्यादा लोग मर रहे हैं, बापूजी जेल में हैं, दिवाली नहीं मनाई जा सकती। यह हिंदुओं का एक पारंपरिक त्योहार है, इसलिए हमारे पास इसे मनाने के अलावा कोई चारा नहीं है। सुबह उठते ही मैंने प्रार्थना के लिए बापूजी के चरण छुए। मैंने भाई और अन्य बड़ों को मन ही मन प्रणाम किया और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। मैंने सभी के चरण छुए और उनका आशीर्वाद लिया। काश यह आखिरी काली दिवाली हो, भगवान हमें फिर कभी ऐसी दिवाली न दें। डॉ. गिल्डर आए और बापूजी को नमस्कार करते हुए 'साल मुबारक' कहा। बापूजी ने उत्तर दिया, 'क्या यह वाकई नया साल है! मुझमें बिल्कुल भी उत्साह नहीं है। हमारा नया साल भारत की स्वतंत्रता के दिन होगा। तब तक तो हमारा कोई नया साल नहीं होगा। ऐसे कई नए साल बीत चुके हैं, लेकिन मुझे विश्वास है कि जो हो रहा है और जो हुआ है, वह भारत के भले के लिए ही है।' आपने बहरामजी मालाबारी की कविता "मैंने शाह आलम के रिश्तेदारों को सड़कों पर भीख मांगते देखा" अवश्य पढ़ी होगी। हमारी हालत भी उन्हीं जैसी है। ऐसे में उत्साह और उत्सव का क्या स्थान हो सकता है! हम सबने बैडमिंटन खेला। आज तो बहुत ठंड है। आजकल मैं कपड़े धोने में देरी कर रही हूँ। कोई बात नहीं। भगवान ही जानते हैं कि इस साल क्या होना है। हम केवल दुनिया में शांति के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। दिन ऐसे ही विचारों में बीत गया। मुझे मुंबई के पोरबंदर में मनाया गया नया साल और नागपुर जेल में बिताया गया नया साल याद आ गया। आमतौर पर आज के दिन बहुत भागदौड़ होती है। अखबारों में पोरबंदर की रानी रूपाली बा के निधन की खबर छपी। मुझे दुख हुआ। वह अच्छी थीं। वे इस समय शोक में होंगे। 190

दिनांक: 1.11.43

आज मैंने लक्ष्मीकाकी, रामदस्काका और युक्तिबेन को पत्र लिखे। मैंने कनुभाई को भी पत्र लिखा। आज मुझे बहुत तेज सिरदर्द था। मैं जल्दी सो गई। रात में हल्का बुखार था। कमर में भी दर्द था। मुझे मासिक धर्म शुरू हो गया है।

190 31.10.1943 के लिए कोई प्रविष्टि नहीं।

दिनांक: 2.11.43 सोमवार

आज मौन का दिन था, लेकिन बापूजी ने मुझे पढ़ाया। वे मार्गोपदेशिका के श्लोक लिखते थे, जिनके उत्तर मैं देता था। उन्होंने मुझे गीताजी भी इसी प्रकार पढ़ाई। आज बापूजी का स्वास्थ्य कुछ कमजोर था। मैंने डॉक्टर साहब के साथ अध्ययन किया। उन्होंने मुझे चंद्र ग्रहण, दिन-रात, प्रकाश और अंधकार के बारे में पढ़ाया। यह बहुत रोचक है।

दिनांक: 3.11.43

आज से बापूजी ने महादेवभाई की स्मृति लिखना शुरू कर दिया है। लक्ष्मीकाकी और मनुबेन से 191 पत्र प्राप्त हुए हैं।

दिनांक: 4.11.43

आज मेरी सेहत बिल्कुल ठीक है। मासिक धर्म बंद हो गया है। कटेली साहब ने मुझे दो नोटबुक दीं और कहा कि किसी को बताना मत, वरना वो नोटबुक नहीं दे पाएंगे। नोटबुक बाज़ार में नहीं मिल रही हैं।

दिनांक: 5.11.43

आज रामदस्काका और भाई के पत्र आए हैं, भाई ने मेरी घड़ी भेजी है। आज मैंने बापू द्वारा लिखित महादेवभाई की आत्मकथा पढ़ी, जिसमें उन्होंने महादेवभाई की मृत्यु और अंतिम संस्कार की रस्मों का वर्णन किया है। इसे पढ़कर मुझे महादेवभाई से ईर्ष्या हो रही है। कितना अच्छा होता अगर मेरी मृत्यु भी महादेवभाई जैसी होती? ऐसा सौभाग्य किसे मिलता है? उन्होंने असाधारण सेवा की, अपने सारे ऋण चुकाए और इस दुनिया से चले गए। लेकिन मेरे ऋण तो अभी चुकाने ही हैं। अगर मेरे सारे ऋण जल्दी चुक जाएं और मेरी मृत्यु भी उनकी ही तरह हो जाए तो कितना आनंद आएगा! यह ऐसी मृत्यु है जो ईर्ष्या जगा देती है। आज मैं टहलने नहीं गया क्योंकि बा की तबीयत ठीक नहीं थी और मैंने उनके साथ समय बिताया।

191 यह दस्तावेज़ उपलब्ध नहीं है।

दिनांक: 6.11.43

आज मैंने मनुबेन और सुशीलाकाकी को पत्र लिखे। सुशीलाबेन को सर्दी लग गई है।

दिनांक: 7.11.43

सुबह की प्रार्थना के बाद मुझे नींद नहीं आई। आज मीराबेन का जन्मदिन है और बापूजी ने मुझे उसके लिए अठारह धागों की माला बनाने को कहा था, जिसे बनाने में काफी समय लगा। आज मीराबेन ने बापूजी के साथ अपने जीवन के अठारह वर्ष पूरे कर लिए। वह 1925 में आई थी। वह अपना जन्मदिन बापू के साथ आने के दिन के रूप में मानती है। हम सब सुबह जल्दी उठ गए। हमने उसे देने वाली सभी चीजें अलग-अलग पार्सलों में पैक कर दी थीं, जिन पर अलग-अलग पते लिखे थे। एक डिब्बे में हमने मिट्टी से बनी बछड़े और बकरी के बच्चे की मूर्तियाँ रखी थीं। ये मीराबेन को बहुत प्रिय हैं। डिब्बे पर 'गृह विभाग सरकार' लिखा था। इसे रेडियो सेट की तरह पैक किया गया था। दूसरे पार्सल में गुड़, शहद, स्याही, क्लिप, साड़ी, साबुन और तेल थे। ये सब चीजें उसे सुबह बापूजी के चरण स्पर्श करते समय दी गईं। यह बहुत सुंदर था। वहाँ एक हस्तनिर्मित तस्वीर है जिसमें भगवान कृष्ण ने बापूजी के सिर पर अपना हाथ रखा हुआ है। तस्वीर बहुत अच्छी है। जब तक हमने सारे पार्सल खोले, तब तक 8:15 बज चुके थे। इसके बाद हमने बैडमिंटन खेला।

दिनांक: 8.11.43

आज बापूजी को सर्दी लग गई है। बापूजी बगीचे में टहलने गए थे। मैं शाम की सैर पर नहीं गया। हमने रिंग 197 से खेला क्योंकि डॉक्टर साहब के हाथ में दर्द था।

192 मूल में अंग्रेजी शब्द।

193 मूल में अंग्रेजी शब्द।

194 मूल में अंग्रेजी शब्द।

195 मूल में अंग्रेजी शब्द।

196 मूल में अंग्रेजी शब्द।

197 मूल में अंग्रेजी शब्द।

दिनांक: 9.11.43 सोमवार

आज बापूजी की सर्दी बढ़ गई। उन्हें कल रात बुखार था। उन्हें कल अरंडी का तेल लेना है। मैंने आज गीताजी और मार्गोपदेशिका का अध्ययन किया। आज मौन का दिन होने के कारण पूरे दिन एक अजीब सी खामोशी छाई रही। आज देव दिवाली है। बा को तुलसी विवाह करना है। सारी व्यवस्था मुझे करनी पड़ी। हमने चार गन्ने से मंडप बनाया, बीच में एक फूल बनाया जिस पर एक

गमला रखा। सुशीलाबेन ने उसके सामने एक सुंदर ॐ बनाया। मैं बहुत सारे फूल लाई थी। इस तरह हमने जगह को सजाया। ये सारी तैयारियां रात के खाने के बाद की गईं। मैंने प्रसाद बनाया। शाम की प्रार्थना के समय बा ने पूजा की, आरती गाई और श्लोक पढ़े। उन्होंने मुझसे कहा, 'पिछली बार मैं अकेली थी, इस बार तुम मेरे साथ हो—अच्छा लग रहा है।' सजावट बहुत सुंदर थी। उन्होंने मुझसे भी पूजा करवाई। मेरी माता के निधन के बाद मैंने पहली बार तुलसी विवाह देखा। बा जी के जीवित रहते हम सभी त्यौहार मनाते थे, उनके निधन के बाद ऐसा लगा जैसे सब कुछ उनके साथ चला गया हो। सब कुछ याद आ गया और मेरी आँखों में आँसू भर आए। माँ की यादें ताज़ा हो गईं। इस सब काम की वजह से मैं डॉक्टर साहब के साथ पढ़ाई नहीं कर पाई, न ही शाम की सैर पर जा पाई। हमने आज का दिन बड़े उत्साह से मनाया। आज मेरी बारी थी प्रार्थना गाने की। बापूजी का मौन भंग होने के बाद बहुत अच्छा लगा।

दिनांक: 10.11.43, मंगलवार

आज मैं डॉक्टर साहब के साथ पढ़ने गया था। उन्होंने मुझे शरीर क्रिया विज्ञान पढ़ाना शुरू कर दिया है। उन्होंने मुझे विस्तार से नोट्स बनाने को कहा है। प्यारेलाल जी इससे बहुत खुश हैं और उन्होंने कहा कि मैं यहाँ रहते हुए नर्स बन सकता हूँ। उन्होंने मुझे समझाने की कोशिश की कि वे मुझे यहाँ रहते हुए मैट्रिक परीक्षा की तैयारी करवा देंगे और बाद में मैं डॉक्टर बनने का प्रशिक्षण ले सकता हूँ। आजकल मैं सुबह की नमाज़ के लिए उठता हूँ। आज एक घटना घटी। बापूजी ने अरंडी का तेल लिया। उन्होंने एक चम्मच भर अरंडी का तेल लिया। सुबह उन्हें दो-तीन बार शौच हुई। बापूजी नहाने गए, शरीर पोंछते समय उन्हें शौचालय जाने की ज़रूरत महसूस हुई। बापूजी ने सोचा कि वे शरीर सूखने तक इंतज़ार कर सकते हैं।

198 मूल अंग्रेजी शब्द।

फिर बापूजी को बहुत चक्कर आने लगे। सुशीलाबेन स्नानघर में थीं और उन्होंने नहाने के लिए अपने कपड़े उतार दिए थे। उन्होंने बापूजी को पकड़ लिया। उन्होंने उनसे पूछा कि क्या वह प्यारेलालजी और डॉक्टर को बुला लें। बापूजी मना करते रहे। उन्होंने एक हाथ से बापूजी को पकड़े रखा और दूसरे हाथ से अपने कपड़े पहने। उन्होंने भाई को बुलाया। वह दौड़कर अंदर गए और डॉक्टर को बुलाया। उन्हें एक शौचालय दिया गया। इसके बाद उन्हें स्नानघर में लाए गए गद्दे पर लिटाया गया। वे आधे घंटे तक स्नानघर में लेटे रहे और बाहर आने के बाद भी लेटे ही रहे। अगर सुशीलाबेन ध्यान न देतीं तो बापूजी ज़रूर गिर जाते। वे पूरे दिन लेटे रहे। उन्होंने खाखरा, दूध और सब्ज़ियाँ खाईं। आज हम पढ़ाई नहीं कर पाए। शाम को डॉक्टर शाह और डॉक्टर भंडारी मिलने आए। वे अरंडी के तेल की बोतल ले गए। डॉक्टर शाह ने कहा कि इसे फेंक देना चाहिए क्योंकि इसमें नेपाली तेल मिला हुआ है। 199 आमतौर पर बापूजी उतनी ही मात्रा में अरंडी का तेल लेते हैं और दो-तीन बार शौच करते हैं। लेकिन आज जो हुआ, वह पहले कभी नहीं हुआ। इसलिए सबने कहा कि अरंडी के तेल में कुछ गड़बड़ है। आज शाम हम ज्यादा देर तक खेल नहीं पाए। हमारा समय मेहमानों के साथ ही बीत गया। आज दोपहर बापूजी धूप वाली बरामदे में लेट

गए। हम भी वहीं सो गए। आज सब कुछ देर से हुआ। भगवान सबकी रक्षा करें। आज मुझे पूज्य फोइबा और विनोदबेन का पत्र मिला। विनोदबेन का पत्र बहुत देर से पहुँचा। आज सुशीलबेन की भाभी शकुंतला भाभी के बारे में भी खबर मिली कि उन्होंने एक बच्ची को जन्म दिया है। उनका ऑपरेशन करना पड़ा। उनकी हालत बहुत नाजुक है। सुशीलबेन बहुत चिंतित हैं। खबर पढ़ते ही उनका चेहरा पीला पड़ गया, जो स्वाभाविक है। एक तरफ बापूजी हैं तो दूसरी तरफ रिश्तेदार, समझ नहीं आ रहा कि क्या करें।

दिनांक: 11.11.43

मुझे सर्दी लग गई है। कल रात हल्का बुखार था। आज भी मैं अंग्रेजी नहीं पढ़ पाया। बापूजी की सेहत में सुधार है।

199 एक प्रकार की रेचक दवा।

मनु गांधी की डायरी 89

दिनांक: 12.11.43

सर्दी अभी भी बनी हुई है। मुझे तेज सिरदर्द भी था। आज शाम हमने महादेवभाई की समाधि पर ॐ बनाने के लिए इस्तेमाल किए गए शंख धोए। हमने फूलों से ॐ बनाया। लेकिन बापूजी ने कहा कि चलो शंखों से ॐ बनाते हैं, इसलिए हम सब मिलकर काम करने लगे। मैंने बापूजी से पूछा कि क्या मुझे उन्हें सहारा देना चाहिए, जिस पर बापूजी ने उत्तर दिया, 'मैं देखता हूँ कि मुझे महादेव से सहारा मिलता है, नहीं तो मेरे पास झुककर काम करने की शक्ति नहीं रहती।' हमने चलते-चलते ॐ बनाने में समय बिताया। उसके बाद हम प्रार्थना के समय तक चलते रहे। बापूजी ने आज पढ़ना छोड़ दिया।

दिनांक: 13.11.43

मुझे ज़ुकाम हो गया था। मुझे कुछ बूँदें डाली गईं। मेरे गले में अजीब सी सनसनी हो रही थी। मैंने उन्हें दोबारा डालने नहीं दिया। मैं जल्दी सो गया और बापूजी की मालिश नहीं की। मुझे हल्का बुखार भी था।

दिनांक: 14.11.43

आज मैंने लक्ष्मीकाकी और रामदस्काका को पत्र लिखे। सर्दी-जुकाम में कुछ सुधार हुआ है। बुखार नहीं था। सुशीलाबेन को बुखार है।

दिनांक: 15.11.43

मुझे जुकाम बिल्कुल नहीं है। आज दोपहर हमें खबर मिली कि सुशीलाबेन की भाभी शकुंतला भाभी का देहांत हो गया है। एक टेलीग्राम आया था। मुझे सुबह उठते ही पता चला। मैं बहुत दुखी हुई। हमारी दोस्ती सिर्फ एक मुलाकात पर आधारित थी और वो भी हम मुश्किल से तीन दिन ही मिले थे। माताजी की क्या हालत होगी? मैं उनके बारे में सोचती रही। सुशीलाबेन बहुत रो रही है। देखते हैं कि क्या उन्हें पैरोल पर रिहा किया जाएगा? अगर उन्हें रिहा कर दिया गया तो शायद कुछ सांत्वना मिल सकेगी। अखबार में खबर है कि श्री जय प्रकाश नारायण

200 जय प्रकाश नारायण (1902-1979), स्वतंत्रता सेनानी, समाजवादी, राजनीतिक नेता, ने आपातकाल के विरुद्ध 'संपूर्ण क्रांति' आंदोलन का नेतृत्व किया। 90 मनु गांधी की डायरी

उसे बर्फ के एक कोने में बिठा दिया गया है और उसे सोने से रोकने के लिए उसे बिना भुजाओं वाली कुर्सी पर बैठने के लिए मजबूर किया गया है, इतना ही नहीं उसे खाना भी नहीं दिया गया है। आज शाम सुशीलाबेन ने 'मंगल मंदिर' गाया। वह गा नहीं सकी, यहाँ तक कि मेरा गला भी भर आया। हमने बड़ी मुश्किल से पहला श्लोक गाया। आज बा को पूज्यभाई का पत्र मिला। शकुंतला भाभी के निधन से माहौल गमगीन हो गया है। मैंने सुशीलाबेन के बालों में तेल लगाया। उसने अपना सिर मेरी गोद में रखा और रोने लगी।

दिनांक: 16.11.43 201

Bapuji has asked me to write Gitaji. 202

दिनांक: 27.11.43

मैं नौ दिन बाद यह डायरी लिख रही हूँ। इन नौ दिनों की कुछ बातें मैं इसी में लिखूँगी। आज का मन, यानी इन दिनों का मन, कुछ ठीक है। हमें बीते कल को भूल जाना चाहिए, है ना? कल जो हुआ था, उसे भूल जाना चाहिए। मार्गोपदेशिका के कुछ अंश मुझे नहीं पता थे। मैंने उन्हें पढ़ा था, फिर भी मुझे नहीं पता था। मुझे रूपा के बारे में भी नहीं पता था। मुझे लगा कि बापूजी को यह पसंद नहीं आया। मेरा दिन खराब हो गया। मुझे क्यों नहीं पता था? इसके अलावा, मेरी दाहिनी आँख बहुत फड़क रही थी। मुझे चिंता हो रही थी कि कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं है। पिछले कई दिनों से कोई पत्र नहीं आया है। कहते हैं कि दाहिनी आँख का फड़कना शुभ संकेत नहीं होता। हालाँकि मैं इस पर विश्वास नहीं करती, फिर भी मन में कुछ बेचैनी थी। इन दिनों मुझे कब्ज भी बहुत है और इससे भी बेचैनी होती है। इन सभी कारणों से मैं रो पड़ी। मैं बापूजी के साथ सैर पर नहीं गई और मार्गोपदेशिका का अध्ययन किया। बापूजी ने मुझसे पूछा, 'तुम इतनी उदास क्यों हो?' बा ने कुछ नहीं कहा है। आजकल बा की तबीयत ठीक नहीं है और कुछ न कुछ गड़बड़ हो

ही जाती है। लेकिन मैं काफी

201 17.11.43 से 26.11.43 तक कोई डायरी प्रविष्टियाँ नहीं।

202 डायरी संख्या 11ए, 11बी और 11सी में गीता का उनका प्रतिलेखन शामिल है।

मुझे इसकी आदत हो गई थी। बापूजी ने मुझसे कहा, 'तुम्हें उदास नहीं होना चाहिए। हमेशा हँसी-खेल होनी चाहिए। कभी न कभी ऐसी बातें हो ही जाती हैं। लेकिन, ऐसी बातें भी मुझे पसंद नहीं आतीं। तुम्हें हँसने-खेलने की क्षमता बनाए रखनी चाहिए।' इसके बावजूद मुझे अच्छा नहीं लगा। मैं थोड़ी देर सोई, बिस्तर पर मच्छरदानी लगाई, बा की मालिश की और जल्दी सो गई। यह सब कल हुआ। इस बीच मीराबेन को बुखार आ गया। उस शाम उसे एनिमा दिया गया। मैंने एक दोपहर उसके साथ बिताई। आज उसकी दाहिनी आँख का फड़कना बंद हो गया है।

आज सुबह 11 बजे मुझे पूज्यभाई का टेलीग्राम मिला कि आनंदलाल बापूजी का देहांत हो गया है। यानी उनका देहांत कल हुआ। मुझे इससे बहुत दुख हुआ। आज दोपहर मुझे एक पल भी नींद नहीं आई। मैं विजयबेन के बारे में सोचती रही। उस बेचारी बच्ची को पिता का सहारा मिला था। मुझे मानो वह मेरी आँखों के सामने दिख रहे थे। बापूजी ने कहा था कि उनका देहांत होना सौभाग्य की बात है। यह सच है कि वे बहुत पीड़ा में थे। अब वे चले गए। और उनकी देखभाल करने वाला कौन था? उनके बेटे और बेटी सेवा करते-करते थक गए होंगे। क्योंकि एक स्वस्थ व्यक्ति की देखभाल करना भी थका देने वाला होता है, तो बीमार व्यक्ति की देखभाल करना कितना मुश्किल होगा? पोरबंदर की स्थिति भी पीड़ादायक है। रिश्तेदार कैसे? इतने सारे हैं, पर नाम के ही रिश्तेदार हैं। अच्छा है कि हम उनसे दूर हैं। मुझे यह भी लगा कि क्या बापूजी के रिश्तेदार भी ऐसे हो सकते हैं? लेकिन जब उनका अपना बेटा ही इस हालत में है, तो रिश्तेदारों के बारे में क्या कहा जा सकता है? क्या कोई रिश्तेदार बापूजी की परवाह करता है? ये और ऐसे ही कई बेकार के विचार मेरे मन में घूम रहे थे। मैं 1:30 बजे उठा। बा की तबीयत ठीक नहीं है। अस्थमा के कारण उन्हें सांस लेने में तकलीफ हो रही है। बा और बापूजी ने विजयबेन को पत्र लिखा। मैं शाम की सैर के लिए बाहर नहीं जा सका। मैं बा के साथ था। मेरे फल आज शाम को आ गए। काजू से भरा एक डिब्बा आया है। बादाम, अखरोट, काले अंगूर, सूखे अंजीर और अन्य चीजें कराची से लाई गई हैं। बापूजी ने सरकार को पत्र लिखा था, जिसका जवाब मिला है जिसमें कहा गया है कि कार्य समिति 204 के सदस्य 203 ने अगस्त के प्रस्ताव को वापस नहीं लिया है।

मूल पाठ में 203 अंग्रेजी शब्द हैं।

मूल पाठ में 204 अंग्रेजी शब्द हैं।

उन्हें परामर्श के लिए मिलने की अनुमति नहीं दी जा सकती। 205 बापूजी ने सुशीलाबेन के टेलीग्राम के दस दिन विलंब से प्राप्त होने के बारे में भी एक पत्र लिखा था। 206 उस पर भी खेद व्यक्त किया गया है और आश्वासन दिया गया है कि ऐसी घटना दोबारा नहीं होगी। डॉ. गिल्डर को अपनी बेटी से मिलने की अनुमति के लिए एक पत्र भेजा गया था। 207 यह अनुरोध दिल्ली स्थित गृह विभाग को भेजा गया है। ये सभी इस बीच की अवधि के नोट्स हैं। मैं दैनिक नोट्स के नियम का पालन करने का प्रयास करूंगा।

दिनांक: 28.11.43 रविवार

भंडारी आज यह खबर लेकर आए कि डॉक्टर साहब की मुलाकात कल तय है। डॉक्टर साहब बहुत खुश हैं। बा की सेहत आज ठीक नहीं है। मैंने उनके लिए काकीबा और निमुकाकी को पत्र लिखे। मैंने विजयबेन, राधाबेन और मां-बापूजी को शोक संदेश लिखे।

दिनांक: 29.11.43 सोमवार

आज डॉक्टर साहब की मुलाकात का दिन था। वे सुबह जल्दी तैयार हो गए। उन्हें मोटर 208 में आईजी भंडारी के कार्यालय ले जाया गया।

205 एमकेजी ने 26 अक्टूबर 1943 को गृह विभाग के अतिरिक्त सचिव को पत्र लिखकर कहा कि उनके पास 8 अगस्त 1942 के कांग्रेस प्रस्ताव को बदलने का अधिकार नहीं है, जिसे केवल उसकी कार्यकारी समिति ही बदल सकती है। उन्होंने कांग्रेस कार्यकारी समिति के साथ बैठक और स्थिति पर चर्चा करने का प्रस्ताव भी रखा (देखें, सीडब्लूएमजी, खंड 77, पृष्ठ 202-4)। सरकार ने 18 नवंबर को अपने उत्तर में कहा कि '…चूंकि 8 अगस्त 1942 के कांग्रेस प्रस्ताव के प्रति आपके दृष्टिकोण में कोई परिवर्तन नहीं आया है, और सरकार को ऐसा कोई संकेत नहीं मिला है कि कार्यकारी समिति के किसी भी सदस्य के विचार आपके विचारों से भिन्न हैं, इसलिए आपके बीच बैठक का कोई लाभ नहीं होगा।' गांधीजी का सरकार के साथ पत्राचार, 1942-4।

206 देखें, सीडब्ल्यूएमजी, खंड 77, पृ. 205–6.

मूल पाठ में 207 अंग्रेजी शब्द हैं।

मूल पाठ में 208 अंग्रेजी शब्द हैं।

मैं दोपहर 12:30 बजे गई और मीटिंग के बाद शाम 4 बजे लौटी। मैंने बापूजी के साथ गीताजी का अध्ययन किया। बा की तबीयत बिगड़ गई है। वह स्नानघर में एनीमा लेती हैं, जिसके बाद वह

बाथटब में बैठती हैं। उन्हें बेचैनी रहती है, इसलिए आजकल मैं उन्हें नहलाती हूँ। मैं उनके कपड़े भी धोती हूँ। आज मैंने उन्हें काफी देर से धोया। मैं देर से सोई और उठी, इसलिए ज्यादा पढ़ाई नहीं कर पाई।

दिनांक: 30.11.43

आज बा की तबीयत और बिगड़ गई। उनका अस्थमा गंभीर हो गया है। उन्हें रात को नींद नहीं आती। कर्नल शाह रात में आए थे। ऑक्सीजन 212 मंगवाई गई है। जरूरत कभी भी पड़ सकती है, इसलिए इसे रखा गया है। मैं रात 11:30 बजे बा के पास से उठकर सोने चला गया।

दिनांक: 31.11.43 मंगलवार 213

आज बापू ने सरकार को पत्र लिखकर कहा कि या तो सुशीलाबेन को पैरोल पर रिहा किया जाए या बच्ची को यहाँ लाने की अनुमति दी जाए। 214 आज भी बा की सेहत बहुत कमजोर है; वह न तो बैठ सकती हैं और न ही खड़ी हो सकती हैं।

दिनांक: 1.12.43 बुधवार

बा की सेहत में कोई बदलाव नहीं आया है। शाम को उन्हें थोड़ा बेहतर महसूस हुआ। हम पाठक के तीसरे भाग तक पहुँच चुके हैं, आशा है कि मेरी अंग्रेज़ी में और सुधार होगा। हमने सामान्य से थोड़ा पहले बैडमिंटन खेलने का फैसला किया है। बापूजी कहते हैं कि सर्दियों में हमें खूब बैडमिंटन खेलना चाहिए।

मूल पाठ में 209 अंग्रेजी शब्द हैं।

मूल पाठ में 210 अंग्रेजी शब्द हैं।

मूल पाठ में 211 अंग्रेजी शब्द हैं।

212 मूल में अंग्रेजी शब्द।

213 आज बुधवार होना चाहिए। साथ ही, नवंबर में 31 दिन नहीं होते।

214 ये पत्र दिनांक 1.12.43 को अंकित हैं। सी.डब्ल्यू.एम.जी., खंड 77, पृष्ठ 208। यह प्रविष्टि संभवतः 1.12.43 की है।

भाई की तरफ से काफी समय से कोई चिट्ठी नहीं आई है। मैं चिंतित हूँ। युक्तिबेन ने भी चिट्ठी नहीं लिखी है।

दिनांक: 2.12.43

आज भी बा का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। आज सुबह मैं बैडमिंटन खेलने नहीं गया। मैं बा के साथ था। कई दिनों बाद शाम की सैर पर गया। कुछ चक्कर लगाकर वापस आ गया। उनका दिन अच्छा बीता। डॉक्टर साहब ने बा से मिलने के लिए लोगों से मिलने की अनुमति मांगी है ताकि उनकी मानसिक बेचैनी कम हो सके। 215 अगर मिलने की अनुमति मिल जाए, तो रामदस्काका और अन्य लोग भी आ सकेंगे, जिससे उन्हें बेहतर महसूस होगा।

दिनांक: 2.12.43, गुरुवार 216

आज मैंने शामलदासकाका और कनुभाई को पत्र लिखे। बा को ऑक्सीजन गैस देनी पड़ी। 217 शाम को उनकी हालत थोड़ी बेहतर हुई। लेकिन सुबह उन्हें सिरदर्द था, सांस लेने में तकलीफ हो रही थी। मैं रात करीब 11 बजे तक बा के साथ रही, उसके बाद सो गई। रात में फिर उठी।

दिनांक: 3.12.43 शुक्रवार

पिछले दो-तीन दिनों से मैं भाई के पत्र का इंतज़ार कर रही थी, लेकिन किसी का कोई पत्र नहीं आया। पूरा दिन पत्रों के इंतज़ार में ही बीत गया। दिन में बा की तबीयत थोड़ी बेहतर थी। उन्हें नहलाना बंद कर दिया गया है, आजकल हम उन्हें स्पंज से नहलाते हैं। आज रात 2:30 बजे उनकी तबीयत अचानक बिगड़ गई। उन्हें दिल का दौरा पड़ा। उन्हें तेज़ सिरदर्द हो रहा था। मैं जाग गई। मैं उनके पास गई। मैंने उनका सिर अपनी गोद में रखा और दबाया। उन्हें नींद नहीं आ रही थी। उन्हें सांस लेने में तकलीफ हो रही थी, खांसी और सीने में दर्द था। मैं उनके साथ बैठी रही।

215 यहाँ से आगे तीन लाइनें काट दी गई हैं।

216 2.12.43 के लिए दो प्रविष्टियाँ हैं।

217 मूल अंग्रेजी शब्द।

218 मूल अंग्रेजी शब्द।

सुबह 6 बजे तक। मैं सुबह 6 से 8 बजे तक सोई। दोपहर में खूब सोई, फिर भी आज थकान

महसूस हो रही थी। सर्दी-जुकाम और बुखार जैसे लक्षण थे। मैंने कुनैन ली और गर्म पानी पिया, जिसके बाद मुझे आराम मिला। मैं खेलने भी गई और अच्छा लगा। कटेली साहब आए और उन सभी रिश्तेदारों के नाम नोट किए जिन्हें बा से मिलने के लिए रात में बुलाया जा सकता था। सूची काफी लंबी थी। बा दिन भर कमजोर महसूस कर रही थीं।

दिनांक: 4.12.43

भंडारी आज यह खबर लेकर आए कि रामदास गांधी को एक टेलीग्राम भेजा गया है। तभी नागपुर से रामदासकाका का फोन आया कि निमुकाकी को दर्शन के लिए भेजा गया है। अगर वह आज पहुंच जातीं, तो दर्शन आज ही हो जाते। दर्शन के दौरान बा और बापूजी को ही उपस्थित रहने की अनुमति होगी, किसी और को नहीं। बा की हालत आज कुछ बेहतर है। निमुकाकी दर्शन के लिए आई थीं। मैंने उनके पैर छुए, लेकिन उनसे कुछ नहीं बोला। ऐसा लगता है कि इससे बा को बहुत आराम मिला। वह लगातार मुस्कुराती रहीं। देवदासकाका कल आएंगे।

दिनांक: 5.12.43 सोमवार

आज बापूजी का मौन दिवस है। मैंने उनके साथ गीताजी का अध्ययन किया। मैंने 220 पुस्तकों की सूची बनाई। शाम को देवदासक आए। उन्होंने शकुंतला भाभी और दिल्ली की अन्य घटनाओं के बारे में बताया। पहले तो बापूजी ने कहा कि उन्हें कल आना चाहिए। बापूजी ने एक नोट में लिखा कि कौन जाने रात में क्या हो जाएगा। देवदास को द्वार से वापस लौटना पड़ेगा, जो ठीक नहीं है। इसलिए उन्हें अंदर आने दिया गया।

दिनांक: 6.12.43, मंगलवार

मैंने डाक का इंतजार किया, जो नहीं आई। मुझे भाई की चिंता है। आज निमुकाकी और देवदासका दोनों मिलने आए थे। वे

219 मूल अंग्रेजी शब्द।

220 मूल अंग्रेजी शब्द।

एक-एक करके अंदर आने की अनुमति दी गई। अगर दोनों एक साथ आ जाते तो कटेली साहब को इसका पता चल जाता, इसलिए यह व्यवस्था की गई थी। मैंने अपनी घड़ी देवदासका को दे दी। बा का स्वास्थ्य दिन भर ठीक रहा, लेकिन रात में काफी बिगड़ गया। मैं रात 11 बजे सो गया, लेकिन बीच-बीच में उठता रहा। आजकल मैं घर के अंदर ही सोता हूँ।

दिनांक: 7.12.43, बुधवार

आज भी निमुकाकी और देवदशक तीन बजे मिलने आए। बापूजी ने आज सुबह मुझे पढ़ाया, बाकी सारी पढ़ाई अभी बंद है। बा की सेहत दिन भर ठीक रही। हालांकि, वो बहुत कमजोर हैं। निमुकाकी के आने का आज आखिरी दिन है, लेकिन देवदशक को दो दिन और आने की इजाजत है। पिछले तीन दिनों से उनके आने की वजह से शाम के खेल बंद हैं। हम टहलने निकले थे, लेकिन बा को अचानक बेचैनी होने लगी और हमें अंदर बुलाया गया। प्रार्थना बाहर हुई। कड़ाके की ठंड थी, इसलिए बा को अंदर जाने के लिए कहा गया। उनमें चलने की ताकत नहीं थी, इसलिए प्यारेलालजी उन्हें उठाकर अंदर ले गए। मैं रात करीब दस बजे तक उनके साथ था, उसके बाद बापूजी ने मुझे आराम करने के लिए कहा क्योंकि प्यारेलालजी उनके साथ थे। बापूजी ने मुझसे कहा, 'अगर तुम अपनी सेहत ठीक रखना चाहते हो, तो मेरी बात मानो, इससे तुम ठीक हो जाओगे।' मैं रात साढ़े दस बजे सो गया और भाई उनके पास बैठे रहे। बा ने ज़िद की कि उन्हें भी सोना चाहिए, इसलिए वे सोने चले गए। वह लगभग 11:30 बजे तक सोई नहीं थीं, इसलिए मैं उनके पास जाकर लगभग 3:30 बजे तक बैठी रही। उन्हें तेज़ खांसी, सांस लेने में तकलीफ और दर्द था। मैंने उन्हें गर्म पानी की बोतल दी और उनके शरीर की सिकाई की। बड़ी मुश्किल से उन्हें नींद आई। मैं भी उनके पास सोना चाहती थी। ज़ुकाम बहुत ज़्यादा था। उन्होंने कंबल ओढ़ रखा था। मैंने उनके पास लेटने की कोशिश की, लेकिन ठंड से कांपते हुए मैं अपने बिस्तर पर चली गई। वह सुबह तक चैन से सोईं। मैं सुबह 8 बजे उठी। सुशीलाबेन ने जूस निकाला और दूसरे काम किए। मैंने दूध पिया और टहलने चली गई।

दिनांक: 8.12.43, गुरुवार

आज मनुबेन, रामिबेन, उर्मिबेन और रामिबेन की बेटी को बापूजी के दर्शन के लिए एक साथ जाने की अनुमति दी गई। मामा (बापूजी के भाई) को उनके साथ आने की अनुमति नहीं थी। मनुबेन और बच्चे

घर में खुशी की लहर दौड़ गई। उर्मी नाची, वो बहुत अच्छा नाचती है। मनुबेन ने ‘कहां के पथिक’ गाया। उन्होंने दो और गाने गाए जिन पर बच्चा नाचा। उनके जाने के बाद मामा आए, हमने उन्हें चाय और दूसरी चीजें दीं। निमुकाकी मेथी का पाक लाई थी, जो हमने उन्हें दिया और बादाम व काजू भी खिलाए। वो बहुत खुश थे। देवदासका तीन बजे आए और दो घंटे हमारे साथ रहे। शाम के खेल के लिए थोड़ा समय मिला, जो हमने खेले। मैं बापूजी के साथ पढ़ाई नहीं कर पाई। हमने सुना है कि नागपुर जेल में बंद किशोरलालभाई की तबीयत बहुत खराब है। उनका वजन सिर्फ 75 पाउंड है। उन्हें तेज अस्थमा और बुखार है। देवदासका ने उनकी रिहाई या पैरोल दिलाने की बात रखी। बापूजी ने मना कर दिया। उन्होंने कहा, ‘मैंने मान लिया है कि मैंने किशोरलाल को खो दिया है। अगर वो महादेव की तरह नागपुर जेल में ही शाश्वत नींद सो जाएं तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा।’ कौन जाने, शायद स्वराज की कुंजी ऐसे व्यक्तियों के कारावास के दौरान किए गए

बलिदान में ही छिपी हो।' देवदासका ने प्रभुदासभाई की बीमारी के बारे में भी बताया। उन्हें, काशीकाकिबा और छगनलाल बापूजी के साथ, बापूजी से मिलने की एक बार की अनुमति मिली है।

दिनांक: 9.12.43 शनिवार 221

मनुबेन को बड़ी मुश्किल से अंदर आने दिया गया। वह और रामिबेन आईं और सवा घंटे तक रुकीं। आज देवदासक के आगमन का आखिरी दिन था, इसलिए वह थोड़ी देर और रुके। रात में मेरी तबीयत भी बिगड़ गई। पेट में तेज दर्द हो रहा था और मुझे चिंता हो रही थी कि क्या मैं सुबह उठ पाऊँगी। किसी तरह मैंने रात के काम पूरे किए। लेकिन भगवान की कृपा से मैं दृढ़ निश्चय के साथ उठी।

दिनांक: 10.12.43 शनिवार

आज मैंने भाई और बहन के पत्रों का इंतज़ार किया, ठीक वैसे ही जैसे नागपुर जेल में शुरुआती दिनों में किया करता था। मुझे चिंता हो रही थी कि कोई पत्र क्यों नहीं आ रहे हैं। क्या कोई बीमार है? पूरा सप्ताह इंतज़ार में ही बीत गया। आज

221 वें दो दिन 9 और 10 को शनिवार के रूप में उल्लेख किया गया है, वास्तव में 11 दिसंबर 1943 में एक शनिवार था।

मैंने मार्गोपदेशिका का पहला भाग पूरा कर लिया है। इन दिनों बापूजी बहुत चिंतित हैं। उन्हें बा की चिंता सता रही है। कल रात उन्हें ठीक से नींद नहीं आई। मेरी भी तबीयत ठीक नहीं है। मैं मानसिक रूप से थकी हुई हूँ और शारीरिक रूप से भी। हम सब धूप में बरामदे में बैठ गए। बापूजी और हम सब शाम तक वहीं बैठे रहे। बा के लिए एक पलंग भेजा गया है जिसकी ऊँचाई कम-ज़्यादा की जा सकती है। हम उन्हें उसी पलंग पर लिटाकर बाहर ले जाते हैं।

दिनांक: 12.12.43 रविवार 222

आज रविवार था, इसलिए डाक का इंतज़ार करने का कोई मतलब नहीं था। मेरी सेहत बेहतर है। बा को भी बेहतर लग रहा था, हालाँकि दोपहर में उन्हें थोड़ी कमज़ोरी महसूस हुई। मैंने आज खेला। भाई को बुखार था, इसलिए वो खेलने नहीं आ सके। आज भंडारी की जगह आडवाणी आए थे। वे महादेवभाई के निधन के समय आए थे। भंडारी छुट्टी पर चले गए हैं, इसलिए आडवाणी उनकी जगह आए हैं।

दिनांक: 13.12.43

डाक आने के इंतज़ार में मुझे नींद नहीं आ रही थी। कटेली साहब डाक लेकर कब आएंगे? आखिरकार मुझे निराशा हुई। हालांकि, इसे निराशा कहना सही नहीं होगा क्योंकि सरकार की तरफ से एक पत्र आया था और सुशीलाबेन के घर से भी एक पत्र आया था। सुशीलाबेन चिंतित थीं और इस पत्र से उन्हें अच्छी खबर मिली, जिससे मुझे भी अच्छा लगा। बापूजी ने सरकार को पत्र लिखकर सुशीलाबेन को पैरोल पर रिहा करने या नवजात शिशु को सौंपने की मांग की थी।

उन्हें उनकी देखरेख में यहाँ भेजा गया था। सरकार ने जवाब दिया कि दोनों ही संभव नहीं थे। सुशीलाबेन के भाई ने लिखा कि जब उनकी भाभी गंभीर रूप से बीमार थीं, तब उन्होंने मैक्सवेल 225 से मुलाकात की और उनकी रिहाई सुनिश्चित करने के लिए बहुत प्रयास किए। उस समय मैक्सवेल ने उनसे कहा कि गांधीजी का...

222 11.12.43 के लिए कोई प्रविष्टि नहीं।

मूल पाठ में 223 अंग्रेजी शब्द हैं।

मूल पाठ में 224 अंग्रेजी शब्द हैं।

225 सर रेजिनाल्ड मैक्सवेल, गृह सदस्य, भारत सरकार।

मनु गांधी की डायरी 99

सहयोगियों को तीन महीने तक अंधेरी कोठरी में रखने के बाद ही रिहा किया जा सकता है। बापूजी को बुरा लगा और उन्होंने कहा, 'मुझे उम्मीद थी कि वे मेरी कोई एक विनती मान लेंगे, लेकिन उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया। क्योंकि वे नहीं चाहते कि बाहरी दुनिया को पता चले कि यहाँ क्या चल रहा है। इसलिए, वे मेरे अलावा किसी को भी रिहा करने को तैयार नहीं हैं। अब तो वे मुझे भी रिहा करने को तैयार नहीं हैं।' हमें कुछ नई खबरें मिलीं और दिन ठीक-ठाक बीत गया। रात को ये सारे विचार मेरे मन में आए। एक तरफ तो मुझे गुस्सा आया कि वे पत्र क्यों नहीं लिखते। दूसरी तरफ मुझे लगा कि वे क्या कर सकते हैं? बाहर वालों को कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है? बा की सेहत स्थिर रही। उन्हें रात को अच्छी नींद आई। आज मैंने गीताजी का अठारहवाँ प्रवचन दिया। बापूजी ने सुशीलाबेन को पैरोल पर रिहा न करने के सरकार के फैसले का कारण जानने के लिए सरकार को पत्र लिखने का फैसला किया है। 226 बापूजी ने कहा कि अगर उन्होंने उसके लिए पैरोल हासिल करने का फैसला किया, तो वे इसे हासिल करने तक लड़ेंगे। सुशीलाबेन ने उन्हें ऐसा कुछ भी न करने के लिए कहा। 'कोई नहीं कह सकता कि आप क्या कदम उठाएंगे। इसलिए, मैं नहीं चाहती कि आप लड़ाई करें।' बापूजी ने कहा कि वे ऐसा नहीं करेंगे, बल्कि सरकार को लिखेंगे कि उन्होंने इनकार का कोई कारण नहीं बताया है।

दिनांक: 14.12.43

बा को रात को नींद नहीं आई। मैं सुबह 2 से 5 बजे तक उनके साथ जागती रही। मैं नमाज़ पढ़ने ही वाली थी कि सुशीलाबेन ने मुझे रोक दिया। 2 से 5 बजे के बीच मैं कुछ पल के लिए सोई, लेकिन बा के बगल में ही सोई। मैं सुबह 8:30 बजे उठी, दूध पिया और बैडमिंटन खेलने चली गई। दोपहर में मुझे अच्छी नींद आई।

दिनांक: 15.12.43

आज मैंने डाक का इंतजार किया, लेकिन कुछ नहीं आया। बा की सेहत ठीक नहीं थी। आज शाम उन्हें दिल की धड़कन तेज हो गई। हम चौंक गए, लेकिन...

226 यह पत्र 14 दिसंबर, 1943 को लिखा गया था। सी.डब्ल्यू.एम.जी., खंड 77, पृष्ठ 212 देखें।

कुछ देर बाद दिल की धड़कनें नियंत्रण में आ गईं। वह बहुत थकी हुई थी और रात को सो नहीं पाई।

दिनांक: 16.12.43

आज मुझे भाई का पत्र मिला। मुझे बहुत अच्छा लगा। उन्होंने बहुत दिनों बाद पत्र लिखा। उषा और अनुपमा ने भी पत्र लिखा है। बा की तबीयत ठीक नहीं थी। उन्हें रात को नींद नहीं आई। हम बारी-बारी से जागते रहे। मेरी भी तबीयत ठीक नहीं थी। मुझे कुनैन लेनी पड़ी।

दिनांक: 17.12.43 रविवार

हमें खबर मिली कि देवदशक मंगलवार को आएंगे, उसके कुछ ही समय बाद हमें बताया गया कि वे आज ही आएंगे। लक्ष्मीकाकी और बच्चे भी आए। वे तीन बजे आए। हमने बच्चों के लिए आइसक्रीम बनाई। रामू और मोहन को यह बहुत पसंद आई। बापूजी ने उनके शरीर पर टिप्पणी की। वे बहुत पतले हैं। बापूजी ने कहा कि डॉक्टर दिनशॉ मेहता से सलाह लेनी चाहिए और उन्हें व्यायाम करना चाहिए। बा ने तारा को एक साड़ी दी। वे कल फिर आएंगे। बा की तबीयत ठीक नहीं थी।

दिनांक: 18.12.43 सोमवार

बा की सेहत ठीक थी। देवदासका, लक्ष्मीकाकी और बच्चे आए। घर में बहुत अच्छा माहौल हो गया। बच्चों ने मुझसे दोस्ती कर ली। मैंने उन्हें कई कहानियां सुनाईं। उसके बाद तारा, मोहन और रामू ने एक-एक कहानी सुनाई। मैंने सारा समय बच्चों के साथ बिताया। रात में बा की तबीयत बिगड़ गई। हम सब बारी-बारी से जागते रहे।

दिनांक: 19.12.43, मंगलवार

वे आज भी आए थे। आज उनकी यात्रा का आखिरी दिन था। वे बॉम्बे वापस चले गए हैं और आगे की यात्राओं के लिए अनुमति लेने की कोशिश करेंगे। देवदासका अन्य लोगों के लिए भी अनुमति लेने की कोशिश करेंगे; उन्होंने सभी रिश्तेदारों के नाम लिख लिए हैं। हमें आज इसकी सूचना मिली।

मनु गांधी की डायरी 101

बा के लिए एक नर्स का इंतजाम किया जाएगा। बा ने प्रभावती (जयप्रकाश की पत्नी) और कनुभाई के नाम दिए हैं। हमें देखना होगा कि उन्हें अनुमति मिलेगी या नहीं।

दिनांक: 20.12.43

दिन तो ठीक-ठाक बीत गया, पर रात अच्छी नहीं गुज़री। आजकल बापूजी का ब्लड प्रेशर 227 रहता है, इसलिए उनका पलंग मीराबेन के कमरे के सामने लगाया गया था। भाई भी उनके साथ थे। मुझे भी वहीं सोने के लिए भेजा जा रहा था। पर बा ने कहा कि मुझे उनके साथ सोना चाहिए, इसलिए मैं उनके कमरे में सो गई। उन्हें रात 1 बजे तक नींद नहीं आई। सुशीलाबेन ने भी ग्रामोफोन बजाया ताकि बा सो जाएं, लेकिन उन्हें नींद नहीं आई। आखिर में उन्हें नींद की गोली दी गई, जिसके बाद उन्हें नींद आ गई। दिन भर भी उन्हें नींद आती रही।

दिनांक: 21.12.43

आज दिन और रात दोनों अच्छे से बीते। कोई बड़ी परेशानी नहीं हुई। वह कैरम का खेल देखने के लिए बाहर आई थी, इसलिए वह रात दस बजे सो गई। रात भर उसे अच्छी नींद आई।

दिनांक: 22.12.43

आज दिन-रात दोनों ही ठीक-ठाक गुज़रे। मुझे बुखार था। खेल के दौरान एक छोटी सी बात पर मुझे गुस्सा आ गया। मुझे बुखार था और बाकी सब लोग इसी मामूली बात पर चर्चा कर रहे थे, इसलिए मुझे गुस्सा आ गया। इसके अलावा, कुछ पुरानी बातें जो मैंने अपने दिमाग में दबा रखी

थीं, फिर से ताज़ा हो गईं। विनोदबेन के पत्र से खबर मिली कि फुलकोरकाकी के पुत्र देवदासका का देहांत हो गया है। कितने लोग नौ पिनों की तरह मर जाते हैं? हम सबको यही रास्ता अपनाना पड़ता है। मैंने महादेवभाई के बारे में सोचा। मेरी अंग्रेज़ी की पढ़ाई पूरी तरह से रुक गई, जिससे मुझे और भी बुरा लगा। इन सब बातों ने मेरी रात खराब कर दी। मैं बहुत कम सोया। मुझे 2:30 बजे के बाद नींद आई।

227 मूल अंग्रेजी शब्द।

दिनांक: 23.12.43

आज विनोदबेन के पत्र से एक और मृत्यु की खबर मिली! फुलकोरकाकी के पुत्र देवदासकाका का निधन हो गया है। यह सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ। पिछले तीन महीनों में इतने सारे लोग गुजर गए: प्रभुदासभाई, आनंदलाल बापूजी, मोतीलाल बापूजी और देवदासकाका। आज शाम मुझे हल्का बुखार था।

दिनांक: 24.12.43

सुशीलाबेन और मैं बारी-बारी से बैडमिंटन खेलते हैं, एक दिन वो खेलती है और अगले दिन मैं। आज मेरी बारी थी, मैं खेलने गई। बहुत दिनों बाद मैं महादेवभाई की समाधि पर गई। मेरी विशेष इच्छा थी। शाम को भी हम सबने बैडमिंटन खेला। देर शाम हमें खबर मिली कि जमनादस्काका, शामलदस्काका, उनका परिवार और देवदस्काका और उनका परिवार कल मिलने आएंगे। सभी रिश्तेदारों को आने की अनुमति मिल गई है। आज रात मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं थी। मैं 9 बजे जल्दी सो गई और 11 बजे जाकर अपने बिस्तर पर सो गई। सुशीलाबेन ने बा की मालिश की।

दिनांक: 25.12.43

क्रिसमस के दिन शुरू हो गए हैं। यहाँ सभी दिन एक समान हैं। मीराबेन रात में आई और उसने दो भजन गाए। बा का दिन अच्छा बीता; लेकिन उसे रात में चार-पाँच बार उठना पड़ा।

दिनांक: 26.12.43

आज सबसे पहले देवदासक और उनका परिवार आया। मुलाकातें दोपहर 3 बजे से शुरू हुईं। देवदासक ने सभी रिश्तेदारों के आने का इंतजाम किया था। क्या पता भाई भी आ जाएं! उनके बाद जमनादासक आए, फिर शामलदासक और उनका परिवार। उनके बाद रामदासक और कान्हो

आए। आज दिन भर भाई को कोई शिकायत नहीं थी। दिन अच्छा रहा।

दिनांक: 27.12.43 सोमवार

आज भी जमनादस्काका, देवदस्काका और उनका परिवार मिलने आया था। मैं पूरी यात्रा के दौरान बच्चों के साथ था।

दिनांक: 28.12.43, मंगलवार

आज देवदासक के आगमन का आखिरी दिन था। कल कानू आने वाला है। देवदासक ने मुझे बताया कि उसने भाई को आगमन की अनुमति के बारे में सूचित कर दिया है। अब देखते हैं वह कब आता है।

दिनांक: 29.12.43, बुधवार

आज कटेली साहब यह सूचना लेकर आए कि मेरा परिवार आने वाला है। भाई, कनुभाई, युक्तिबेन, अरुणा, छोटी बच्ची, हंसा फैबा, विजयबेन, धीरूभाई, कनुभाई। ये सभी दोपहर में आए। युक्तिबेन से मिलकर मुझे अच्छा लगा। वह बहुत कमजोर हो गई हैं। दोनों बच्चे ठीक हैं। युक्तिबेन को फुफ्फुसशोथ (प्लूरिसी) था और वह बहुत बीमार थीं, पिछले आठ दिनों से ही उनकी तबीयत ठीक हुई है। शायद वह मुझसे मिलने के लिए ही ठीक हुई हैं। उन्होंने मुझे गंगाकाकी के निधन की खबर दी। हाल ही में हमारे परिवार के कई लोग गुजर गए! बापूजी ने कहा कि अगर युक्ति यहीं रहेंगी तो उनकी सेहत जल्दी सुधर जाएगी। लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? विनोदबेन की हालत वैसी ही है; युक्तिबेन ने मुझे बताया। मैं अपने बचपन के अमरली और पोरबंदर को याद करते हुए रात 12 बजे सो गई।

दिनांक: 8.1.44 230

मैं यह डायरी इस सप्ताह के दौरान शामलदस्काका, उनके परिवार, संतोक्काकिबा, केशुभाई, राधाबहन, कुवरजीभाई, उनके बाद लिख रहा हूं।

228 अंग्रेज़ी शब्द ‘बेबी’, मूल रूप में।

229 अंग्रेज़ी शब्द ‘बेबी’, मूल रूप में।

230 30.12.43 से 7.1.44 तक कोई डायरी प्रविष्टियाँ नहीं।

पुत्री आदि मिलने आए थे। देवदासका कल और परसों भी आए थे। कांतिभाई भी आए थे। काशीकाकिबा, अंबाभाभी और उनकी पुत्रियाँ कल आई थीं। यह तय किया गया है कि कानूभाई एक दिन छोड़कर आएंगे। सरकार ने बड़ी मुश्किल से इस शर्त पर सहमति जताई कि देवदासका की उपस्थिति में कानूभाई को एक दिन छोड़कर आने की अनुमति दी जाएगी; उनकी अनुपस्थिति में कानूभाई को एक दिन छोड़कर आने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

मैंने बापूजी से बकरी का दूध पीने का कारण पूछा, क्योंकि उनका कहना है कि गाय की रक्षा के लिए गाय का दूध न पीने का व्रत लेना चाहिए। बापूजी ने कहा कि यह बात सही है, लेकिन, 'मैं बंगाल गया था, जहाँ मैंने देखा कि वे गाय की योनि में नली डालकर उसके थनों में दूध भरने के लिए हवा भरते हैं। उसे कितना दर्द होता होगा! सोचिए अगर किसी स्त्री के साथ ऐसा किया जाए, तो वह कैसे चीखेगी? लेकिन यह शांत प्राणी चुप रहता है और इसी कारण मैंने हर रूप में दूध पीना छोड़ दिया। बाद में डॉ. मेहता ने बकरी का दूध पीने का सुझाव दिया और कहा कि इस मामले में ऐसा कुछ नहीं किया जाता। तब से मैंने बकरी का दूध पीना शुरू कर दिया। जानवर दूध क्यों देते हैं? अपने बच्चों के लिए। माँ अपने बच्चों के लिए दूध देती है। हमें अतिरिक्त दूध अपने लिए रखना चाहिए। लेकिन, वे लोग पैसे कमाने के लिए इन शांत जानवरों को सताते हैं।' उन्होंने मुझे यह समझाया। बा का स्वास्थ्य नाजुक बना हुआ है। वह रात 10 बजे तक कैरम का खेल देखती हैं। जब बापूजी शाम की सैर पर जाते हैं, तो वह ग्रामोफोन सुनती है। मेरी नज़र कमज़ोर हो गई है, मुझे आठ दिनों तक पढ़ने-लिखने से मना किया गया था। एक नर्स आई थी। वह दो दिन रुकी। उसे यहाँ रहना कैसे अच्छा लग सकता है? उसे अपने बच्चों के बिना रहना पड़ा और उसके जैसी कोई नहीं थी जिससे वह बात कर सके। तीसरे दिन उसने कहा कि वह काम नहीं कर पाएगी और चली गई। उसे बा की देखभाल करनी थी, लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकी। उन्हें जेल में कैद रहना कैसे अच्छा लग सकता है?

आज कनुभाई आए थे। उन्होंने तीन-चार भजन गाए। बेचारे को खाने-पीने की बहुत दिक्कत होती है। वो दिनशॉ मेहता के घर खाना खाते हैं। वे यूरोपीय तरीके से खाते हैं, और उन्हें अभी तक उसकी आदत नहीं पड़ी है।

बापूजी को तार की बाड़ के बाहर टहलने से मना कर दिया गया है। वे वहाँ टहलते थे क्योंकि उस क्षेत्र में धूप आती है। बापूजी ने कहा कि इससे उन्हें गुस्सा आता है। 'अगर मैं बाहर चला जाऊं तो उनका क्या नुकसान होगा?'

क्या उस तीस फुट के दायरे में खड़ा होना संभव था? लेकिन पुष्टि और खंडन के बीच एक तरह की दुश्मनी है। उनके पास बा से मिलने के लिए आगंतुकों को अनुमति देने के अलावा कोई विकल्प नहीं है, इसलिए उन्होंने अनुमति दे दी। वे बा को रिहा नहीं करना चाहते।' मैंने उनसे पूछा कि वे बा को रिहा क्यों नहीं करते, बा क्या कर सकती हैं? बापूजी ने कहा, 'मान लीजिए बा की

मृत्यु हो जाती है, तो उन्हें मुझे उनके अंतिम संस्कार के लिए भेजना पड़ेगा। अगर मैं सिर्फ एक दिन के लिए भी बाहर रहूँ तो कुछ न कुछ हो ही जाएगा। उनकी यही सोच है और इसीलिए वे उन्हें रिहा नहीं करते। मौलाना साहब को उनकी पत्नी की मृत्यु पर भी रिहा नहीं किया गया था। आजकल उनकी नीति बहुत क्रूर हो गई है!'

दिनांक: 9.1.44 रविवार

आज रात बा की तबीयत ठीक नहीं थी। उन्हें नींद नहीं आई। मैं करीब तीन घंटे तक जागता रहा। पहले हिस्से में मैं दोपहर 1:30 से 2:30 तक उनके साथ रहा, उसके बाद प्यारेलाल जी 2:30 से 4 बजे तक जागते रहे। मैं 4 बजे उठा और 6 बजे तक उनके पास रहा। मैं 6 बजे सो गया और 9 बजे उठा।

आज दोपहर चंदूबेन, बिंदूबेन, उनकी भाभी, धीरूभाई, वसंतभाई और कानूभाई मिलने आए—यह अचानक और बिना किसी पूर्व सूचना के हुआ। बिंदूबेन और उनकी भाभी ने नृत्य किया। चंदूबेन और बाकी दो महिलाओं ने भजन गाए। बा बहुत अच्छा महसूस कर रहे थे। हमने कानूभाई को भोजन दिया। उन्होंने सब्ज़ियाँ, रोटी, दूध, खजूर आदि खाए; बाकी लोगों को हमने सूखे मेवे दिए। धीरूभाई ने बापू के व्रतों के चित्र बनाए थे, जो वे अपने साथ लाए थे। वे बहुत अच्छे थे। चंदूबेन ने मेरे नाप का सलवार और कुर्ता सिलवाया था। मैंने सलवार रख ली। भाई अभी भी परला में हैं। युक्तिबेन ठीक हैं। बापूजी ने दिन भर मौन रहना शुरू कर दिया है। वे केवल सुशीलबेन और मुझे पढ़ाने के लिए बोलते हैं, आगंतुकों, बीमारों और अधिकारियों से केवल बा की बीमारी के बारे में ही बात करते हैं। वे सैर, स्नान और मालिश के दौरान मौन रहते थे। वे केवल प्रार्थना के दौरान ही बोलते थे, जब आवश्यक होता था। यह तय नहीं है कि उनका मौन कितने समय तक रहेगा। वे यथासंभव लंबे समय तक मौन धारण करते थे।

231 'डांस', मूल में अंग्रेजी शब्द।

दिनांक: 11.1.44 232

आज हमें सूचना मिली कि प्रभावतीबेन का तबादला यहाँ हो रहा है। वह आज या कल तक पहुँच जाएँगी। कनुभाई आज आए थे, उन्होंने बा को भगवद् सुनाया, भजन गाए और हमारे साथ भोजन किया।

दिनांक: 12.1.44

आज माथुरदासभाई का परिवार आया। उनकी बेटी ज्योत्सना ने नृत्य प्रस्तुत किया। 233 शाम

तक प्रभावतीबेन बिहार के भागलपुर कारागार से यहाँ पहुँचीं। उन्होंने वहाँ के जीवन के बारे में बताया। उन्होंने जयप्रकाशभाई के भागने की घटना भी सुनाई। बा को बेहतर महसूस हुआ।

दिनांक: 13.1.44

हमारा काम बाँट दिया गया था। मैं बा के साथ 1 बजे तक रहती थी। इस दौरान प्रभावतीबेन अपनी मर्ज़ी से कुछ भी कर सकती थीं। मैं 1 बजे के बाद फ्री हो जाती थी, ताकि थोड़ी नींद लेने के बाद अपनी पढ़ाई वगैरह फिर से शुरू कर सकूँ। आज हरिलालकाका ने तार भेजा कि वह गुरुवार सुबह तक पहुँच जाएँगे। हम दिन भर इंतज़ार करते रहे, लेकिन कोई नहीं आया। आज कोई मिलने नहीं आया, जो अच्छा लगा। पहले लगभग हर दिन कोई न कोई मिलने आता था और सारा समय उन्हीं के साथ बीत जाता था। आज हमें थोड़ा आराम मिला।

आज सरकार ने मीराबेन के हाथ के इलाज के संबंध में बापू के पत्र संख्या 234 का जवाब दिया है। कराची के जिस डॉक्टर से मीराबेन का इलाज उन्हें पसंद आया था, उन्हें मीराबेन से मिलने की अनुमति दे दी गई है।

दिनांक: 14.1.44

मनुबेन, काकीबा आदि मिलने आए थे। सुरेंद्रभाई भी उनके साथ थे।

232 10.1.44 के लिए कोई प्रविष्टि नहीं है।

233 'डांस', मूल में अंग्रेजी शब्द।

234 न तो यह पत्र और न ही सरकार का जवाब सीडब्लूएमजी में है।

दिनांक: 15.1.44

आज मकर संक्रांति थी। 235 इसलिए, बा ने हमसे तिल के लड्डू बनाने को कहा और उन्हें कैदियों में बाँट दिया। उनकी सेहत में कोई बदलाव नहीं आया है। उन्हें रात को नींद नहीं आती। मीराबेन के बाद अब मेरी बारी है सर्दी लगने की। मैं सुबह 2 बजे से 5:30 बजे तक बा के पास बैठी रही। मैं 5:30 से 8:30 बजे तक सोई।

दिनांक: 16.1.44

अब प्रभावतीबेन यहाँ हैं, इसलिए वो दिन-रात बा के साथ रहती हैं। मेरी सर्दी और बढ़ गई है। रात में मेरी नींद खुल गई थी, लेकिन कहीं बा को भी सर्दी न लग जाए, इसलिए मैं उनके पास नहीं गई।

दिनांक: 17.1.44

मेरी सर्दी और भी बढ़ गई है। मुझे प्रार्थना के लिए नहीं जगाया जाता, न ही मैं प्रार्थना के लिए जागने की कोशिश करती हूँ। आजकल सुबह मैं रस निचोड़ती हूँ, कुछ और काम करती हूँ और आधे घंटे मार्गोपदेशिका पढ़ती हूँ, फिर टहलने जाती हूँ। आजकल मैं नियमित रूप से टहलती हूँ, क्योंकि प्रभावतीबेन सुबह जल्दी टहलने जाती हैं और बा के साथ रहती हैं। एनीमा में लगभग आधा घंटा लगता है। उसके बाद मैं रसोई में काम करती हूँ और अगर रसोई में कोई काम नहीं होता, तो आधे घंटे और मार्गोपदेशिका पढ़ती हूँ। इस दौरान सुशीलाबेन बा की मालिश करती हैं, जिसके बाद मैं उन्हें नहलाती हूँ और दवाइयाँ देती हूँ। शायद कभी-कभी मैं थोड़ा समय बर्बाद कर देती हूँ, लेकिन बहुत ज्यादा नहीं। मैं लगभग 11 या 11:30 बजे नहाती हूँ, कपड़े धोती हूँ और दोपहर 12 बजे के आसपास खाना खाती हूँ। खाना समेटने और रसोई साफ करने में आमतौर पर 12:30 बज जाते हैं। मैं रात 1 बजे तक सोती हूँ, जब बापूजी दोपहर के भोजन के बाद मुझे जगाते हैं, तो मैं बर्तन साफ करके बापूजी के पास चली जाती हूँ। मैं लगभग 3 बजे तक उनके साथ रहती हूँ; अगर समय मिले तो मैं...

235 Makarsankranti or Uttarayan is observed on 14 January and not on

15वां।

बापूजी के साथ थोड़ी पढ़ाई करती हूँ। आजकल हमारे घर में मेहमान आते रहते हैं, इसलिए पढ़ाई अनियमित हो गई है। मैं प्यारेलालजी के साथ दोपहर 3 से 5 बजे तक ज्यामिति पढ़ती हूँ। 5 बजे से हम एक घंटे खेलते हैं, 6 बजे तक। 6 से 7:15 बजे तक हम खाना खाते हैं; मैं रसोई में काम करती हूँ और सारे बचे हुए काम निपटाती हूँ। मैं बा को व्हीलचेयर में बाहर ले जाती हूँ और ग्रामोफोन बजाती हूँ, 8 बजे तक जब बापूजी अपनी सैर से लौटते हैं। प्रार्थना के बाद, मैं बिस्तर लगाती हूँ, बाकी सारे काम निपटाती हूँ, बापूजी की मालिश करती हूँ और सो जाती हूँ। जब से प्रभावतीबेन यहाँ आई हैं, मैं रात में बा की मालिश नहीं करती। सुशीलाबेन और मैं एक रात जागती हैं, जबकि प्रभावतीबेन और प्यारेलालजी अगली रात जागते हैं। मैं रात 2 बजे से सुबह 6:30 बजे तक जागती हूँ। प्रार्थना के बाद मैं लगभग 9 बजे तक सोती हूँ। मैं रात को जल्दी भी सो जाती हूँ। दिन इसी तरह बीतते हैं।

आज युक्तिबेन, अरुणा, हरजीवदास, भूपत और कनुभाई मिलने आए थे। युक्तिबेन कपड़े, अडाडिया मिठाई और शारदा मंदिर की तस्वीरें लाई थीं। छह जोड़ी सलवार-कुर्ता भी लाए थे। वे

मेरे नाप से बड़े थे, इसलिए मैंने उन्हें वापस भेज दिया। उन्होंने भजन 'केलीभारे पायल' गाया। वह सेवाग्राम जाएंगी। पूज्यभाई अभी भी मुंबई में हैं। मैंने अपनी घड़ी देवदासका को दी थी, वह ठीक होकर वापस आ गई है।

दिनांक: 28.1.44 236

मैं नौ दिन के अंतराल के बाद यह डायरी लिख रहा हूँ। पिछले कुछ दिनों से मेरी लेखन शैली अनियमित हो गई है। आज पूज्यभाई, छगनलाल बापूजी, देवदासकाका, रामदासकाका और सुमित्रा मिलने आए थे। भाई जी मेरे लिए सलवार-कुर्ता लाए, जो मुझे ठीक से फिट आया। उन्होंने बाकी कपड़े कनुभाई के पास रखे हैं, जो कल लाएँगे। भाई जी के आने से मुझे बहुत अच्छा लगा। वे थोड़े कमजोर लग रहे थे। वे काफी समय से मुंबई में हैं, पता नहीं उनके खाने-पीने का ख्याल कौन रखता है। जब वे कराची से आए थे, तब वे ठीक लग रहे थे। उन्होंने मुझसे कहा कि मेरी पत्र लेखन शैली बहुत अनियमित हो गई है। 'आज तुम्हें कराची को पत्र लिखना चाहिए। तुम्हें सभी को नियमित रूप से पत्र लिखना चाहिए।'

236 18.1.44 से 27.1.44 की अवधि के लिए कोई डायरी प्रविष्टियाँ नहीं हैं।

कराची के बारे में सामान्य शब्दों में बात की। आज 26 तारीख है और इसी कारण स्वतंत्रता दिवस भी है, इसलिए बापूजी, सुशीलाबेन, प्यारेलालजी, प्रभावतीबेन, डॉक्टर साहब और मैंने चौबीस घंटे का उपवास रखा था। हमने शाम को कैदियों को भजिया, चाय और मूंगफली देने का फैसला किया था। हमें भजिया बनाने थे। सुशीलाबेन और मैं दोपहर 2 बजे से काम में जुट गए, इसी वजह से मैं भाई के साथ ज्यादा देर नहीं बैठ सका। मुझे बहुत काम था।

हमने स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में सामुदायिक कताई का आयोजन किया था। सुशीलाबेन, प्यारेलालजी, बापूजी, प्रभावतीबेन, डॉक्टर साहब और मैंने 11:30 से 12:30 बजे तक कताई की। दोपहर में हमारे यहाँ कुछ मेहमान आए थे।

We saluted the fl ag in the evening and sang three songs. ‘Vande Mataram’, ‘Sare Jahan se Achha’ and ‘Jhanda Uncha Rahe Hamara’.

‘मेरे जीवन का उद्देश्य सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर भारत को हर मायने में पूर्ण स्वतंत्रता दिलाना है। और यह कई वर्षों से ऐसा ही है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए, स्वतंत्रता की 14वीं वर्षगांठ पर, मैं संकल्प लेता हूँ कि जब तक भारत को स्वतंत्रता नहीं मिल जाती, मैं नहीं रुकूँगा और उन सभी को, जिन पर मेरा किसी भी प्रकार का प्रभाव हो, अपने मार्ग में बाधा नहीं डालने दूँगा। मैं उस एक से प्रार्थना करता हूँ, जिसे किसी ने अपनी आँखों से नहीं देखा, सिवाय उसके जिसे हम ईश्वर, अल्लाह और परमात्मा के नाम से पुकारते हैं, कि वह मुझे इस उद्देश्य को पूरा करने की शक्ति प्रदान करे।’ 237 बापूजी ने यह संदेश लिखा था, जिसे

डॉक्टर साहब ने पढ़कर सुनाया।

आज रात मेरी यही ड्यूटी थी। मैं रात 2 बजे से 6 बजे तक जागा रहा और सुबह 6 बजे से 9 बजे तक सोया।

दिनांक: 29.1.44

आज वेनिलाल बापूजी, निपुणभाई, कांतिभाई-भाभी, पुष्पाबेन और अन्य लोग मिलने आए थे। बा की तबीयत ठीक नहीं थी। उन्होंने शाम को मुझे बताया कि उन्हें आज दोपहर का यह दौरा अच्छा नहीं लगा। किसी ने भजन नहीं गाया या कोई और प्रस्तुति नहीं दी; सभी मेहमान भी इस आयोजन के लिए नए थे और इसी वजह से बा को यह दौरा अच्छा नहीं लगा।

237 मूल पाठ हिंदुस्तानी में है।

दिनांक: 30.1.44 सोमवार

आज बा की तबीयत बहुत खराब थी। उन्हें अस्थमा का दौरा पड़ गया था। भंडारी दोपहर एक बजे उनका हालचाल लेने आए। उस समय उनकी सांसें बहुत तकलीफ से चल रही थीं। इसके अलावा, आज बापूजी का मौन दिवस था। बा दोपहर को रोईं। कनुभाई उनसे मिलने आए और शाम सात बजे तक रुके। बा के लिए एक विशेष 'हार्ट बेड' (238) भेजा गया है। मेरी रात्रि की ड्यूटी थी। मैं दोपहर दो बजे से शाम पांच बजे तक बा के पास रही। मैं खुद ही दो बजे उठी। रात बहुत मुश्किल भरी थी। हमने दस से बारह भजन गाए, सुशीलाबेन ने भी गाया। बा ने कहा, 'अब मैं दो-चार दिन की मेहमान हूं। भगवान मुझे अपने पास बुला लें। मैं अब और यह दर्द सहन नहीं कर सकती।' वह अक्सर ऐसे शब्द कहती हैं। यह बहुत दुखद है। आगे क्या होगा, यह तो भगवान ही जानते हैं। मैं प्रतिदिन प्रार्थना करती हूं कि वह ठीक हो जाएं। आज बापूजी का ब्लड प्रेशर भी हाई था।

दिनांक: 1.2.44 239

आज कनुभाई को हमारे साथ रहने की अनुमति मिल गई। वे आज शाम ही आ गए। उनका सारा सामान दिनशॉ के घर से लाया गया था। हम सभी को अच्छा लगा। मुझे तो इस बात से बहुत खुशी हुई। हमारे सभी कर्तव्य और समय तय हो गए हैं। मुझे हर सुबह 5 बजे से 9 बजे तक ड्यूटी दी गई है। अगर एनिमा देना हो तो मुझे 9 से 11 बजे के बीच देना होगा। मेरी दोपहर की ड्यूटी 1 से 3 बजे तक है। अब मेरी रात्रि ड्यूटी नहीं है। एक दिन प्यारेलालजी और प्रभाबेन को बा के साथ क्रमशः 11 से 2 और 2 से 5 बजे तक रहना है, अगले दिन कनुभाई और सुशीलाबेन

ड्यूटी करेंगी। मेरी आंखों की समस्या के कारण मुझे रात्रि ड्यूटी से हटा दिया गया है। मैंने उनसे बहुत विनती की लेकिन वे मान नहीं पाए। उनकी सेहत में कोई सुधार नहीं है। वे बहुत कमजोर और बेचैन हैं। आज मैंने प्रभाबेन को पत्र लिखा। 240

238 मूल पाठ के अनुसार।

239 दिनांक 31.1.1944 के लिए कोई प्रविष्टि नहीं है।

पृष्ठ के शीर्ष पर 240 नोट: 'भंडारी डॉ. जीवराज मेहता को येरवडा से लाए थे, लेकिन उन्हें बापूजी से मिलने की अनुमति नहीं दी गई।'

दिनांक: 2.2.44

मैंने आज पूज्यभाई को पत्र लिखा। मैं 3 से 5 बजे वाली कक्षा में नहीं जा सकी। बा को जलन हो रही थी, इसलिए मैंने उन पर ठंडी सिकाई की। मैं 4 बजे पढ़ने गई। बापूजी 6 से 6:30 बजे तक पढ़ाते हैं।

दिनांक: 3.2.44

आज बा पर एनीमा का कोई असर नहीं हुआ। उन्होंने अरंडी का तेल लेने की ज़िद की। इसकी कोई खास ज़रूरत नहीं थी, लेकिन फिर भी वह लेना चाहती थीं। उनकी सेहत में कोई बदलाव नहीं आया है। वह बहुत कमज़ोर हो गई हैं। मैं 3 से 5 बजे तक क्लास में जा सकी। मैंने बापूजी के साथ 6 से 6:30 बजे तक पढ़ाई भी की। मैं बा के साथ सुबह 5 बजे से 7 बजे तक, फिर दोपहर 1 से 3 बजे तक और शाम 7:15 से 8 बजे तक रही। मैं रात में भी उनके साथ थी। रात ठीक-ठाक गुज़री, वह बाकी दिनों के मुकाबले ज़्यादा अच्छी सोईं।

दिनांक: 4.2.44

बा ने आज दिन में जुलाब की दवा ली थी, लेकिन उन्हें शौच नहीं हुआ। पूरा दिन बेचैनी में बीता। रात भी बहुत खराब गुज़री। रात को 2:30 बजे बा ने कनुभाई से मुझे जगाने को कहा, और उन्होंने ऐसा ही किया। उन्हें हर कुछ मिनट में खांसी आ रही थी। उनके शरीर में बहुत तेज़ दर्द था। उन्होंने मुझसे कहा, 'बेटी, इसे ज़ोर से दबाओ। मैं ज़्यादा देर तक जीवित नहीं रहूँगी।' मेरी आँखों में आँसू भर आए। मेरा क्या नसीब? मैं बा की देखभाल करने यहाँ आई थी और भगवान उन्हें ठीक नहीं रखना चाहते। बापूजी 3 बजे उनके पास आए। कनुभाई उनका पलंग बरामदे में ले आए थे और उन्होंने और मैंने धीरे-धीरे उनके शरीर पर हाथ फेरा। बापूजी को देखकर उन्होंने कहा,

'बापूजी, ये मेरी आखिरी साँसें हैं। मुझे बहुत दर्द हो रहा है।' बापूजी ने कहा, 'जाओ। लेकिन शांति से जाओ, ठीक है?' उन्होंने हमसे गीता के श्लोक पढ़ने को कहा। कनुभाई और मैंने बारहवाँ श्लोक पढ़ा। हम उनका पलंग कमरे के अंदर ले आए। हमने गीता के ग्यारहवें और नौवें प्रवचन पढ़े। प्यारेलाल जी भी जाग रहे थे। बा ने हमें 'राम चरण' भजन गाने को कहा, जिसके बाद हमने 'जनिये रघुनाथ कुवर', विद्यामंदिर की प्रार्थनाएँ और अन्य प्रार्थनाएँ और भजन गाए। हमने लगभग 112 मिनट तक मनु गांधी की डायरी गाई।

40 मिनट। प्रार्थना से उन्हें कुछ शांति और सुकून मिला। बा ने मुझे अपने पास रहने को कहा। मैं 5:15 तक उनके साथ रहा, उसके बाद सो गया। बापूजी ने मुझसे कहा था कि वे मुझे 6:30 बजे जगा देंगे, लेकिन उन्होंने नहीं जगाया। मैं 7:30 बजे उठा।

रसोई से चोरी की घटनाएं आजकल बढ़ गई हैं। इसलिए बापूजी ने कहा कि हमें सैनिकों से काम नहीं करवाना चाहिए, सब कुछ खुद ही करना चाहिए। प्यारेलालजी, कानूभाई और मैं रसोई का काम करते थे। बापूजी ने कहा कि इन दिनों सुशीलाबेन को रसोई के काम से परेशान न करना ही अच्छा होगा। कानूभाई और प्यारेलालजी ने रोटियां बनाईं और सब्जियां उबालीं। हमने उन्हें दही के साथ खाया। मैंने शाम के खाने के लिए रोटियां बनाईं; सुबह खाना बनाते समय मैं बापूजी की सेवा में व्यस्त थी।

दिनांक: 5.2.44

हमने खाना बनाया, बर्तन धोए और बाकी सारे काम खुद किए। माहौल गंभीर और शांत हो गया है। कटेली साहब चाय पीने नहीं आते, न ही हमारे साथ खाना खाते हैं। सुशीलाबेन कच्ची सब्जियां खाती हैं। बा की तबीयत खराब थी, उनकी नाड़ी बहुत धीमी चल रही थी। सुशीलाबेन ने रात भर जागने का सोचा, लेकिन बा को पता चल जाता कि कुछ गड़बड़ है, इसलिए उन्होंने यह विचार छोड़ दिया। हमें डर था कि आज रात कुछ अप्रिय घटना हो जाएगी। भंडारी और डॉक्टर शाह रात में मिलने आए। लेकिन भगवान की कृपा से रात बीत गई। बा एक ऐसे दौर से गुजर रही हैं जो उनके लिए अच्छा नहीं है। मुझे नहीं पता भगवान ने उनके लिए क्या चाहा है। राम द्वारा संरक्षित व्यक्ति को भला कौन दुख पहुंचा सकता है? भगवान ने उनके लिए वही चाहा होगा जो उनके लिए अच्छा हो।

दिनांक: 6.2.44

डॉ. दिनशॉ मेहता को बा से मिलने की अनुमति मिल गई थी। वे आए। मैंने उन्हें मालिश, स्पंज बाथ और एनीमा दिया। उन्हें अच्छा लगा। इसमें लगभग एक से ढाई घंटे लगते हैं। आजकल सब कुछ अनियमित हो गया है, इसलिए मैं न तो ज्यामिति पढ़ता हूँ और न ही अन्य विषयों को पढ़ता या लिखता हूँ। आज मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं थी। मुझे सिरदर्द और बदन दर्द था। मैंने कुनैन की एक खुराक ली। आज मैं सुबह पाँच बजे उठा। दिन-रात बीत गए; उनकी हालत न अच्छी थी, न बुरी।

मनु गांधी की डायरी 113

दिनांक: 7.2.44

आज सुबह एनीमा लेने के बाद भी बा को नियमित मल त्याग नहीं हुआ। उन्हें बार-बार शौचालय जाना पड़ा और उनके कपड़े भी गंदे हो गए। कनुभाई उन्हें कमोड तक ले जाते हैं, फिर भी उन्हें बहुत थकान महसूस होती है। मुझे एक अलग ही बा याद आती हैं। मैं सेवाग्राम में था। बारिश का दिन था। बा अपना चैंबर पॉट साफ करने के लिए निकाल रही थीं। मैंने उनसे विनती की कि मुझे करने दें। लेकिन बा ने मुझे करने नहीं दिया। आज उसी बा की क्या हालत है? यहाँ भी, तेज बुखार में, वह बाथरूम तक जाती हैं और मुझे बाहर इंतजार करने के लिए कहती हैं। कमजोर होने के बावजूद, वह मुझे बाथरूम के अंदर इंतजार नहीं करने देतीं। लेकिन प्रकृति का यही नियम है; कौन जान सकता है कि किसी को क्या-क्या सहना पड़ेगा? आज मैंने एन. काका और एच. काका को पत्र लिखे। 241

दिनांक: 8.2.44

उनकी सेहत लगातार बिगड़ती जा रही है। उन्हें रात को नींद नहीं आई, इसलिए दिन भी ठीक से नहीं गुजरा। वे लेटकर सो नहीं पातीं। वे सहारे से बैठती हैं और थोड़ी-थोड़ी देर के लिए झपकी लेती हैं। उनकी हालत इतनी नाज़ुक है कि उन्हें एक मिनट के लिए भी अकेला नहीं छोड़ा जा सकता। आज शाम की नमाज़ के बाद बापूजी ने डॉक्टर साहब से कहा, “हमें हर दूसरे दिन एनीमा देना चाहिए क्योंकि बा बहुत कमज़ोर हो गई हैं। अच्छा होगा अगर भगवान उन्हें अपने पास बुला लें। उनके चले जाने से दर्द की पीड़ा से बेहतर है।” मेरा हृदय पिघल गया। मैंने प्रार्थना की कि भगवान उन्हें ठीक कर दें और उनकी बीमारी मुझ पर डाल दें। मुगल वंश में ऐसा हुआ था, बाबर ने हुमायूं का दर्द अपने ऊपर ले लिया था। तो फिर मैं बा की बीमारी अपने ऊपर क्यों नहीं ले सकता? हर रात मैं बा की सेहत के लिए दो बार माला जपता हूँ। भगवान ही जानते हैं कि उनका क्या इरादा है।

दिनांक: 8.2.44 242

आज रात वह थोड़ी देर के लिए सो सकती है, हालांकि बहुत देर तक नहीं।

241 मूल रूप में। संभवतः नाराणदास गांधी और हरिलाल गांधी।

242 एक ही तिथि के लिए दो प्रविष्टियाँ। यह संभवतः 9.2.1944 की प्रविष्टि है। 114 मनु गांधी की डायरी

दिनांक: 21.2.44 243

कई दिनों के अंतराल के बाद, मैं लिखने बैठा हूँ। बहुत लंबा अंतराल रहा है। मैं नियमित रूप से लिख नहीं पा रहा हूँ। मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं है, लेकिन दिन भर के कामों में इतना व्यस्त रहता हूँ कि डायरी लिखने के लिए न तो समय मिलता है और न ही एकांत। बापूजी ने मुझे रात में लिखने से मना किया है।

8 से 21 तारीख के बीच कई नई और अजीब घटनाएं घटीं। बापूजी का स्वास्थ्य गंभीर हो गया। वैद्यराज (शर्मा) चार दिनों के लिए आए। 244 उनकी दवाइयां आजमाई गईं, लेकिन उनका कोई असर नहीं हुआ और इसलिए कल वे चले गए। कुछ दिनों तक वैद्यराज मोटरगाड़ी में बाहर सोए। जब भी जरूरत होती, उन्हें बुलाया जाता था। जब भी उनकी जरूरत होती, कटेली साहब की उपस्थिति जरूरी हो जाती थी। यह सिलसिला तीन दिनों तक चला। तीसरे दिन बापूजी को पता चला कि कटेली साहब को वैद्य को अंदर आने देने के लिए रात भर जागना पड़ता है। यह उनके लिए किसी यातना से कम नहीं था। बापूजी ने सुबह 2 बजे भंडारी को पत्र लिखा कि या तो वैद्य को जेल में रहने दिया जाए या उन्हें दवाइयां बंद करनी पड़ेंगी। 245 इसके बाद भंडारी ने अनुमति दे दी। यह इस बात का उदाहरण है कि बापूजी ऐसी बीमारी के दौरान भी दूसरों की कितनी परवाह करते हैं।

वैद्यराज ने चार-पाँच दिन तक पूरी कोशिश की, लेकिन अंततः देखा कि उनकी दवा का कोई असर नहीं हो रहा है, इसलिए कल उन्होंने बापूजी से जाने की अनुमति मांगी। वे इस बात से बहुत दुखी थे कि वे किसी काम के नहीं रहे। बापूजी ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा, 'आपने अपनी पूरी कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। अब हम क्या कर सकते हैं?'

During this period Bhai came. Bindubehn, Chandubehn, Nimubehn, her two children, Navinbhai, Dhirubhai and others

243 9.2.1944 से 20.2.1944 तक कोई डायरी प्रविष्टियाँ नहीं हैं।

एम.के.जी. ने 27 जनवरी, 1944 को गृह विभाग के अतिरिक्त सचिव को पत्र लिखकर 'किसी आयुर्वेदिक चिकित्सक' की सेवाएं लेने की अनुमति मांगी। (देखें, सीडब्ल्यूएमजी, खंड 77, पृष्ठ 219)। 31 जनवरी को उन्होंने लाहौर के 'वैद्यराज शर्मा' के लिए विशेष अनुमति मांगी। (देखें, सीडब्ल्यूएमजी, खंड 77, पृष्ठ 223)।

245 देखें, सीडब्ल्यूएमजी खंड 77, पृ. 229–30.

वे आए। उनके आने वाले दिन बा की तबीयत बिगड़ गई थी और उन्हें इंजेक्शन लगवाने पड़े। वे जल्द ही चले गए। किसी ने नृत्य किया।

मुझे जीवन में नए अनुभव भी मिले; कुछ ऐसी घटनाएं घटीं जिनसे मेरा मन व्याकुल हो जाता है। मैंने बापूजी से कुछ बातें कीं, उससे पहले भी कुछ लोगों से ऐसी ही बातचीत हुई थी। मैंने बापूजी को वही घटना सुनाई। सावधानीपूर्वक बोलने और शब्दों के गलत चुनाव से गलतफहमी पैदा हो सकती है और इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। मैंने यह सीखा। मुझे विश्वास है कि ऐसे अनुभव मुझे बिना सोचे-समझे कुछ भी बोल देने की अपनी बुरी आदत को बदलने में मदद करेंगे। इससे मुझे यह भी पता चला कि दूसरे लोग मेरे निर्दोष व्यवहार को कैसे देखते हैं। यह घटना 8 से 10 तारीख के बीच घटी थी, लेकिन मैं इसे अब तक भुला नहीं पाया हूँ। जब मैं अलग-अलग लोगों से मज़ाक उड़ाते हुए वही कहानी सुनता हूँ, तो मैं उनके साथ हँसता हूँ, लेकिन इससे मुझे बहुत दुख होता है। बापूजी ने मुझसे बहुत प्यार से बात की और इससे मुझे कुछ सांत्वना मिली, लेकिन जब मैं दूसरों को इसके बारे में बात करते सुनता हूँ, तो मुझे दुख होता है। मैं नहीं चाहता कि हमारे परिवार में गंभीर बीमारी के समय बापूजी को और अधिक चिंता हो।

कल से बा की तबीयत बहुत गंभीर हो गई है। बापूजी सारा समय बा के साथ ही बिता रहे हैं। उन्होंने मुझे पढ़ाने से मना कर दिया। वे बहुत चिंतित थे। वे लगातार 'हे राम' का जाप कर रहे थे। वातावरण भक्तिमय था और अभी भी वैसा ही है। शाम को उन्हें एनीमा दिया गया। बापूजी ने हमसे मालिश और अन्य काम जल्दी खत्म करने को कहा। बापूजी ने न तो रोटी खाई और न ही फल। उन्होंने शाम के भोजन के साथ दूध भी नहीं पिया। मैं रात 8 बजे सोई और आधी रात 12 बजे उठी। मैं 1:30 बजे तक जागती रही और उसके बाद फिर सो गई। इन दिनों दो लोगों को दिन-रात उनकी देखभाल करनी पड़ती है। उन्हें पेशाब करने में बिल्कुल भी तकलीफ हो रही है। उनका शरीर सूज रहा है। बापूजी ने कहा कि हमें अब सारी दवाइयां बंद कर देनी चाहिए। उन्होंने कहा, 'अब भगवान ही उन्हें मुक्त करेंगे। अगर उन्हें किसी चीज की जरूरत हो तो उन्हें गर्म पानी में शहद मिलाकर दें और रामनाम का जाप करें।' डॉक्टर साहब ने भी कहा कि अब हम कुछ नहीं कर सकते। 'आखिर हम भगवान तो नहीं हैं।' 246

246 यह वाक्यांश मूल रूप से अंग्रेजी में है।

आज सुबह भी उनकी हालत में कोई बदलाव नहीं आया है। भाई लगभग 10:30 बजे आए। शांतिकुमारभाई ने उन्हें रुकने के लिए कहा है, इसलिए वे कुछ दिनों तक यहीं रहेंगे। देवदासकाका, मनुबेन, रामिबेन, केशूभाई और संतोक काकीबा आज शाम आए। उनके आने से पहले हरिलालकाका आए थे। वे शराब पीकर आए थे। बा इससे बहुत परेशान हो गईं और बेसुध सी बातें करने लगीं। शाम 6:30 बजे जब मनुबेन आईं तो उनकी परेशानी और बढ़ गई। हम सब

रो पड़े। उनकी नाड़ी बहुत तेज़ और अनियमित थी। उसकी गति 122 धड़कनें थी। मनुबेन ने कुछ भजन गाए, जिससे बा की परेशानी कुछ कम हुई। वे 8 बजे सो गईं। उन्होंने दिन में एक गिलास हॉर्लिक्स पिया था; इसके अलावा उन्होंने गर्म पानी और शहद लिया था। बापूजी अब उन्हें कुछ और नहीं देना चाहते। 10 बज गए हैं और वे अभी भी सो रही हैं। मैं रात में जागता नहीं हूँ क्योंकि जागते रहने से अगले दिन के काम प्रभावित होते हैं। सुशीलाबेन को जागते रहना है। बाकी सब भी जागते हैं। बापूजी को मेरा जागते रहना पसंद नहीं है। उनका कहना है कि मैं बीमार पड़ जाऊंगी। आज रात देवदासका यहीं सोएंगे। उन्हें अचानक बा की हालत के बारे में पता चला। उन्होंने बड़ी चिंता में सफर तय किया। उन्हें लगा था कि बा अब इस दुनिया में नहीं हैं। उन्होंने बॉम्बे स्टेशन पर अखबार पढ़े, जिनमें ऐसी कोई खबर नहीं थी। खबर न होने से उन्हें काफी खुशी हुई। डॉक्टर दिनशॉ मेहता को भी रात रुकने की इजाजत मिल गई है।

दिनांक: 22.2.44 शिवरात्रि, मंगलवार

कल रात लगभग 11:30 बजे देवदासका, डॉ. दिनशॉ मेहता के साथ, रात बिताने के लिए आए। उनके आने पर मैं जाग रहा था। घर में किसी के इतने गंभीर रूप से बीमार होने पर भला कोई कैसे सो सकता है? रात बहुत ही कष्टदायक थी। अगर वह दर्द से कराहती या बेचैनी के कोई और लक्षण दिखाती, तो हम 'श्रीराम भजो सुख में दुःख में' 247 या कोई और भजन या 'राम धुन' गाते। वह अत्यंत हृदयविदारक स्वर में कहतीं, 'हे राम! मुझे अपने साथ ले जाओ। इस जीवन में मैंने सबके लिए परिश्रम किया है। मैंने खाना बनाया है।'

247 शाब्दिक रूप से, 'सुख और दुख में श्री राम की पूजा करो'।

और सबको भोजन कराया। लेकिन मैंने तुम्हारे लिए कुछ नहीं किया। मैं बापूजी में लीन थी। 'हे राम! मेरे पापों को धो डालो। मैं अब और पाप नहीं करूंगी।' वह अपने बगल में बैठे व्यक्ति से कहतीं। 'तुमने मेरी कितनी परवाह की है, मेरी कितनी सेवा की है! मैं तुमसे और क्या मांग सकती हूँ?' वह इसी तरह बोलती रहीं। सुबह की प्रार्थना लगभग छह बजे देर से हुई। मैं भी इसके लिए उठ गया था। प्रार्थना के बाद, नाश्ते के समय देवदासक चले गए। उस समय बापूजी दैनिक कैलोरी सेवन नोट कर रहे थे। 248 बापूजी ने सरकार के रवैये पर टिप्पणी करते हुए कनुभाई के लिए अनुमति प्राप्त करने में लगे समय की ओर इशारा किया। उन्होंने कहा, 'चर्चिल को यकीन है कि मैं उनका सबसे बड़ा दुश्मन हूँ। अब क्या किया जाए? उनका मानना है कि अगर मुझे जेल से बाहर रखा गया तो वे देश को दबा और नियंत्रित नहीं कर पाएंगे। लेकिन वैसे भी, वे देश को दबा नहीं पाएंगे।' एक बार लोगों में आत्मविश्वास आ जाए तो वे उसे भूलते नहीं। मैं अपना काम पूरा मान चुका हूँ। मुझमें कुछ कमियाँ हैं जिन्हें मैं दूर करना चाहता हूँ। और इसी कारण मैं जीवित रहने का प्रयास करता हूँ। यह 'कैलोरी' गिनना जीवित रहने के लिए दैनिक अभ्यास का हिस्सा है।' इसके बाद बापूजी सैर के लिए तैयार हो गए। उन्होंने पैर धोए और बा से मिलने आए। उस समय बा मेरी गोद में लेटी थीं। बापू ने पूछा, 'क्या मैं सैर पर जा सकता हूँ?' बा ने मना कर दिया। बा ने पहले कभी सैर पर जाने के उनके अनुरोध को मना नहीं किया था, चाहे उनका स्वास्थ्य

कितना भी खराब क्यों न रहा हो। उन्होंने आज मना कर दिया। शायद इसलिए कि यह उनका आखिरी दिन था। बा बापू की गोद में सिर रखकर बैठ गईं। मैंने 'राम धुन' गाई। बा बिल्कुल शांत लेकिन उदास चेहरे के साथ सिर बापू से सटाकर बैठी रहीं। बापू ने उनसे दो-तीन बार पूछा कि क्या वे सैर पर जा सकते हैं। लेकिन उन्हें उनकी सहमति नहीं मिली। उन्होंने कहा, 'मैं कहाँ जाऊँ? अरे राम!' बापूजी ने उत्तर दिया, 'तुम्हें और कहाँ जाना है?' अब तुम्हें राम जहाँ भी ले जाएँ, वहीं जाना होगा। उनकी गोद में जाओ। सांसारिक मोह-माया के बंधन तोड़कर तुम राम के साथ जा सकती हो। सोचो, अगर तुम मेरे पीछे जातीं, तो मैं लगातार तुम्हारी चिंता करती रहती। लेकिन तुम मेरी गोद में सिर रखकर जाओगी।' बा ने कहा, 'मुझे आज बहुत नींद आ रही है।' उसने माँगा

मूल पाठ में अंग्रेजी शब्द 'कैलोरी' 248 है।

कुछ चाय। हमने उन्हें ढाई औंस चाय दी। सुबह 9:30 बजे बापूजी और मैं टहलने निकले। हम पंद्रह मिनट तक चले। इस दौरान सुशीलाबेन बा के साथ थीं। हर पाँच मिनट में डॉक्टर साहब उनकी जाँच करते थे। यानी, एक डॉक्टर और एक नर्स हमेशा मौजूद रहते थे। टहलने के बाद बापूजी ने जल्दी से मालिश और स्नान किया। और उन्होंने मुझे खाना लाने को कहा। मैंने पूछा, 'क्या आप आज भी बादाम और काजू नहीं खाएँगे?' बापूजी ने उत्तर दिया, 'मैं इन्हें तभी खा सकता हूँ जब बा चली जाएँ या फिर से ठीक हो जाएँ। इसमें बहुत समय लगता है।' मैं उनके लिए मसली हुई सब्जियाँ और थोड़ा दूध और मक्खन ले आया। बापूजी ने 10-15 मिनट में अपना भोजन समाप्त किया और बा के पास आ गए। इस बीच, हम सभी ने भी एक-एक करके अपना भोजन किया। मैं लगभग 1 बजे सो गया। तब तक देवदशक आ चुके थे और गीता का पाठ कर रहे थे। पूज्यभाई बा के साथ थे। उनकी हालत बहुत नाज़ुक थी। उनकी नब्ज़ बहुत धीमी हो गई थी। यह कहना मुश्किल था कि बा कब हमें छोड़कर चली जाएंगी। मुझे नींद नहीं आ रही थी, इसलिए मैं 1:30 बजे उनके पास वापस आया। 2 बजे मनुबेन, संतोक काकीबा, देवदासका 249 और अन्य लोग आए। उन्होंने देवदासका से मानो धन्यवाद देते हुए कहा, 'पुत्र, तुमने मेरी बहुत सेवा की है। तुम इतनी बार यहाँ आए। खुश रहो और अपने भाग्य में जो लिखा है उसका आनंद लो।' ऐसा लग रहा था जैसे ये उनका आखिरी आशीर्वाद हो। दोपहर में सरकार ने तस्वीरें लेने की अनुमति दी। कनुभाई ने तस्वीरें लीं। उन्होंने बा के साथ मेरी एक भी तस्वीर नहीं ली। मैंने बापूजी से इस बारे में कहा, जिस पर उन्होंने जवाब दिया, 'तुम्हें तस्वीर की इच्छा नहीं रखनी चाहिए। तुमने बा की इतनी सेवा की है। उनकी छवि अपने हृदय में रखो। और क्या मायने रखता है?' अगर कोई हमारी तस्वीर नहीं खींचेगा, तो क्या हम जबरदस्ती तस्वीर खिंचवा सकते हैं?' मैं समझ गया और बापूजी के लिए गुड़ बनाने चला गया। इसी बीच, डॉक्टर साहब और सुशीलाबेन ने बापूजी से बा को इंजेक्शन लगवाने के बारे में बात की। बापूजी का पहला जवाब ना था। लेकिन देवदासका ने एक राय बताई।

249 इसमें विरोधाभास है, क्योंकि पहले उसने लिखा था कि वह लगभग 1 बजे आया था।

मूल पाठ में 250 अंग्रेजी शब्द हैं।

मूल पाठ में 251 अंग्रेजी शब्द हैं।

एक अमेरिकी डॉक्टर ने कहा था कि इस अवस्था में भी इलाज फायदेमंद हो सकता है, इसलिए बापूजी ने हाँ कह दी। लेकिन बाद में उन्हें एहसास हुआ कि इसमें बहुत सारे इंजेक्शन और दवाइयाँ लगेंगी, इसलिए उन्होंने मना कर दिया। बापूजी टहलने के लिए निकलने ही वाले थे कि बा भाई की गोद में थीं; उन्हें साँस लेने में तकलीफ हो रही थी। अचानक उन्होंने कहा, 'बापूजी!' बापूजी को बुलाया गया, उन्होंने बा को अपनी गोद में लिया और पूछा, 'तुम्हें क्या हो रहा है?' बा ने उत्तर दिया, 'मुझे नहीं पता, कुछ हो रहा है।' उनके शब्द बहुत दुख भरे थे। उनकी आँखें मानो ऊपर की ओर घूम रही थीं। सब लोग 'रामधुन' का जाप करने लगे—'राजा राम राम राम, सीता राम, राम, राम।' मैं भी दौड़कर आया। बापूजी ने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपना माथा उनके माथे पर इस तरह रख दिया जैसे उन्हें आशीर्वाद दे रहे हों। उन्होंने अपना जीवन साथ बिताया था, अब वे अंतिम क्षमा माँग रहे थे और उन्हें विदाई दे रहे थे। यह दृश्य हृदयविदारक और दुखद था। उनकी नब्ज़ रुक गई और उन्होंने अंतिम साँस ली। असहनीय दर्द थम गया। हम सब वहाँ मौजूद थे। सबकी आँखों में आँसू थे। देवदासक बा के चरणों में सिर रखकर रो रहा था। वह उन्हें जगाने के लिए 'बा, बा' पुकार रहा था। लेकिन बा अपने अंतिम घर पहुँच चुकी थीं। उन्होंने शाम 7:45 बजे अंतिम साँस ली। भगवान शंकर उन्हें अपने कैलाश ले गए, उस समय जब मंदिरों में शिवरात्रि के शुभ दिन विशेष पूजा-अर्चना हो रही थी। बापूजी कुछ देर तक काँपते रहे, लेकिन फिर उन्होंने खुद पर काबू पा लिया। उन्होंने देवदासक को सांत्वना दी। उन्होंने हमें कमरा खाली करने को कहा। हमने सारा सामान बरामदे में रख दिया। उन्होंने बा का मुँह बंद किया और उन्हें पलंग पर लिटा दिया। पलंग से मच्छरदानी हटा दी गई। इसी बीच भंडारी आया और पूछा, 'अंतिम संस्कार के संबंध में आपकी क्या इच्छा है?' बापूजी ने कहा, 'यदि पुत्र चाहें तो शव उन्हें सौंपा जा सकता है, या फिर जो मित्र रिश्तेदार जैसे हों उन्हें आने की अनुमति दी जा सकती है। हम यहीं अंतिम संस्कार कर सकते हैं।' अगर आप दोस्तों को अंदर आने की इजाज़त नहीं दे सकते, तो मैं नहीं चाहता कि जो रिश्तेदार पहले से यहाँ मौजूद हैं, वे भी रहें।' भंडारी ने सरकार से टेलीफोन पर परामर्श करने का वादा किया (253) और चले गए। इसी बीच बापूजी बा को बाथरूम ले गए (254)। कनुभाई और मैंने कमरा धोया और

मूल पाठ में 252 अंग्रेजी शब्द हैं।

मूल पाठ में 253 अंग्रेजी शब्द हैं।

मूल पाठ में 254 अंग्रेजी शब्द हैं।

मैंने थोड़ा सा गौमूत्र छिड़का। मैं घी का दीपक भी लाई थी। बापूजी ने सभी महिलाओं को अंदर जाकर बा को स्नान कराने की अनुमति दी। हम सब अंदर गए। इस दौरान माथुरदासभाई द्वार पर थे। उन्हें बा के निधन के बाद ही अंदर जाने दिया गया। बापूजी, सुशीलाबेन, मनुबेन और मैंने बा

के शरीर को स्नान कराया। उनके शरीर से थोड़ा मूत्र निकला। हममें से कुछ को लगा कि वह अभी भी जीवित हैं, लेकिन यह हमारी कल्पना मात्र थी। हमने उनके माथे पर सिंदूर लगाया। जब मैं सेवाग्राम में थी, तब बा ने मुझे लाल बॉर्डर वाली एक साड़ी सौंपी थी, जो बापूजी ने उनके लिए बनवाई थी। जब मैं यहाँ आई, तो मैंने यह साड़ी मंगवाई थी। उन्होंने मुझसे कहा था, 'अगर आश्रम में तलाशी और ज़ब्ती हो, तो तुम्हें इस साड़ी की किसी भी तरह रक्षा करनी होगी। क्योंकि मैं इसी साड़ी में दाह संस्कार करवाना चाहती हूँ।' हमने इस साड़ी को उनके चारों ओर लपेट दिया। हम उन्हें बापूजी के कमरे में ले आए। हमने उनका सिर उत्तर दिशा की ओर रखा। हमने चूने से उस क्षेत्र को चिह्नित कर दिया था। हमने जेल से मिली चादर बिछाई और उसके ऊपर गंगाजल में भीगी लाल किनारी वाली साड़ी में लिपटे बा के शरीर को रखा। हमने उनके बाल खुले रखे और बीच से मांग निकाली। हमने उनके चारों ओर फूल रखे। उनके चेहरे पर पहले कभी इतनी शांति नहीं थी। वह प्रकाश से दमक रहा था। हमने फूलों को सजाकर उनके माथे पर सिंदूर लगाया। हमने उनकी चूड़ियाँ उतार दीं और बापू के सूत का एक-एक गुच्छा उनकी दोनों कलाईयों पर बाँध दिया और एक-एक गुच्छा उनके गले में भी डाल दिया। हमने उनके चारों ओर ढेर सारे फूल रखे; वह मानो साक्षात जगदंबा लग रही थीं। आज सुबह से वह कह रही थीं, 'मुझे सोने दो।' उन्होंने बड़ी सहजता और शांति से अंतिम नींद को गले लगा लिया, ठीक वैसे ही जैसे हम सब हर दिन सोते हैं। मैंने उनके चारों ओर अगरबत्ती जलाई। धीरे-धीरे, एक-एक करके सब सो गए। सुबह 9 बजे हमने अपनी दैनिक प्रार्थना की, जिसके बाद मनुबेन ने 'वैष्णव जन तो' गाया, हमने 'रघुपति राघव' की धुन की और गीता का पाठ किया। हम अठारह लोगों ने गीता का पाठ किया। शुरुआत में बापूजी ने कहा कि हममें से प्रत्येक को एक-एक प्रवचन पढ़ना चाहिए, लेकिन इससे हमारी लय बिगड़ने का खतरा था। सुशीलाबेन ने इस ओर ध्यान दिलाया। हम सभी अठारह लोगों ने एक साथ गीता का पाठ किया। बापूजी पाठ में पूरी तरह लीन थे। गीता का पाठ करने वालों में राधाबेन, सुशीलाबेन, प्यारेलालजी, कनुभाई, देवदासका, जमनादासका, स्वामी आनंद, प्रभावतीबेन और मैं शामिल थे। पाठ पूरा होने में सवा घंटा लगा। शांतिकुमारभाई हमारे बाद पहुंचे।

मनु गांधी की डायरी 121

पाठ पूरा हो गया। इसी बीच, सरकार ने यह संदेश भी भेजा कि सौ या उससे भी अधिक मित्र अंतिम संस्कार में शामिल हो सकते हैं। शांति कुमारभाई और लेडी थ 255 256 एकरसे ने उन लोगों की सूची बनाई जिन्हें फोन पर सूचित किया जाना था। 257 स्वामीकाका सूची लेकर गईं, लेकिन बापूजी ने कहा कि केवल शामलदासकाका को ही फोन किया जाना चाहिए। 258 बाकी लोग कैसे पहुँचते? यह तय किया गया कि जो नहीं पहुँच सकते उनका इंतज़ार नहीं किया जाएगा। वे लगभग 12 बजे रात को चले गए। बापूजी मुझे स्नानघर ले गए 259 और मुझे बा का बालों में बंधा हुआ धागा दिया, जिसे उन्होंने धोया था, साथ ही बा की चूड़ी और गले में पहनी हुई माला भी दी। उन्होंने कहा, 'बा की इस्तेमाल की हुई चीजें तुम्हें मिलनी चाहिए।' आखिरकार, हम सब सो गए। बापूजी ने मुझे रात भर जागने से मना किया। मैं रात 1 बजे बिस्तर पर लेट गया। लेकिन मैं कैसे सो सकता था? इन दिनों मुझे ज्यादा नींद नहीं आ रही है, लेकिन आज रात मैं कैसे सोता? अब तक मैं व्यस्त थी, जिसकी वजह से मैं अपने काम साहस से कर पाती थी। मेरी माँ का देहांत बारह वर्ष की आयु में हुआ और पंद्रह वर्ष की आयु में मुझे एक ऐसी माँ मिली जिसे मैं 'बा' कह सकती थी। लेकिन, अगर किसी की किस्मत में माँ का न होना लिखा हो, तो

उसे माँ कैसे मिलेगी? कल, यानी 21 तारीख को, मुझे यहाँ आए ग्यारह महीने हो गए। बा अब इस दुनिया में नहीं हैं। कई लोगों ने मुझे लिखा कि मैं बहुत भाग्यशाली हूँ। लेकिन अगर मैं सचमुच भाग्यशाली होती, तो बा क्यों चली जातीं? मैं बारह महीने भी उनकी सेवा नहीं कर पाई। 'मोतीबा! अगर आप मुझसे कुछ शब्द भी कहें तो मैं रो दूँगी। इससे आपको बहुत दुख हुआ है। मैंने बहुत सी गलतियाँ की हैं, कुछ मुझे पता हैं और कुछ मुझे नहीं पता। क्या आप मुझे क्षमा करेंगी! मेरा स्वभाव ऐसा है कि कुछ शब्द सुनकर भी मेरी आँखों से आँसू बहने लगते हैं। कृपया इसे दिल पर न लें। आप हमें बच्चों को छोड़कर स्वर्ग सिधार गई हैं। मैं आपका जितना भी धन्यवाद करूँ कम है।

255 लेडी प्रेमलीला विठ्ठलदास ठाकरसे (1894-1977), महिला शिक्षा के उद्देश्य के लिए प्रतिबद्ध, अध्यक्ष, कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट (1956-72), कुलपति, एसएनडीटी विश्वविद्यालय।

मूल पाठ में 256 अंग्रेजी शब्द हैं।

मूल पाठ में 257 अंग्रेजी शब्द हैं।

मूल पाठ में 258 अंग्रेजी शब्द हैं।

मूल पाठ में 259 अंग्रेजी शब्द हैं।

मैं ईश्वर की कितनी आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे आपकी थोड़ी सी सेवा करने का यह अवसर दिया।' तीन बजे सुशीलाबेन ने मुझे उसी स्नेह से अपने पास खींच लिया जैसे युक्तिबेन करती हैं। उन्होंने मुझे गले लगाया। मैं रो पड़ी। उन्होंने मुझे समझाया कि हमारे आँसू बा की आत्मा को पीड़ा पहुँचाते हैं। आत्मा अपने आगे के सफर का फैसला नहीं कर सकती। जब हम रोते हैं, तो आत्मा हमारी ओर खिंची चली आती है, आत्मा यह तय नहीं कर पाती कि हमारे पास आए या अपने आगे के सफर पर चली जाए। आत्मा का गंतव्य कहीं और है। इसलिए हमें रोना नहीं चाहिए। इससे मुझे कुछ सांत्वना मिली। लेकिन तस्वीरें और यादें उमड़ पड़ीं। मेरी माँ की मृत्यु कितनी दुखद थी! वे दृश्य फिर से याद आ गए।

दिनांक: 23.2.44

अंततः सुबह हो गई। हम सब प्रार्थना के लिए एकत्रित हुए। प्रार्थना सुबह 6 बजे हुई। मैंने थोड़ा रस निकाला। बापूजी ने थोड़ा रस और गुड़ लिया और तुरंत बा के पार्थिव शरीर के पास बैठ गए। हम सब अपने-अपने काम पूरे करने के बाद अंदर चले गए। 7:30 बजे तक बाहर से लोग आने लगे। सबसे पहले खुर्शेदबेन आईं। उसके बाद एक-एक करके लोग आते रहे। जिन लोगों को मैं जानती थी उनमें सुमतिबेन (शांतिकुमारभाई की पत्नी), सावित्रीभाभी, कमल नयनजी, कमलबेन, कृष्ण हुथीसिंह और अन्य लोग शामिल थे। उनमें से कई लोगों ने बा के पार्थिव शरीर

पर फूल और मालाएं चढ़ाईं। बा को सुगंधित फूलों के बिस्तर पर लिटाया गया था। उनके माथे पर अभूतपूर्व प्रकाश था। कनुभाई ने कई तस्वीरें खींचीं। लीलावतीबेन आईं और बापू की गोद में सिर रखकर रोने लगीं। मनुबेन ने 9:30 बजे आरती की। 'वैष्णव जन' गीत गाया गया। भाई भी मौजूद थे; उन्होंने बहुत काम किया। यह उनका सौभाग्य है, उनकी नियति है, वरना कराची से इतनी दूर होने के बावजूद वे आगा खान पैलेस में कैसे होते?

हम बा के पार्थिव शरीर को बरामदे में ले आए। हमने उसे बाँस की गाड़ी पर रखा। उनका चेहरा ढका हुआ नहीं था। हम सबने 'राजा राम राम, सीता राम राम' का जाप किया और उन्हें महादेवभाई की समाधि स्थल पर ले गए। वे अक्सर कहती थीं, 'मैं दाह संस्कार करवाना चाहती हूँ।'

260 मूल अंग्रेजी शब्द।

मनु गांधी की डायरी 123

महादेव के साथ।' आज उनके शब्द सच साबित हुए; महादेवभाई के साथ रहने का उनका समय आ गया था। मैंने सिंदूर और हल्दी छिड़की। बापू और बाकी सभी एक तरफ खड़े थे। देवदासक ने सभी रस्में निभाईं। बापू ने देवदासक से कहा, 'मैंने महादेव का अंतिम संस्कार किया। तुम बा का अंतिम संस्कार करो।' हरिलालकका भी उपस्थित थे। शांतिकुमारभाई, कानूभाई और अन्य लोगों ने चिता तैयार की। बा को लकड़ियों के ढेर पर लिटाया गया और कुछ लकड़ियाँ उन पर भी रखी गईं! कटेली साहब ने बगीचे से चंदन का पेड़ कटवाकर सुखाया; उसे भी चिता पर रखा गया। यह पहली बार था जब मैंने मृत्यु और दाह संस्कार देखा था। बा जीवित रहते हम सबकी देखभाल करती थीं, दिन भर काम करती थीं और उन्होंने यह सब छोड़कर शाश्वत नींद को स्वीकार कर लिया। सभी तैयारियों के बाद, बापूजी ने हमें प्रार्थना करवाई। हमने प्रार्थना की शुरुआत ईसा वास्यम से की, उसके बाद असतो मा सद गमय, मज़्दा का पाठ किया। मीराबेन ने एक अंग्रेज़ी भजन गाया, फिर मंगल मंदिर खोलो, गीता का बारहवाँ प्रवचन पढ़ा गया और प्रार्थना के अंत में हमने रामधुन गाया। इसके बाद चिता प्रज्वलित की गई। कुछ देर तक हम चिता के चारों ओर खड़े और बैठे रहे, फिर थोड़ी दूर जाकर एक अंबली वृक्ष के नीचे बैठ गए। कुछ लोग कुर्सियों पर बैठे थे तो कुछ ज़मीन पर। मृदुलाबेन ने मुझे जेल में बापू की गतिविधियों के बारे में बताया। शरीर में बहुत अधिक जल जमा हो गया था, इसलिए उसे पूरी तरह जलने में लगभग साढ़े छह घंटे लगे। एक समय तो शरीर चिता से गिर भी गया। अधजला शरीर एक भयानक दृश्य था। शरीर को लाठियों से उठाकर फिर से चिता पर रखा गया। शाम 4:40 बजे चिता पूरी तरह जल गई। हम मुरझाए चेहरों के साथ अंदर गए। बापूजी ने आगंतुकों को विदाई दी और फिर स्नान किया। हम सबने स्नान किया और नींबू पानी पिया। मैंने उस दिन शाम 5 बजे कुछ पिया। बा की मृत्यु के बाद से मैंने पानी की एक घूँट तक नहीं पी थी क्योंकि मुझे बताया गया था कि दाह संस्कार से पहले पानी पीना भी मना है। हम सब बहुत थके हुए थे। बापूजी ने रोटी, सब्जियाँ और दूध खाया। हम सबने भी भोजन किया। जब हम भोजन समाप्त करने ही वाले थे, भंडारी आया। बापू ने उससे कहा, 'अगर मनु और प्रभा यहीं कैदी बनकर रह सकते, तो हम दोनों को यह अच्छा लगेगा। प्रभा यहाँ कैदी बनकर रह सकती है, लेकिन अगर यह संभव नहीं हुआ तो वह उस जेल में वापस जाना पसंद करेगी जहाँ से वह आई थी। और मैं मनु को पढ़ाना चाहता हूँ।' 124 मनु

इसके अलावा कोई और कारण नहीं है। अब तक वह अपने काम में व्यस्त रहती थी और पढ़ाई में ज्यादा प्रगति नहीं कर पा रही थी। लेकिन अब वह इन जिम्मेदारियों से मुक्त है। हम दोनों की यही इच्छा है कि उसका यहीं रहना उसके लिए अच्छा होगा। कानू को वापस जाना चाहिए क्योंकि वह बाहर महत्वपूर्ण काम कर रहा है। इसके अलावा, उसके पिता को भी लगता है कि उसे बिना काम के यहां नहीं रहना चाहिए।' इस बातचीत के बाद भंडारी चले गए। उसी समय रामदस्काका पहुंचे। उन्होंने बापूजी के चरण छुए। उनकी आंखों से आंसू बह रहे थे। उन्हें इस बात का दुख था कि वे बा को जीवित रहते हुए नहीं देख पाए। बापूजी ने उन्हें सांत्वना दी कि अगर वे बा के जीवित रहते हुए आए होते, तो उन्हें उनकी पीड़ा में देख पाते। उन्होंने स्नान किया। मैंने उन्हें भोजन परोसा। उन्होंने मुझसे बातचीत की। दोनों भाई प्यारेलालजी और सुशीलाबेन के साथ देर रात तक बातें करते रहे होंगे। मैं अपने बिस्तर पर चली गई। मुझे नींद नहीं आ रही थी। आधी रात के आसपास थोड़ी देर के लिए सो गई और फिर जाग गई। मैं बा के बारे में, मृत्यु की पीड़ा और उसकी आत्मा की आगे की यात्रा के बारे में सोचता रहा।

दिनांक: 24.2.44

देवदासका ने सुबह की प्रार्थना के दौरान 'आत्म तत्व चिंत्यो नहीं' गाया। सभी लोग सुबह की प्रार्थना में उपस्थित थे। प्रार्थना के बाद कोई भी सोने नहीं गया। मैंने चरखा चलाना शुरू किया। बापूजी भी लेटे नहीं, इसलिए मैंने उनके लिए थोड़ा रस निकाला। मैंने कुछ रोज़मर्रा के काम किए, स्नान किया, कपड़े धोए और नाश्ता बनाया; तब तक सुबह की सैर का समय हो गया था। आज हमें घर में कौन रोकेगा? हम सब साथ-साथ चले। हम सबने बा की यादों के बारे में बातें कीं। बापूजी बा की मृत्यु के सदमे को ज़ाहिर नहीं होने देते, लेकिन यह स्पष्ट है कि उनका दिल बा के लिए तड़प रहा है। बाहरी तौर पर वे मज़ाक करते हैं और सामान्य बातें करते हैं। हमने चिता पर चढ़ाने के लिए फूल इकट्ठा किए। मैंने भी बहुत सारे फूल इकट्ठा किए। हमने अंतिम संस्कार की राख भी इकट्ठा की। हमने अंतिम संस्कार की चिता पर पाँच हरी चूड़ियाँ रखी थीं। आग में होने और लकड़ी के लट्ठों के बीच रखे होने के बावजूद ये पाँचों चूड़ियाँ साबुत और बिना टूटी हुई मिलीं। सभी ने कहा कि यह शाश्वत सौभाग्य का संकेत है। यह चमत्कार था! वरना, पाँचों चूड़ियाँ साबुत और अक्षुण्ण कैसे हो सकती थीं? प्रभावतीबेन के पास ये सभी पाँचों चूड़ियाँ हैं।

दिनांक: 25.2.44

आज तीनों भाइयों को यहाँ रहने की अनुमति का अंतिम दिन था। आज सुबह एक पुजारी आए और उन्होंने कुछ अनुष्ठान करवाए। अस्थियाँ और हड्डियाँ एकत्र की गईं। इनमें से कुछ को इलाहाबाद ले जाया जाएगा। मालवीय जी ने इस संबंध में एक टेलीग्राम भेजा है। शेष अस्थियों को कल सुबह आनंदी नदी में विसर्जित किया जाएगा। अनेक टेलीग्राम और पत्र प्राप्त हुए हैं।

और क्यों न हों? भारत माता अब हमारे बीच नहीं हैं, और उनकी कौन सी संतान दुखी न हुई हो? प्रभाबेन, सुशीलबेन और मैंने कुछ अस्थियाँ रखीं। हमने अस्थियों को उन्हीं बोतलों में रखा जिनमें पहले बा की दवाइयाँ रखी जाती थीं। हमने उन पर बा का नाम, उनकी मृत्यु और अंतिम संस्कार की तिथियाँ लिखीं। हमने अलमारियों की सफाई भी की।

Date: 5.5.44 261 262 Parna Kutir

डायरी लिखना रुक गया। क्योंकि यह निश्चित नहीं था कि मुझे कब जाने का आदेश मिलेगा और डायरी पीछे छूट जाएगी या मुझे उसे बाहर ले जाने की अनुमति नहीं मिलेगी। लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था।

आज हम खेल से वापस आ रहे थे तभी कटेली साहब को आदेश मिला कि हम सबको अधीक्षक के पास भेजा जाए। हमें इस आदेश का कारण समझ नहीं आया। लेकिन हमें एहसास हुआ कि कुछ गड़बड़ है। करीब 6:30 या 6:45 बजे भंडारी आए और कहा कि हम सबको अगले दिन सुबह 8 बजे रिहा कर दिया जाएगा। सरकार ने बापूजी को उनकी खराब सेहत के कारण रिहा करने का फैसला किया है। 263

261 26.2.44 से 4.5.44 तक कोई डायरी प्रविष्टियाँ नहीं हैं।

262 पुणे में लेडी प्रेमिलिया ठाकरे का घर।

263 28.4.44 को सरकार ने मनु गांधी जी के खराब स्वास्थ्य पर एक चिकित्सा बुलेटिन जारी किया था। 4 मई 1944 को भारत के राज्य सचिव को भेजे गए एक तार में वायसराय ने बताया, 'नवीनतम रिपोर्टों से गांधी जी के एनीमिया, रक्तचाप और गुर्दे की कार्यप्रणाली में लगातार गिरावट दिख रही है, जो डॉ. बी.सी. रॉय और सर्जन-जनरल कैंडी की राय में, हृदय या मस्तिष्क में रक्त का थक्का जमने (क्रोनिक थ्रोम्बोसिस) का कारण बन सकती है... यह मनु गांधी जी की डायरी में वर्णित एक मामला है।

कनुभाई को 4 तारीख को बापूजी की देखभाल के लिए जेल जाने की अनुमति मिल गई थी। इसलिए हममें से कोई भी रिहाई के इस आदेश के लिए तैयार नहीं था। रिहाई और तबादले का विषय रोज़ाना चर्चा का विषय था। वे मुझसे कहते थे कि सबसे पहले मुझे ही भेजा जाएगा। लेकिन ईश्वर में मेरा अटूट विश्वास था, मुझे बापू से अलग होने का डर नहीं था; और ऐसा ही हुआ। मैं बापूजी के लिए गुड़ बनाने के लिए रसोई में गई। कुछ समय से हम सैनिकों से कोई काम नहीं लेते। रामनरेश भावुक हो गया। उसने कहा, 'माँ, मुझे आज गुड़ बनाने की अनुमति दीजिए।' मुझे भी लगा कि उसे ऐसा करने देना चाहिए, यहाँ तक कि सुशीलाबेन ने भी कहा, 'उसे करने दो।' उसने गुड़ बनाया, जबकि हम दूसरे कामों में व्यस्त हो गए। बापूजी टहलने के लिए बाहर गए; हम सब भी समाधि पर गए। हम सब यही सोच रहे थे कि अगर रिहाई के आदेश कुछ महीने पहले जारी हो जाते, तो बापूजी बच जाते और ठीक हो जाते। लेकिन ईश्वर की इच्छा पूरी हुई। आज समाधि पर दीपक जलाने का हमारा आखिरी दिन था। मैं प्रतिदिन बा और महादेवभाई

से प्रार्थना करती थी कि मैं बापूजी की पूर्ण सेवा कर सकूँ, और मुझे उनका आशीर्वाद प्राप्त हुआ और मैं उनसे विमुख नहीं हुई।

सैर के बाद हमने शाम की प्रार्थना की, जिसमें हमने 'हरि ने भजता' गीत गाया। मीराबेन भी प्रार्थना में शामिल हुईं। प्रार्थना का माहौल गंभीर था।

मैंने बापूजी की मालिश की। टहलते और मालिश करते समय बापूजी ने कहा, 'मुझे डर लग रहा है। मेरे मन पर बहुत दबाव है। मुझे नहीं पता कि बाहर जाकर मैं क्या कर पाऊंगा। मुझमें कोई उत्साह नहीं है।' हममें से कोई भी इस खबर से उत्साहित नहीं था—हम कैसे हो सकते थे? हमने इक्कीस महीनों के अंतराल में अपने दो प्रियजनों को अलविदा कहा था।

मेरा मानना है कि हमें चिकित्सकीय राय का पालन करना चाहिए। गांधी जी के स्वास्थ्य में इतनी गिरावट आ गई है कि सक्रिय राजनीति में उनकी भागीदारी असंभव प्रतीत होती है और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि हिरासत में उनकी मृत्यु से सरकार के विरुद्ध भावनाएँ और तीव्र हो जाएँगी... इसलिए मैं बॉम्बे सरकार को निर्देश दे रहा हूँ कि गांधी जी को रविवार, 6 मई को सुबह 8 बजे बिना शर्त रिहा कर दिया जाए और यह घोषणा की जाए कि रिहाई पूरी तरह से चिकित्सकीय आधार पर है और मैं सभी राज्यपालों को इसकी सूचना दे रहा हूँ। सत्ता का हस्तांतरण, खंड IV, पृष्ठ 948-9।

मनु गांधी की डायरी 127

मालिश के बाद हम सामान पैक करने में जुट गए। 264 सुशीलाबेन और मैं एक कमरे में काम करने लगे, जबकि प्यारेलालभाई को अपना सामान, किताबें और स्टेशनरी पैक करनी थी जो उन्होंने पाँच वर्षों में इकट्ठा की थी। 265 इसलिए हममें से कोई भी रात को ज़्यादा नहीं सो पाया। सुशीलाबेन और मैं सुबह 4:15 बजे पलंग पर लेट गए। पिछले डेढ़ साल से हम बहनों की तरह करीब आ गए हैं। लेकिन अब हमें आज़ाद होना है। उन्होंने मुझे छोटी बहन की तरह माना है। उन्होंने प्यार से मुझे सुलाया, लेकिन उनके स्नेह ने मुझे अभिभूत कर दिया और मैं रोने लगी। हम दोनों में से कोई भी सो नहीं पाया। डॉक्टर साहब ने 266 267 सुबह 2:30 बजे तक सामान पैक कर लिया। मीराबेन ने भी सामान पैक कर लिया था।

एक महीने पहले ही उसका सामान पैक हो गया था, फिर भी वह रात 1 बजे तक काम करती रही। उसने सुशीलाबेन का सामान पैक करने में भी मदद की। मैं सुबह 3:45 बजे नहाने गई और उसके बाद बचा हुआ काम पूरा किया। हम सब बहुत थके हुए थे। बापूजी को भी नींद नहीं आ रही थी, उन्हें किसी तरह का बोझ महसूस हो रहा था।

दिनांक: 6.5.44

बापूजी सुबह 5 बजे उठे। स्वास्थ्य संबंधी सूचना जारी की गई। डॉ. गिल्डर, सुशीलाबेन, बापूजी, कनुभाई, कटेली साहब और मैं प्रार्थना में शामिल हुए। प्रार्थना के बाद कटेली साहब ने

बापूजी को पचहत्तर रुपये का पर्स भेंट किया और साष्टांग दंडवत प्रणाम किया। वे एक स्नेही भक्त हैं। उनके जैसा अधीक्षक मिलना दुर्लभ है। प्रार्थना के बाद मैंने रस निकाला और प्यारेलालभाई को सामान पैक करने में मदद की। 7 बजे हम समाधि पर गए। यह हमारी अंतिम विदाई थी। कौन जानता है कि बापूजी फिर कब यहाँ आ पाएंगे? मैंने समाधि पर कई अगरबत्तियाँ जलाईं। वहाँ कई फूल भी थे। हमने इस क्रम में प्रार्थना की: (1) ईसा वास्यम; (2) आस्तो मा सद्गमय; (3) अज़ौबिला; (4) मज़्दा; (5) मुकम करोति वाचलम्; और अंत में (6) बारहवाँ प्रवचन। हमने उनके समक्ष सिर झुकाया।

264 मूल में अंग्रेजी शब्द।

265 मूल अंग्रेजी शब्द।

266 मूल अंग्रेजी शब्द।

267 मूल अंग्रेजी शब्द।

268 मूल अंग्रेजी शब्द।

मैंने अंतिम बार समाधि ली और क्षमा मांगी। प्रार्थना के दौरान मैं मुश्किल से बोल पा रही थी। माहौल गमगीन था। हम वापस मुड़ गए। जैसे ही घड़ी में 8 बजे, भंडारी साहब आए। बापू, सुशीलाबेन और भंडारी पहले रथ से गए। बापू ने हमें 8 बजे से पहले तैयार रहने का निर्देश दिया था क्योंकि वे एक मिनट की भी देरी नहीं चाहते थे। डॉक्टर साहब, मीराबेन और मुझे दूसरे रथ से ले जाया गया। प्यारेलालभाई और कानूभाई तीसरे रथ में थे। यहाँ पहुँचकर मैंने सभी सामान की जाँच की और सब्जियाँ और अन्य चीजें तैयार करने के लिए रसोई में नीचे गई। बापूजी ने फल, कच्ची सब्जियाँ और घी खाया। दिन भर काम रहता है। सुशीलाबेन के पास एक पल भी खाली नहीं होता।

दिनांक: 11.5.44 270

Today we reached Mumbai. Bapuji is Shantikumarbhai’s guest.

दिनांक: 18.5.44 271

आज हम उस जगह को देखने गए जहां धमाका संख्या 272 हुआ था। बापूजी हमारे साथ थे।

दिनांक: 20.5.44 273

बापूजी ने आज कुछ पत्र लिखे। उन्होंने मुझे शाम 6:30 बजे फोन किया और राजकोट वापस जाने के बारे में लिखा तथा मुझसे भाई को उसकी एक प्रति भेजने को कहा, जो मैंने भेज दी। बापूजी का पहला पत्र दुर्गाबेन को था।

269 लेडी थैकरसे का घर, 'पर्णा कुटीर' पुणे में, एम.के.जी. 11 मई 1944 तक वहीं रहे।

270 7.5.44 से 10.5.44 तक कोई प्रविष्टियाँ नहीं हैं।

271 दिनांक 12.5.44 से 17.5.44 तक कोई प्रविष्टियाँ नहीं हैं।

272 14.4.44 को बॉम्बे डॉक पर विस्फोट और आग लगी थी।

273 19.5.44 के लिए कोई प्रविष्टि नहीं।

मनु गांधी की डायरी 129

सी.एच. दुर्गा 274, 20 मई 1944

मुझे अभी अपाहिज समझा जा सकता है। ईश्वर महात्मा के अभिमान को भी स्थायी नहीं रहने देता। ये पंक्तियाँ सबके लिए हैं। एक बार जब मैं पत्र लिखना शुरू कर देता हूँ, तो हर कोई मुझसे एक पत्र की उम्मीद करता है, लेकिन इससे पहले कि मैं उनकी इच्छा पूरी कर पाऊँ, शायद मैं वहाँ न रहूँ। मुझे विस्तार से लिखें। जो भी लिखना चाहें, लिखें।

बापू 275 की ओर से आशीर्वाद

बापू ने मेरे बारे में एक पत्र लिखा था।

जुहू, 20 मई, 1944

CHI. NARANDAS

मैंने बिस्तर पर लेटे-लेटे आपके लिए एक लेख का मसौदा तैयार किया। मुझे डर था कि इसमें कुछ गलतियाँ होंगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मुझे स्याही से इसकी शुद्ध प्रति बनाने का मन नहीं हुआ। यदि आप मसौदे में कोई बदलाव करवाना चाहते हैं, तो इसे मुझे वापस भेज दें। मैं आपके सुझावों पर विचार करूँगा और एक शुद्ध मसौदा तैयार करके आपको भेज दूँगा। हमारे पास अभी भी पर्याप्त समय है।

दूसरे, आप मनु (जयसुखलाल की बेटी) को जानते हैं; उसने मुझ पर बहुत अच्छा प्रभाव डाला है। मैंने अपने परिवार में किसी और लड़की में उसके जैसी सेवाभाव की भावना नहीं देखी। जिस समर्पण से उसने बा की देखभाल की, उसने मेरा दिल जीत लिया है। वह मेरे साथ रहना चाहती

है, लेकिन मैं ऐसा नहीं चाहता। मैं इस समय बहुत दुखी हूँ, इसलिए उसे कुछ नहीं दे सकता। बाकी लोग अपने काम में व्यस्त हैं। और वे उसे अभी क्या दे सकते हैं? उसकी शिक्षा।

274 मनुबेन ने तिथि 12.5.1944 लिखी है।

275 यह भी देखें, सीडब्लूएमजी, खंड 77, पृष्ठ 276।

276 डायरी और अक्षर देह (खंड 77, पृष्ठ 266) में प्रकाशित पत्र में अंतर है। डायरी में शब्द 'भूल' है, जबकि अक्षर देह में 'जांच-भूस', 'छंद-भूस' यानी सुधार है, इसलिए यहां अनुवाद सीडब्लूएमजी (खंड 77, पृष्ठ 278) के अनुवाद से भिन्न है।

277 पा डायरी में यह शब्द (बर्तन) है, अक्षर देह में यह भाजन (बर्तन) है, जबकि सीडब्लूएमजी ने इसका अनुवाद 'नरकट' के रूप में किया है, 'बर्तन' शब्द मूल के अधिक निकट है 'नरकट' की तुलना में।

यह नियमित रूप से जारी रहना चाहिए। यह तभी संभव है जब वह आपके साथ हो। वह उस प्रकार की लड़की नहीं है जिसकी उपस्थिति आपको परेशान करे। वह सरल हृदय की है। वह पढ़ाई में ठीक है, उसकी आवाज अच्छी है और उसका स्वास्थ्य भी काफी अच्छा है। उसे अपने स्वास्थ्य की देखभाल करना नहीं आता। सेवा करते समय वह अपने बारे में सब कुछ भूल जाती है। मैं चाहता हूँ कि संस्कृत और गुजराती का उसका ज्ञान बढ़े। मैंने स्वयं उसे गीता पढ़ाई है। उसका उच्चारण काफी अच्छा है। पुरुषोत्तम या आप उसके उच्चारण को और बेहतर बनाने में उसकी मदद कर सकते हैं। जयशुखलाल उसके खर्च का भुगतान करेगा। आप उससे मुझे एक तार भेजने के लिए कह सकते हैं, चाहे आप उसे प्राप्त कर सकें या नहीं। मैं उसे पहले उपलब्ध एस्कॉर्ट के साथ भेजने का इरादा रखता हूँ। यदि आप मना करना चाहते हैं, तो कहने में संकोच न करें।

से आशीर्वाद

बापू

'संशोधित नहीं किया गया।'

20 मई, 1944

BHAI SHRI GAGAN 283 ,

मैंने महादेव पर आपका लेख पढ़ा। क्या मैं आपको आपके यहाँ रहते हुए महादेव से संबंधित कोई काम सौंप सकता हूँ? नारायण 284 उपस्थित होना पसंद नहीं करते।

278 ठीक डायरी में यह शब्द शाब्दिक रूप से 'ठीक है' है, जबकि अक्षर देहा में यह शब्द 'ठोठ' है, 'सुस्त', सीडब्ल्यूएमजी ने इसका अनुवाद 'सुस्त' के रूप में किया है, जबकि यहां डायरी के करीब का अर्थ बरकरार रखा गया है।

279 अक्षर देहा में दो वाक्य हैं जो डायरी में नहीं हैं। इन्हें सीडब्ल्यूएमजी में इस प्रकार अनुवादित किया गया है: 'वह आज्ञाकारी है। आप उसे जो भी काम देंगे, वह करेगी।'

280 उ र डायरी में और अक्षर देहा में भी इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है ‘’ उच्चारण। सीडब्ल्यूएमजी में इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है, ‘वह इसे काफी अच्छी तरह से सुना सकती है।’

281 प्राप्तकर्ता का पुत्र।

282 यह भी देखें, ‘मनु गांधी को मौन दिवस का नोट”, सीडब्ल्यूएमजी खंड 77, पृष्ठ 240।

283 Gagan Vihari Lallubhai Mehta.

284 Mahadev Desai’s son Narayan Desai.

स्कूल या कॉलेज, उसने जो कुछ भी सीखा है, वह महादेव की कृपा से ही सीखा है। मैं अपनी वर्तमान स्थिति में उसके लिए कुछ नहीं कर सकता। मुझे नहीं लगता कि ठीक होने के बाद मैं मुक्त हो पाऊंगा। जब तक मैं जेल से बाहर हूं, वह मेरे साथ रहना चाहता है। अगर आप उसके लिए थोड़ा समय निकाल सकें तो अच्छा होगा। आप उसे अर्थशास्त्र, संस्कृत, बंगाली आदि पढ़ा सकते हैं। अगर आपको लगता है कि इससे आप पर बोझ पड़ेगा, तो कृपया इसे न करें। मैंने यह अनुरोध इसलिए किया है क्योंकि मैंने आपके लेख में महादेव के प्रति आपका असीम प्रेम देखा।

दूसरे, श्रीमती सौदामिनी 286 ने भी कृपापूर्वक मेरी हर संभव मदद करने की पेशकश की है। यदि ची. उमा 287 अब बीमार की तरह देखभाल नहीं करवाना चाहतीं, तो वे मुझे कुछ समय जरूर दें। मैं सोचूंगी कि वे क्या दे सकती हैं। कितना समय और कब, यह भी मुझे तय करना होगा। हो सकता है आप दोनों समय न निकाल पाएं। मुझे केवल अच्छे लोगों की संगति की प्यास है, इसलिए जो भी मदद मिले या जो भी उपलब्ध हो, मैं उसे स्वीकार करती हूं।

से आशीर्वाद

बापू।

CHI. VIJAYA 288

जुहू

20 मई, 1944

आज से मैं कुछ पत्र लिखने की स्वतंत्रता का प्रयोग कर रहा हूँ। 289 मैं 29 तारीख तक जुहू में हूँ। 290 फिर, शायद तीन सप्ताह के लिए, पुणे में। 29 तारीख को मेरी चुप्पी टूट जाएगी। लेकिन ज़रूर आना।

285 सीडब्ल्यूएमजी खंड 77, पृष्ठ 279 में, 'मुझे लगता है, यह मूल के करीब है, जैसा कि अक्षर देहा भी है।

286 प्राप्तकर्ता की पत्नी।

287 प्राप्तकर्ता की बेटी, उमा रंदेरिया।

288 विजया एम. पंचोली.

289 अक्षर देहा और सीडब्ल्यूएमजी में, स्वतंत्रता।

अक्षर देहा खंड 77, पृष्ठ 264 और सीडब्लूएमजी खंड 77 पृष्ठ 276 में दिनांक 29 है।

291 एमकेजी ने 14 मई 1944 से 15 दिनों तक मौन धारण किया, जबकि

Mumbai.

यहां... 292 293 मुझे खुशी है कि नानाभाई रिहा हो गए हैं। मेरे बारे में तो वही बात है जो आपने कही।

294 की ओर से शुभकामनाएं

बापू

CHI. NARANDAS, 295

मैंने आपकी वार्षिक रिपोर्ट का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया। मैंने अभी तक कुछ लिखना शुरू नहीं किया है। 296 मैंने केवल तीन बीमारों को पत्र लिखे हैं। लेकिन दरिद्रनारायण दुनिया के सबसे महान बीमार हैं। आप उनके सच्चे भक्त हैं। 297 आप मेरे जन्मदिन के अवसर पर रेंटिया बारास मनाते हैं और हर साल आप अपनी सेवा योजना को और अधिक कठोर बनाते हैं। इस वर्ष परीक्षा अब तक की सबसे कठिन होगी। आशा है आप इसमें सफल होंगे। 298 इस दौरान, जेल में रहते हुए, मैंने मार्क्स और एंगेल्स के बारे में और रूस में हुए महान प्रयोग के बारे में जो भी साहित्य मुझे मिलता था, उसे पढ़ा। उस प्रयोग और हमारे चरखे में कितना बड़ा अंतर है? 299 यहाँ भी, हमारे यहाँ की तरह, पूरे देश को यज्ञ में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाता है। लेकिन वहाँ और यहाँ के प्रयोग एक दूसरे से उतने ही भिन्न हैं जितना पूर्व पश्चिम से या उत्तर दक्षिण से।

हमारे चरखे और भाप या बिजली से चलने वाली उनकी मशीनों में कितना अंतर है? फिर भी मुझे वही पसंद है।

292 सी.डब्ल्यू.एम.जी. की निम्नलिखित पंक्तियाँ डायरी में नहीं हैं। उसने तीन बिंदु लगाकर इसे इंगित किया है।

293 Narsimhaprasad Kalidas Bhatt, Principal, Lok Bharati, Sanosara.

अक्षर देहा और सीडब्लूएमजी में 294, 'आप सभी को आशीर्वाद।'

295 डायरी में दिनांक नहीं दिया गया है, तिथि 20 मई, 1944 है।

296 यह पत्र स्पष्ट रूप से उसी दिन नरदास गांधी को संबोधित पत्र से पहले लिखा गया है। क्योंकि उस पत्र में एम.के.जी. ने एक लेख का मसौदा भेजने का उल्लेख किया है।

अक्षर देहा खंड 77, पृष्ठ 265 और सीडब्लूएमजी खंड 77, पृष्ठ 277 में 297 लिखा है, ‘आप उनके अद्वितीय भक्तों में से एक हैं।’ अंग्रेज़ी अनुवाद में आगे लिखा है, ‘केवल उनकी सेवा के लिए समर्पित।’ जो न तो अक्षर देहा में है और न ही डायरी में।

298 और एंगेल्स, न तो अक्षर देहा में और न ही सी.डब्ल्यू.एम.जी. में।

299 सीडब्ल्यूएमजी में, यह 'जैसा भारत में' पढ़ा जाता है, यह अनुवाद डायरी और अक्षर देहा में दिए गए अनुवाद के प्रति वफादार है।

मनु गांधी की डायरी 133

चरखे की घोंघे जैसी धीमी गति। चरखा अहिंसा का प्रतीक है, और अंततः अहिंसा की ही विजय होगी। यदि हम, जो स्वयं को चरखा चलाने वाला कहते हैं, कमजोर हैं, तो हम स्वयं को अपमानित करेंगे और अहिंसा को बदनाम करेंगे। आपका कार्य वास्तव में उत्कृष्ट है। लेकिन अब आपको इसमें कुछ नए बदलाव लाने चाहिए। चरखे का भी एक विज्ञान है, जैसे मशीनों का होता है। हमने अभी तक चरखे की 'तकनीक' को पूरी तरह से विकसित नहीं किया है। इसके लिए गहन अध्ययन की आवश्यकता है।

जिस प्रकार आस्था के बिना ज्ञान व्यर्थ है, उसी प्रकार ज्ञान के बिना आस्था अंधी है। 301

21 मई, 1944

CHI. KRISHNA CHANDRA

मैं बस आपका पत्र पढ़ लूँगा। इस समय मैं ज्यादा लिख नहीं सकता। इसलिए, मैं जो थोड़ा लिखूँ, उसी से संतुष्ट रहिएगा। मैं आप में से किसी एक को जो लिखूँ, उसे सभी को संबोधित

समझिएगा। बलवंत सिन्हा और अमतुस्सलाम के बीच के झगड़े के बारे में मुझे कुछ नहीं पता। मुझे लगता है कि मनुलाल का जाना अच्छा है। यह वांछनीय है कि वह कहीं बस जाए। लेकिन वह बेचैन आत्मा है और ऐसा नहीं करेगा। ईश्वर उसकी रक्षा करे क्योंकि उसकी मंशा अच्छी है। परणेकर 302 क्या कर रहा है?

भले ही मैं न लिखूं, जो लोग मुझे लिखना चाहते हैं वे लिख सकते हैं।

मुझे वहां जाने की कोई जल्दी नहीं है। मेरा मन तो वहीं है। अब मैं तभी आऊंगा जब मौसम थोड़ा शांत हो जाएगा। सन्नाटा 29 तारीख को टूटेगा। उसके बाद मैं डॉ. मेहता के सैनिटोरियम में कुछ सप्ताह बिताना चाहता हूं। सभी को शुभकामनाएं। शंकरन क्यों नाराज़ हैं?

से आशीर्वाद

बापू

मूल रूप में 300 अंग्रेजी शब्द।

301 अक्षर देहा और सीडब्ल्यूएमजी में, डायरी में 'बापू से आशीर्वाद' का उल्लेख नहीं है।

302 Yashwant Mahadev Parnekar of Sevagram Ashram Dairy.

303 यह CWMG वॉल्यूम 77 पृष्ठ 281 में 'गो' है, 'कम' मूल के प्रति अधिक वफादार है।

Letter to Pandit Madan Mohan Malaviyaji.

Pujya BHAI SAHEB 304

डॉक्टर ने मुझे ऐसे पत्र लिखने की अनुमति दी है। मैं आपके प्यार के लायक नहीं हूँ। मुझे पता है कि मैं आपकी इच्छाओं को पूरा करने में असमर्थ हूँ। 305

डॉक्टर मुझे लंबी यात्रा करने की इजाज़त नहीं देते। सच तो यह है कि मुझे ऐसा महसूस नहीं हो रहा जैसे मैं जेल से बाहर आ गया हूँ। क्या स्वास्थ्य के आधार पर रिहा होना वाकई कोई रिहाई है? देखते हैं, ठीक होने के बाद ईश्वर मुझे क्या रास्ता दिखाते हैं।

आपका छोटा भाई

CHI. GOMTI,

आज मुझे आप सबको पत्र लिखने का मन हुआ। यह पत्र आप सबके लिए है। विजयबेन और बाकी लोग मुझसे मिलने आए थे। मंजू भी आई थी।

मुझे किशोरलाल की चिंता नहीं है। वह इस दुनिया में सुख-दुख को चुपचाप सहने के लिए आया है।

मुझे भी तुम्हारे बारे में खबरें मिलती हैं। मुझे संतुष्टि महसूस होती है।

दुर्गा से कहो कि वह शांतिकुमार का निमंत्रण स्वीकार करके आ सकती है। लीलावती ने मुझे बताया है कि वह वहाँ दुखी है। हमें दुखी नहीं होना चाहिए। यह तो बस दार्शनिक बातें हैं। हालाँकि, वह एक कवयित्री है, इसलिए उसे यहाँ आने दो। उसे कम से कम कुछ मन की शांति तो मिलेगी। बाबलो यहाँ है, और यह भी एक कारण है कि उसे आना चाहिए। मैं भी, बेशक, यहाँ हूँ। उसे जो ठीक लगे, वही करने दो... 306 उससे कहो कि वह मुझे अपनी गतिविधियों के बारे में विस्तार से लिखे।

से आशीर्वाद

बापू

304 मूल रूप से हिंदी में, डायरी में दिनांकित नहीं, यह 21.5.1944 का है।

305 पंडित मालवीय ने 20 मई, 1944 को एमकेजी को एक टेलीग्राम भेजा था: 'यदि चिकित्सक अनुमति दें, तो सुझाव है कि आप दो महीने इलाहाबाद में रहें, परामर्श आवश्यक है, यह एक महत्वपूर्ण मामला है। जब आपका स्वास्थ्य ठीक हो जाए तो आपसे मिलने की इच्छा है।' एमकेजी ने उसी दिन टेलीग्राम द्वारा उत्तर भेजा था। 'आपके सौजन्यपूर्ण पत्र के लिए धन्यवाद। चिकित्सक इस तरह की यात्रा की अनुमति नहीं देंगे। सुझाव है कि महीने के अंत के बाद संदेशवाहक के माध्यम से बात करें। तब तक पूर्ण मौन।' देखें, सीडब्ल्यूएमजी, खंड 77, पृष्ठ 280

306 स्रोत में चूक, साथ ही सीडब्ल्यूएमजी, खंड 77, पृष्ठ 283 और अक्षर देहा खंड 77 पृष्ठ 271 में भी।

निम्नलिखित टिप्पणियाँ और प्रविष्टियाँ कालानुक्रमिक क्रम में नहीं हैं; इन्हें यहाँ डायरी में जिस क्रम में प्रकट हुए हैं, उसी क्रम में अनुवादित किया गया है।307

दिनांक: 20.5.1944

आज शांति कुमारभाई के घर पर फिल्म 'मिशन टू मॉस्को' दिखाई गई। बापूजी ने दो घंटे तक पूरी फिल्म देखी। उन्हें फिल्म पसंद नहीं आई।

दिनांक: 22.05.1944

आज हमने बा की स्मृति में प्रार्थना की। हमेशा की तरह हमने पूरी गीता का पाठ किया। मीराबेन ने 'राम धुन' और 'वंडरस क्रॉस' गीत गाए।

मैं शांति कुमारभाई के साथ मुंबई में उनका कार्यालय देखने गया था। मैंने एल्फिंस्टन कॉलेज भी देखा, जहाँ महादेवभाई ने पढ़ाई की थी, और विश्वविद्यालय भी देखा। दिन भर की सैर के बाद मैं शाम 6:15 बजे शांति कुमारभाई के साथ घर लौट आया।

दिनांक: 23.5.1944

आज पूज्यभाई का एक लंबा पत्र आया। उन्होंने अपनी नौकरी से असंतुष्टि के कारण इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने मेरा निर्णय मुझ पर छोड़ दिया है।

दिनांक: 12.4.1944

आज प्रभावतीबेन का तबादला हो गया; उनके साथ चार सार्जेंट, पांच पुलिसकर्मी और एक मैट्रन मौजूद थे।

दिनांक: 4.5.1944

कनुभाई आज आए थे।

307 संपादक/अनुवादक की टिप्पणी।

दिनांक: 5.5.1944

रिहाई के आदेश शाम 6:30 बजे आए।

दिनांक: 6.5.1944

हमें रिहा किए जाने के बाद सभी पुलिसकर्मी रात आठ बजे चले गए।

दिनांक: 11.5.1944

हम मुंबई पहुँच गए।

दिनांक: 18.5.1944

मेघानीभाई आए और उन्होंने बापूजी के लिए गीत गाया, जो उन्हें पसंद आया। बापूजी का कायद-ए-आजम जिन्ना को लिखा गया पत्र, जिसे सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया था, आज प्रकाशित हुआ।

दिनांक: 15.05.1944

बापूजी ने पंद्रह दिनों का मौन लिया है ताकि वे आराम कर सकें और स्वस्थ हो सकें।

दिनांक: 22.2.1944, मंगलवार

बा की मृत्यु शाम 7:35 बजे हुई। पूज्यभाई वहां मौजूद थे।

दिनांक: 23.2.1944, बुधवार

बा का अंतिम संस्कार सुबह 10:40 से शाम 4:40 तक हुआ। बापूजी पूरे समय उपस्थित रहे। रामदस्काका शाम को आए।

दिनांक: 24.2.1944, गुरुवार

देवदासका वहीं रुके रहे। हमने बा का सारा सामान देखा। उन्होंने बापूजी से आधी रात तक बातें कीं।

मनु गांधी की डायरी 137

दिनांक: 25.2.1944 शुक्रवार

देवदासका, हरिलालकाका और रामदासका ने बा की चिता से राख एकत्रित की। वे राख को अपने साथ ले गए। पूज्यभाई भी उनके साथ थे।

दिनांक: 29.2.1944, मंगलवार

हमने शाम 7:35 बजे चौबीस घंटे लगातार कताई का काम फिर से शुरू किया।

दिनांक: 1.3.1944

कताई शाम 7:35 बजे बंद हो गई। बापूजी ने कताई शुरू की और समाप्त की।

दिनांक: 2.3.1944

गीता का पाठ सुबह 5:30 बजे प्रार्थना के बाद शुरू हुआ और 7 बजे तक हमने सभी 18 प्रवचनों का पाठ पूरा कर लिया।

दिनांक: 9.4.1944

प्रभावतीबेन को भागलपुर जेल में स्थानांतरित करने के आदेश प्राप्त हुए।

दिनांक: 16.8.1942 308

क्रमांक 309 की प्रविष्टि सेवाग्राम में लिखी गई थी। यह मोटे तौर पर लिखी गई थी।

मैंने इसे नोटबुक में लिख लिया, इसलिए इसे इसी नोटबुक में कॉपी करना उचित समझा।

डायरी संख्या 12 के भाग 308 आगा खान काल से संबंधित हैं, इसलिए इन्हें लिया गया है।

यहाँ।

309 मूल में अंग्रेजी शब्द।

आज एआईसीसी की बैठक का आखिरी दिन था। मुझे उम्मीद थी कि बापूजी और बा कल लौट आएंगे। मैंने बा का कमरा साफ किया और उनका सामान व्यवस्थित किया। किसे पता था कि सब कुछ उलट-पुलट हो जाएगा?

घड़ी में 8:30 बज गए। रोटी बनाने के लिए रसोई में बुलाती घंटी बजी। मुझे शौचालय साफ करने जाना था। किसी ने मुझ पर यह सफाई का काम थोपा नहीं था। मुझे लगा कि बा की अनुपस्थिति में मुझे यह काम करना ही चाहिए। मुझे हर तरह के अनुभव प्राप्त करने चाहिए। मैंने पूज्य शक्री मौसी को फोन किया। तभी गोमतीकाकी आईं और बोलीं, 'मनु! एआईसीसी का प्रस्ताव खारिज हो गया है।' मैं स्तब्ध रह गई। जब हम इस बारे में बात कर रहे थे, धीरेनभाई आए और बोले, 'एक फोन आया था और बापूजी को 6 बजे गिरफ्तार कर लिया गया है। कार्य समिति के सभी सदस्यों को भी गिरफ्तार कर लिया गया है।' आज मेरी सफाई ड्यूटी का आखिरी दिन था, इसलिए मैं सफाई का काम पूरा करने चली गई। लेकिन मेरा मन उस फोन कॉल और बाकी सब लोगों की उससे जुड़ी बातों में ही अटका हुआ था। मैंने जल्दी से सफाई का काम खत्म किया और फोन के पास गई। गिरफ्तार लोगों के नाम हमें बताए गए। बापू को पुणे के एक बंगले में बंदी बनाकर रखा गया है। मीराबेन, महादेवभाई और श्रीमती सरोजिनी नायडू को भी उनके साथ गिरफ्तार कर लिया गया है। हमें डर था कि बापू भूख हड़ताल शुरू कर देंगे। अगर ऐसा हुआ तो क्या परिणाम होगा? हमने इस बारे में पता करने के लिए फोन किया। हमें बताया गया कि श्री बिरलाजी ने बापू से वादा लिया था कि गिरफ्तारी के तुरंत बाद वे भूख हड़ताल शुरू नहीं करेंगे। उनका आखिरी संदेश था, 'करो या मरो'। 310 यही उनका आखिरी संदेश था। बातचीत के बीच में ही फोन कट गया, इसलिए मुरब्बी किशोरलालभाई पूरी बात नहीं कर पाए। तभी वर्धा स्थित बंगले से फोन आया कि विनोबाजी को भी गिरफ्तार कर लिया गया है। हम सबने प्रार्थना करने का फैसला किया। मैंने घंटी बजाई। हमने गांव के लोगों को भी बुलाया। हम सब प्रार्थना करने के लिए मुरब्बी किशोरलालभाई के घर पर इकट्ठा हुए। सबके चेहरे मुरझाए हुए थे। आंखों में आंसू थे। ऐसा लग रहा था मानो सेवाग्राम के सारे पेड़, फल और फूल, प्रकृति स्वयं रो रही हो। सूरज बादलों के पीछे छिप गया। बापूजी की कुटिया दिखाई दी।

310 She has used both the Hindustani call ‘Karenge ya Marenge’ and ‘Do or Die’.

पहले कभी न देखी गई रोशनी का अभाव था। हमने प्रार्थना की और बापूजी का प्रिय भजन 'वैष्णव जन तो' गाया, लगभग रोते हुए रामधुन गाई। किशोरलालभाई ने कहा कि हमें चौबीस घंटे का उपवास रखना चाहिए। यह कोई बाध्यता नहीं थी। जो चाहें वे इसे रख सकते हैं। बच्चों को उपवास नहीं रखना था। लेकिन मैंने उपवास रखा। सब लोग इधर-उधर भागने लगे। कुछ लोग एहतियाती इंतज़ाम कर रहे थे ताकि उनका सामान ज़ब्त न हो जाए। मैं बापूजी के कमरे में गया। बापूजी को गिरफ्तार नहीं किया गया। बहुत कोशिशों के बाद हमें फोन पर बताया गया कि अगर उन्हें गिरफ्तार नहीं किया गया तो मुरब्बी प्यारेलालजी, बापूजी और सुशीलाबेन आज शाम को रवाना होंगे और कल यहाँ पहुँचेंगे।

लेकिन दोपहर तक हमें पता चला कि बा को शाम की सभा में आना था और लोगों को संबोधित भी करना था। लेकिन सभा से पहले ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया! मैंने उनका सामान समेट लिया था, उनके घड़े में पानी भर दिया था, सब्ज़ियाँ साफ़ करके पका ली थीं और रोटियाँ भी बना ली थीं, इस उम्मीद में कि बा आज आ जाएँगी। कौन जाने किस अशुभ वक्त मैंने

ये सब किया कि वो हमें हमेशा के लिए छोड़कर चली गईं!

बा को गिरफ्तार कर लिया गया और उनके साथ सुशीलाबेन और प्यारेलालजी को भी गिरफ्तार कर लिया गया। मैं दफ्तर में फोन की घंटी बजने का इंतजार करती रही। हमें गुप्त सूचना मिली कि सुशीलाबेन को बा के साथ रखा गया है। हम बहुत चिंतित थे क्योंकि गिरफ्तारी के समय बा का स्वास्थ्य काफी नाजुक था। बा और बापू ने जेल को ही अपना घर बना लिया था, इसलिए मैं भी जेल जाने के लिए उत्सुक हो गई। आश्रम के सभी लोग भी जेल जाने के लिए बेताब थे। मैं अगले ही दिन गिरफ्तार होना चाहती थी। लेकिन बापूजी ने मेरी जिम्मेदारी आश्रम के प्रबंधक पूज्य चिमनलालकाका को सौंप दी थी और उन्होंने पूज्यभाई की सहमति के बिना मुझे गिरफ्तार नहीं होने दिया। उन्होंने मुझसे कहा कि यह एक लंबा संघर्ष होगा और मैं आश्रम की सबसे छोटी सदस्य थी। वे मुझे अकेले जेल कैसे जाने देते? उन्होंने कहा कि अगर बड़ी महिलाएं जेल जाती हैं तो मुझे भी जाना चाहिए। मैंने उनका फैसला मान लिया।

बा ने जाने से पहले मुझसे कहा था, 'मनु, यह साड़ी बापूजी के हाथों से बुने हुए सूत से बनी है। मुझे नहीं पता कि मुझे ऐसी दूसरी साड़ी कब मिलेगी। इसलिए, इसका जितना हो सके उतना ध्यान रखना। क्योंकि मैं इसी साड़ी में अंतिम संस्कार करवाना चाहती हूँ।' मैंने बापू के बा को लिखे पत्रों समेत, उनकी बताई हुई सभी चीजें संभाल कर रखीं। वह कब लौटेंगी? मैंने जितना हो सका उतना सब कुछ इकट्ठा कर लिया। लेकिन मनु गांधी की डायरी के 140 पन्नों के लिए

अब हमने कई दिन बा और बापू के बिना उदासीन भाव से बिताए। हम सभी ने युद्ध में शामिल होने के लिए मन बना लिया था।

हमें पता चला कि बा और बापू आगा खान के बंगले नंबर 311 में हैं। यह जानकर हमें कुछ राहत मिली कि बा बापू के साथ हैं और हमें चिंता करने की कोई बात नहीं है।

दिनांक: 15.8.1942 312

आज का दिन पूरे देश के लिए बेहद दुखद था। भारत माता को अपने पुत्र के खोने का कितना दुख हुआ होगा? क्या इस बलिदान ने उनके चेहरे पर मुस्कान ला दी? लेकिन उनके देशवासियों में से किसी में भी अपने भाई के निधन पर हंसने का साहस नहीं था। किसी ने सपने में भी नहीं सोचा था कि इतने सुंदर चेहरे और सुनहरे रंग वाले व्यक्ति का अचानक निधन हो जाएगा! रात 10 बजे रेडियो 313 पर हमने सुना कि पूज्य महादेवकाका का आगा खान महल में निधन हो गया है, लेकिन सरकार की नैतिकता ऐसी थी कि इस खबर पर कौन विश्वास करेगा! हमने फोन किया, लेकिन फोन के तार कटे हुए थे! सच्चाई का पता कैसे लगाया जाए? हम सब यही सोच रहे थे, तभी कर्नल भंडारी का तार पहुंचा कि श्री महादेव देसाई का उस सुबह 8:30 बजे निधन हो गया है। हमारे पास इस पर विश्वास करने के अलावा कोई चारा नहीं था। हमने रात दुर्गाबिन के साथ बिताई। उस दिन नारायणभाई को बुखार था। किशोरलालकाका आए और बोले, 'वह एक महायोगी थे।' उन्हें बापू का स्थान लेकर उनके कर्तव्यों का पालन करना था। हालांकि वे गहरे शोक में डूबे हुए थे, क्योंकि पच्चीस वर्षों के घनिष्ठ संबंध के दौरान उन दोनों का रिश्ता भाइयों से भी अधिक गहरा था। उन्हें हम सभी को सांत्वना देनी थी जो रो रहे थे। दुर्गाबिन को शांत करते

समय उनकी आंखें नम हो गईं। अगली सुबह हम सब प्रार्थना के लिए एकत्रित हुए, जिसमें हमने पूरी भगवद् गीता का पाठ किया। आश्रम गहरे शोक में डूबा हुआ था।

[बाकी बातें मैंने आगा खान में बापू से सुनीं।] बापू ने बताया कि शुक्रवार को महादेव ने लॉर्ड लिनलिथगो को पत्र लिखा और उसे दे दिया।

311 बंगलो मूल अंग्रेजी शब्द में।

312 यह प्रविष्टि 10.8.1942 की प्रविष्टि के बाद की है।

313 'रेडियो', मूल में अंग्रेजी शब्द।

314 पत्र के पाठ के लिए देखें, सीडब्ल्यूएमजी, खंड 76, पृष्ठ 406-10। यहाँ 'लिखा' का अर्थ है साफ प्रतिलिपि बनाने के लिए प्रतिलेखित किया गया।

कटेली सुबह मेरे साथ टहलने आया और बोला, 'बापू, अब मैं ठीक हो जाऊंगा। कल रात अच्छी नींद भी आई। मेरा इरादा कुछ लिखने का है।' यह सुनकर बापू बहुत खुश हुए। टहलने के बाद उन्होंने बापू के लिए टोस्ट बनाया और बड़े हर्ष से बोला, 'देखो बापू! कितना बढ़िया टोस्ट बनाया है। अब हम हर दिन कुछ नया बनाएंगे।' बापू मालिश करवाने चले गए। उसी समय कर्नल भंडारी आए। वे और महादेवकाका आपस में बातें कर रहे थे। अचानक उन्होंने कहा, 'मुझे चक्कर आ रहा है, मेरा सिर घूम रहा है।' बापू ने उन्हें लेटने को कहा। महादेवकाका उस कमरे में पलंग पर लेट गए। बापू ने पुकारा, 'सुशीला, सुशीला, जल्दी आओ, महादेव को कुछ हो गया है।' बापू की पुकार सुनकर सुशीलाबेन दौड़कर आईं और उनकी नब्ज़ जाँची। वे हर दिन गाते थे, 'मेरी नब्ज़ आपके हाथ में है, हे प्रभु, मेरी रक्षा करो।' उन्होंने अपनी नब्ज़ भगवान को समर्पित कर दी थी। सुशीलाबेन को यह कैसे महसूस होता? वह पुकारी, 'बापू, महादेवभाई मर रहे हैं, जल्दी आइए।' बापू ने उत्तर दिया, 'महादेव मर नहीं सकते। उन्हें मेरी जीवनी लिखनी है।' सुशीलाबेन ने पुकारा, 'बापू, जल्दी आइए।' बापू अंदर गए और महादेवभाई के माथे पर हाथ रखकर बोले, 'महादेव, महादेव।' उन्होंने अपनी आँखें खोलने की कोशिश की। यही उनका अंतिम कार्य था। वे बापू के अंतिम दर्शन करने में सफल रहे। बापू महादेवभाई को स्नानघर ले गए और उन्हें नहलाया। बापू ने कहा, 'महादेव मेरी बाहों में मरना चाहते थे और मेरी जीवनी भी लिखना चाहते थे। भगवान ने उनकी पहली प्रार्थना सुन ली।' स्नान के बाद मीराबेन ने शव पर फूल चढ़ाए और जहाँ सिर रखा था वहाँ 'ओम' लिखा। उन्होंने और सुशीलाबेन ने गीता का पाठ किया। भंडारी ने बापू से अंतिम संस्कार की व्यवस्था के बारे में पूछा। बापू ने उत्तर दिया, 'महादेव मेरे सच्चे पुत्र थे।' मैं अंतिम संस्कार की चिता प्रज्वलित करूंगा।' उनका अंतिम संस्कार आगा खान महल के परिसर में किया गया। इस स्थान पर अब एक चबूतरा बना दिया गया है।

बाहर से हमें इस बारे में कुछ भी पता नहीं था। कई अफवाहें फैल गईं। किसी ने कहा कि भंडारी ने उन्हें जहर दिया और महादेवभाई की मृत्यु हो गई। लेकिन यह सरासर झूठ साबित हुआ। बापूजी के आगामी उपवास के कारण महादेवकाका बहुत तनाव में थे। भगवान ने उन्हें या

तो उस तनाव से हमेशा के लिए मुक्ति दिलाने के लिए अपने पास बुला लिया या फिर उन्होंने ऐसा किया।

315 'टोस्ट', मूल में अंग्रेजी शब्द।

316 'बाथरूम', मूल में अंग्रेजी शब्द।

महादेवभाई इस दृश्य के साक्षी नहीं बनना चाहते थे। महादेवकाका बापू की बाहों में मृत्यु चाहते थे, भगवान ने उनकी यह इच्छा पूरी की। ऐसी शुभ मृत्यु केवल सच्चे भक्त को ही प्राप्त होती है। हमें छोड़ दें, लेकिन एक पांच वर्षीय बच्चे ने, जिसकी महादेवकाका से केवल एक दिन की मित्रता थी, कहा, 'महादेवकाका को कौन ले गया? क्या वे मुझसे फिर कभी नहीं मिलेंगे?' इस प्रकार, महादेवभाई न केवल हम जैसे लोगों के लिए, बल्कि उस पांच वर्षीय बच्चे के लिए भी महादेवकाका बन गए थे। ऐसा लग रहा था मानो भगवान ने आश्रम के लिए एक साप्ताहिक कार्यक्रम निर्धारित कर दिया हो। 8 तारीख को बापू आगा खान महल गए। 15 तारीख को महादेवकाका भगवान के महल में प्रवेश किया और 22.8.42 को किशोरलालकाका सरकारी महल गए।

22 अगस्त 42 की रात करीब 1 बजे, लगभग 30 पुलिसकर्मी एक सार्जेंट 317, 318 और एक इंस्पेक्टर के साथ आए। संघर्ष शुरू होने के बाद आश्रम में यह प्रथा स्थापित हो गई थी कि जब भी पुलिस वैन आए, घंटियाँ बजाई जाएँगी—एक, दो, तीन और एक, दो, तीन। शकारी मौसी ने मुझे अचानक जगाया और कहा, 'मनु! आओ, जेल जाने को लेकर तुम बहुत उत्साहित हो, है ना? पुलिस किशोरलालभाई के घर गई है।' मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। भरी हुई बंदूकें देखकर मैं पहले तो डर गया था। वहाँ लगभग 30 हट्टे-कट्टे पुलिसकर्मी, सार्जेंट और इंस्पेक्टर थे। लेकिन किसी तरह मैंने हिम्मत जुटाई। मैंने मुरब्बी किशोरलालकाका से पूछा कि क्या मुझे घंटी बजानी चाहिए। पुलिस ने कहा, 'हम किसी को गिरफ्तार करने नहीं आए हैं, हम सिर्फ तलाशी लेने आए हैं।' उन्होंने अच्छी तरह तलाशी ली; हमने उन्हें सारी चाबियाँ दे दीं, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला। मैंने कहा, 'किशोरलालकाका, मुझे घंटी बजाने दीजिए।' उन्होंने सहमति दी और मैंने घंटी बजा दी। पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी ने मुझसे पूछा, 'क्या आप कोई गड़बड़ी करने का इरादा रखते हैं? हम हथियारों से लैस होकर आए हैं, लेकिन हमें उम्मीद है कि हमें यहां ऐसा कुछ करने की आवश्यकता नहीं होगी।' किशोरलालकाका ने धैर्य रखने की विनती की और कहा, 'घबराने की कोई बात नहीं है, कोई परेशानी नहीं होगी। यह हमारा नियम है, इसलिए यह लड़की आई और पूछा।' यह बातचीत हिंदी में हुई। उन्होंने तीन घंटे तक तलाशी ली, सुबह 4 बजे उन्होंने किशोरलालकाका से एक कागज पर हस्ताक्षर करने को कहा, जिसे उन्होंने मना कर दिया; ये लोग

317 मूल में अंग्रेजी शब्द।

318 मूल में अंग्रेजी शब्द।

उन्होंने वारंट संख्या 319 प्रस्तुत किया और उन्हें आधे घंटे से पंद्रह मिनट के भीतर तैयार होने को कहा। वे पाँच मिनट में ही तैयार हो गए। हमने वे प्रार्थनाएँ कीं जो मुझे गाने को दी गई थीं, 'वैष्णव जन तो' और 'थके ना थके चंता ए'। उन्होंने मुझसे कहा, 'अरे! तुम जाना चाहते थे, लेकिन तुम्हारी जगह मैं जा रहा हूँ। मेरे पीछे आओ। हिम्मत मत हारो।' अब तक मैंने तलाशी और गिरफ्तारी नहीं देखी थी, किशोरलालकाका की यह गिरफ्तारी पहली घटना थी। वे गीताजी, कुछ अन्य धार्मिक पुस्तकें, एक पैकेट सूती धागा और चरखा अपने साथ ले गए। उनके पास और कोई सामान नहीं था। उनका स्वास्थ्य नाजुक है, उन्हें गंभीर अस्थमा है और इसके बावजूद वे अपने साथ ऊनी जैकेट तक नहीं ले गए। हम उनके भोजन और कपड़ों को लेकर चिंतित थे। हमने बहुत जोर दिया कि वे अपने साथ कुछ गर्म कपड़े ले जाएं। उन्होंने उत्तर दिया, 'यदि ईश्वर मुझे बचाना चाहेगा तो बचाएगा, लेकिन मैं केवल जेल द्वारा जारी खादी के वस्त्र ही पहनूंगा, अन्यथा मैं नंगा ही घूमूंगा।' यह उनका दृढ़ संकल्प था। हल्की बूंदा-बांदी हो रही थी, हमने उनके चारों ओर मालाएं डालीं। गोमतीबेन ने उनके माथे पर कुमकुम का तिलक लगाया, उनके गले में माला डाली और उनके पैर छुए। उस वीर स्त्री ने अपने पति को प्रसन्नतापूर्वक जेल विदा किया। वह दृश्य अद्भुत था। यदि हम इतिहास में इसके बारे में पढ़ते तो आश्चर्य होता कि क्या वास्तव में ऐसी वीर स्त्री जीवित थीं! लेकिन ऐसी वीर स्त्रियों की संतानें जीवित हैं और ऐसे दृश्य इसके साक्षी हैं। हमारे बीच दुर्गाबेन थीं जिन्होंने अपने पति को हमेशा के लिए त्याग दिया और अपने पति की अमर मृत्यु का असहनीय आघात सहा, और मैंने यह दूसरा दृश्य देखा। ऐसी कई और वीर स्त्रियां होंगी, और अब मुझे विश्वास है कि अतीत में ऐसी स्त्रियां थीं।

दिनांक: 31.8.1942 320

यह तीसरा सप्ताह था। इस सप्ताह का यह दिन मेरे लिए उत्सव का दिन था। 30 तारीख की रात को यह तय हुआ कि हम महिलाएं संघर्ष में शामिल होंगी। मैं खुशी से उछल पड़ी। मेरी उम्र की तीन-चार और लड़कियां थीं—वे मुझसे तीन साल बड़ी थीं।

319 मूल अंग्रेजी शब्द।

320वीं तिथि: 17 से 30 अगस्त, 1942 तक की कोई प्रविष्टि नहीं है। 144 मनु गांधी की डायरी

चार साल की उम्र की कुछ लड़कियां भी जेल जाने के लिए बहुत उत्सुक थीं। हमने जिनसे भी मुलाकात की, उनसे उनके जेल के अनुभव साझा करने को कहा। चूंकि सभी महिलाएं जेल जाने वाली थीं, इसलिए पुरुषों को एहसास हुआ कि उन्हें रोटियां बेलनी होंगी और इसी कारण उन्होंने रसोई का काम संभाल लिया। उन्हें रोटियां बेलना नहीं आता था और बाजरे की रोटी जल गई, इसलिए उन्होंने कुछ सब्जियां उबाल लीं। हमने उन्हें सिखाने की पेशकश की, लेकिन ये

स्वाभिमानी पुरुष हमसे क्यों सीखें? उन्होंने अपनी बनाई रोटियां बड़े चाव से खाईं और कहा कि उस दिन गेहूं की रोटियों का स्वाद कुछ अलग ही था। इस तरह हमने मजे से समय बिताया। तीन बजे हम तैयार हुए और नमाज अदा की। कई लोगों ने मुझसे कहा कि मैं फ्रॉक में बहुत छोटी दिख रही हूं, इसलिए मुझे गिरफ्तार नहीं किया जाएगा। उस दिन मैंने पहली बार साड़ी पहनी थी। मेरी उम्र चौदह साल थी। नमाज के बाद हमने सभी बड़ों को प्रणाम किया और हम सात लोग, जिनमें एक मुस्लिम महिला भी शामिल थी, वर्धा के लिए रवाना हुए। रास्ते में हम काकाजी (जमनालालजी) के बंगले संख्या 321 पर रुके और अपना सामान वहीं रख दिया। मैं माताजी (जानकी देवी) के चरण स्पर्श करने गया। हम लगभग 5:30 बजे गांधी चौक पहुंचे, जहां हमने भाषण दिए और नारे लगाए। एक मोटर वैन आई। उसमें लगभग 40 पुलिसकर्मी थे। उन्होंने पेट्रोल इंजन की तेज़ आवाज़ की, आवाज़ जितनी तेज़ होती, हमारा जोश उतना ही बढ़ जाता। उन्होंने शोर इसलिए किया ताकि लोग हमारे भाषण न सुन सकें। उन्हें परेशान करने के लिए लोग संकरी गलियों में घुस जाते, उन्हें मजबूरन पुलिस वैन से बाहर निकलकर हमारे पीछे चलना पड़ता। इसी बीच, एक बारात निकल रही थी, जिसमें बैंड भी था। पुलिस ने बैंड को हमारे आगे चलने को कहा। अगर वे मना करते, तो उन्हें पिटाई का सामना करना पड़ता। बेचारे दूल्हे के बारात को बिना बैंड के ही शादी में जाना पड़ा, क्योंकि बीच रास्ते में बैंड को हमें आगे ले जाना था। बैंड और पुलिस हमारे आगे-पीछे लगे हुए थे। इसका एक फायदा यह था कि अगर हम नारे लगाते और लोग इकट्ठा होते, तो उन्हें पुलिस की लाठियों का सामना करना पड़ता। इसलिए लोग छुपकर ही बाहर आते। लेकिन बैंड की वजह से लोग यह बहाना बना सकते थे कि वे शादी का जुलूस देखने आए हैं; इससे हमें अपना काम करने का मौका मिल गया। यह सिलसिला शाम सात बजे तक चलता रहा।

321 मूल अंग्रेजी शब्द।

मनु गांधी की डायरी 145

हम घर लौटने ही वाले थे कि पुलिस अधीक्षक हमें गिरफ्तार करने आ गए और वर्धा जेल ले गए। उस समय वर्धा जेल में पैंतीस महिलाएं बंद थीं और हम सात को भी उनमें शामिल कर लिया गया। अधिकारियों ने हमें खुले आंगन में रखा, लेकिन बारिश शुरू हो गई और हम सभी बयालीस को एक छोटी सी कोठरी में डाल दिया गया। जो व्यक्ति जेल के अंदर नहीं गया है, वह कल्पना भी नहीं कर सकता कि हमने कैसे गुजारा किया। हमने किसी तरह हर कोने में गद्दा बिछाया और एक-दूसरे से चिपककर सो गए। हमने पूरी रात इतने जोर से नारे लगाए कि बाहर के लोग भी सुन सकते थे। किसी तरह रात गुजरी। सुबह हमें दांत साफ करने के लिए कोयले की धूल दी गई, जिसके बाद हमने प्रार्थना की। हम कैसे नहाते? वहां पशुओं के लिए बने कुंड जैसा एक पानी का कुंड था। हमें उसी पानी का इस्तेमाल सभी जरूरी कामों के लिए करना था। चूंकि मैं सबसे छोटी थी, इसलिए मुझे किसी तरह तीन-चार घड़े पानी दिए गए। इसके अलावा, मैंने साड़ी पहनी हुई थी। मैं अपने कपड़े कैसे धोती? मुझे अधीक्षक के पास ले जाया गया। बुजुर्ग महिलाओं ने कहा कि यह लड़की सिर्फ चौदह साल की है और मुश्किल से अपने कपड़े धो पाती है। उन्होंने कहा, रहने दो, यह लड़की महात्माजी की भतीजी है। इतनी कम उम्र की लड़की को गिरफ्तार नहीं किया जा सकता और गिरफ्तार होने के बाद उस पर अत्याचार नहीं किए जा सकते। वह हर तरह की तकलीफ सह लेगी क्योंकि उसने यहां आने से पहले जेल के नियम पढ़ लिए थे। लेकिन

इसका मतलब यह नहीं है कि उसके कपड़े गंदे रहें, खासकर तब जब हम, उसके बड़े, उसके आसपास हों। कृपया कम से कम उसकी जरूरत के हिसाब से पानी तो दे दीजिए। अधीक्षक ने तुरंत मेरा हाथ पकड़कर कहा, 'आओ बेटी! मैं तुम्हारे कपड़े धुलवा देता हूं। पानी तुरंत भर दिया जाएगा।' थोड़ी देर में नल से खूब पानी बहने लगा। आठ दिनों से नहाए हुए लोगों समेत सभी ने उस दिन स्नान किया। हमें नाश्ते में रब दिया गया। मुझे उसका स्वाद पसंद नहीं आया। लेकिन जेल में पसंद-नापसंद का क्या मतलब? मैंने जेल के खाने का स्वाद चखने के लिए ही खाया, लेकिन जल्द ही मुझे उल्टी हो गई। मुझे इस बात से बहुत दुख हुआ कि हमारा शरीर जेल के रब को पचा नहीं सकता। मुझे बहुत शर्मिंदगी हुई। दोपहर 12 बजे हमें ज्वार की रोटी, उड़द की दाल और लहसुन-प्याज से पकी हुई पत्तेदार सब्जियां परोसी गईं। मैंने बड़ी मुश्किल से दो निवाले खाए। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि यह मेरा पहला दिन था। नतीजतन, मुझे उस रात बुखार हो गया, लेकिन मैंने किसी को बताए बिना आराम किया। सुबह तक बुखार उतर गया था। हमने 146 मनु गांधी की डायरी पढ़ी।

दोपहर में अंताक्षरी खेली। मैंने 1280 धागे काते। शाम को सभी महिलाओं ने रास किया और खेल खेले। वहाँ चालीस साल तक की महिलाएँ थीं और कुछ पच्चीस से तीस साल की थीं। उन्हें भी जेल में खेल खेलने का समय मिल जाता था। उन्होंने जेल में एक बार फिर अपने माता-पिता के घर में बिताए बचपन के सुखों का अनुभव किया। इस तरह उनके लिए जेल भी एक उत्सव है। इस तरह हमने दिन बिताया। आज बारिश नहीं हुई इसलिए हम खुले आँगन में सोए। सुबह 5 बजे हमारी बैरक की घंटी बजी और हम चौंककर उठ गए। हमें बताया गया कि हमें उसी दिन यानी 2 सितंबर 1942 को नागपुर जेल में स्थानांतरित किया जाना है। हमें प्रस्थान की तैयारी करने को कहा गया। सभी जल्दी से तैयार हो गए और हम सुबह 9 बजे बस से नागपुर के लिए रवाना हुए। हम चार बजे तक नागपुर पहुँच गए। रास्ते में हमने अपने साथ चल रहे पुलिसकर्मियों से भोजन के बारे में पूछा। रास्ते के होटलों के अलावा भोजन के लिए क्या व्यवस्था की जा सकती है? उन्होंने मूंगफली और गुड़ खरीदा और हमें दिया, जिसे हमने खाया। हमने राष्ट्रगान भी गाए।

हम नागपुर पहुँच गए। हमारी मैट्रन 322 राधाबाई हमें अंदर ले जाने के लिए जेल के द्वार पर खड़ी थीं। जेल के लोहे के द्वार इतने विशाल थे मानो कोई राक्षस हमारे सामने खड़ा हो। हममें से प्रत्येक की गिनती की गई और हमें अंदर ले जाया गया। हम चालीस महिलाएं थीं। पहले द्वार से लगभग साठ फीट की दूरी पर द्वारों का एक और समूह था। बीच के 60 फीट के स्थान पर अधीक्षकों के कार्यालय थे।

जेलर 325 और अन्य क्लर्क। हमने दूसरा द्वार पार किया। जेल का मुख्य भाग उसी द्वार से शुरू होता है। एक तरफ पुरुष कैदियों के लिए बैरक 326 थे और उनके सामने पुरुष राजनीतिक कैदी रखे गए थे। उन्हें एक बड़े परिसर में बाहर निकलने की अनुमति दी गई थी। हम नारे लगा रहे थे, तभी वे लोग बाहर आए। उनमें विनोबाजी भी थे। हमने दूर से ही उन्हें और किशोरलालकाका को प्रणाम किया।

322 मूल अंग्रेजी शब्द।

323 मूल में अंग्रेजी शब्द।

324 मूल में अंग्रेजी शब्द।

325 मूल अंग्रेजी शब्द।

326 मूल में अंग्रेजी शब्द।

लगभग पाँच मिनट की पैदल दूरी पर महिलाओं के लिए बैरकें थीं। दूसरे द्वार और हमारी बैरक के द्वारों के बीच का क्षेत्र एक छोटे से गाँव जैसा दिखता था क्योंकि कैदियों को गाड़ियाँ चलाते देखा जा सकता था, अनाज भंडार थे जहाँ से रसोई के लिए सामग्री की आपूर्ति की जाती थी; कुएँ और एक बेकरी थी जहाँ रोटी पकाई जाती थी; अनाज के भंडार और ऐसी ही कई अन्य चीजें थीं। यह क्षेत्र किले जैसी ऊँची दीवारों से घिरा हुआ था जिन पर कांच के टुकड़े जड़े हुए थे। हमारी बैरक में प्रवेश करने के लिए इस क्षेत्र को पार करना पड़ता था। एक बार कोई व्यक्ति इसमें प्रवेश कर जाता था, तो वह कैद हो जाता था। हमारी बैरक के बड़े द्वार हमें प्रवेश देने के लिए खुलते थे और तुरंत हमारे पीछे बंद हो जाते थे। यह एक बड़ी जेल थी। महिला अपराधियों ने वहाँ एक सुंदर बगीचा बनाया था। जेल चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, उसमें बड़ी संख्या में कैदियों के होने से वह छोटी लगती है। इसमें अधिकतम 100 से 125 महिलाओं को रखा जा सकता था। वहाँ 75 महिला कैदी और हम 125 राजनीतिक कैदी थे। इससे जगह तंग हो गई थी। लेकिन उन्होंने हमारे लिए पर्याप्त व्यवस्था की। अब तक दो बैरकों में रहने वाली 75 महिलाओं को एक बैरक में स्थानांतरित कर दिया गया। हमने वर्धा में तंग जगहों का अनुभव किया था, इसलिए हमने उनकी ओर से बात की, लेकिन अधिकारी उनके लिए कुछ क्यों करेंगे? लेकिन जब हमने रहने की व्यवस्था को स्पष्ट रूप से अस्वीकार कर दिया, तो हममें से कुछ को महिला कैदियों के लिए बने अस्पताल में रखा गया। नहाने और धोने के लिए पानी का एक ही कुंड था। बाद में हमने बांस के 331 शौचालय बनवाए। हम सभी 200 महिलाओं ने उसी कुंड के पानी से स्नान किया। पानी भरपूर था। हमारा काम कताई करना था और कुछ खास नहीं। सुबह से भोजन के समय तक हम कताई करते थे। अगर हमें नहाने का मौका मिलता तो हम आराम करते। अन्यथा हम दोपहर या शाम को और कभी-कभी रात में नहाते थे। हमें 'बी' 332 श्रेणी आवंटित की गई थी, जिस दिन से हम वहाँ पहुँचे थे।

327 मूल में अंग्रेजी शब्द।

328 मूल में अंग्रेजी शब्द।

329 मूल अंग्रेजी शब्द।

330 मूल अंग्रेजी शब्द।

331 मूल में अंग्रेजी शब्द।

मूल पाठ में 332 अंग्रेजी अक्षर हैं।

वहाँ। 'सी' क्लास में भी खाना अच्छा था। आजकल बाहर के लोगों को खाने के लिए गेहूँ नहीं मिलता। लेकिन जब से जमनालाल जी व्यक्तिगत सत्याग्रह के समय उस जेल में गए थे, तब से वे कैदियों को भी गेहूँ उपलब्ध कराते आ रहे हैं; यह प्रथा तब से चली आ रही है। इसलिए 'सी' क्लास में नाश्ते में गेहूँ की रोटी और गुड़ या गरम खिचड़ी के साथ आम का अचार दिया जाता था, दोपहर के भोजन में दाल, चावल, सब्जियाँ और रोटी दी जाती थी और रात के खाने में भी यही दिया जाता था। हमें, 'बी' क्लास में, एक चौथाई पाइंट दूध, दो चम्मच चाय का पानी दिया जाता था।

नाश्ते में एक छोटी चम्मच चीनी और रोटी का आधा टुकड़ा दिया जाता था। दोपहर के भोजन में दाल, चावल, सब्जियां, रोटी, खिचड़ी, गेहूं का दलिया और 1 औंस पैकेटबंद मक्खन होता था; रात का खाना भी यही होता था। नाश्ता सुबह 7:30 बजे, दोपहर का भोजन 12 बजे और रात का खाना 7 बजे होता था। शाम 5 बजे तक हम 1200 से 2000 और कभी-कभी 3000 धागे भी कातते थे। शाम 5 बजे हमारी मैट्रन हमसे मिलने आती थीं। वह हमारे लिए डाक लाती थीं। जिन्होंने इसे अनुभव किया है, वे ही जानते होंगे कि हम डाक और बाहर से आने वाली चिट्ठियों के लिए कितने उत्सुक रहते थे। हमारी मैट्रन 337 राधाबाई थीं। वह बहुत अच्छी, दयालु, ईमानदार, सीधी-सादी और सरल स्वभाव की थीं। उन्होंने पिछले 10 वर्षों से जेल में काम किया था। 15 या 16 साल की उम्र में उनकी पत्नी का निधन हो गया था; उनके दो बच्चे थे, एक बेटा और एक बेटी। बाद में उन्होंने पढ़ाई की और मैट्रिक पास करने के बाद नागपुर केंद्रीय कारागार में 25 रुपये के वेतन पर जमादारनी के रूप में काम करना शुरू किया। वर्तमान में, उनके गुणों के कारण, उन्हें 150 रुपये का वेतन मिलता है। उन्होंने न केवल हमारा, बल्कि सभी कैदियों का दिल जीत लिया है। उन्होंने कई निरक्षर कैदियों को शिक्षित किया और उनकी रिहाई के बाद उन्हें उनके हाथ से पत्र मिले। वह कैदियों को सलाह देती थीं और इस नेक महिला के प्रयासों से बीस साल की सजा पाए कई कैदी दस या सात साल में रिहा हो गए। वह बापूजी की भक्त थीं, लेकिन उस बेचारी महिला को सरकारी नौकरी करनी पड़ी।

मूल पाठ में 333 अंग्रेजी अक्षर हैं।

मूल पाठ में 334 अंग्रेजी अक्षर हैं।

मूल पाठ में 335 अंग्रेजी अक्षर हैं।

336 मूल में अंग्रेजी शब्द।

337 मूल में अंग्रेजी शब्द।

जीविका चलाने के लिए। मैं आत्मकथा हिंदी में पढ़कर सुनाती थी, जिसे वह बड़े चाव से सुनती

थीं। वह मोतीबा की कहानियाँ भी बड़े चाव से सुनती थीं। वह मेरे लिए माँ समान और दूसरी महिलाओं के लिए बहन समान थीं। वह सभी महिलाओं से अत्यंत स्नेह से पेश आती थीं।

इस तरह हमारे दिन बीतते गए। एक सुबह अचानक हमें पूज्य भंसालीकाका के उपवास के बारे में पता चला। इसके बाद हमें अखबारों या चिट्ठियों से कोई खबर नहीं मिली। चिट्ठियों के कुछ हिस्से तारकोल से काले कर दिए गए थे, जिससे वे पढ़ने लायक नहीं रह गए थे। उन दुखद दिनों या बापूजी के उपवास के दिनों की याद आते ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। चिमूर में गोरों ने महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार किया था और चारों ओर आतंक फैला रखा था। भंसालीकाका जैसे ऋषि इस विकट स्थिति से कैसे अविचलित रह सकते थे! वे लंबी दूरी तक चल नहीं सकते थे और न ही घोड़ों या बैलगाड़ियों का इस्तेमाल करते थे। वे अपने एक साथी आश्रमवासी (बलवंतसिंह) के साथ चिमूर के लिए रवाना हुए और स्वयं तथ्यों का पता लगाया। वे दिल्ली गए और आने से मिले, जिन्होंने कोई सीधा जवाब नहीं दिया। भंसालीकाका ने आने के घर के दरवाजे से ही अपना उपवास शुरू किया। 10.11.1944 को शुरू हुए उपवास के दौरान, हमने जेल के अंदर भी सामूहिक उपवास आयोजित किए। उन्होंने 62 दिनों तक उपवास रखा और 12.1.1943 को अपना उपवास तोड़ा, जब एने ने यह आश्वासन दिया कि वह चिमुर से मिलने और मामले में हस्तक्षेप करने आएंगे। जिस दिन उन्होंने उपवास तोड़ा, उस दिन उन्होंने अलग से दूध पिया। उनका सामान्य आहार गुड़, प्याज, तिल और दूध होता है। वे ये सभी चीजें एक साथ खाते हैं, लेकिन उनका शरीर लोहे जैसा मजबूत हो गया है, इसलिए उन्हें कुछ नहीं होता। वे केवल तीन घंटे सोते हैं।

वह हम सबको पढ़ाते थे। एक दिन मैंने अपने बालों में गुलाब लगाया था। मैं अपनी क्लास के लिए भंसालीकाका के पास गई। उन्होंने पूछा, 'बहन! यह फूल झाड़ी का है या तुम्हारे बालों का?' मैंने जवाब दिया, 'लेकिन भंसालीकाका, वह फूल तो मुरझाकर गिर जाएगा, उसका क्या?' उन्होंने कहा, 'हमारे बच्चे भी मर जाते हैं, क्या इसलिए हम अपनी चीज़ों को तोड़ लें?'

338 एम.एस. एने.

339 तारीख 10.11.1943 होनी चाहिए।

340 तारीख 12.1.1944 होनी चाहिए।

341 मूल अंग्रेजी शब्द।

पेड़ पर फूल चढ़ाना? तुमने मधुमक्खी को उसके भोजन से वंचित कर दिया है। अगर कोई तुम्हारा भोजन छीन ले तो क्या होगा?' भंसालीकाका ने समझाया। मैं मान गई और उस दिन से मैंने अपने बालों में फूल लगाना बंद कर दिया। यह उन छोटी-छोटी बातों का एक उदाहरण है जो वे समझाते थे। उस उपवास के समाप्त होने के दो महीने बाद, एक शाम अचानक हम पर एक विपत्ति आ पड़ी। यह खबर हमारी मैट्रन ने दी। बापू ने 10.2.43 को उपवास शुरू कर दिया था। अब क्या? उन्हें अखबार रात बीतने के बाद ही मिलेगा। मैंने पूरी रात हांफते हुए बिताई। किसी

तरह रात गुजरी और सुबह हो गई। जेल अधिकारी इस बात से डरे हुए थे कि हम क्या करेंगे। इसलिए, उन्होंने सुबह जल्दी द्वार खोल दिए और अंदर आ गए। सुबह 7 बजे अधीक्षक 342 आए और मैंने सबसे पहले उनसे पूछा, 'क्या बापू ने उपवास शुरू कर दिया है?' उन्होंने कहा, 'हाँ, लेकिन सरकार उन्हें रिहा कर देगी, सावधान रहें, आप स्वयं उपवास न करें, अन्यथा 'जबरदस्ती भोजन कराया जाएगा'।' 343 मैंने उनसे कहा कि मैं उपवास करूँगी और पहले तीन दिन उपवास रखा। रेहानाबेन 344 हमारे साथ थीं। हमारी प्रार्थनाओं के दौरान, उन्हें अपनी अंतरात्मा की दृष्टि से सब कुछ दिखाई देता था। वह हमें वह सब बताती थीं और अगले दिन अखबार में उनकी बात की पुष्टि हो जाती थी। हमें उन पर विश्वास हो गया। पूरे इक्कीस दिनों तक, हमने सामूहिक कताई और बारी-बारी से उपवास का आयोजन किया; हर दिन दो महिलाएं उपवास रखती थीं, इस प्रकार एक श्रृंखला बनती थी। उन 21 दिनों में 42 महिलाओं ने उपवास रखा। इस 21 दिनों के उपवास के दौरान बापू ने चूने से निचोड़ा हुआ पानी पिया था। हम सुबह छह बजे से दोपहर बारह बजे तक चरखा चलाते और मौन रहते थे, या प्रार्थना करते और भक्ति गीत गाते और बापू के लिए नए जीवन की प्रार्थना करते थे। मैं सोमवार को चौबीस घंटे का मौन रखता हूँ। जोहराबेन और कांताबेन भी चौबीस घंटे का मौन रखते थे। 3.3.43 को ये व्रत समाप्त हुए। लेकिन सरकार ने चंदन तैयार रखा था और उस रास्ते का भी फैसला कर लिया था जिससे उनके शव को ले जाया जाएगा, क्योंकि सरकार चाहती थी कि बापू का निधन हो जाए। और इसी कारण बापू—जो जीना चाहते थे—ने आत्महत्या करने का फैसला किया।

342 मूल अंग्रेजी शब्द

343 मूल अंग्रेजी वाक्यांश

344 Rehana Tayabji (1900-1975).

22.3.43 को चूने के पानी से उपचार किया गया। वे मृत्यु के कगार पर थे। ईश्वर का मार्ग अद्वितीय है। बापू अपना कार्य जारी रखना चाहते थे और ईश्वर भी उनके लिए कार्य करना चाहते थे; इसी कारण उनकी जान बच गई।

इस तरह 21 दिन बीत गए। उसके बाद हम प्रतिदिन ईश्वर से प्रार्थना करते रहे कि हम पर कोई नई विपत्ति न आए। इस उपवास के दौरान रिश्तेदारों समेत बाहर के लोगों को बापू से मिलने की अनुमति थी। पूज्यभाई और उमियाबेन भी बापू से मिलने गए थे।

19 फरवरी 1943 को मैंने सपना देखा कि मैं आगा खान महल में हूँ और सरकार ने मुझे बा की सेवा में वहाँ स्थानांतरित कर दिया है। अगली सुबह मैंने अपना सपना सबको सुनाया और भगवान से प्रार्थना की कि मेरा सपना सच हो जाए! और वह सच हो गया। 18 मार्च 1943 को जेलर तीन-चार बार आया और मेरा नाम पूछा। बाकी सबने कहा कि सबसे कम उम्र का होने के कारण मुझे रिहा किया जा रहा है। लेकिन मैं मन ही मन सोचती रही कि कितना अच्छा होगा अगर वे मुझे मोतीबा ले जाएँ। शाम को अधीक्षक आया। मैंने पूछा, 'आप मुझे कहाँ ले जा रहे हैं?' प्रमिला मौसी ने पूछा, 'क्या उसका स्थानांतरण हो रहा है या उसे रिहा किया जा रहा है?'

अधीक्षक ने उत्तर दिया, 'केवल उन्हीं को पुणे ले जाया जा सकता है जिन्होंने बहुत पुण्य कमाया हो, आपको क्या लगता है कि आपका स्थानांतरण कहाँ हो रहा है?' मैंने लगभग अनजाने में कहा, 'पुणे'। उसने कहा, 'हाँ, हम आपको पुणे ले जा रहे हैं।'

19.3.43

आज सुबह 4 बजे मैं पुणे जाने के लिए जेल के गेट से निकली। कई औरतें रो रही थीं। मैंने उनके पैर छूकर आशीर्वाद लिया। नौ महीने बाद मुझे जेल से बाहर निकलना था। मैट्रन मुझे हिसाब-किताब निपटाने के लिए अधीक्षक के पास ले गई। जेलर मेरे लिए बड़ों जैसे थे और मुझे बेटी की तरह मानते थे। मैंने उनके पैर छुए और जेल की मोटर मुझे थाने ले गई। मेरे साथ दो बुजुर्ग पुलिसकर्मी थे। थाने में एक मजेदार घटना घटी। आमतौर पर 'बी' श्रेणी के कैदियों को इंटरक्लास में सफर कराया जाता है। मुझे भी इंटरक्लास में सफर करना था। लेकिन बेचारे पुलिसकर्मी को पता ही नहीं था कि कौन सी इंटरक्लास है और कौन सी दूसरी श्रेणी। बेचारे ने मुझे बिठा दिया।

345 मूल अंग्रेजी शब्द।

346 मूल में अंग्रेजी शब्द 152 मनु गांधी की डायरी

एक खाली द्वितीय श्रेणी का कमरा। गार्ड आया। उसने पुलिसकर्मियों से मेरा वारंट मांगा, जो उन्होंने दे दिया। वारंट में अंतर-श्रेणी का उल्लेख था। उसने मुझे डांटते हुए कहा, 'बहन! क्या तुम भी यह पता नहीं लगा सकीं?'

'इन लोगों ने मुझे वारंट नहीं दिखाया। इसलिए मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता।' सारा दोष बेचारे पुलिसकर्मियों पर आ गया। उन्होंने कहा कि उन्हें पढ़ना नहीं आता था, जिसकी वजह से यह सब हुआ। मैंने उनसे कहा कि अगर मेरी सीट आरक्षित हो तो मैं इंटरक्लास में जाऊंगी। व्यवस्था होने के बाद ही मैं हिलूंगी। मैंने थोड़ी सख्ती से बात की, इसलिए गार्ड ने मुझे वहीं रुकने को कहा। उसने वारंट पर हस्ताक्षर कर दिए।

हम कल्याण पहुँच गए। वहाँ भी एक मज़ेदार घटना घटी। वे बुज़ुर्ग पुलिसकर्मी पिछली रात मेरी निगरानी के लिए जागते रहे थे। हमें कल्याण स्टेशन पर दो घंटे इंतज़ार करना था, जिसके बाद हमारी अगली ट्रेन आने वाली थी। वे सोने के लिए लेट गए। प्रतीक्षालय केवल पुरुषों के लिए था। वे आपस में तर्क कर रहे थे कि कोई मुझे ले नहीं जाएगा या भागने में मेरी मदद नहीं करेगा। मैंने सोचा कि मुझे महिलाओं के प्रतीक्षालय में जाकर स्नान करना चाहिए और अपने बाल संवारने चाहिए। मैं स्नान करने चली गई। आराम से स्नान करने के बाद मैं वापस आई तो देखा कि दोनों पुलिसकर्मी गहरी नींद में सो रहे थे। मेरी मुलाकात अपने एक परिचित से हुई। उसने मुझसे सब कुछ पूछा और मैंने उसे बताया कि मैं आगा खान महल जा रही थी। मेरी कोई गलती नहीं थी; दोनों पुलिसकर्मी सो रहे थे और मुझे जेल के नियमों की पर्याप्त जानकारी नहीं थी कि क्या मुझे जेल के मामलों के बारे में दूसरों से बात करने की अनुमति है। मैंने उसे सब कुछ बता दिया। उस व्यक्ति ने मुझे एक लिफाफा दिया और मुझसे अपने पिता को पत्र लिखने का आग्रह

किया। मैंने ऐसा करने से इनकार कर दिया, क्योंकि मैं एक कैदी थी और मुझे पता था कि मुझे पत्र लिखने का अधिकार नहीं है। मैंने उनसे खुलकर बात की थी, लेकिन बाद में मुझे चिंता होने लगी कि अगर उन्होंने अखबार को खबर दे दी तो इन दो बेचारे पुलिसकर्मियों का क्या होगा। मैंने उस व्यक्ति से आग्रह किया कि वह इस खबर को न तो अखबारों में और न ही कहीं और लीक करे। उन्होंने वादा किया कि वे ऐसा नहीं करेंगे। रास्ते में मुझे अखबार पढ़ने का मौका मिला, जिसमें सरकार ने बताया था कि कस्तूरबा को दिल का दौरा पड़ा है और सरकार ने उनके अंतिम संस्कार की व्यवस्था की है।

347 मूल में अंग्रेजी शब्द।

मनु गांधी सी.पी. 348 349 में नर्स के रूप में काम करती थीं। मुझे राहत मिली कि अब कोई समस्या नहीं होगी। 20.3.43 को लगभग 4 बजे मैंने ट्रेन बदली। मुंबई समाचार में बा की हालत के बारे में विस्तृत खबर थी। मेरी आँखों में आंसू आ गए। मैं सोच रही थी कि क्या मैं उनसे मिल पाऊंगी या नहीं। किसी तरह दो घंटे का सफर तय किया और 6 बजे हम पुणे शहर स्टेशन पहुंचे। पुलिस अधीक्षक मुझे ढूंढ रहे थे और मैं उन्हें। हम एक-दूसरे को नहीं जानते थे। मुझे उनकी गाड़ी में सफर करना पड़ा। अब मैं क्या करती? बाकी सभी यात्री अपने-अपने रास्ते चले गए। वहां काफी सैन्य बल मौजूद था, सफेद वर्दी वाले इधर-उधर घूम रहे थे; मुझे भी थोड़ा डर लग रहा था। आखिरकार मुझे उन बुजुर्ग पुलिसकर्मियों पर बहुत गुस्सा आया। मैंने उनसे कहा कि वे मेरे पीछे आएं, क्योंकि मैं किसी तरह दफ्तर ढूंढ लूंगी। मैं सीधे स्टेशन मास्टर के पास गई। मैंने उनसे पूछा और दफ्तर पहुंची, थोड़ी देर बाद पुलिस अधीक्षक भी वहां आ गए। वह मुझे अपनी कार में आगा खान पैलेस ले गए। स्टेशन से आगा खान पैलेस पहुँचने में हमें 25 मिनट लगे। जब मैं घर पहुँचा तो सात बज रहे थे। बापूजी अभी भी बिस्तर पर थे। व्रत के बाद उन्होंने टहलना शुरू नहीं किया था। उन्होंने बिस्तर पर बैठकर ही सब्ज़ी, दूध और मक्खन का भोजन किया। वे अपना भोजन समाप्त करने ही वाले थे कि मैं अंदर गया और उनके पैर छुए। उन्होंने मेरी पीठ पर ज़ोर से थपथपाया। मुख्य अधीक्षक कटेली साहब, जो एक पारसी थे, वहाँ मौजूद थे। मैंने तुरंत उनसे बापूजी के स्वास्थ्य के बारे में पूछा। उन्होंने बताया कि बापूजी की तबीयत में सुधार है, लेकिन श्रीमती नायडू की तबीयत कुछ ठीक नहीं है। जैसे ही मैंने बापूजी के पैर छुए, बापूजी अंदर आईं और बोलीं, 'बहन! कैसी हो? आख़िरकार आ ही गईं!' मैंने उनके पैर छुए और उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया, 'खुश रहो और अच्छी सेवा करो।' मुझे अभी भी बापूजी की पीठ पर थपथपाहट का एहसास हो रहा था। बापूजी ने मुझे अपनी 350 नंबर की छड़ी दी और मुझे श्रीमती नायडू के पास ले गए और कहा, 'हम मानुदी को एआईसीसी नहीं ले गए थे, लेकिन वह हमारे पीछे-पीछे यहाँ आ गई, किसी व्यक्ति की इच्छाशक्ति इतनी प्रबल होती है।' मैं बहुत थकी हुई थी और यात्रा के दौरान मैंने कुछ नहीं खाया था। बा ने बापूजी से कहा, 'उससे बाद में बात करना, उसे खाने-पीने, नहाने-धोने दो। उसका चेहरा

348 सेंट्रल प्रोविंस, सी.पी. अंग्रेजी में।

349 मूल अंग्रेजी शब्द।

350 यह किसी साथी के सहारे झुकने की प्रथा को संदर्भित करता है।

चलते समय। मनु गांधी और आभा गांधी उनके जीवन के अंतिम चरण में उनके लिए सहारा बनीं।

चेहरा पीला पड़ गया था।' बापूजी तुरंत मुझे बाथरूम 351 में ले गए और मुझे सब कुछ दिखाया। बा हमारे साथ थीं। मेरे कपड़े बैग में थे, जिसे खोलना था। इसलिए बा ने अपने कपड़े मुझे दे दिए। मैंने सुशीलाबेन का ब्लाउज 352 और पेटीकोट पहना। मैंने जल्दी से स्नान किया। बा मुझे भोजन के लिए ले गईं। प्यारेलालजी ने मुझे खाना परोसा। उस दिन भोजन में उबली हुई सब्जियां, दूध, मक्खन, मलाई और फल थे। भोजन के दौरान, मैंने बहुत बातें कीं और बा से बातचीत की। बा ने कहा, 'बहन! यह सरकार कितनी क्रूर हो सकती है? उन्होंने तुम्हें, चौदह साल की लड़की को गिरफ्तार कर लिया, जो कानून के खिलाफ है।' बाद में, मैंने बापू से बात की। बापू ने कहा, 'सेवाग्राम में अपने दो महीने के प्रवास के दौरान, तुमने बा का दिल जीत लिया है। इसलिए, उन्होंने उन लोगों को मना कर दिया जो वर्षों से उनके साथ रहे हैं और जोर देकर कहा कि उन्हें तुम चाहिए। तुम बा के लिए यहां आई हो। तुम उनका स्वभाव जानती हो। वह पल भर में क्रोधित हो सकती हैं।' लेकिन वह इतनी पवित्र हैं कि उनका गुस्सा पल भर में गायब हो जाता है। इसलिए, आपका काम उन्हें मनाना और उन्हें बेहतर बनाना है। आपको किसी और काम की चिंता नहीं करनी चाहिए। आपको बा का काम ध्यान और लगन से करना चाहिए। आप स्वभाव से स्नेही हैं, इसीलिए बा ने आपको दूसरों के मुकाबले चुना है। अगर बा गुस्सा हो जाएं तो दुखी मत होना। आपको उस पर हंसने में सक्षम होना चाहिए।' मैंने पायरेलालजी और सुशीलाबेन से भी बात की। मैंने बा से पूछा कि उन्हें कैसे पता चला कि मैं नागपुर जेल में बंद हूँ? उन्होंने जवाब दिया कि भाई मिलने आए थे और उन्होंने कहा कि वहाँ आपकी आँखें खराब हो रही हैं और अगर संभव हो तो हमें आपको यहाँ बुला लेना चाहिए। 'मुझे एक नर्स की भी ज़रूरत थी, आप मेरी सेवा करने वाली आखिरी नर्स थीं। हम दोनों का आपस में अच्छा तालमेल हो गया था। आप बापूजी और मेरे लिए किए जाने वाले काम से अच्छी तरह वाकिफ हैं, आपने वह काम किया भी है और बापूजी को आपका काम पसंद है। इसलिए हमने आपको बुलाया। शुरू में हमने मणिबेन 353 354 और प्रेमबेन के नाम देने पर विचार किया था।

लेकिन बापू के साथ उनकी बातचीत अंतहीन होगी। मुझे तुम्हारी उम्र की लड़कियाँ पसंद हैं; मैं तुमसे कुछ शब्द भी बोल सकता हूँ। आखिर वह वल्लभभाई की बेटी है और परिपक्व उम्र की है, इसलिए वह जल्दी ही समझ जाएगी।

351 मूल अंग्रेजी वाक्यांश।

352 मूल अंग्रेजी वाक्यांश।

353 मणिबेन पटेल.

354 प्रेमाबेन गीत।

मेरी बातों पर आपत्ति मत करो। इसलिए, तुम सबसे अच्छे हो। तुम्हें भी यहाँ सीखने का मौका मिलेगा। लगता है कि तुम पर मेरा कुछ अधिकार है। वरना हमें पता ही नहीं चलता कि तुम कहाँ थे।' आधी रात तक हम ऐसी ही दूसरी बातों पर चर्चा करते रहे, मैं उनके पैर दबाता रहा। पहली ही रात बा ने कहा कि मुझे उनके बिस्तर पर उनके बगल में सोना चाहिए। बा और मैं साथ-साथ सोए। मेरी माँ के निधन के तीन साल बाद मुझे बा के बगल में सोने का सौभाग्य मिला, जो मेरे लिए माँ समान थीं। बचपन में जब तक मेरी माँ जीवित थीं, मैं उनके बिस्तर पर सोता था। अगर मैं ऐसा नहीं करता, तो मुझे नींद नहीं आती थी। उनके निधन के बाद, आज मैं बा के बगल में सोया। इसका आनंद केवल वही जान सकता है जिसने इसे अनुभव किया हो। मैं शनिवार को वहाँ पहुँचा। श्रीमती नायडू को रविवार, 21 मार्च 1943 को खराब स्वास्थ्य के कारण रिहा कर दिया गया। अब वहाँ डॉ. गिल्डर, सुशीलाबेन, प्यारेलालजी, मीराबेन, बा, बापूजी और मैं रह गए।

Aga Khan Palace

आगा खान महल एक विशाल महल है। मुसलमान आगा खान को भगवान की तरह पूजते हैं। इस समय वे इंग्लैंड में हैं। जब वे भारत आए थे, तब मुसलमानों ने उन्हें यह महल उपहार में दिया था। महल के चारों ओर एक विशाल बगीचा है। लेकिन हमें बगीचे के सभी हिस्सों में जाने की अनुमति नहीं है। जिस हिस्से में हमें जाने की अनुमति है, वह बहुत ही सुंदर ढंग से सजाया गया बगीचा है। प्रवेश द्वार पर बंदूकें लिए सार्जेंट तैनात हैं। तार की बाड़ के पास हमारे सैनिक तैनात हैं। तीसरी तार की बाड़ बरामदे की सीढ़ियों तक जाती है। महल की परिधि के चारों ओर नियमित अंतराल पर चालीस सशस्त्र सैनिक तैनात हैं। वे अपनी बंदूकों के साथ तैयार प्रतीत होते हैं। लेकिन कब? केवल तभी जब उनके वरिष्ठ अधिकारी गश्त पर होते हैं, अन्यथा वे आराम से बैठे रहते हैं। सरकार उन्हें कुछ न करने के लिए वेतन देती थी। पहरेदारों को यह सुनिश्चित करने के लिए तैनात किया गया था कि बापूजी या अन्य कैदी भाग न जाएं और बाहरी लोगों को अंदर आने से रोका जा सके। बरामदा गोलाकार है। विभिन्न कमरे बरामदे में खुलते हैं। पहला कमरा 355

उसमें अनावश्यक फर्नीचर रखा होने के कारण उसे ताला लगाकर रखा गया था।

355 'कमरा' शब्द अंग्रेजी में है।

उसके बाद वाला कमरा मीराबेन का है। वह वहीं रहती हैं। तीसरा कमरा हमारा भोजन कक्ष है, जहाँ 356 खाने की मेजें रखी हैं। चौथा कमरा महादेवकाका का था। उनके देहांत के बाद मोतीबा, सुशीलाबेन और मैंने अपना सामान वहीं रखा था; बापू की कुछ चीजें भी उसी कमरे में थीं। उस कमरे में कई अलमारियाँ थीं। हम वहाँ पढ़ाई भी करते थे। पाँचवाँ कमरा बापू का था।

मीराबेन ने बापू के बैठने की जगह के सामने रखे कैलेंडर पर 'हे राम' लिखवाया था। मोतीबा का पलंग भी वहीं रखा था। कमरे से सटे दो बड़े स्नानघर 357 हैं जिनमें बाथटब 358 और अन्य सुविधाएँ हैं। बापू इनमें से एक स्नानघर का इस्तेमाल करते थे, जबकि दूसरा बा करती थीं। हम सभी मोतीबा के स्नानघर का भी इस्तेमाल करते थे। इन कमरों के बगल में प्यारेलालजी का कमरा है। इसमें उनकी दो से तीन हजार से अधिक पुस्तकों की लाइब्रेरी 359 है। सरकार के साथ सभी पत्राचार भी वहीं रखे जाते थे। इस लिहाज़ से, यह आगा खान महल का कार्यालय था। डॉ. गिल्डर का कमरा इसके बगल में था। इसके ऊपर दो और मंज़िलें थीं। दूसरी मंज़िल पर हमारे अधीक्षक कटेली साहब रहते थे। हमें ऊपर की मंज़िलों पर जाने की मनाही थी, कहीं कोई हमें देख न ले! सबसे ऊपरी मंज़िल पर आगा खान महल का फर्नीचर और अन्य सामान रखा जाता था। जिस मंज़िल पर हम रहते थे, उसका इस्तेमाल आगा खान के नौकर तब करते थे जब वे वहाँ होते थे। वे तीसरी मंज़िल पर रहना पसंद करते थे। वहाँ एक सुंदर तालाब था जहाँ हम गर्मियों में तैरना सीखते थे। तार की बाड़ से कुछ दूरी पर महादेवकाका की समाधि थी। हमने परिसर में बैडमिंटन खेलने के लिए जगह बनाई थी। बगीचे में तीन-चार सुंदर आम के पेड़ थे, पिछले साल उनसे लगभग 5000 आम मिले थे। आम बहुत मीठे थे। अन्य पौधे

356 'टेबल', अंग्रेजी में।

357 'कैलेंडर', अंग्रेजी में।

358 'बाथटब', अंग्रेजी में।

359 'पुस्तकालय', अंग्रेजी में।

360 'ऑफिस', अंग्रेजी में।

361 'फर्नीचर', अंग्रेजी में।

362 'बैडमिंटन', अंग्रेजी में।

363 'कंपाउंड', अंग्रेजी में।

झाड़ियाँ सजावटी थीं। हमने मानसून के दौरान कुछ सब्जियाँ उगाईं क्योंकि बापूजी को यह बहुत पसंद था। लोगों के बिना महल वीरान सा लग रहा था, हालाँकि हमें ऐसा महसूस नहीं हुआ। महल ऐसा ही है। फर्नीचर बेहतरीन गुणवत्ता का है। इस विशाल महल में रसोईघर नहीं था। हमने बरामदे में खाना बनाया और अपने पूरे प्रवास के दौरान ऐसा ही करते रहे।

बापू के कमरे में एक कैलेंडर पर 'हे राम' लिखा हुआ था। उनकी कुर्सी के पास एक लकड़ी का बक्सा था जिसमें वे किताबें रखी थीं जिन्हें वे नियमित रूप से पढ़ते थे। इनमें गीताजी, बाइबल, कुरान और इसी तरह की अन्य पुस्तकें शामिल थीं। उनकी मेज पर एक मिट्टी का खिलौना था। यह तीन बंदरों का खिलौना था, जिसमें एक बंदर ने अपनी आंखें बंद कर रखी थीं, जिसका अर्थ

था बुराई को न देखना, दूसरे ने अपने कान बंद कर रखे थे, ताकि कोई बुराई न सुननी पड़े और तीसरे ने अपना मुंह बंद कर रखा था, ताकि कोई बुराई न बोले। यह खिलौना इस तरह रखा गया था कि इसका मुख बापू की ओर था। बा का पलंग भी इसी कमरे में था। सभी कमरों में कालीन बिछे थे, लेकिन बापूजी ने अपने कमरे से कालीन हटवा दिए थे। धीरे-धीरे अन्य कमरों से भी कालीन हटा दिए गए ताकि फर्श की अच्छी तरह सफाई हो सके। हम बरामदे में सोते थे। बापूजी का पलंग उनके कमरे के दरवाजे के पास लगा हुआ था। सुशीलाबेन का पलंग बापू के पलंग के बाईं ओर और बा का पलंग दाईं ओर लगा हुआ था। मैं बा के दाईं ओर सोता था। प्यारेलालजी का पलंग सुहिलाबेन के पलंग के बाईं ओर लगा हुआ था। मिराबेन को बरामदे में सोना पसंद नहीं था और वह अपने कमरे में सोना पसंद करती थी। सोने की व्यवस्था कुछ इस प्रकार थी।

बापू का आहार

बापू के आहार में उबली हुई सब्जियां शामिल थीं, जिनमें हरी पत्तेदार सब्जियां, चुकंदर, आलू, भिंडी, बीन्स, कद्दू और अन्य सब्जियां एक साथ उबाली जाती थीं। वे 8 औंस सब्जियां और सब्जी का शोरबा लेते थे। साथ ही, वे 1 औंस मक्खन, 22 औंस दूध, 6 औंस फलों का रस, 1 या 2 औंस गुड़, 4 औंस गेहूं के आटे या 1 औंस खजूर से बना खाखरा जिसमें बादाम और काजू मिलाए जाते थे, और कच्ची सब्जियां जैसे खीरा, मूली, धनिया और मेथी भी खाते थे।

सुबह सात बजे वे 16 औंस संतरे का रस, दो नींबू का रस, कुछ सोडा और पानी मिलाकर पीते थे। वे इसमें 1 औंस गुड़ भी मिलाते थे। गुड़ एक विशेष प्रक्रिया से तैयार किया जाता था। (पृष्ठ 158, मनु गांधी की डायरी)

गुड़ को पानी में तब तक भिगोया जाता था जब तक वह पूरी तरह घुल न जाए और फिर उसे छलनी से छान लिया जाता था। इस गुड़ के पानी में आधा किलो गुड़ के लिए तीन चौथाई किलो बकरी का दूध मिलाया जाता था और उसे गाढ़ा किया जाता था। वह इस गुड़ का 1 औंस लेता था। सुबह 11:30 बजे वह सब्जियों, 12 औंस दूध और मक्खन का भोजन करता था। यदि भोजन में पाँच चीजें शामिल नहीं होती थीं, तो वह फल, खाखरा, बादाम और काजू या कच्ची सब्जियां या टमाटर का रस लेता था। शाम 6 बजे वह दूध और 4 औंस खजूर या सिर्फ दूध लेता था। यह उसका दैनिक आहार था। मैं उसका सारा भोजन तैयार करती थी।

बापू की दिनचर्या

बापूजी सुबह 5 बजे उठते थे और हम सबको जगा देते थे। वे अपने दांत साफ करते और डेढ़ औंस शहद मिला हुआ 12 औंस गर्म पानी पीते थे। हम सब उनके साथ प्रार्थना में शामिल होते थे। सुबह 5:15 बजे तक प्रार्थना शुरू हो जाती थी। सबसे पहले जापानी प्रार्थना होती थी, जिसके बाद दो मिनट का मौन रखा जाता था। फिर हम ईशा वस्यम पढ़ते, उसके बाद प्रातः स्वरमी और अहिंसा, सत्य, अस्तेय पढ़ते, और फिर इस्लामी और पारसी प्रार्थनाएँ करते। हम भजन और धुन गाते और गीताजी के पाठ के साथ प्रार्थना समाप्त करते।

बापू नमाज़ के बाद सो जाते और सुबह 6:30 बजे उठते। 6:30 बजे वे शौचालय जाते और फलों का रस और गुड़ लेते। वे अपनी डायरी लिखते या 10-15 मिनट पढ़ते। कभी-कभी मीराबेन उन्हें अखबार पढ़कर सुनाती थीं।

7:45 से 8:30 बजे तक: बापू टहलने जाते थे। सुशीलाबेन और मैं उनके साथ डंडे की तरह चलती थीं। हम उनके दोनों ओर चलती थीं और वे सहारे के लिए हमारे कंधों पर हाथ रखते थे। इसीलिए हमें डंडे कहा जाता था। कभी-कभी प्यारेलाल जी हमारे साथ होते थे और कभी नहीं, लेकिन हम तीनों नियमित रूप से चलते थे। मीराबेन तेज़ चलती थीं, जबकि हम धीरे-धीरे बातें करते हुए चलते थे। बापू जी हमें हंसाते थे, कभी-कभी हम गंभीर बातें करते थे। हम मीराबेन से धीमी गति से चलती थीं, इसलिए वह अकेले चलना पसंद करती थीं। इसके अलावा, वह लंबी थीं, इसलिए बापू को उनके कंधे पर हाथ रखकर चलना थका देने वाला लगता था। मोतीबा चल नहीं सकती थीं, इसलिए वह घर के अंदर ही रहती थीं। टहलते समय हम महादेवकाका की समाधि पर 10 मिनट बिताते थे और वहां प्रार्थना करते थे।

फूल। यह आमतौर पर सुबह 7:45 से 8:30 के बीच होता था, यानी हमारी सैर के दौरान। हम 8:30 तक घर वापस आ जाते थे। 8:30 से 8:40 तक, मैं बापू के पैर धोती और उनकी मालिश की तैयारी करती।

मालिश सुबह 8:50 या 9 बजे शुरू होगी। सुशीलाबेन और डॉ. गिल्डर मालिश करेंगी। मालिश में 45 मिनट लगेंगे, यानी 9:45 या 10 बजे तक।

10 से 11 बजे तक: स्नान। हिप बाथ के दौरान वह या तो पढ़ता था या उसे पढ़कर सुनाया जाता था। वह बारी-बारी से 10 मिनट के लिए ठंडे और गर्म पानी में बैठता था और फिर बड़े टब में लेट जाता था। वह शॉवर के नीचे भी नहाता था। इसमें 45 मिनट से एक घंटा लगता था।

11 से 12 बजे तक: भोजन। बापू सुशीलाबेन को संस्कृत रामायण का गुजराती में अनुवाद करना सिखाते थे। सुशीलाबेन बापू को बाइबल पढ़कर सुनाती थीं।

12 से 1: मैं बापू के साथ वाल्मीकि रामायण पढ़ूंगा।

इसके बाद बापू सरकार के साथ किसी भी प्रकार का पत्राचार करते थे, या फिर रूस के बारे में अंग्रेजी में लिखी किताबें पढ़ते थे।

1 से 2: मैं बापू के सोते समय उनके पैरों की घी से मालिश करता था।

2 से 3: पढ़ना या लिखना।

3 से 3:30 बजे तक: बापू मोतीबा को निम्नलिखित विषयों में से कोई एक विषय पढ़ाते थे—गीताजी, अंग्रेजी, संस्कृत, गुजराती या भूगोल।

3:30 से 4 बजे तक: अखबार पढ़ना।

4 से 4:30 बजे तक: वे मुझे गीताजी को संस्कृत में पढ़ाते थे।

4:30 से 5: वह सुशीलाबेन को या तो मार्गोपदेशिका या बाइबिल पढ़ाते थे।

5 से 6 बजे तक: चरखा चलाना। मीराबेन अखबारों में चिह्नित अंश उन्हें पढ़कर सुनाती थीं। वे लेखों पर चर्चा भी करती थीं। 5 बजे वे घंटी बजातीं और डॉ. गिल्डर, सुशीलाबेन, प्यारेलालजी, कटेली साहब और मैं बैडमिंटन, पिंग-पोंग या रिंग खेलने चले जाते। [यह व्यायाम के लिए था]।

6 से 6:30: शाम का भोजन या दूध।

6:30 से 7 बजे तक: वह अखबारों की कतरनों को व्यवस्थित करके फाइल में लगाता था।

7 से 7:45: पैदल चलें।

7:45 से 8: शाम की प्रार्थनाएँ जिनमें जापानी प्रार्थना, ईशावास्यम, स्थितप्रज्ञा के श्लोक, इस्लामी और पारसी प्रार्थनाएँ, भजन, धुन और तुलसी रामायण के दो श्लोक शामिल हैं। सुशीलाबेन मनु गांधी की डायरी के 160 श्लोकों की व्याख्या करेंगी।

इन श्लोकों का गुजराती में अर्थ बताते हुए, बापू मोतीबा की गलतियों को सुधारते थे। वे अपनी डायरी लिखते थे या अधूरे काम पूरे करते थे और रात 10 बजे सो जाते थे। यह उनकी नियमित दिनचर्या थी, जो मोतीबा की बीमारी और उनकी मृत्यु के बाद बदल गई।

बा की दिनचर्या

बा सुबह की प्रार्थना के लिए नहीं उठीं। व्रत के बाद उनकी सेहत बिगड़ गई थी। सुशीलाबेन उन्हें उठने ही नहीं देती थीं, चाहे वो उठना भी चाहती हों। इसलिए वो सुबह 7 बजे उठती थीं। वो अपने दांत साफ करतीं, तुलसी के पौधे और सूर्य की पूजा करतीं, जिसके बाद चाय पीतीं। [यहाँ चाय का तात्पर्य जड़ी-बूटियों को पीसकर पानी और दूध में उबाले गए पेय से है, जिसका रंग चाय जैसा होता है। यह उनके अस्थमा के लिए था।] तब तक हम टहलने निकल चुके होते थे। वो भजनावली या गीता पढ़तीं, जब तक हम 8:30 बजे वापस नहीं आ जाते। टहलने के बाद मैं उनकी देखभाल करता था।

8:30 से 9 बजे तक - मैं उनके बालों में तेल लगाती और कंघी करती, 9 से 9:30 या कभी-कभी 10 बजे तक मैं उनकी पूरे शरीर की मालिश करती, उन्हें एनिमा देती और नहलाती। यह सब खत्म होते-होते 10:30 या 10:45 बज जाते। इसके बाद, अगर उन्हें खाने की इच्छा होती तो मैं उनके लिए खाना बनाती। अन्यथा, वह खुबानी, किशमिश और अन्य सूखे मेवों के साथ एक कप दूध पीतीं। वह सुबह 7:30 बजे चाय के साथ एक कप दूध पीतीं और दोपहर में भी एक कप पीतीं। कभी-कभी वह सब्जियां खातीं, कभी खिचड़ी, रोटी और अगर उनका मन करता तो वह मुझसे थेपला बनवातीं। लेकिन, खाने के बाद उनके दिल की धड़कन हमेशा तेज हो जाती थी। इसी कारण वह दूध, सब्जियां और मुश्किल से एक छोटी सी रोटी खाना पसंद करती थीं। मैं बापू को खाना परोसने से पहले बा को परोसती। बा बापू के साथ बैठते और अक्सर उनके साथ खाना

खाते। हम भी अक्सर उनके साथ खाना खाते थे। जिन दिनों हमें देरी होती थी, उन दिनों हम भोजन कक्ष में बाद में खाना खाते थे।

364 अंग्रेजी में 'कप'

मनु गांधी की डायरी 161

दोपहर के भोजन के बाद बापू के कमरे में रामायण का पाठ होता था। वह सुनती और उसके बाद खुद से अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत या गुजराती में कोई किताब पढ़ती। मेरे द्वारा उनके पैरों की घी से मालिश करने के बाद वह सो जाती थीं। वह दोपहर दो बजे उठतीं और शहद मिला गर्म पानी या सोडा मिला पानी पीतीं।

दोपहर 2 बजे मैं उसे उस दिन के अखबार या डाक पढ़कर सुनाता था। सोमवार उसका पत्र लिखने का दिन था। मैं उसके लिए पत्र लिखता था। वह पत्र पर हस्ताक्षर करती थी। इसमें दोपहर 3 बजे तक का समय लग जाता था।

3 से 4: मैं उन्हें नानाभाई की रामायण के पात्रों पर लिखी किताब पढ़कर सुनाती थी। हम वाल्मीकि रामायण दो बार पढ़ते थे, साथ ही भगवद् और अन्य धार्मिक ग्रंथ भी पढ़ते थे। वे मुझसे गुजराती लिखना भी सीखती थीं। वे मुझसे काफी बड़ी और उम्रदराज थीं, लेकिन मुझ जैसी छोटी लड़की से सीखने में उन्हें कभी कोई झिझक या शर्म नहीं हुई। वे हर चीज बड़े चाव से सीखती थीं। 75 साल की उम्र में भी सीखने का उत्साह उनसे ही सीखने को मिलता है।

शाम 4 से 4:30 बजे तक: वह सुशीलाबेन के साथ गीताजी पढ़ती थीं और बापू से उच्चारण सीखती थीं ताकि उन्हें उन्हें सिखाने में ज्यादा मेहनत न करनी पड़े। वह बहुत ध्यान से पढ़ती थीं और हर कक्षा से पहले पिछले और अगले अध्याय पढ़ लेती थीं। यह उनके बारे में एक बहुत ही रोचक तथ्य है जिसे जानना चाहिए।

वह अपनी 'पाठांक्षाएं' साल में 365 दिन शाम 4:30 से 5 बजे के बीच करती थी।

हम शाम 5 से 6 बजे के बीच बाहर खेलने जाते थे। वह हमें खेलते हुए देखने आती थी। अगर मैं हारने लगता तो वह कहती कि रिंग को उस तरफ फेंको या अपनी सर्विस ठीक से करो, तुम जीत जाओगे। वह थोड़ी देर हमें देखती और फिर अंदर जाकर कैरम का अभ्यास करती, जो हम रात में खेलते थे। शाम के खाने में वह चाय पीती थी, ठीक वैसे ही जैसे सुबह पीती थी।

रात के खाने के बाद, मैं बापू के बर्तन साफ़ करती थी, जिसके बाद हम भजन-कीर्तन करते थे या मैं ग्रामोफोन पर रिकॉर्ड बजाती थी। हम शाम की सैर के लिए बाहर जाते थे। उस समय वह मेरे पास बैठ जाती थीं।

अंग्रेजी में 365 'पाठ'।

366 अंग्रेजी में 'रिंग'।

367 अंग्रेजी में ‘सेवा’।

368 अंग्रेजी में ‘अभ्यास’।

तुलसी के पौधे की देखभाल करती और भजन गाती या मीराबेन के साथ बाल कृष्ण की पूजा में शामिल होती। शाम की प्रार्थना के बाद वह गर्म पानी में सोडा मिलाकर शहद पीती। रात 9 से 10 बजे तक, एक घंटे के लिए, वह मीराबेन, डॉ. गिल्डर और कटेली साहब के साथ कैरम खेलती। इस खेल के दौरान वह अपना दर्द, अपना गंभीर अस्थमा और इस बात का डर भूल जाती कि वह जेल से जिंदा बाहर नहीं आ पाएगी। उपवास के दौरान सरकार के रवैये के कारण यह विश्वास और भी मजबूत हो गया था। लेकिन यह सब कुछ भुला दिया जाता। 10 बजे मैं उनकी छाती पर तेल और कुछ अन्य मलहम लगाता। मैं उनके पैर दबाता। मोतीबा कहतीं, 'बहन! कपड़े बदल लो और चलो सो चलते हैं।' इस तरह मैं और मोतीबा साथ सोते। इस जेल के दौरान, और खासकर महादेवकाका की मृत्यु के बाद, उन्हें अकेले सोने से डर लगता था। रात में उनका अस्थमा बढ़ जाता था और उन्हें सीने में दर्द होता था या थूकदान की जरूरत पड़ती थी। इन्हीं कारणों से मैं उनके साथ सोता था।

बापू और बा की दिनचर्या कुछ इस तरह थी। प्यारेलालजी मुझे पढ़ाते थे और मैं सुशीलाबेन के साथ अंग्रेजी की किताबें पढ़ती थी। सुशीलाबेन ने डॉ. गिल्डर से जर्मन सीखी थी। उन्होंने रामायण का गुजराती अनुवाद किया था और खूब पढ़ती थीं, साथ ही सूत कातती भी थीं। हम दोनों रोज़ तीन घंटे पढ़ाई करते थे। मैं बा और बापू के लिए खाना बनाती, परोसती, बर्तन साफ करती और बा के छोटे-मोटे काम करती थी। मैं बा और बापू के कपड़े भी धोती और सूत कातती थी। पूरा दिन गतिविधियों से भरा रहता था। सुशीलाबेन डॉक्टर हैं, वे चिकित्सा की किताबें पढ़ती थीं, मुझे अंग्रेजी पढ़ाती थीं, रोज़ सूत कातती थीं और बापूजी, प्यारेलालजी और डॉ. गिल्डर के साथ पढ़ाई करती थीं। कभी-कभी वे मुझे नर्सिंग भी सिखाती थीं। उन्होंने मुझे कढ़ाई और बुनाई भी सिखाई। वे चलते-चलते भी कढ़ाई कर सकती थीं। बापूजी का मुख्य अखबार 'द डॉन' था। वे उसे ध्यान से पढ़ती थीं और बापूजी द्वारा चिह्नित लेखों की कटिंग बनाती थीं। बापू ने 'आरोग्य नी छवि' लिखी है, जिसका उन्होंने अंग्रेजी और हिंदी में अनुवाद किया है।

डॉ. गिल्डर की दिनचर्या

मुख्यतः पढ़ना ही मेरा शौक था। बाद में उन्होंने और सुशीलाबेन ने मिलकर चिकित्सा पर एक किताब लिखी। वे मुझे प्रतिदिन एक घंटा पढ़ाते थे। वे बहुत ही अच्छे थे।

369 को ‘Done’ लिखा गया है।

370 का अनुवाद ‘स्वास्थ्य की कुंजी’ और ‘आरोगी की कुंजी’ के रूप में किया गया है।

वे समय के पाबंद थे। वे मुझे दोपहर 12 बजे से दोपहर 1 बजे तक पढ़ाते थे। एक दिन उन्होंने इंग्लैंड के अपने अनुभव सुनाने शुरू किए। वे दोपहर 1:30 बजे तक सुनाते रहे, मुझे भी समय का पता नहीं चला। मुझे पढ़ाने के बाद वे स्नान करते थे। उस दिन उन्होंने स्नान नहीं किया ताकि वे अपनी पूर्व निर्धारित दिनचर्या का पालन कर सकें। वे इतने समय के पाबंद थे!

मिराबेन की दिनचर्या

मीराबेन सुबह टहलने, नहाने और अपने कपड़े धोने में बिताती थीं। वह फूल भी इकट्ठा करतीं और पूजा-अर्चना करतीं। दोपहर में वह बापू को बाइबल पढ़कर सुनातीं और शाम को अखबार पढ़तीं। वह गर्म और ठंडे पानी को मिलाकर बापू के लिए नहाने का पानी तैयार करती थीं। बापू के बाकी सारे काम मैं करती थी। वह सुशीलाबेन को भी पढ़ाती थीं। उनका स्वयं का अध्ययन का दायरा बहुत व्यापक था। वह एक आश्रम खोलना चाहती थीं और इसके लिए योजनाएँ बना रही थीं। उनकी हिंदी बहुत अच्छी है। वह चित्रकारी भी करती थीं। उन्होंने और सुशीलाबेन ने आगा खान महल के आसपास के परिदृश्य का एक सुंदर चित्र बनाया है। सुशीलाबेन भी चित्रकला में काफी निपुण हैं।

हमारी दिनचर्या कुछ ऐसी ही थी। अगर आगा खान महल में बाहर से नौकर लाए जाते, तो वे बाहर की कहानियाँ और हमारी कहानियाँ भी बाहर की दुनिया में फैला सकते थे, इसलिए हर दिन दो सैनिक येरवदा से कई कैदियों को लाते थे। वे सुबह 7:30 बजे आते और शाम 7 बजे चले जाते। कैदी बहुत ही दयालु, सेवाभावी और भावुक थे। हम अपने कपड़े और बापूजी व बा के कपड़े भी धोते थे। इससे कैदियों को दुख होता था। एक दिन एक वार्डर ने बापूजी से पूछा, 'आप हमें अपने कपड़े धोने की अनुमति क्यों नहीं देते?' अगले दिन बापूजी ने उन्हें कपड़े धोने को दे दिए। उन्होंने पूरी श्रद्धा से बापूजी की सेवा की। वे सभी तीसों कहते थे कि उन्होंने भले ही कोई अपराध किया हो, लेकिन उन्हें प्रतिदिन बापूजी के दर्शन होते थे। शुभ दिनों और राष्ट्रीय दिवसों जैसे 15 अगस्त और 26 जनवरी को हम उन्हें कम से कम खिचड़ी और सब्जियाँ खिलाते थे। बापूजी उन्हें भोजन परोसते थे। ये बेचारे लोग वैसे भी जेल के बेस्वाद भोजन से ऊब चुके थे। इससे उन्हें खुशी मिलेगी। बापू विशेष भोजन का कारण भी समझाएंगे।

वहाँ 10 सैनिक ड्यूटी पर थे। उन्होंने भी पूरी निष्ठा से सेवा की। सैनिकों, हेड कांस्टेबल और अधीक्षक को 164 मनु गांधी की डायरी में उल्लिखित नियमों के अनुसार प्रतिबंधित किया गया था।

परिसर से बाहर जाने पर रोक थी, कहीं कोई बात लीक न हो जाए। हेड कांस्टेबल को विशेष अनुमति के बिना बाजार जाने की इजाजत नहीं थी; उसकी ज़रा सी भी चूक उसकी नौकरी छीन सकती थी। हमारा अधीक्षक एक अनुभवी अधिकारी था। जब भी बापू को जेल हुई, उसे किसी न किसी काम पर वहीं तैनात किया गया। इस बार वह बापू का अधीक्षक था।

हमारे अधीक्षक रहे इस अधिकारी की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है। वे अधिकारी तो थे ही, साथ ही बापू के सच्चे भक्त भी थे; अधिकारी होते हुए भी वे मेरे लिए माता-पिता समान थे। बापू के जन्मदिन पर उन्होंने हम दोनों को 75-75 रुपये भेंट किए और साष्टांग दंडवत प्रणाम किया। वे पारसी थे और एक अद्भुत व्यक्ति थे। वे हमेशा बापू के आदेशों का पालन करते थे, उनके वचनों पर अटल अमल करते थे। वे हंसमुख थे, लेकिन वे भी हमारे साथ ही थे। वे हमारे साथ ही एक हो गए थे। वे हमारे साथ ही भोजन भी करते थे। उनकी आयु 48 वर्ष थी। मैं सबसे छोटा था, और वे और बाकी लोग मुझे खूब चिढ़ाते थे। हर दिन वे कोई न कोई नई शरारत करते थे। वे मोतीबा के भी उतने ही भक्त थे। महादेवकाका और मोतीबा की मृत्यु के समय वे इतना रोए कि बापू को उन्हें सांत्वना देनी पड़ी। ऐसे थे वे अधिकारी जिनकी देखरेख में हमें रखा गया था।

इस प्रकार, हमारे दिन गतिविधियों से भरे रहते थे। लेकिन मोतीबा को अक्सर दिल की धड़कन तेज होने लगती थी। यह दौरा छह घंटे तक चलता था। मैं उन्हें गले लगाकर उनके पास बैठ जाती थी। पहले दौरे के दौरान मेरी आँखों में आँसू भर आए थे। मुझे डर था कि वह जल्द ही हमें छोड़कर चली जाएँगी। मैंने सुशीलाबेन से मोतीबा की हालत के बारे में पूछा। उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि दौरा जल्द ही ठीक हो जाएगा। उनका दिल इतनी तेजी से धड़कता था कि हर धड़कन साफ सुनाई देती थी। हर बार ऐसा लगता था जैसे मौत करीब आ गई हो। धड़कन तेज होने पर वह लेट जाती थीं। जैसे ही धड़कन कम होती और उन्हें थोड़ी ताकत मिलती, वह उठ जाती थीं। उन्हें कोई काम करने की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन उनका स्वभाव ऐसा था कि वह खाली नहीं बैठती थीं। वह हमेशा किसी न किसी काम में लगी रहती थीं। वह जेल में भी 500 धागे कातती थीं। लेकिन जैसे-जैसे उनका दिल कमजोर होता गया, उन्हें कताई बंद करनी पड़ी।

मनु गांधी की डायरी 165

बापू ने उपवास क्यों किया? 371

एक दिन मैंने बापूजी से पूछा, 'बापूजी, आपने उपवास क्यों किया?' उन्होंने उत्तर दिया, 'सरकार ने मुझ पर भयानक आरोप लगाए थे जो सब झूठे थे। मैंने अपनी गिरफ्तारी के समय कहा था कि गिरफ्तारी के बाद लोगों के कार्यों के लिए मैं जिम्मेदार नहीं रहूंगा। लेकिन आरोप लगते रहे। मेरे अंतरात्मा ने मुझे उपवास करने के लिए कहा, और अगर मैंने उपवास नहीं किया होता तो मुझे शांति नहीं मिलती। उपवास ने मुझे यह भी बताया कि क्या ईश्वर मुझसे कारावास के बाद भी काम करवाना चाहता है। केवल इसी कारण से उन्होंने मुझे 21 दिनों की भीषण परीक्षा से बचाया। उन 21 दिनों के दौरान, मैं ईश्वर के आमने-सामने था। मुझे जीने की कोई इच्छा नहीं है, लेकिन मैं भारत की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने की आशा रखता हूं। और इसी कारण से मेरा अंतरात्मा मुझे इस समय उपवास न करने की सलाह देता है।'

बापू बकरी का दूध क्यों पीते हैं? क्यों नहीं?

कोई और?

बापू ने बताया, “एक बार बंगाल की यात्रा के दौरान मैंने देखा कि गाय या भैंस में हवा भरी जाती थी ताकि उसका दूध आखिरी बूंद तक दुहा जा सके। यह देखकर मेरा दिल कांप गया। उसी दिन मैंने दूध पीना छोड़ दिया और साथ ही मक्खन और घी भी। इसके कुछ समय बाद मुझे भयंकर दस्त हो गए, जो 50 दिनों तक जारी रहे। डॉक्टर ने मुझे दूध पीने की सलाह दी। मैंने मना कर दिया; उस समय बापू मेरे बिस्तर के पास खड़ी थीं। उन्होंने कहा कि मैं बकरी का दूध पी सकता हूँ क्योंकि बकरियों के साथ ऐसा कुछ नहीं किया जाता। उसी दिन से मैंने बकरी का दूध पीना शुरू कर दिया।”

स्वराज प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग अहिंसा ही क्यों है?

हमारे द्वारा हिंसा का सहारा लेने पर क्या आपत्ति है?

बापूजी ने उत्तर दिया, “दुनिया में हमारे चारों ओर कितनी हिंसा फैली हुई है? उस हिंसा के कारण कौन विजयी हुआ है? और यदि वे जीत भी जाते हैं, तो कितने लोगों की जान जाएगी और अन्य विनाश का क्या होगा?”

371. 10 फरवरी 1943 से 3 मार्च 1943 तक।

कई वर्षों के प्रयासों के बाद एक नया संविधान बनेगा, और कोई न कोई उसका विरोध करने की कोशिश करेगा। अहिंसा एक नया हथियार है। अगर आज नहीं तो कल दुनिया को इसे अपनाना ही होगा। अहिंसा कायरता नहीं, बल्कि वीरता का प्रतीक है। अगर कोई हमें थप्पड़ मारे और हम उसे सह लें, तो यह वीरता की निशानी है। लेकिन अगर हम पलटवार करें, तो लड़ाई में किसी की जान चली जाएगी। इससे दुश्मनी पैदा होगी और यह चलती रहेगी। इस तरह हम कभी आगे नहीं बढ़ सकते। अहिंसा में एक खास तरह की वीरता होती है। आप मुझे कितना मार सकते हैं? ज़्यादा से ज़्यादा मेरी मौत हो सकती है। उसे मुझे मारने दीजिए। वह और कितने लोगों को मारेगा? आखिरकार, वह हिंसा से थक जाएगा और अहिंसा को अपना लेगा। अगर यह हर भारतीय के दिल में जगह बना ले, तो स्वराज करीब है। आज दुनिया में इतनी हिंसा है, सिर्फ भारत ही अहिंसक बना हुआ है। भारत विश्व में मात्र एक बिंदु मात्र है, फिर भी मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसकी अहिंसा हिंसा के हथियारों की तुलना में कहीं अधिक प्रभावशाली है।

बापू एक माँ के रूप में

बापू एक माँ से कहीं बढ़कर हैं। बापू हर तरह से निपुण हैं, लेकिन मैंने उन्हें एक माँ के रूप में पूरी तरह से अनुभव किया है। बापू, बापू भी हैं और एक माँ भी। मेरी माँ के निधन के बाद कई लोग मुझसे कहते थे, 'बहन, माँ तो आखिर माँ ही होती है, क्या पिता कभी माँ की जगह ले सकते हैं?' लेकिन बापू के साथ रहने के बाद यह बात गलत साबित हुई। बापू बखूबी जानते हैं कि एक माँ के

सारे कर्तव्य कैसे निभाने होते हैं।

एक सुबह मैं गहरी नींद में सो रही थी। बापूजी मुझे प्रार्थना के लिए जगाने आए। मैं इतनी गहरी नींद सोती हूँ कि बिना हिलाए बिस्तर से न उठूँ। अगर कोई धीरे से 'मनु, मनु' भी कहे तो मुझे सुनाई नहीं देगा। बापूजी मुझे सुबह 5 बजे जगाने आए। मुझे सलवार की डोरी बहुत कसकर बाँधने की आदत है। मैंने पंजाबी पोशाक, सलवार और कुर्ता पहना हुआ था। बापूजी ने मच्छरदानी के ऊपर से अपना हाथ मुझ पर रखा। बापूजी ने देखा कि मैंने सलवार बहुत कसकर बाँधी है। उन्होंने मुझे जगाया और डोरी बाँधने का तरीका बताया। उन्होंने कहा, 'डोरी इतनी कसकर नहीं बाँधनी चाहिए, इससे सेहत पर बुरा असर पड़ सकता है। खासकर रात में गाँठ ढीली रखनी चाहिए, नहीं तो इससे खून का बहाव रुक जाता है।' तुम्हारी माँ

मनु गांधी की डायरी 167

जब तुम छोटी थीं तब मोतीबा का निधन हो गया था, इसलिए वे तुम्हें ये सब बातें नहीं सिखा सके; इसीलिए मैं तुम्हें ये सब सिखाती हूँ। तुम्हारी उम्र में मोतीबा सलवार की गाँठ कसकर बाँधती थीं और मोतीबा और मेरे बीच इस बात को लेकर अक्सर झगड़े होते थे। उस दिन से मैं बापूजी को अपनी सलवार बाँधने का तरीका दिखाने लगी। लेकिन कसकर बाँधने की आदत को सुधारने में बहुत समय लगा। बापूजी ऐसी कई छोटी-छोटी बातों में मेरा ख्याल रखते हैं।

बापू और स्वच्छता

बापू स्वच्छता का विशेष ध्यान रखते हैं। अगर कहीं गंदगी होती, तो वे उसे किसी और को बताने के बजाय खुद साफ करना पसंद करते। किसी भी वस्तु को उसके निर्धारित स्थान पर वापस रखना जरूरी होता था; जब तक ऐसा नहीं हो जाता, बापू बेचैन रहते थे। यहां तक कि अगर वे लेटे भी होते, तो भी उठकर वस्तु को उसके स्थान पर रख देते थे।

आखिरी दौर में मोतीबा की तबीयत कुछ ठीक नहीं थी। हर पाँच से दस मिनट में उन्हें शौच करने जाना पड़ता था। कभी-कभी उनके कपड़े भी गंदे हो जाते थे। मैं उनके कपड़े हर बार गंदे होने पर धोती थी। एक दिन मैं पूरी रात जागती रही। सुशीलाबेन ने ज़िद की कि मैं सो जाऊँ। उन्होंने कहा कि अगर मैं नहीं सोई तो मुझे अपना 'कर्तव्य' निभाने नहीं दिया जाएगा। 372 मैं सो गई। किसी ने मोतीबा की गंदी पेटीकोट उनके स्नानघर में रख दी। और उस दिन, संयोगवश, बापू मोतीबा के स्नानघर में 373 अपना चेहरा धोने गए, क्योंकि सुशीलाबेन उनके 'स्नानघर' में नहा रही थीं। बापू ने गंदी पेटीकोट देखी और उसे धोने लगे। तभी मैं जाग गई और अपना चेहरा धोने के लिए स्नानघर गई। मैंने बापू को गंदे कपड़े धोते देखा। मैंने बापू से कहा, 'बापूजी, क्या हम सब यहाँ नहीं हैं? मैं अपनी इच्छा के विरुद्ध सो गई। आप हमें इतना क्यों परेशान करते हैं? क्या इससे हमें तकलीफ़ नहीं होगी?' हम इतने सारे हैं, क्या हमने इन्हें नहीं धोया होगा?’ बापू ने उत्तर दिया, ‘तुम सो रहे थे। तुम्हें अच्छी नींद की ज़रूरत है। अगर तुम नहीं सोओगे, तो सेवा कैसे करोगे? इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है, लेकिन लगता है कि बा की पेटीकोट यहाँ काफी समय से पड़ी है क्योंकि उस पर मल फैलकर सख्त हो गया है। मैं नहीं

372 'कर्तव्य', अंग्रेजी में।

373 'बाथरूम', अंग्रेजी में।

मुझे लगता है कि अभी तक किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया है और मैं ही इसे देखने वाला पहला व्यक्ति हूँ। सुशीला काफी देर से नहा रही है। इसलिए न तो आप और न ही वह दोषी हैं। लेकिन मुझे लगता है कि दूसरों ने इसे देखा होगा। हो सकता है कि मेरा यह मानना गलत हो। लेकिन इसे साफ क्यों नहीं किया गया? इसलिए नहीं कि लोगों को इससे परहेज है, बल्कि इसलिए कि वे लापरवाह रहे हैं। मैंने पता लगाया कि पेटीकोट वहाँ किसने रखा था। एक महिला परिचारिका ने ऐसा किया था। मैंने दूसरों से पूछा कि क्या उन्होंने गंदे कपड़े नहीं देखे थे। सभी ने माना कि उन्होंने देखे थे, लेकिन कहा कि उन्हें यह एहसास नहीं था कि वे बा के कपड़े थे। बापू ने कहा, 'मेरे लिए इतना जानना ही काफी है कि हम लापरवाह हैं।'

एक दिन पढ़ाई खत्म होने के बाद मेरी किताबें इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं। किसी कारणवश मुझे बा के किसी काम के लिए अंदर जाना पड़ा। एक काम से दूसरे काम में उलझते-घुमते मैं किताबों को उनकी तय जगह पर रखना भूल गया। किताबें महादेवकाका के कमरे में इधर-उधर पड़ी थीं। बापू टहलने के लिए बाहर जाने वाले थे। मैं उनके साथ था। 'रीडर' के पन्ने हवा में लहरा रहे थे। बापू ने मुझसे कुछ नहीं कहा, बस अंदर चले गए। हम दोनों सोचने लगे कि आखिर हुआ क्या। मुझे शर्म आ रही थी; मैंने उनसे किताबें लेकर उनकी जगह पर रख दीं। बापू हँसे, मेरी पीठ पर प्यार से थपथपाया और मेरा कान खींचा। वे हमें इतने अच्छे हास्य से कितना कुछ सिखाते हैं! और वे हमें यह भी सिखाते हैं कि गलती न दोहराएँ। यह उनकी कला है। मुझे खाना खाने में दो से पाँच मिनट लगते हैं। बा ने बापू से शिकायत की कि मैं इतनी जल्दी-जल्दी खाता हूँ इसलिए मेरा वजन नहीं बढ़ता। बापू ने कहा कि अगले दिन से मुझे उनके साथ खाना खाना चाहिए। बा ने कहा कि मैं इतनी शर्मीली हूँ कि उनकी मौजूदगी में कुछ खा भी नहीं पाती। उन्होंने आगे कहा कि कभी-कभी जब हम मेज पर बैठकर खाना खाते हैं तो मैं उनके हिस्से से सब्ज़ी उठा लेती हूँ, लेकिन उनकी मौजूदगी में ऐसा नहीं करती। उन्होंने बापू से कहा कि मुझे जल्दी-जल्दी खाने से मना करें। बापू ने मुझसे पूछा, 'मनु, क्या तुम मेरी मौजूदगी में शर्माती हो?' मैंने जवाब दिया, 'बापू, आपकी मौजूदगी में कौन शर्मा सकता है? ये तो बा का कहने का तरीका है।' बापू ने कहा, 'मुझे तुम्हारा जल्दी-जल्दी खाना पसंद नहीं है।' मैंने कहा, 'बापू, मैं चाहे जितनी भी कोशिश करूँ, आखिर में जल्दी-जल्दी ही खा लेती हूँ।' बापू ने कहा, 'आजकल तो ये आदत बन गई है।'

374 'रीडर', अंग्रेजी में।

हमारे देश में शरीर की देखभाल न करना ही हमारा चलन बन गया है। लगता है कमज़ोर और दुबले-पतले शरीर वाला होना ही फैशन बन गया है, है ना?' मैंने जवाब दिया, 'बापूजी, मुझे फैशन

के बारे में कुछ नहीं पता, क्योंकि मैं पिछले एक साल से आपके साथ हूँ। क्या आपको नहीं पता कि मैं साधारण हूँ या फैशनेबल?' बापूजी ने कहा, 'तुम हर तरह से साधारण हो, सिवाय खाने के, जिसमें तुम फैशन का ध्यान रखती हो।' मैंने कहा, 'लेकिन बापूजी, मेरा वज़न 16 किलो तक बढ़ गया था, लेकिन इस बार मैंने दो किलो कम कर लिया है और सब मुझे ताने मारते हैं, चिढ़ाते हैं।' बापूजी ने कहा, 'हम तुम्हें इसी तरह सिखाना चाहते हैं, जब तक हम तुम्हें चिढ़ाएंगे नहीं, तब तक तुम अपने शरीर की देखभाल करना नहीं सीखोगी।' मैंने बापूजी से कहा, 'लेकिन मुझे काफी समय से जल्दी-जल्दी खाने की आदत है।' बापूजी ने जवाब दिया, 'मुझे दुख होता है कि किसी ने तुम्हें यह बात नहीं समझाई।' ऐसे कई छोटे-छोटे और सूक्ष्म वाकये थे और बा और बापूजी का मेरे प्रति स्नेह झलकता था।

एक दिन मैंने बिल्कुल भी सूत नहीं किया। मैंने तय किया था कि जिस दिन मैं सूत नहीं करूंगी, उस दिन एक वक्त का खाना भी नहीं खाऊंगी। शाम के खाने का समय हो गया था। सुशीलाबेन और मोतीबा ने मुझे खाने के लिए बुलाया। मैंने मोतीबा से कहा कि मैं खाना नहीं खाना चाहती क्योंकि मैंने उस दिन सूत नहीं किया था। मोतीबा ने कहा, 'तुम्हें सूत करना पसंद नहीं है, और खाना न खाना तुम्हें बहुत पसंद है। इसलिए तुम न तो सूत करोगी और न ही खाओगी!' मैंने अपना संकल्प तोड़ने का फैसला करके उठ खड़ी हुई। लेकिन ऐसा करने से पहले मैंने बापूजी से राय पूछी। बापूजी ने कहा, 'क्या संकल्प इतनी आसानी से तोड़े जा सकते हैं? अगर हम छोटे-छोटे संकल्प भी तोड़ देंगे, तो बड़े संकल्प कैसे निभाएंगे? तुम्हारा संकल्प सही है, लेकिन सूत करने का एक निश्चित समय होना चाहिए। ऐसा नहीं हो सकता कि तुम एक दिन सुबह सूत करो और दूसरे दिन शाम को। लेकिन अगर तुम खाना नहीं खाओगी तो मोतीबा को दुख होगा। तुम्हें मोतीबा के लिए अपना संकल्प तोड़ देना चाहिए।' मैंने अपना संकल्प तोड़ दिया।

मुझे रोज़ाना 3 औंस दूध पीने के लिए मजबूर किया जाता था। मुझे दूध बिल्कुल पसंद नहीं था। मोतीबा रोज़ाना मेज पर एक गिलास दूध, जिसमें खूब सारी मलाई होती थी, तैयार रखती थीं। मुझे या तो मोतीबा की मौजूदगी में या मेज पर बैठे किसी और से पहले उसे पीना पड़ता था। मुझे मोतीबा की आज्ञा मानने और उन्हें कष्ट न पहुँचाने के लिए दूध पीना पड़ता था। एक दिन मेज पर दूध से भरा गिलास रखा था, मैंने चालाकी से दूध वापस बर्तन में डाल दिया। संयोग से उसी समय सुशीलाबेन अंदर आ गईं।

375 'फैशन', अंग्रेजी में।

'दूध वापस डाल दिया है क्या?' उसने पूछा। 'मात्रा कम कर दी है,' मैंने जवाब दिया। 'सावधान रहो, मैं बा को बता दूंगी।' मैंने उससे कहा, 'सुशीला बहन, कृपया आज उन्हें मत बताना। मैं पी लूंगी, लेकिन दूध पीने से मुझे उल्टी आने लगती है। मुझे दूध पसंद नहीं है। कृपया आज मुझे माफ़ कर दीजिए।' लेकिन उसने ऐसा नहीं किया और मुझे दूध पीना पड़ा। मैंने उसी शाम बापू को अपनी इस बेवफाई के बारे में बता दिया। बापू हँसे और बोले, 'क्या घरी मिठाई खाते समय भी ऐसा ही होता है? अगर तुम ऐसा करती रहोगी तो मुझे लगेगा कि तुम आलसी हो। दूध हमारे शरीर को मजबूत बनाता है और हम तभी सेवा कर सकते हैं जब हमारा शरीर स्वस्थ हो। तुम

अपने काम में आलसी नहीं हो, लेकिन ऐसा लगता है कि तुम आलसी होती जा रही हो।' इस घटना के बाद मैं अपने स्वास्थ्य के प्रति अधिक सावधान हो गई।

30 ग्राम कुनैन लेने के बावजूद मुझे हर महीने बुखार आता था। इस दवा के बाद मेरा बुखार उतर गया। बापू के शब्द मेरे मन में हमेशा के लिए बस गए।

बापू ने मुझे गीता पढ़ाना शुरू किया, उससे पहले वे मुझे ज्यामिति पढ़ाया करते थे। महादेवकाका की पुण्यतिथि पर हमने गीता पाठ करने का निश्चय किया था। मुझे सही उच्चारण नहीं पता था। तीन दिन तक मैंने गीता सीखने के अलावा और कुछ नहीं किया। मैंने तीन दिनों में पाँच प्रवचन सीख लिए। उस दिन से मैंने गीता सीखने का निश्चय कर लिया और उनसे सभी अठारह प्रवचन सीख लिए।

शाम की सैर के दौरान बापू अक्सर अपने जीवन के किस्से और अनुभव सुनाया करते थे।

एक दिन, एक बात से दूसरी बात निकली और बापूजी ने दक्षिण अफ्रीका के अपने अनुभव सुनाने शुरू कर दिए। बापूजी को एक मुस्लिम व्यक्ति दक्षिण अफ्रीका ले गया था। 377 वहाँ व्याप्त गुलामी देखकर बापूजी बहुत दुखी हुए। अपनी दूसरी यात्रा में पूरा गांधी परिवार उनके साथ गया। बापूजी ने कहा, 'दक्षिण अफ्रीका की दूसरी यात्रा पूरे गांधी परिवार के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुई। आज भी गांधी परिवार के कई सदस्य वहाँ रहते हैं। मैं जिन लोगों को वहाँ ले गया था, उनमें मगनलाल सबसे श्रेष्ठ साबित हुए। उन्होंने अपनी मृत्यु तक निरंतर सेवा की। एक बार साबरमती में धन की भारी कमी हो गई थी।

376 'अनाज', अंग्रेजी में।

377 पिता अब्दुल्ला.

आश्रम। हालत ऐसी थी कि अगले महीने के लिए खाने का कोई इंतजाम नहीं था। मगनलाल मेरे पास आए और पूछा, 'बापू, अगले महीने हमारा क्या हाल होगा?' मैंने जवाब दिया, 'भगवान पर भरोसा रखो, जैसे उन्होंने कुवरबाई के मामेरू की रक्षा की और उसकी इज्जत बचाई, हम भी वैसा ही करेंगे और अपनी इज्जत बचाएंगे।' जब हम इस बारे में बात कर रहे थे, तभी एक बच्चा अंदर आया और बोला, 'बापूजी, गाड़ी में कोई है और आपको बाहर बुला रहा है।' बापूजी बाहर गए और सेठ ने उनसे पूछा कि क्या वे दान स्वीकार करेंगे। बापू ने जवाब दिया, 'खुशी से'। अगले दिन वह सुबह 10 बजे आए और बड़ी रकम दान में दी। दान देने वाले सेठ अंबालाल साराभाई थे। आज भी वे एक बड़े चक्की मालिक हैं। वे अहमदाबाद में रहते हैं।

एक दिन मुझे ठक्कर बापा का पत्र मिला जिसमें लिखा था कि एक गरीब हरिजन है और मैं आशा करता हूँ कि आप इस हरिजन भाई और उसके परिवार को अपने पास रखेंगी। वे परसों पहुँचेंगे। परिवार आने ही वाला था और बा समेत कोई भी हरिजन को छूने को तैयार नहीं था। लेकिन उन्हें ठक्कर बापा भेज रहे थे। भला कोई कैसे मना कर सकता है? यह एक कठिन परीक्षा

थी, लेकिन मैंने ईश्वर पर भरोसा रखा और बा से बात की। बा ने कहा, 'मैं न तो उन्हें छूऊँगी और न ही अपने पास रखूँगी।' जब वे आए और घड़े से पानी पिया, तो बा ने घड़ा दूर रखवा दिया और उन्हें छूने से इनकार कर दिया। जब मुझे इस बात का पता चला, तो मैंने बा से कहा कि वह जहाँ चाहे जा सकती है। लेकिन अगर वह आश्रम में रहना चाहती है, तो ऐसी छुआछी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बेचारी बा बहुत रोई। सब आपस में यही कह रहे थे कि बापू बहुत बड़ा पाप कर रहे हैं। हमारा कर्तव्य क्या है? क्या हमारा कर्तव्य है कि हम अपने पतियों के साथ रहें, भले ही वे हरिजनों के साथ रहते हों? या हमारा कर्तव्य है कि हम उनसे अलग रहें! अंततः उन्होंने आपस में इस मुद्दे पर चर्चा की और निर्णय लिया कि हरिजन समुदाय के उत्थान के लिए काम करना और पति के साथ रहना उनका कर्तव्य है। बा मेरे पास आईं, मुझसे क्षमा मांगी और उस हरिजन लड़की को अपनी बेटी के रूप में गोद ले लिया।

वह लड़की लक्ष्मीबेन है। फिलहाल वह अहमदाबाद में है। बा ने उसकी शादी तय की थी। वह 18 से 20 साल की उम्र तक बा के साथ रही। हमारी सैर के दौरान बापू ने अपने जीवन की ऐसी कई घटनाएं सुनाईं। एक दिन बापू ने हमें अपनी इंग्लैंड की पहली यात्रा के बारे में बताया। अठारह साल की उम्र में बापू इंग्लैंड कैसे गए? बापू ने कहा, 'मेरी माँ ने मुझे इंग्लैंड जाने की अनुमति नहीं दी थी। मैंने कभी यात्रा नहीं की थी।' (मनु गांधी की डायरी)

मैं अकेला था। मुझे राजकोट से पोरबंदर जाने का रास्ता नहीं पता था। लेकिन मैं इंग्लैंड जाने के लिए दृढ़ संकल्पित था।' मैंने पूछा, 'बापूजी, आपको इंग्लैंड जाने के बारे में किसने बताया?' बापूजी ने कहा, 'हमारे घर में एक पुरोहित आते थे जो मेरे पिता के समय से आते थे। वे कहते थे कि हमारे पिता के देहांत के बाद गांधी परिवार के किसी सदस्य को दीवान का पद संभालना चाहिए। मेरे दोनों बड़े भाइयों ने उम्मीद छोड़ दी थी, लेकिन उन्हें मुझसे उम्मीद थी। इसलिए उन्होंने मुझे इंग्लैंड जाने के लिए कहा। लेकिन बापूजी ने कहा कि मेरा बेटा इंग्लैंड में मांसाहारी बन जाएगा और गोरों की संगति में बिगड़ जाएगा; मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता। तभी एक जैन भिक्षु आए और बोले कि मुझे इस लड़के पर पूरा भरोसा है। हमें उससे प्रतिज्ञा करानी चाहिए कि वह ऐसा कुछ नहीं करेगा। मुझे विश्वास है कि यह लड़का प्रतिज्ञा नहीं तोड़ेगा। उन्होंने मेरी माँ, सूर्यदेव और पुरोहित की उपस्थिति में मेरी हथेली पर तुलसी का पत्ता और पानी रखा। इस प्रकार माँ की अनुमति प्राप्त हो गई। लेकिन पैसा कहाँ से आएगा?' मैंने, जिसने कभी अकेले यात्रा नहीं की थी, अपने चाचा की अनुमति लेने के लिए ऊँट पर सवार होकर पोरबंदर के लिए प्रस्थान किया। हम गोंडल में एक दिन रुके और किसी तरह पोरबंदर पहुँचे। यह मेरी पहली यात्रा थी और मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने पूरी दुनिया की यात्रा कर ली हो। मुझे इतनी खुशी हुई! मैंने चाचा से इंग्लैंड जाने की अनुमति माँगी। वे कैसे मान जाते? उन्होंने कहा, अगर तुम्हें तुम्हारी माँ का आशीर्वाद है, तो मेरा भी तुम्हारे साथ है, लेकिन अगर इससे तुम्हारी माँ को कष्ट होता है तो तुम्हें नहीं जाना चाहिए। लेकिन पैसे का क्या? उन्होंने पोरबंदर के शासक को एक पत्र लिखा, लेकिन दीवान ने कहा, 'हम तुम्हारे मैट्रिक पास होने के बाद ही इस पर विचार करेंगे।' 378 इस प्रकार मैं निराश होकर राजकोट लौट आया। हमने मोतीबा के कुछ गहने बेचे और मेरे बड़े भाई ने कुछ पैसे दिए। मैं इंग्लैंड जाने के लिए मुंबई के लिए रवाना हुआ। मैंने अपने एक जीजा से इंग्लैंड के लिए आवश्यक कपड़ों और अन्य चीजों के बारे में पूछा और कपड़े सिलवाए। लेकिन बंबई के जातिवादियों ने आपत्ति जताई। उस समय मेरे बड़े भाई ने बहुत साहस दिखाया। उन्होंने जाति को जुर्माना देने से इनकार कर दिया। मेरी यात्रा की सारी तैयारी हो चुकी थी। मेरे जीजाजी का एक

परिचित था जिसके साथ मुझे यात्रा करनी थी। इस तरह टालमटोल करते हुए, मैं जहाज पर सवार हो गया।

378 मूल के अनुसार, उस समय 'स्नातक' होना चाहिए था, एमकेजी समलादास कॉलेज, भावनगर में प्रथम वर्ष का बी.ए. छात्र था।

स्टीमर पर। मुझे न तो अंग्रेज़ी आती थी और न ही अंग्रेज़ी रीति-रिवाज। हम तीन लोग एक केबिन में थे। मेरा साथी भोजन कक्ष में जाकर सब कुछ खा लेता और मुझसे भी ऐसा ही करने की ज़िद करता। लेकिन मैंने अपनी माँ से वादा किया था। मैं कैसे खाता? जब मैंने उसे यह बताया तो मेरे साथी मुझसे नाराज़ हो गए और फिर हँसने लगे। उसने पूछा, "डेढ़ महीने कैसे गुज़ारोगे?" लेकिन मैंने सिर्फ़ गंथिया, मठिया और अन्य खाद्य पदार्थ खाए जो मैं अपने साथ लाया था। मैं हर सुबह और शाम केबिन से बाहर जाता था। मुझसे कोई बात नहीं करता था। मैं अपनी माँ के लिए तड़पता रहा। किसी तरह हम अदन पहुँच गए। वहाँ मुझे यातनाएँ दी गईं। वे ज़ोर देते रहे कि ठंड के कारण मुझे मांस और शराब खानी ही होगी। यातना की हद पार हो चुकी थी। आख़िरकार, मैंने हिम्मत जुटाई और कहा, "अगर तुम मुझे समुद्र में भी फेंक दो तो भी मैं अपनी माँ से किया वादा नहीं तोड़ूँगा।" इसके बाद उनकी ज़िद बंद हो गई। मैं अपने साथ अध्ययन की किताबें लाया था—मैंने अपना पूरा दिन उन्हें पढ़ने में बिताया। बापू ने एक मज़ेदार घटना भी सुनाई। अदन के बाद लंदन कुछ ही दिनों की दूरी पर था। मैं सोच रही थी कि लोग इतने गोरे कैसे हो सकते हैं। मुझे ऐसा लग रहा था मानो अगर मैं भी नहाऊं और साबुन से अपनी त्वचा को जोर से रगड़ूं, तो मैं भी उन्हीं की तरह गोरी हो जाऊंगी। पानी खारा था और मैंने साबुन की पूरी बट्टी अपने शरीर पर रगड़ ली। इससे मेरी त्वचा में इतनी जलन हुई कि मुझे चीखने का मन हुआ। लेकिन मैं अपनी इस मूर्खता को किसके साथ साझा करती? मैं लंदन पहुंच गई। मेरे पास डॉ. प्रांजीवदास मेहता के लिए सिफारिश पत्र था। लेकिन बंदरगाह पर मेरा स्वागत करने वाला कोई नहीं था। मैं विक्टोरिया होटल गई। मैंने नहाया-धोया और खाने के लिए बैठ गई। मैंने इससे पहले कभी मेज और कुर्सी पर बैठकर खाना नहीं खाया था और मुझे इसकी आदत नहीं पड़ रही थी। इतना ही नहीं, मैं कम से कम छह से आठ गेहूं की रोटियां खाती थी। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं शाकाहारी हूं। मैंने हां कहा। उन्होंने मुझे आलू के आठ-दस टुकड़े, रोटी के छोटे टुकड़े, थोड़ा मक्खन और सूप, हलवा दिया और उसका बिल पांच रुपये बना दिया। मैं दंग रह गई। खाना खाने के बाद मुझे भूख तो लगी, लेकिन बहुत सारा पैसा भी खर्च हो गया! लेकिन वहाँ का रिवाज है कि हर चीज़ का अलग से दाम लिया जाता है। उस शाम मैं खाना खाने नहीं गया। डॉ. प्रांजीवंदास मेहता मुझसे मिलने आए। तभी एक मज़ेदार घटना घटी। जब वे मुझसे मिलने आए तो डॉ. मेहता ने एक सुंदर पोशाक पहनी हुई थी।

379 'बिल', अंग्रेजी में।

उन्होंने एक टोपी, 380, मेज पर रख दी। हम भारतीय अपनी शरारतों के लिए जाने जाते हैं। मैंने टोपी उठाई और उस पर हाथ फेरा। उन्होंने तुरंत मुझसे कहा, “मोहनदास, हमारे तौर-तरीके यहाँ नहीं चलते। तुम इससे खेल रहे हो, जो तुम यहाँ नहीं कर सकते। तुम्हें यहाँ के रीति-रिवाज सीखने में एक साल लग जाएगा। तुम्हें तो अंग्रेजी भी नहीं आती। तीन साल में तुम बैरिस्टर कैसे बन जाओगे?” उन्होंने मुझे प्यार से यह भी कहा कि मुझे मांस आदि खाना पड़ेगा।

हमारे खाने का तरीका ऐसा है कि हम पूरी या रोटी को दूध में डुबोकर खाते हैं। मैंने भी रोटी को हलवे में डुबोकर खाया था, जिससे मेरे आस-पास के लोग खूब हँसे और ठहाके लगाने लगे। डॉ. मेहता ने मुझे खाने के शिष्टाचार पर एक किताब दी, जिसके अनुसार रोटी और मक्खन पहले चाकू से खाना चाहिए, और छिलके वाले खाने के लिए कांटे का इस्तेमाल करना चाहिए। मैंने अपने देश में कभी कांटा नहीं देखा था। मेरी हालत किसी गाँव वाले से भी दयनीय थी। पहले सूप और फिर आखिर में हलवा खाना चाहिए। इस तरह डॉ. मेहता ने मुझे बुनियादी शिष्टाचार सिखाया। उन्होंने कहा, “तुम्हें किसी परिवार के साथ रहना चाहिए।” उन्होंने मुझे अगले दिन एक तय जगह पर मिलने के लिए कहा। मैंने जैसे-तैसे रात गुजारी। अगली सुबह डॉ. मेहता मुझे लेने आए। मेरा सामान अभी भी बंदरगाह पर था, जिसे हम ले आए। उन्होंने मेरे लिए एक परिवार के साथ रहने का इंतजाम किया। लगभग आठ दिनों में, मैं बुनियादी बातों से परिचित होने लगा। एक दिन मैं लंदन घूमने निकल पड़ा। मुझे सबसे गरीब लोगों के इलाकों में जाने का मन हुआ। वहीं मुझे एक शाकाहारी होटल दिखा। मैं अंदर गया और उस दिन छह पेंस में पेट भर खाना खाया। मुझे विक्टोरिया होटल के खाने से कहीं ज्यादा स्वादिष्ट लगा। मेरी मकान मालकिन की दो बेटियाँ थीं। उनकी परंपरा के अनुसार, मकान मालकिन की बेटी हम जैसे किराएदारों को घुमाने ले जाती थी। मैं बहुत शर्मीला था और बेटियों से बात तक नहीं करता था। वे मुझ पर मांस खाने और शराब पीने का दबाव डालती थीं। यह रोज़ का झगड़ा था। मैं दूसरे किराए के मकान की तलाश में था और घूमते-घूमते मुझे यह जगह मिल गई। मुझे न सिर्फ खाना मिला बल्कि सस्ता किराया भी मिल गया। मैं डॉ. प्राणजीवदास मेहता के पास गया और कहा कि मैं इंतज़ाम कर लूँगा।

380 ‘टोपी’, अंग्रेजी में।

381 ‘होटल’, अंग्रेजी में।

382 ‘मकान मालकिन’, अंग्रेजी में।

सब कुछ। उसने मुझे रोकने की कोशिश की। लेकिन मैंने ये कमरे किराए पर ले लिए। मेरा खर्चा आधा हो गया। शुरू में मैं होटल में एक बार खाना खाता था। लेकिन बाद में मैं सोयाबीन, रोटी (जो मैं खरीदता था) और दूध से काम चलाता था। शाम को मैं केले या कुछ और फल खा लेता था।

मैंने नृत्य और वायलिन बजाना सीखना शुरू किया, लेकिन इसमें मेरी रुचि ज़्यादा समय तक नहीं टिकी। मेरे एक यूरोपीय शिक्षक थे जिन्होंने मुझे मैट्रिक परीक्षा की तैयारी में मदद की। मैंने परीक्षा दी और पहले ही प्रयास में उत्तीर्ण हो गई। मैं रोज़ाना चार से पाँच मील पैदल चलती थी।

मुझे पैदल चलना बहुत अच्छा लगता था और मैं नई-नई जगहें भी देखती थी। एक रविवार को मैं टहलने गई और रास्ता भटक गई। अब मैं क्या करती? मैंने पुलिस से मदद मांगी। मैं यह घटना आपको यह दिखाने के लिए सुना रही हूँ कि वहाँ की पुलिस कितनी मददगार होती है। पुलिसकर्मी ने मेरे घर पर फ़ोन किया। उन्होंने मुझे दूसरी तरफ़ जाने में मदद की और मुझे दूसरी तरफ़ जाने का रास्ता बताया और अगले पुलिस स्टेशन का पता भी बताया। उन्होंने उन्हें यह भी बताया कि फलां व्यक्ति वहाँ आएगा और उसे फलां जगह का रास्ता बताना है। मैं पुलिस स्टेशन पहुँची और उन्होंने मुझे तीसरे पुलिस स्टेशन भेजा, जहाँ से मुझे मेरे लॉज तक पहुँचाया गया। उन्होंने यह जानने के लिए भी फ़ोन किया कि मैं पहुँच गई हूँ या नहीं! वे बहुत सावधान थे। छह महीनों में मेरी कुछ जान-पहचान हो गई। मैं शाकाहारी 384 संस्था का सदस्य बन गया। मैं कभी-कभी इसके जर्नल के लिए शाकाहार पर लेख लिखता था। अब मेरी अंग्रेज़ी की जानकारी काफी अच्छी थी। मैंने लैटिन और फ्रेंच का भी अध्ययन किया। मुझे सराय में आयोजित रात्रिभोजों में भी शामिल होना पड़ता था। भोजन अधिकतर मांसाहारी होता था और मैं अकेला शाकाहारी होता था, इसलिए मैं मुश्किल से ही कुछ खा पाता था। लेकिन मुझे भाषण देने और वाद-विवाद में भाग लेने की आवश्यकता होती थी। और मेरी कम उम्र को देखते हुए, इनसे मेरी अच्छी छवि बनी।

इस प्रकार बापू ने बैरिस्टर की उपाधि प्राप्त की। लेकिन भारत लौटने से पहले ही उनकी माताजी का देहांत हो गया, जिन्होंने उन्हें इंग्लैंड भेजने के लिए बहुत मेहनत की थी और बापू से उनका गहरा स्नेह था। वे उनके लौटने का दृश्य देखने के लिए जीवित नहीं रहीं।

383 एमकेजी ने दूसरे प्रयास में इसे पास कर लिया।

384 मूल में 'सब्जी' है।

डायरी 3

Sevagram Ashram

20.10. 1944

मैंने आज से लिखना शुरू करने का फैसला किया है। मैंने आज सुबह बापू से पूछा, अगर मैं कराची जाकर पढ़ाई करूं तो क्या होगा? मैं पढ़ना चाहती हूं। बापू ने जवाब दिया कि अगर मैं पढ़ना चाहती हूं तो निजी तौर पर पढ़ सकती हूं। 'अगर बाद में परीक्षा देनी भी चाहो तो दे सकती हो, जैसे कोई खेल हो। लेकिन अगर तुम सिर्फ परीक्षा पास करने के लिए पढ़ोगी तो कुछ भी नहीं सीख पाओगी। मुन्नालाल ने बी.ए., एल.एल.बी. किया है—उसका क्या फायदा? प्यारेलाल ने एम.ए. किया है, उसका क्या फायदा? लेकिन उन्होंने बहुत समझदारी से जनता की सेवा करने का फैसला किया है। लेकिन कृष्णदास और प्रभुदास किस स्कूल में पढ़े थे? वे अपने कर्तव्यों का कितना निर्वाह कर रहे हैं? मैं चाहता हूं कि तुम इस मोह को छोड़ दो। मैं चाहता हूं कि तुम यहीं

रहो और नर्स बनो। तुम मेरी देखरेख में रहोगी और मुझे तुम्हारी चिंता नहीं करनी पड़ेगी। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम इस रास्ते पर बहुत आगे जाओगी।'

आज से मैंने औषधालय में सुबह 9 से 11 बजे तक काम शुरू कर दिया है। जोहराबेन भी मेरे साथ है। आज हमारी कक्षाएं 10 बजे तक चलीं, जिसके बाद हमने घावों की सफाई, पट्टियाँ लगाना और 385 उपकरणों को कीटाणुरहित करना सीखा। बाकी समय मैं बापू के साथ थी। आज सुशीलबेन ने बापू के निर्देशानुसार एक पत्र का उत्तर दिया। मैंने भी एक पत्र लिखा। बापू ने कहा, 'अगर मैं पत्रों का जवाब ही न दूं तो क्या होगा?' प्यारेलाल भाई ने कहा, 'बापू, आपको कुछ पत्रों का जवाब देना ही होगा। इससे लोगों को तसल्ली मिलेगी। कुछ निर्णय लेने के लिए भी आपको पत्रों का जवाब देना ही होगा।'

मैंने दोपहर के भोजन के बाद थोड़ी देर पढ़ा और सो गई। मैंने भंसाली भाई के साथ पढ़ाई की। मैंने 3 बजे के बाद फिर से पढ़ाई की। मैंने थेपला पकाया। मैं सूत कातने का काम नहीं कर पाई, क्योंकि मैं छह बजे लौट आई थी। बापू ने हमें सहारे के तौर पर इस्तेमाल करने की प्रथा बंद कर दी है। इन दिनों सीता यहाँ हैं, इसलिए उन्होंने सीता को अपना सहारा बनाया है। वापसी में मैं ही उनका सहारा बनी रही। बापू ने चेतावनी दी।

385 'स्टरलाइज़', मूल में अंग्रेजी में।

386 Sita Gandhi, daughter of Manilal and Sushila Gandhi.

लीलावतीबेन ने पूछा, 'क्या तुमने उससे पढ़ाई के बारे में बात की है?' लेकिन पढ़ाई की इच्छा अभी भी बनी हुई है। रात में थोड़ा लिखा और फिर सो गई।

21.10.1944 शनिवार

आज मैंने सुबह 9 से 11 बजे तक औषधालय में काम किया। मैं जल्दी उठी और नहा-धोकर माताजी की सहायता करने लगी। वरना मुझे बुरा लगता है कि मैं बापू द्वारा सौंपे गए सेवा कार्यों को ठीक से नहीं कर पा रही हूँ। इसलिए मैंने जल्दी उठकर तैयार होने का फैसला किया ताकि मैं समय पर चाय आदि दे सकूँ। औषधालय में काम खत्म करने के बाद हम कुछ देर बापू के कमरे में बैठे रहे। दोपहर के भोजन की घंटी बजते ही मैंने खाना खाया और डाक देखी। विजयबेन का पत्र था, कई दिनों बाद पत्र मिला, अच्छा लगा। मैंने उसे जवाब लिखा। मैंने भंसाली भाई के साथ एक घंटा पढ़ाई की। डॉ. सईद मोहम्मद दोपहर 3:30 बजे आए। उन्हें यहीं रुकना है। जब मैं बापू को पंखा कर रही थी, काठियावाड़ के कर्मचारी भावनगर की स्थिति बता रहे थे। वे घी पर एकाधिकार के बारे में चर्चा कर रहे थे। महाराज सबकी बातें सुन रहे थे, लेकिन स्पष्ट रूप से स्वीकार कर रहे थे कि वे कुछ नहीं कर सकते। उस मजदूर ने पूछा, ‘हम क्या करें?’ बापू ने उत्तर दिया, ‘विद्रोह।’ मजदूर ने पूछा, ‘क्या एक व्यक्ति का विद्रोह करना उचित होगा?’ बापू ने कहा,

‘यदि कोई व्यक्ति भावुक है, तो उसे जेल जाना चाहिए, इससे बहुत कुछ हासिल होगा। मैं इस बारे में बहुत दृढ़ हूं। और पट्टानी 388 और मैंने इस मामले पर विस्तार से चर्चा की है। आप मुझे लिखित में दें और मैं पट्टानी को लिखूंगा।’ एक अन्य मजदूर ने वेरावाला 389 के बाद राजकोट की स्थिति का वर्णन किया, ‘उस पद पर आसीन होने वाले अन्य लोग उससे कहीं अधिक बुरे हैं। वर्तमान प्रधानमंत्री शासक के ससुर हैं। तीन दीवान बदले जा चुके हैं।’

इसके बाद बापू ने डॉ. सईद मोहम्मद से बातचीत की। सूत कातते समय बापू ने मुझसे कुछ नहीं कहा। मैंने सूत काता, खाना खाया और काकीबा के घर चली गई। उसके बाद मैं टहलने चली गई। नमाज़ के बाद मुन्नालाल भाई

387 ‘मोनोपोली’, मूल में अंग्रेजी शब्द।

388 Sir Prabhakar Pattani, Dewan of Bhavnagar state.

389 राजकोट के दीवान दरबार वेरावाला, एमकेजी ने उनके खिलाफ उपवास किया

1939.

मुन्नालाल ने कहा, “बापू ने फोन करके पूछा कि चिमुर की उन दो लड़कियों की देखभाल कौन कर रहा है?” मुन्नालाल ने जवाब दिया कि प्रभाकरजी को यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। बापू ने पूछा, “कोई महिला उनकी देखभाल क्यों नहीं कर रही है? मैंने वासुमति से पूछा तो उसने कहा कि किसी ने उसे यह जिम्मेदारी नहीं दी है, तो उनकी देखभाल कौन कर रहा है?”

मुन्नालालभाई ने जवाब दिया, 'जैसा कि मैंने कहा, प्रभाकर उनकी देखभाल करता है।' बापू ने कहा, 'आश्रम में इतनी सारी महिलाएं हैं। और कोई उनकी परवाह क्यों नहीं करता? कंचन को उनकी देखभाल करनी चाहिए थी।'

मुन्नालालभाई ने कहा, “पिछले साल छुट्टियों के दौरान इन लड़कियों की देखभाल का मुद्दा उठा था, उस समय सभी महिलाओं ने मना कर दिया था। इसलिए इस साल हमने उनमें से किसी से भी नहीं पूछा।” उन्होंने सोचा कि प्रभाकरजी ने भंसालीभाई का बहुत ध्यान रखा है और भंसालीभाई ही इन लड़कियों को यहां लाए हैं, इसलिए वे ही इनकी देखभाल कर रहे होंगे।

इससे बापू और भी क्रोधित हो गए और बोले, “जो महिलाएं इतने वर्षों से हमारे साथ हैं, वे अपनी जिम्मेदारी नहीं समझतीं। आश्रम भंग करने के अलावा मैं क्या करूँ? शायद आश्रम भंग करने पर ही सब अपनी जिम्मेदारी समझ पाएँगे। अगर रामदास या देवदास की बेटियाँ आतीं तो बहुत से लोग उनकी देखभाल करने के लिए आगे आते। और इनके लिए कोई नहीं? मेरा हृदय क्षुब्ध है। आज पहली बार मैंने इनके बाल साफ देखे। आज मैंने इन लड़कियों को साफ-सुथरा देखा। इतने दिनों से ये लड़कियाँ गंदी थीं। आज अचानक वे आकर मेरे सामने खड़ी हो गईं, मेरा हृदय जल उठा। मैंने उन्हें बुलाया और स्नेहपूर्वक पूछा, उन्होंने उत्तर दिया कि प्रभाकर उनकी

देखभाल करते हैं। इस मामले को इन महिलाओं के सामने रखिए।" यह कहकर बापू अखबार पढ़ने लगे। बापू का खून खौल रहा था।

कल 22 तारीख है, इसलिए आज शाम हमने उन सभी लोगों की सूची बनाई जिन्हें पूरे दिन बिना रुके काम करना था। काकिबा को मसाज दिया और अब मैं यह लिख रहा हूँ।

बापू व्रत की बात कर रहे हैं, जो चिंता का विषय है। भंसालीभाई ने कहा, 'बहन! चिंता की कोई बात नहीं है। हम प्रेम से बंधे हैं। लेकिन ऐसे माहौल को सहन करने से बेहतर मर जाना है।' जब मैंने व्रत रखा था, चिमनलालभाई और रामदासभाई आए और उन्होंने मुझे समझाया कि मुझे व्रत तोड़ देना चाहिए। जब हमारी माताओं और बेटियों का अपमान हो रहा था, तो क्या वे

ऐसा कहने में शर्म आ रही है? भला ऐसा कैसे हो सकता है? वे तो मुझसे तर्क करने आए थे! स्थिति यही है।

बात आगे बढ़ी और हमने कहा कि बापू पागल को भी सांत्वना देते हैं। वे उससे इतने प्यार से बात करते हैं। यहाँ एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें सब पागल कहते हैं। भंसालीभाई ने कहा, 'लगभग 8-10 साल पहले मैंने 55 दिनों का उपवास किया था। उस समय अपनी पागलपन की हालत में मैंने बापू से कहा कि वे मेरे उपवास के हर दिन मुझे पत्र लिखें। बापू मान गए। उनका पत्र हर दिन आता था।' मैंने पूछा, 'वे पत्र कहाँ हैं?' भंसालीका ने उत्तर दिया, 'लीलावती ने वे सारे पत्र फाड़ दिए। उन्होंने एक भी नहीं छोड़ा।' उन्होंने दर्द से कहा, 'बहन, तुम यह नहीं समझोगी। जो बीत गया सो बीत गया। लेकिन हर दिन एक पत्र आता था। इस प्रकार, बापू पागल के कष्ट को समझते हैं और उसे सांत्वना देने का प्रयास करते हैं।' आज सुबह मेरी कृष्णचंद्रजी से बात हुई। पहले आश्रम में तीन प्रशासक थे। उनमें से एक, रामदास गुलाटी, जा चुके हैं। कृष्णचंद्रजी किसी आम सदस्य की तरह हैं। बापू ने कहा, 'मुझे इस तरह की दिखावटी सजावट में कोई दिलचस्पी नहीं है। आश्रम को तोड़ देना ही बेहतर है।' हमें बताया गया कि हमारे द्वारा बुनी गई डोरी को बुनकर आश्रम पहुँचा दिया गया है। मृदुलाबेन आज मुंबई के लिए रवाना हो गईं।

22.10.1944 रविवार

आज 22 तारीख है—मोतीबा की पुण्यतिथि। मैं सुबह प्रार्थना के लिए उठी। प्रार्थना में गीता का पाठ हुआ। पाठ के बाद मैं टहलने गई। उसके बाद मैंने घर की सफाई की और स्नान किया। मैं सुबह 9 बजे औषधालय गई और 11:30 बजे वापस आई। फिर से स्नान किया और काकीबा के पास जाकर उनकी रोटी बनाने में मदद की। संतोक काकीबा इन दिनों यहीं हैं। दोपहर के भोजन के बाद मैंने डाक देखी। भाई और उमियाबेन के पत्र थे। उमियाबेन ने बापू को लिखा, 'आपको यह मामला अपने हाथ में लेना होगा, क्योंकि आप मेरी माँ बन गए हैं। आप वचनबद्ध हैं। अगर मुझे पता होता तो मैं अपने साथ ऐसा नहीं होने देती। मैं विनोद की तरह होती। लेकिन मैंने ऐसा सार्वजनिक रूप से अपमानित होने के डर से और अपने माता-पिता के सम्मान की रक्षा के लिए किया।' मैंने यह पत्र बापू को दे दिया। फैबा का भी एक पत्र था, जो मैंने बापू को दे दिया। बापू

मनु गांधी की डायरी पढ़ते हुए हँस पड़े।

मैंने उमियाबेन का पत्र पढ़ा। जब मैं दोपहर में उसे पंखा करने गया तो उसने मुझे उमियाबेन के लिए एक पत्र दिया।

Sevagram 22.10.44 390

सीएचआई. उमिया,

तुम क्यों डांट रही हो? क्या मैंने तुम्हें अच्छा पति नहीं दिया? अगर तुम्हें वो पसंद नहीं है, तो मैं तलाक का इंतजाम कर सकती हूँ। जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, जो हमें मजबूत बनाते हैं। अगर तुम हार मान लेती हो, तो शर्म मेरी होगी। तुम जमनालाल जी को दुख पहुँचाओगी और जयसुखलाल को शर्मिंदा करोगी। तुम कायर क्यों बन रही हो? मैं तुम्हें बहुत बहादुर समझती हूँ। नव वर्ष की खुशियाँ तुम दोनों को मिलें।

आशीर्वाद का

बापू

बापू ने मुझे पत्र दिया। उन्होंने यह भी बताया कि उस शाम 9 बजे बैठक है। मैंने बाकी का दिन पढ़ाई और अखबार पढ़ने में बिताया। मैं शाम 4:30 से 5:30 तक चरखा चलाती रही। शाम की सैर के दौरान बापू ने सीता को अपनी छड़ी बना लिया। वह मुझे ढूंढ रहे थे, लेकिन मैं पीछे संघर्ष कर रही थी। ऐसा लगता है कि बापू ने सैर के दौरान हम पर सहारा लेने की अपनी पुरानी आदत फिर से शुरू कर दी है।

बैठक सुबह 9 बजे:

वसुमतीबेन, जोहराबेन, शक्रीमासी, दुधीबेन, कंचनबेन, दुर्गामासी और मैं सहित अन्य महिलाओं ने भाग लिया। लगभग सभी महिलाएं उपस्थित थीं। बापू ने महिलाओं से कहा, 'आज मैं आप सभी से तीन बातों पर चर्चा करना चाहता हूँ। पहली, मेरे प्रयोगों के बारे में। जो प्रयोग मैं करना चाहता हूँ, वे मेरी दृष्टि से सही हैं। मैंने देवदास और किशोरलाल से लंबी बातचीत की। परिवार इससे दुखी है। इसलिए, फिलहाल मैंने यह विचार छोड़ दिया है। दूसरी, पोशाक के बारे में। मनु ने इस पोशाक को अपना बनाया है। यह पोशाक काम करने वालों के लिए बहुत अच्छी है। यह सबसे अच्छी है।'

390 सीडब्लूएमजी में नहीं है।

391 'मीटिंग', मूल में अंग्रेजी शब्द।

गुजराती पहनावा सबसे खराब है, खासकर काम करने के लिए। हाँ, रानीपराज की महिलाओं का अपना पहनावा है। लेकिन आपमें से कोई भी वो कपड़े नहीं पहनेगा। मीराबेन ने वो पहनावा अपनाया था, लेकिन अंत में उसने पंजाबी कपड़े अपना लिए। वो पहनावा सबसे अच्छा है और पूरे शरीर को ढक लेता है। तीसरा, कल जो हुआ उसके बारे में। आप सभी जानते हैं। मैंने परसों उन दो लड़कियों को देखा था; आज की तुलना में वे ज़्यादा साफ-सुथरी थीं। उनके बाल कंघी किए हुए थे। उनके बाल भी कटे हुए थे। मैं मन ही मन मुस्कुराया कि देर से ही सही, कोई तो जागा है। आपमें से जिसने भी ये किया है, उसे मेरी ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद। मैंने लड़की से खुशी से पूछा, तुम्हारे बाल किसने काटे? वह हिचकिचाई। मैंने उससे मज़ाक किया और फिर पूछा। उसने कहा, प्रभाकरभाई ने काटे। मैं सिर से पैर तक गुस्से से भर गया। जो काम कोई नहीं करना चाहता, वो प्रभाकर कर देता है। प्रभाकर सचमुच आश्रम का गहना है। उसे जो भी काम दिया जाता है, वो उसे पूरी लगन से करता है। लेकिन मुझे दुख भी हुआ। इतनी सारी महिलाएं हैं और किसी ने उनकी तरफ देखा तक नहीं! ये लड़कियां किसी पर बोझ नहीं बनेंगी। तभी वासुमति मेरे सामने आ गईं। मैंने उनसे पूछा, तो उन्होंने कहा, “मुझे किसी ने ऐसा करने को नहीं कहा। अगर कहा गया होता, तो मैं ज़रूर करती।” इससे मुझे और गुस्सा आ गया। मैंने प्रभाकर से पूछा तो उन्होंने कहा कि उन्होंने हर महिला से पूछा था, लेकिन सभी महिलाओं के मना करने पर उन्हें मजबूरन इन लड़कियों की देखभाल करनी पड़ी। यह वाकई बहुत दुखद है। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि जो लोग इतने लंबे समय से मेरे साथ रहे हैं, वे इतनी छोटी सी बात को नहीं समझ पाए। आपका योगदान बहुत बड़ा होना चाहिए था। हालांकि, मुझे लगा था कि आश्रम संघर्ष में टिक नहीं पाएगा, लेकिन आप सभी ने इसे संभाला और संकट के क्षणों में एक साथ आए; और फिर भी आप लोगों के बीच बहुत झगड़े भी हुए। यह भी मैं जानता हूँ। लेकिन मुझे इस बात की तसल्ली है कि आपने आश्रम को संभाला। मैं आपसे कहता हूँ कि मुझे आज़ाद कर दीजिए। बजाज वाडी में रसोईघर है, वहाँ मैं बोझ नहीं बनूँगी। लेकिन यहाँ मैं बोझ हूँ। क्या मुझमें अब भी बाल्टियाँ उठाने की ताकत बची है? मैं 125 साल तक जीना चाहती हूँ, लेकिन यह अहंकार है। यहाँ की हर महिला के पास कोई न कोई कला है, लेकिन हम सेवाग्राम को ऊँचा उठाने में असफल रहे हैं। मैंने कहा है कि अगर आप सेवाग्राम को ऊँचा उठाएँगी तो भारत के सात लाख गाँव आसानी से ऊपर उठ सकते हैं। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है।’ महिलाओं ने कहा, ‘बापू, हमारी सेहत ऐसी है कि हम यह सब नहीं कर सकतीं।’ बापू ने कहा, ‘ऐसे में आपका पहला कर्तव्य अपनी सेहत सुधारना है।’ (मनु गांधी की डायरी का 182वां भाग)

स्वास्थ्य। मैंने जो कहना था कह दिया है। आप मुझे अपना निर्णय बता दीजिए।’ बैठक रात 10 बजे तक चली।

24.10.1944, सोमवार

आज बापू का मौन दिवस था। बापू सैर पर जाते समय बच्चों के साथ खूब मस्ती करते हैं। दिनचर्या वही रही। सुबह 9 से 12 बजे तक मैंने औषधालय में समय बिताया। भाई को पत्र

लिखा। शाम को काकीबा की मालिश की। इन दिनों कनुभाई मुझसे बात नहीं करते। मुझे कारण नहीं पता।

25.10.1944

आज सुबह मेरी बापू से बात हुई। बापू ने कहा, 'चिंता मत करो। क्या पूरे गाँव के मुँह पर फिल्टर लगाना संभव है?' आज शाम 4 से 5 बजे तक बैठक थी। बापू ने कहा, 'या तो मुझे बजाज वाडी जाने की अनुमति दे दो या फिर तुम सब किसी गतिविधि में शामिल हो जाओ। नहीं तो मुझे मुक्त कर दो। क्योंकि आश्रम पर बहुत बोझ है। मैं अपने मेहमानों को बजाज वाडी में ठहरा सकता हूँ। वह पूरी जगह खाली है और मेरे लिए उपलब्ध है। मैं और मेरा सचिवीय स्टाफ (392) वहाँ रह सकते हैं।'

कोशोरलालभाई: 'अगर आप वहां चले भी जाएं, तो वहां एक और आश्रम खुल जाएगा। फिर आप किसे जाने के लिए कहेंगे? यही हाल यहां भी हुआ है। शुरू में सिर्फ पांच लोग थे और अब हम इतने सारे हो गए हैं।'

बापू: 'संभव है कि मुझे एक और अनशन करना पड़े। अगर मैं जीवित रहा तो मैं पूरे भारत की यात्रा करूँगा। अगर मैं अनशन नहीं भी करूँ तो भी मुझे कलकत्ता जाने की प्रबल इच्छा है। अगर सरकार ने मना किया तो मैं जेल चला जाऊँगा। मैं किसी एक क्षेत्र में कम से कम दो महीने या तीन महीने रहना चाहता हूँ। मैं बारह महीनों में चार से छह स्थानों पर रह सकता हूँ और लोगों से मिल-जुल सकता हूँ।'

392 मूल अंग्रेजी वाक्यांश।

मनु गांधी की डायरी 183

डॉ. संगानी को पत्र

16.11. 1944 393

'BHAI SANGANI,

मुझे आपका पत्र मिला। आपने संयुक्ताबेन की बहुत अच्छी देखभाल की। वह बहुत पीड़ा में थी। ईश्वर आपको इसका फल दे। ची. संयुक्ता को बता दीजिए कि मुझे उनका पत्र मिल गया है। जब आप उन्हें जाने की अनुमति दें, तब वह आ सकती हैं।

बापू का आशीर्वाद।

4.12.1944

बापू ने एक महीने के लिए, यानी 31.12.1944 तक, सभी काम बंद कर दिए हैं। यह एक तरह का उपवास है।

393 सीडब्लूएमजी, खंड 78, पृष्ठ 306. डॉ संगानी हरकिसोंदास अस्पताल, बॉम्बे में थे।

अनुवादक के बारे में

त्रिदीप सुहरूद एक विद्वान, लेखक और अनुवादक हैं जो आधुनिक गुजरात के बौद्धिक और सांस्कृतिक इतिहास तथा गांधीवादी बौद्धिक परंपरा पर काम करते हैं। साबरमती आश्रम संरक्षण एवं स्मारक ट्रस्ट (2012-2017) के निदेशक और मुख्य संपादक के रूप में, उन्होंने गांधी पर दुनिया का सबसे बड़ा डिजिटल संग्रह - गांधी हेरिटेज पोर्टल - बनाने का कार्य किया। संपादक और अनुवादक के रूप में उनकी पुस्तकों में हिंद स्वराज का आलोचनात्मक संस्करण (सह-संपादक और सह-अनुवादक, सुरेश शर्मा, 2010), नारायण देसाई की गांधी की चार खंडों वाली जीवनी, माई लाइफ इज माई मैसेज (2009), और चार खंडों वाला महाकाव्य गुजराती उपन्यास, सरस्वतीचंद्र (2015) शामिल हैं। उनका सबसे हालिया कार्य गांधी की आत्मकथा माई एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ (2018) का दो भाषाओं - गुजराती और अंग्रेजी - में आलोचनात्मक संस्करण है।

त्रिदीप सुहरूद वर्तमान में मनु गांधी की डायरियों का अनुवाद कर रहे हैं, जिनमें 1942 से 1948 तक की अवधि शामिल है। वे गांधी को लिखे गए अप्रकाशित पत्रों का संकलन 'गांधी को पत्र' नामक एक श्रृंखला तैयार कर रहे हैं और बिहार के चंपारण के नील उत्पादकों के बयानों के आठ खंडों वाले संकलन पर काम कर रहे हैं। वे सीईपीटी विश्वविद्यालय में प्रोफेसर और अभिलेखागार निदेशक हैं, साथ ही अहमदाबाद स्थित लालभाई दलपतभाई इंडोलॉजी संस्थान के निदेशक और एमआईसीए की शासी परिषद के अध्यक्ष भी हैं।